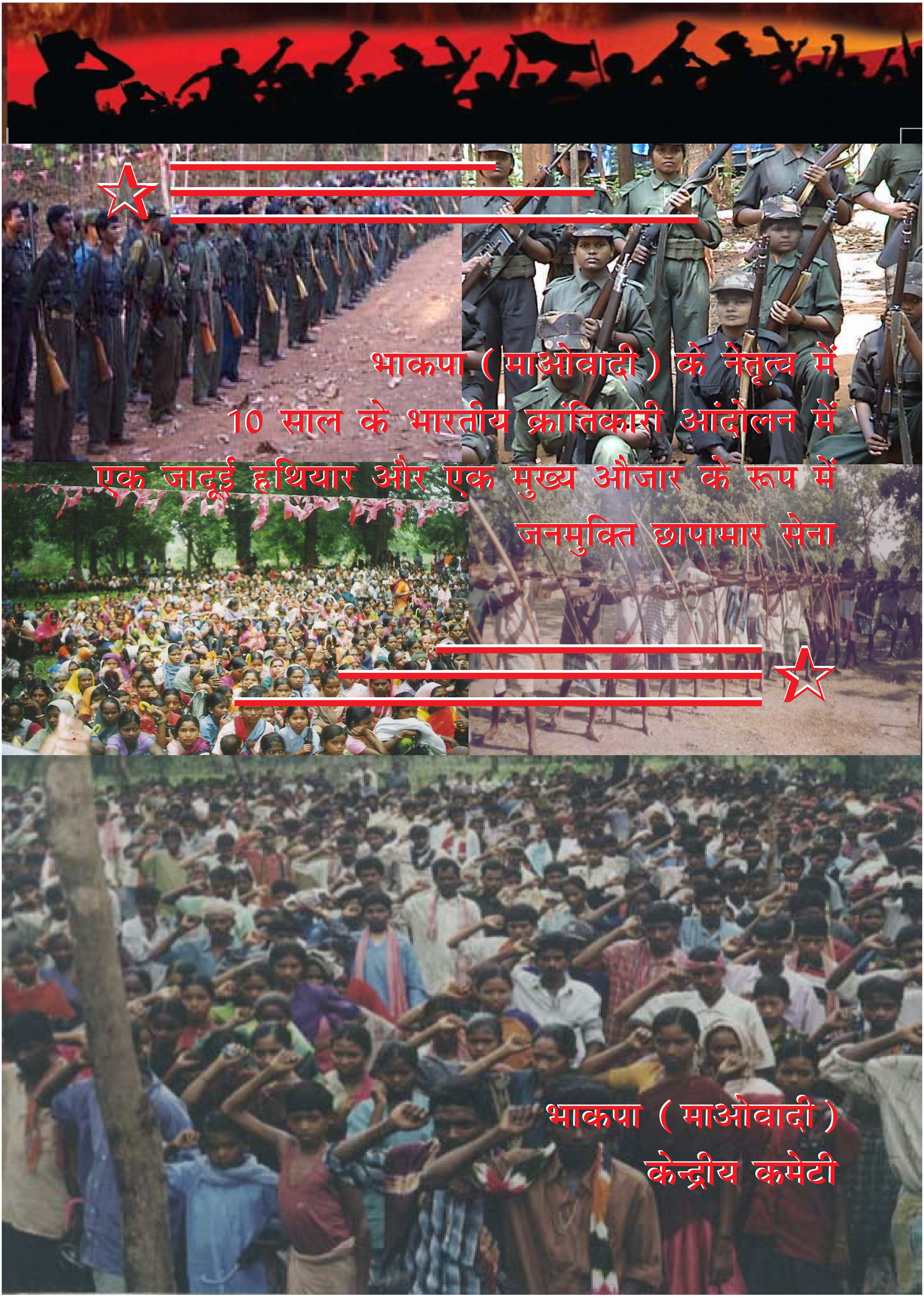

भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में 10 साल के भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में एक जादूई हथियार और एक मुख्य औजार के रूप में जनमुक्ति छापामार सेना

भाकपा (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

भाकपा (माओवादी) की दसवीं वर्षगांठ को ऊंचा उठाएं!

दिसम्बर 2015

विषय सूची

वे जनता के लिए जिंदगी जीए हैं... वे मृत्युंजय हैं!	 3
संपादकीय : पार्टी के हाथ में एक जादुई हथियार व मुख्य साधन के रूप में सच्ची क्रांतिकारी जनसेना है - एकताबद्ध पीएलजीए	 8
दुश्मन के काल कोठरियों में... और एक युद्ध क्षेत्र	 17
पीएलजीए में पार्टी और कमान तथा उसका कार्यभार	 20
कर्तव्य पूरा करने में पीएलजीए	 21
गुरिल्ला युद्ध को उच्च स्तर तक विकास करने में पीएलजीए की भूमिका	 21
झूठे 'अहिंसा' के सिद्धांतों को पर्दाफाश करो! क्रांतिकारी हिंसा को ऊंचा उठाओ!	 51
मुठभेड़ : 2004-2015 - दुश्मन के हमलों का मुहतोड़ जवाब देनेवाली पीएलजीए	 57
झूठी 'आत्मसमर्पण नीति' - उसका असली चेहरा	 75
जन आन्दोलन और जन प्रतिवाद-प्रतिरोध आन्दोलन	 77
शोषण व्यवस्था के विकल्प में अंकुरित होने वाली क्रांतिकारी जनसत्ता का निर्माण	 94
जनयुद्ध में महिलाओं की भूमिका	 109
जनता पर युद्ध 'ऑपरेशन ग्रीन हण्ट' को परास्त करो!	 126

तहेदिल से अगर जनता की सेवा करना है तो, क्रांतिकारी बलों को सुशिक्षित कर हथियारबंद करो! निर्भयता से युद्ध में कूद पड़ो! लड़ने व जीतने के लिए साहस करो!

जैसे ली फेंङ ने संक्षिप्त में बताया कि हम खाये बिना जी नहीं सकते। लेकिन हमारे जिन्दगी खाने के लिए नहीं, बल्कि एक बेहतर समाज निर्माण करने के लिए है। इस संक्षिप्त बात से हमें जरूर प्रेरणा मिलती है। ली फेंङ जनमुक्ति सेना में एक साधारण सैनिक है जिसने अपनी सुरक्षा पोजिशन को बचाने के लिए लड़ते हुए मारा गया। उन्होंने कम उम्र 22 साल में जनता की सेवा में अपने आपको सर्मित किया और 1964 में कामरेड माओ ने पूरे राष्ट्र को आह्वान किया कि ''कामरेड ली फेंङ से सीखो!''

पाठकों के लिए सूचना! भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की 10वीं वर्षगांठ के अवसर पर इस पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। लेकिन इसके प्रकाशित होने तक पार्टी की 11वीं वर्षगांठ भी संपन्न हो गई। इसलिए इस 11वां साल के आन्दोलन के विकास का लेखा-जोखा भी इसमें शामिल किया गया है। आप से अपील है कि इस विषय को ध्यान में रखेंगे। - प्रकाशक

वे जनता के लिए जिंदगी जीए हैं... वे मृत्युंजय हैं! उन्हें हमारी पीएलजीए का शत्-शत् लाल सलाम!

भारत की नव जनवादी क्रांति के लक्ष्य को हासिल करने के लिए नक्सलबाड़ी के सशस्त्र क्रांतिकारी किसान आन्दोलन से लेकर हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) के गठन तक भारत के लोकयुद्ध में लगभग 13 हजार कामरेड अपना गरम खून बहाकर लाल झण्डा को और लाल कर दिए। हमारी पार्टी की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर हमारी पार्टी के संस्थापक नेता और शिक्षक एवं भारतीय क्रांति के महान नेता कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी को शत्-शत् लाल सलाम पेश करें! इसके साथ-साथ हजारों अमर शहीदों को विनम्रता से क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करें!

भाकपा (माओवादी) के संस्थापक नेता और शिक्षक एवं भारतीय क्रांति के महान नेता कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी को शत्-शत् लाल सलाम!

भारत के क्रांतिकारी आन्दोलन में शहादत देनेवाले हजारों शहीद दुनिया के अत्यंत वैज्ञानिक विचारधारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद (मालेमा) का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे एक नया समाज, नई राजनीति, नई अर्थव्यवस्था, नई संस्कृति को ऊंचा उठाये हैं। सिर्फ समाजवादी समाज में ही दर्शाने वाले नये किस्म के मानव समूह की अग्रिम पंक्ति में उन्हें गिना जाता है। वे एक उज्ज्वल इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे एक न्यायसंगत, सही, वास्तविक, नैतिक, मानव मूल्य युक्त सभी पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। निस्वार्थ, आत्मबलिदान की चेतना, कभी न झुकनेवाली सैद्धांतिक कटिबद्धता, व्यक्ति के हितों को समूह के हितों के अंदर समेट लेना, जब दुश्मन का सामना करते हैं तब अपार धीरज व साहस दर्शाना, विचारों में विशालता, जनता के प्रति व कामरेडों के प्रति प्रेम, कितने भी कष्ट व मुश्किलें क्यों न आवें उसे पार पाने का फौलादी दृढ़ संकल्प, कठिन परिस्थितियों में भी कदम आगे बढ़ाना, जनता की सेवा में आत्मसमर्पित करना आदि इस तरह के कई उन्नत मूल्यों को ये शहीद अपनाकर व्यवहार में लागू किये हैं। हमारे सामने वे उज्ज्वल मिसालें रखे हैं। उस राह में बढ़ते हुए वे अपनी जिंदगी बिताये हैं वे मृत्युंजयी हैं।

उनके बारे में सभी क्रांतिकारियों व जनता को जरूर जानना है व उन्हें अध्ययन करना है। उन्हें जानने व अध्ययन करने का मतलब है हमारे देश में क्रांति करने की जरूरत क्या है, वह भी ज्यादातर किनको जरूरत है इसके बारे में जानना; इस क्रांति को कैसे संचालन करना है, इसके लिए किस तरह धैर्य को दर्शाना है इसके बारे में जानना; केवल एक समाजवादी क्रांति ही किस तरह जनसमूहों की सृजनात्मकता बाहर निकाल सकती है इसके बार में जानना; सच्चे जन नेताओं को कैसे सृजन करती है जानना; वर्गसंबंध कैसे रक्तसंबंध से ऊंचा है जानना; एक बेहतर दुनिया के लिए उगने वाली एक आकांक्षा कैसे हमें बतौर निस्वार्थ के रूप में बदल देती है जानना; विशेष परिस्थितियों के अनुरूप जोड़ सके तो एक वैज्ञानिक विचारधारा कैसे एक मजबूत शक्ति के रूप में बदलती है और क्रांतिकारी प्रयास कैसा होता है जानना।

लाल सलाम

क्रांतिकारी प्रयास का मतलब क्या है? आज के अर्द्ध औपनिवेशिक-अर्द्ध सामंती भारतवर्ष के समाज में जब साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल पूंजीपति वर्गों का शासन जारी है तब क्रांतिकारी प्रयास की एक विशिष्टता होती है। क्रांति में भाग लेना ''गैर कानूनी'' हो जाती है। क्रांति में शामिल होने का मतलब है जान से खेलना। उसमें शामिल होने से सब कुछ त्याग करने के लिए दृढ़ संकल्प लेना होगा। क्रांति में शामिल होने से क्या होगा, अगर शामिल नहीं होने से क्या होगा, एक विभाजन रेखा स्पष्ट रूप से खींची जाती है। विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में विभिन्न कर्तव्यों को पूरा करने के वास्ते क्रांतियां विभिन्न चरणों में संचालित की जाती हैं। नव जनवादी क्रांति के चरण में साम्राज्यवादी, सामंतवादी, दलाल नौकरशाह पूंजीवादी शक्तियों से दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए राजसत्ता को छीनना ही प्रधान कर्तव्य बनता है। इस कर्तव्य को पूरा कर क्रांतिकारी जनता के जनतांत्रिक शासन की स्थापना करते हुए क्रांति समाजवादी

2 दिसम्बर, 2015 को एक गुरिल्ला जोन में संपन्न पीएलजीए की 15वीं वर्षगांठ की सभा का एक दृश्य

क्रांति के दौर या चरण में प्रवेश करती है। तब क्रांतिकारी जनतांत्रिक राजसत्ता का इस्तेमाल कर जनता पर निर्भर होकर क्रांति को निरंतर जारी रखना ही प्रधान कर्तव्य होता है। संक्षिप्त में, समाजवादी क्रांति नव जनवादी क्रांति से और कठिन, जटिल व गहरी हो जाती है। लेकिन तब क्रांति और सुसम्पन्न हो जाती है। इस तरह के क्रांतिकारी प्रयास में अगली पंक्ति में खड़े हमारे अमर शहीदों से हमें सीख लेना है। चीन में सर्वहारा वर्ग का एक योद्धा, अमर शहीद कामरेड माई ह्सीन-टेह ने कहा ''मेरी सांस जब तक रहेगी तब तक मैं कभी दुश्मन के सामने नहीं झुकूंगा, संघर्ष को जारी रखूंगा, उत्पीड़ित मजदूर की मुक्ति के लिए अपनी भूमिका निभाता रहूंगा।''

भारतीय क्रांति के महान शिक्षक, हमारी पार्टी के संस्थापक एवं नेता कामरेड चारू मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी द्वारा रेखांकित की गई दीर्घकालीन लोकयुद्ध की राह को साकार करते हुए; भारतीय क्रांति के पथ पर सशस्त्र संघर्ष को एक बार फिर आंदोलन के एजेण्डे पर लाकर क्रांति में अग्रणी भूमिका निभाने वाले कामरेड अमूल्य सेन, चन्द्रशेखर दास, सरोज दत्ता, सुशीतल राय चौधरी, बाबुलाल विश्वकर्मा, जौहर, जगदीश मास्टर, पंचादी कृष्णमूर्ति, निर्मला, वेम्पटापू सत्यम, आदिभट्ला कैलाशम, बाबा भुजा सिंह, दया सिंह, अप्पू और वर्गीस के अरमानों को पूरा करने के लिए; नक्सलबाड़ी की सामयिक पराजय के बाद पुनः आंदोलन को विकसित कर और उच्चतर चरण में ले जाने में अग्रणी भूमिका निभाने वाले कामरेड श्याम, महेश, मुरली, पुलि अंजैया, प्रकाश मास्टर, कृष्णा सिंह, श्रीकांत, भक्तिदा, डेविड, सूर्यम, महेन्द्र सिंह, दामोदर, महेन्दर, रेड्डाप्पा, स्नेहलता, पद्मा, चिट्टेक्का, प्रेमलता, बेल्लि ललिता, और ऐसे सैकड़ों नेतृत्वकारी कामरेडों की शहादत से प्रेरणा लेते हुए, आंध्र प्रदेश में अपने साहसिक कार्रवाइयों से दुश्मन की रीढ़ को कंपित कर, अपनी जान को आहुति देने वाले स्पेशल एक्शन टीम (सेट) के अमर शहीद कामरेड जहीर, कृष्णा, शंकर, प्रवीण, लक्ष्मण द्वारा प्रेरित होकर हमारी पीएलजीए का गठन हुआ था।

क्रांतिकारी वीर योद्धा कौन है? किसे हम क्रांतिकारी वीरता कहते हैं? इसमें जनता की राजनीतिक चेतना, उनका साहस शामिल है, हमेशा त्याग के लिए तैयार रहते हुए, कष्ट व मृत्यु वरन करता है। अर्थात, यह जनता, सशस्त्र जन शक्तियों, उनसे उपलब्ध उन्नत किस्म के हथियारों व उनकी अत्यंत शक्तिशाली विचारधारा के उच्चतम लड़ाकू शक्ति है। वह शक्ति जनता में ही निहित है। इस युद्ध शैली को हमें आत्मसात करना है।

क्रांतिकारी योद्धा क्रांतिकारी संघर्ष में अपनी पहलकदमी, सृजनात्मकता, बुद्धिमता और ज्ञान को पूर्णरूपेण दर्शाता

चीन में सर्वहारा वर्ग का एक योद्धा, अमर शहीद कामरेड माई ह्सीन-टेह ने कहा ''मेरी सांस जब तक रहेगी तब तक मैं कभी दुश्मन के सामने नहीं झुकूंगा, संघर्ष को जारी रखूंगा, उत्पीड़ित मजदूर की मुक्ति के लिए अपनी भूमिका निभाता रहूंगा।''

क्रांतिकारी वीर योद्धा कौन है? किसे हम क्रांतिकारी वीरता कहते हैं? इसमें जनता की राजनीतिक चेतना, उनका साहस शामिल है, हमेशा त्याग के लिए तैयार रहते हुए, कष्ट व मृत्यु वरन करता है। अर्थात, यह जनता, सशस्त्र जन शक्तियों, उनसे उपलब्ध उन्नत किस्म के हथियारों व उनकी अत्यंत शक्तिशाली विचारधारा के उच्चतम लड़ाकू शक्ति है। वह शक्ति जनता में ही निहित है। इस युद्ध शैली को हमें आत्मसात करना है।

है। किसी भी तरह के गलत रुझानों से ग्रस्त हो तो उसे पार पाना है। पार्टी पॉलिसियों व निर्णयों को सही ढंग से समझना व अमल करना है। मुश्किलों को एक-एक करके पार पाना है। क्रांतिकारी युद्ध में या कोई अन्य क्रांतिकारी प्रयास में जीत से जीत की ओर आगे बढ़ना है। क्रांतिकारी योद्धा अगर इस परंपरा को आत्मसात करते हैं तो वे अत्यंत शक्तिमान होते हैं, बुद्धिमता को, कल्पना शक्ति को हासिल कर सकते हैं। पीएलजीए सशस्त्र यूनिटें अगर इस तरह की परंपरा को आत्मसात करती हैं तो वे अत्यंत जुझारू व शक्तिशाली होंगे। वे बहुत ही लचीले व्यवहार करते हुए अजेय बन सकती है।

हमें मालेमा से शिक्षा मिलती है कि साम्राज्यवाद अपने आक्रमणकारी युद्धों में जरूर हार जाता है। इसका प्रधान कारण है उसका जनता से अलग-थलग पड़ जाना व जनता का दुश्मन बन जाना। वह कुछ मामले में जनता को गुमराह करने में सफल हो सकता है, लेकिन अंत में वह जरूर हार जाता है। उससे चलने वाला एक छोटा-सा युद्ध से एक छोटी हार, बड़ा युद्ध से बड़ी हार और संपूर्ण युद्ध से संपूर्ण पतन की ओर धकेल देता है। जनता के खिलाफ चलाने वाला किसी भी साम्राज्यवादी युद्ध द्वारा और नहीं कुछ होने वाला है। इसलिए साम्राज्वादियों व प्रतिक्रियावादियों से इतिहास का निर्माण नहीं हो सकता, अत्याधुनिक हथियार व टेकनोलॉजी इतिहास का निर्माण नहीं कर सकता। इतिहास को आगे बढ़ने वाली चालक शक्ति जनता ही है। जनता ही इतिहास का निर्माता है।

भारतवर्ष में जब से साम्यवादी सिद्धांत जड़ जमाया हुआ है तब से हमारा क्रांतिकारी आन्दोलन के अतिप्रमुख लक्षणों में से एक यह रहा है कि हमारे देश की मुक्ति के लिए कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों व जनता उज्ज्वल आत्मबलिदान करने में आगे रहना। इस 11 साल सहित पिछले 48 साल के समयकाल में भारतीय क्रांति में अनगिनत अमर शहीद अगर इस तरह का आत्मबलिदान नहीं किये होते तो, इस 11 साल में जो प्रमुख व नयी जीत व सफलताएं हासिल किए हैं, उसमें से एक भी हमें प्राप्त करना नमुमकिन होता।

भाकपा (माओवादी) गठन की घोषणा के साथ ही भारत का शोषक-शासक वर्ग इस देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए एकमात्र सबसे बड़ा खतरा के रूप में घोषित कर क्रांतिकारी आन्दोलन को पूरी तरह सफाया करने के लिए देशव्यापी चौतरफा हमला तेज कर दिया। केन्द्र व राज्य सरकारों से जारी इस फासीवादी चौतरफा हमला का प्रतिरोध करते हुए भारतवर्ष में जारी लोकयुद्ध को आगे बढ़ाने के जरिए इस 11 साल में यानी 2004 अक्टूबर से 2015 दिसम्बर तक लगभग 1930 संख्या में इस धरती के उत्तम सपुत्री व सपूत शहीद हुए। इनमें से लगभग 460 महिला कामरेड हैं। पीएलजीए की तरफ से दुश्मन पर किये गये शानदार हमलों में 178 पार्टी के नेता व कार्यकर्ता और पीएलजीए के कमांडर व योद्धा एवं जनता शहीद हुए हैं।

केन्द्र व राज्य पुलिस, अर्द्धसैनिक बलों, कमांडो बलों द्वारा बेरोकटोक जारी कई फर्जी मुठभेड़ों में सैकड़ों की संख्या में क्रांतिकारियों को और उसको मदद देनेवाली जनता को भी अपनी जान गंवांनी पड़ी। तेलंगाना में अंदुगुलामेदि, दंडकारण्य में कंचाल जैसे कोवर्ट ऑपरेशनों में; तेलंगाना में मानाला, कोडावाटंचा, आंध्र प्रदेश में बद्वेल, बिहार में डोभी, खगड़िया-मुंगेर, दंडकारण्य में बेतकठी, पश्चिम बंग में भीतर आम्दा (पूर्वी सिंहभूम, झारखंड) जैसी घटनाओं में जहर देकर किए गए कोवर्ट ऑपरेशनों में; आंध्र प्रदेश में शोशाचलम, दाराबोइनापेंटा, दक्षिण तेलंगाना में संगडि गुंडाला, दंडकारण्य में चिनारि, दोबूर, मेचानार, तिरका, माकड़चुव्वा, पुव्वर्ति, भटपर, सिंधेसुर, मेड्रि, बुकमरका, बड़ेचेलमा, उत्तर तेलंगाना में उराटम, उत्तर बिहार में चातुरपट्टी (मुजफ्फरपुर), दरमहा (पूर्वी चंपारण), बिहार

तेलंगाना के वरंगल जिले में कामरेड सृति और विद्यासागर की फर्जी मुठभेड़ की निन्दा करें!
(डेमोक्रेटिक एण्ड क्लास स्ट्रगल के सौजन्य से)

में लंबनी मद्दाई (बिहार), मांझीडीह (कटोरिया, बांका), बाराचट्टी (गया), झारखण्ड में लुहुर (लातेहार), बंदरचुवां-चंचलचुंआ, मुरहु (खूंटी), तिलैया (हजारीबाग), गारू (लातेहार), सिमराढाव (गिरिडीह), बुकर (हजारीबाग), खैराटांड़ टोंगरी (लातेहार), लकड़मंदा (चतरा), गनई, कर्नाटक में मेनसिनहद्या (चिकमगलूर) जैसे सूचना आधारित घेराबंदी (encirclement) हमलों में; भूंईटोली (बिहार), केरिमेरि (तेलंगाना), पड़कीपाली (महासमुंद, छत्तीसगढ़-ओड़िशा सीमा), सामना (आंध्र-ओड़िशा सीमा-एओबी), दंडकारण्य में बोडम, गोविंदगांव जैसे दुश्मन द्वारा घात लगाकर किये गये हमलों (एम्बुश) में; चेरुवूर (एओबी); कुंडेर-मेट्टगुड़ा (डीके) जैसे दुश्मन के काउंटर एम्बुशों में कपटपूर्ण तरीके से कई कामरेडों की हत्या की। कई घटनाओं में घायल हो जाने से दुश्मन के हाथ में कई कामरेडों से गुप्त सूचना पाने की मंशा से घोर यातनाएं दी गयी व गोली मारकर हत्या कर दी गयी। उनमें से कुछ कामरेडों को अत्यंत अमानवीय ढंग से जिन्दा आग लगा दिया गया व जिन्दा दफना दिया गया। उसके हाथ में छोड़े गये कई कामरेडों को क्रूर यातनाएं देने की वजह से उन्हें जान से हाथ धोना पड़ा। कुछ कामरेडों ने इन यातनाओं को न सह पाने के कारण आत्महत्या की। और कुछ घटनाओं में कुछ कामरेड को निशाना करके सड़क दुर्घटना का बहाना बनाकर हत्या की गयी। पुलिस बल, विभिन्न सामंती निजी सेनाएं, शांतिसेना, सशस्त्र पीपुल्स मोर्चा, नरसा कोबरा, सलवा जुडूम, नागरिक सुरक्षा समिति, सेंद्रा समिति, टीपीसी, जेपीसी, जेजेएमपी, पीएलएफआई, जनहित क्रांति दल जैसे सरकार प्रायोजित प्रतिक्रांतिकारी खुफिया गिरोह, सीपीएम की हर्मद वाहिनी, गण प्रतिरोध कमेटी जैसे सामाजिक फासीवादी शक्तियों, जेएमएम जैसे जनविरोधी पार्टियों से हाथ मिलाकर क्रांतिकारियों की हत्या की गयी। दंडकारण्य में गेल्लापल्ली, कोत्रापाल, हरियाल, पोट्टेम, मनकेली, पेदाकोरमा, मोसला, कर्रेमरका, मल्लूर, बेलनार, डुंगा, गगनपल्ली, बडेनेंड्रा, कोत्ताचेरुवु, रेगडगट्टा, पोंजेर, अवनार, वीरापुरम, पुल्लुम, अरलमपल्ली, सिंगारम, कुट्रेम, मडकागुड़ेम, पुसनार, पालाचेलमा, गट्टापाड़, एंडापाड़,

क्रांतिकारी योद्धा अगर इस परंपरा को आत्मसात करते हैं तो वे अत्यंत शक्तिमान होते हैं, बुद्धिमता को, कल्पना शक्ति को हासिल कर सकते हैं। पीएलजीए सशस्त्र यूनिटें अगर इस तरह की परंपरा को आत्मसात करती हैं तो वे अत्यंत जुझारू व शक्तिशाली होंगे। वे बहुत ही लचीले व्यवहार करते हुए अजेय बन सकती है।

सातनार, चिनारि, वेच्चापाल, जाक्केम, दुरवनदुर्बा, गोल्लागुड़ेम, गच्चमपल्ली, गुमपाड़, सुरपनगुड़ा, कोरमजेड़, गुमियापाल, ताड़गाव, हट्लूर-कोमरा, ताकिलोड़, ओंगनार, रंगइगुड़ा, सवरगांव, गोरनम, मोरपल्ली, ताड़मेट्ला, कोत्तापल्ली, बुरगिल, तिम्मापुर, सार्केनगुड़ा, गुरगुट्टा, एडसमेट्टा, तोड़कूर; झारखण्ड में बढ़निया, पेटी टोली, अमवाटीकर, जमगई, परसा चुंआ, बलुआ बाजार, लकड़मंदा; बिहार में ताड़को, लादी, फुलवरिया-कोड़ासी, गोबरदाहा जैसी घटनाओं में टीपीसी द्वारा हत्याकाण्ड, डुमरिया और रामजोल जैसे घटनाओं में पीएलएफआई द्वारा हत्याकाण्ड, एसपीएम द्वारा हत्याकाण्ड, खगड़िया-मुंगेर सीमा पर गंगा नदी किनारे जहर देकर प्रतिक्रियावादियों द्वारा 10 साथी का हत्याकाण्ड; पश्चिम बंग के लालगढ़ इलाके में खास जंगल, चिकुरडंगा, बोयरा, छेड़ाबनी, बंदरबनी, दुली (रंजा), मेटाला, बारीकुल, पटमदा, नेताई, बुढ़ीशोल; एओबी में गुंजीवाड़ा, नारायणपटना, नुवागुड़ा, शिलाकोटा; ओड़िशा में पड़कीपाली, काशीपुर, जाजपुर जैसे दसियों नरसंहारों में सैकड़ों क्रांतिकारियों व आम जनता की निर्मम हत्या कर दी गयी। कई महिला कामरेडों, ग्राम महिला संगठन के कार्यकर्ताओं व आम महिलाओं की भी पुलिस व प्रतिक्रांतिकारी खुफिया गिरोह द्वारा पकड़कर सामूहिक बलात्कार कर हत्या की गयी। कुछ कामरेड कैन्सर, मलेरिया जैसे खतरनाक बीमारियों से ग्रस्त होकर और सर्पदंश से, अन्य दुर्घटनाओं में, जेल में निरंकुश अधिकारियों की लापरवाही से समय पर इलाज नहीं मिलने के कारण अंतिम सांस ली।

इस 11 साल में भारत के लोकयुद्ध के सेनानी व पार्टी के **केन्द्रीय कमेटी सदस्य** 10 कामरेड शहीद हुए हैं। पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड शमशेर सिंह शेरी (करम सिंह), चेरुकूरि राजकुमार (आजाद), मल्लोजुला कोटेश्वरलु (रामजी, किशन जी), सुशील राय (बरुण दा); केन्द्रीय कमेटी सदस्य कामरेड चंद्रमौलि (बीके, नवीन), अनुराधा गांधी, परिमल सेन (अजय दा), संदे राजमौलि (प्रसाद), पटेल सुधाकर, भाकपा (मा-ले) नक्सलबाड़ी के पूर्व सचिव व वरिष्ठ नेता राउफ; पार्टी के **सीनियर नेता** गोरु माधव राव (श्रीकाकुलम योद्धा, सच्ची कम्युनिस्ट, आंध्र प्रदेश), जुव्वाजि वेंकटा सुब्बैया (आंध्र प्रदेश), विभिन्न **राज्य कमेटी के नेता व राज्य स्तर के कामरेड** - साकेत राजन (कर्नाटक राज्य कमेटी सचिव), रवि (मैमुद्दीन, उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड-उत्तर बिहार-3यू सैक सचिव), यादन्ना (तेलंगाना), मंगतू (दंडकारण्य), भीम (प्राण, उत्तर छत्तीसगढ़), माधव (आंध्र प्रदेश राज्य कमेटी सचिव), श्रीधर (आंध्र प्रदेश राज्य कमेटी के सचिवालय सदस्य), गौतम (आंध्रा-ओड़िशा सीमा), विकास (दंडकारण्य), सुदर्शन (आंध्र प्रदेश), राघवुलु (आंध्र प्रदेश), श्रवण (उत्तर छत्तीसगढ़), सोमन्ना (तेलंगाना राज्य कमेटी के सचिवालय सदस्य), राहुल (उत्तर छत्तीसगढ़), मस्तानराव (आंध्र प्रदेश स्पेशल कमेटी सचिव), सुकांतो (पश्चिम बंग), रामचंदर (आंध्र प्रदेश), रणदेव (राजू, सीआरसी कंपनी-1 का राजनीतिक कमिसार, आंध्रा-ओड़िशा सीमा), निर्मल (गोविंद राय, पश्चिम बंग), शशध र महतो (किरण, एसएमसी सदस्य, पश्चिम बंग), कोम्मा (आंध्रा-ओड़िशा सीमा के एसजेडसी वैकल्पिक सदस्य),

शाखमूरि अप्पाराव (केन्द्रीय मिलिटरी इंटलिजेन्स का निदेशक), सूर्यम (सीआरसी कंपनी-2 का राजनीतिक कमिसार), अभिषेक (कर्नाटक), शेषन्ना (तेलंगाना), श्रीकांत (दंडकारण्य), महिता (रीपोस), सुधाकर (तेलंगाना), गंटि प्रसादम (आंध्र प्रदेश), उर्मिला (सरिता गंझू, बीजे सैक); विभिन्न **रीजनल कमेटी के नेता व रीजनल स्तर के कामरेड** - विनय (सेंट्रल इंस्ट्रक्टर), शैलेंद्र सिंह (नितांत, इंचार्ज, बिहार रीजनल मिलिटरी कमिशन), सुशील (नरेश भुईयां, बिहार), अरुण (पश्चिम बंग), ललेश (बिहार), नगीना पंडित (बलवंत, बिहार), विजय (दंडकारण्य), सिद्धार्थ बोर्गोहेन (असम), श्रीचंद मांझी (उदय, उत्तर बिहार), चंदन (बिहार), सिलवेस्टर (झारखण्ड); विभिन्न **जिला कमेटी के नेता व जिला स्तर के कामरेड** - केंद्रीय कमेटी का स्टाफ वेंकटेश (जन सुरक्षा सेवा, आंध्र प्रदेश), सोलिपेटा कोंडल रेड्डी (रमणा, टेक विभाग, आंध्र प्रदेश), बासुदेव महतो (मुखिया, झारखंड), बिहार के निरंजन (कंपनी कमांडर), नाथुन (मध्य जोनल कमेटी का सचिव), अरुण (सोन गंगा-विंध्यांचल), प्रदीप (बीजे सैक इंस्ट्रक्टर), संजय कोल (यू जोन), शंकर (यू जोन), अमृत (यू जोन), अर्जुन (....... 2008), सत्यम (.......... 2008), कृष्ण यादव, कमलेश सिंह, वीरेन्द्र राणा (सोन गंगा-विंध्यांचल का जोनल कमांडर), पारस, वीरू (धर्मेन्द्र), जयकुमार यादव, अनुराग यादव (कोयल-शंख), झारखंड के मनजीत हेमब्रम (जेबी जोन), अशोक (वीरेन्द्र महतो, दक्षिण जोन), डेविड महतो (दक्षिणी जोन), सतीश (मधुसूदन तारकोद, दक्षिण जोन), तेलंगाना के रमेश (जिला कमेटी सचिव, निजामाबाद), रवि (जिला कमेटी सचिव, नलगोंडा), बाबन्ना (निजामाबाद), रंजीत (सि.का.स.), श्रीकांत (मोपोस), श्रीनु (करीमनगर), संतोष (महबूब नगर), रघु (महबूब नगर), राजू (नलगोंडा), मुरली (नलगोंडा), जनार्धन (आदिलाबाद), सलीम (आदिलाबाद), जगदीश (खम्मम जिला कमेटी सचिव), मधु (वरंगल), नरसिंहा (नलगोंडा), सुदर्शन (महबूब नगर), सत्यम (नलगोंडा), पद्मा, (आदिलाबाद), प्रभाकर (महबूब नगर), सागर (खम्मम जिला कमेटी सचिव), दया (वरंगल), पुनम (तेलंगाना प्लाटून कमांडर), नरेश (आदिलाबाद), पुष्पा (वरंगल), आंध्र प्रदेश के विजय भास्कर (नल्लामला), मोहन (कर्नूल), आनंदरेड्डी (अनंतपुर), सुरेश (जिला कमांडर-इन-चीफ, गुंटूर), कृष्ण नायुडू (अनंतपुर), रमणा (अनंतपुर), मोहन, प्रभाकर (गुंटूर), सरिता, संजीव; दंडकारण्य के मोहन (पश्चिम बस्तर डिविजनल कमांडर-इन-चीफ), मधु (कंपनी-2 कमांडर), तिरुपति (कंपनी-1 कमांडर), बद्रू (कंपनी-2 उप कमांडर), शंकर (कंपनी-1 के प्लाटून कमांडर), चंदना (मोपोस), अमन (पश्चिम रीजन), शंकर (गढ़चिरोली), इंदिरा (गढ़चिरोली), हेमला मासा (कंपनी-2 कमांडर); आंध्रा-ओड़िशा सीमा इलाके के कड़ारि रामुलु (विशाखापट्टनम), सुधीर (मलकानगिरि), शरत (विशाखापट्टनम), पश्चिम बंगाल के विकास (ईस्ट्रन रीजनल कमान सदस्य), महाराष्ट्र के राजू (बालाघाट), नागेश (गोंदिया डिविजनल कमांडर-इन-चीफ), लालसू, 3यू के राजेन्द्र, उत्तर छत्तीसगढ़ के अजय (सरगुजा-गढ़वा), श्याम बिहारी, मानस, छोटन गोंड; ओड़िशा के दसूराम मलेका (बासधारा), रिंकी, कोसाल (आयतू, प्रोटेक्श प्लाटून कामंडर, सीसीएम गार्ड), रवि (श्रीनिवासराव, काशीपुर), सुनील (एसडीएस), मोहन (सुक्कू, बीबीएम), कर्नाटक के मनोहर, पश्चिम बंग के रोहित; विभिन्न **सबजोनल कमेटियों के सदस्य, एरिया कमेटियों के सचिव, प्लाटून कमांडर व प्लाटून डिप्यूटी कमांडर** - दंडकारण्य के रमेश (प्लाटून-17 कमांडर, उत्तर बस्तर), जगदीश (कंपनी-1 के प्लाटून कमांडर, माड़), रतन (प्लाटून-2 कमांडर, पश्चिम बस्तर), चैतू (प्लाटून-7 कमांडर, गड़चिरोली), बाबू (कंपनी-3 के प्लाटून कमांडर, सबडीवीसी स्तर, दक्षिण बस्तर), मड़काम हंदा (एरिया कमांडर-इन-चीफ, दक्षिण बस्तर), महरू (कंपनी-10 के प्लाटून कमांडर, गढ़चिरोली), हिड़माल (प्लाटून-10 कमांडर, दक्षिण बस्तर), किशोर (एरिया कमेटी सचिव, पूर्व बस्तर), उधम सिंह (एरिया कमेटी सचिव, मानपुर); आंध्र प्रदेश के विजया (एरिया कमेटी सचिव, गुंटूर); झारखंड के चंदन (प्लाटून कमांडर), रंजन (प्लाटून कमांडर), कुंदन (सबजेडसीएम), सूर्या (सबजेडसीएम), योद्धा (सबजेडसीएम), लाहौर (सबजेडसीएम, इंस्ट्रक्टर), पर्वेज (स्पेशल प्लाटून कमांडर), जगदीश महतो (सबजेडसीएम, उत्तर बिहार), आकाश (प्रकाश मरांडी, प्लाटून कमांडर), विक्रम मुंडा (प्लाटून कमांडर), राजेश मुंडा (सबजेडसीएम), भूनाथ (सबजेडसीएम), सलीम महतो (सबजेडसीएम), मध्य जोन के मदन (सबजेडसीएम), प्रफुल्ल यादव (प्लाटून डिप्यूटी कमांडर), प्रमोद (प्लाटून डिप्यूटी कमांडर), कोयल-शंख जोन के शत्रुधन मिस्त्री (चंदन जी, सबजेडसीएम), सतेश्वर गंझू (सबजेडसीएम), रामपुकार कोरवा (शेखर, कंपनी के प्लाटून कमांडर), नीरज (सबजेडसीएम), कामेश्वर सिंह (ब्रजेश जी, सबजेडसीएम), लालमन सिंह खेरवार (सबजेडसीएम), हंसराज (सबजेडसीएम, कौलेश्वरी सबजेन), रामविलास तांती (प्लाटून कमांडर, सबजेडसीएम), टीपा तांती (सबजेडसीएम), भूपेश (संतोष, सबजेडसीएम), तेलंगाना के सबिता (एरिया कमेटी सचिव, केकेडब्लुयू), महाराष्ट्र के सुनंदा (सबजेडसीएम), उत्तर छत्तीसगढ़ के परिमण (कंपनी, सबजेडसीएम), ओड़िशा के समीरा (एरिया कमेटी सचिव, मैनपुर); पार्टी के **वरिष्ठ कार्यकर्ता कामरेड** सुनीता (टेलर, दंडकारण्य), शहीदा (शिक्षक, दंडकारण्य) जैसे कामरेड, और सैकड़ों **प्राथमिक पार्टी सदस्य, पीएलजीए के सेक्शन कमांडर व योद्धा, विभिन्न क्रांतिकारी जनसंगठन व क्रांतिकारी जन कमेटियों के अध्यक्ष, कमेटी सदस्य व साधारण सदस्य, विभिन्न जनमिलिशिया के कमानों के कमांडर-इन-चीफ, मिलिशिया यूनिटों के कमांडर व**

(शेष भाग पृष्ठ-16 में...)

पार्टी के हाथ में एक जादूई हथियार व मुख्य साधन के रूप में सच्ची क्रांतिकारी जनसेना है - एकताबद्ध पीएलजीए

नक्सलबाड़ी आदि आन्दोलनों में पहली बार दुश्मन के बलों और जमीन्दारों के हाथों से हथियार छीना गया और जनसेना का भ्रूण रूप में गुरिल्ला दस्तों का गठन हुआ है।

भारतवर्ष में जनसेना का गठन एक बहुप्रतीक्षित सपना था। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के साथ अंकुरित हुआ वह सपना लगभग डेढ़ शताब्दी के समय काल में भी भी एक सपना जैसा ही रह गया। 1940-50 के दशकों में तेलंगाना सशस्त्र किसान संघर्ष, तेभागा किसान संघर्ष, उसके बाद 1960 दशक के अंत में कामरेड चारू मजुमदार व कामरेड कन्हाई चटर्जी के नेतृत्व में सशस्त्र संघर्ष को भारतीय क्रांति का एजेण्डा पर फिर एक बार लाने वाली नक्सलबाड़ी वसंत वज्रनाद, कांकसा-सोनारपुर क्रांतिकारी किसान उभारों के साथ वह सपना और मजबूत होने लगा था। नक्सलबाड़ी उभार पीछे हटने के बाद फिर कई साल पिछड़े ग्रामीण इलाकों व रणनीतिक इलाकों में किए गए प्रयास के परिणामस्वरूप उस समय के आंध्र प्रदेश, बिहार में सशस्त्र कृषि क्रांति की चिंगारी दावानल का रूप लेते हुए सशस्त्र जन गुरिल्ला दस्तों में जान फूंक दी। भारत की उत्पीड़ित जनता व विश्व का उत्पीड़ित राष्ट्रीयता व जनता के बहुप्रतीक्षित सपना साकार होने लगा था। भारतवर्ष में दीर्घकालीन लोकयुद्ध का विकास के साथ-साथ उक्त दस्ते क्रमश: प्लाटून व कंपनियों में विकासित हुए। जनसेना का गठन के लिए परिस्थिति परिपक्व हुई।

दुश्मन के द्वारा एक कोवर्ट आपरेशन के तहत हमारी भारतीय क्रांति के महत्वपूर्ण नेता कामरेड श्याम, महेश व मुरली को पकड़कर तीव्र यातना देने के बाद 2 दिसम्बर 1999 को हत्या कर दिया था। उनकी शहादत के एक साल के बाद, उनके सम्मान में तथा उनकी हत्याओं का बदला लेने की शपथ लेते हुए, हजारों अमर शहीदों के सपनों को व भारत की उत्पीड़ित जनता के बहुप्रतीक्षित आकांक्षाओं को साकार करने के लक्ष्य को लेकर भारतीय राज्य को उखाड़ फेंककर जनता को मुक्ति दिलायेंगे- इस घोषणा के साथ जनमुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) का गठन 2 दिसम्बर 2000 में किया गया था।

हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) दशाब्दी वर्षगांठ मनाने के अवसर पर पिछले दस सालों में भारत के लोकयुद्ध व नव जनवादी क्रांति के विकास करने में पीएलजीए किस तरह अपनी भूमिका निभायी है, वह इस प्रकार है:

भाकपा (माओवादी) का गठन होने के साथ अभूतपूर्व ढंग से भारत की नव जनवादी क्रांति का एकमात्र मार्गदर्शन केन्द्र के रूप में विकसित हुआ इस 11 साल के समय काल में उसके हाथ में एक जादूई हथियार तथा मुख्य साधन के रूप में जनमुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) भारत के

नल्ला आदिरेड्डी
(श्याम) (45)
सीसीएम-पीबीएम

वै. संतोष रेड्डी
(महेश) (35)
सीसीएम

शीलम नरेश
(मुरली) (37)
सीसीएम

2 दिसम्बर 1999 को आंध्र प्रदेश के कोय्यूर जंगल में फर्जी मुठभेड़ में शहीद हुए

भारतीय क्रांति के महत्वपूर्ण नेता कामरेड श्याम, महेश व मुरली को पकड़कर तीव्र यातना देने के बाद 2 दिसम्बर 1999 को हत्या कर दिया गया था। उनकी शहादत के एक साल के बाद, उनके सम्मान में तथा उनकी हत्याओं का बदला लेने की शपथ लेते हुए... भारतीय राज्य को उखाड़ फेंककर जनता को मुक्ति दिलायेंगे- इस घोषणा के साथ जनमुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) का गठन किया गया था।

क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ने के क्रम में गठित हुई जन गुरिल्ला शक्तियां क्रमशः विकास होते हुए, बाद में भारत के क्रांतिकारी इतिहास में पहली बार 2 दिसंबर 2000 को जनमुक्ति छापामार गुरिल्ला सेना (पीएलजीए) का गठन हुआ। पार्टी के नेतृत्व में आधार इलाकों को स्थापित करने के लक्ष्य से राजसत्ता के प्रतिक्रांतिकारी सशस्त्र बलों के खिलाफ लंबे समय से सशस्त्र संघर्ष को चलाते हुए, सशस्त्र कृषि क्रांति को आगे बढ़ाने में क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में पीएलजीए का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस प्रकार दीर्घकालीन लोकयुद्ध की राह सैद्धांतिक तौर पर ही नहीं, बल्कि उक्त संघर्षों के विशेष आचरण के जरिये भी अस्तित्व में आई थी। इस दीर्घकालीन लोकयुद्ध के क्रम में अपनी पार्टी मजबूत हुई। सेना (पीएलजीए) का विकास हुआ।

लोकयुद्ध के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। पार्टी द्वारा हासिल की गई प्रत्येक जीत में पीएलजीए द्वारा संचालित गुरिल्ला युद्ध ही निर्णायक व मददगार था। पार्टी के नेतृत्व में उसने हमारी भारत की क्रांतिकारी राजनीतिक व सैनिक लाइन को और विकसित किया, गुरिल्ला युद्ध में सर्वश्रेष्ठ प्रगति हासिल की। दुश्मन के हमलों से पार्टी व जन आंदोलनों तथा जनता की नई राजनीतिक सत्ता की इकाइयों को बचाने, संगठित व विस्तार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1969 में भाकपा (मा-ले) व एमसीसी को हमारी भारतीय क्रांति के महान नेता व शिक्षक कामरेड चारू मजुमदार व कामरेड कन्हाई चटर्जी द्वारा गठन करने से लेकर, 2004 में एकताबद्ध भाकपा (माओवादी) का गठन के बीच कृषि क्रांति के तहत 35 सालों में प्रबल होने वाला लम्बा क्रांतिकारी व्यवहार व भीषण वर्ग संघर्ष के तहत हमारी दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन को संरक्षित किया गया, उसकी जांच-पड़ताल की गयी तथा सुसंपन्न हुई। यह सब दुश्मन से लगातार जारी पाशविक दमन का प्रतिरोध के दौरान ही हुई थी।

हमारी पार्टी एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में तय प्रधान कार्य को पूरा करने के लिए पीएलजीए ने आठ राज्यों के

कामरेड कौमुदी, लता, जनार्दन, शीतल, हेमंत और मनोहर के झण्डा मैदान में 21 सितम्बर, 2004 को आयोजित भाकपा (माओवादी) की स्थापना सभा के दृश्य

भारत के दीर्घकालीन लोकयुद्ध

कामरेड चारू मजुमदार की रचनाओं से

'इस जमाने की मौजूदा विशेषता यह है कि सरकार हर किसी आन्दोलन पर हिंसक हमले करते हुए लड़ रही है। इसीलिए जनता के लिए सशस्त्र प्रतिरोध आन्दोलन सबसे अहम जरूरत बनकर उभरी है। इसीलिए जन आन्दोलनों के हित में अब मजदूर वर्ग, संघर्षरत किसान जनता और तमाम संघर्षरत जनता का यह आह्वान करना होगा कि – (1) हथियार उठाओ; (2) मुकाबला करने के लिए हथियारबन्द टुकड़ियाँ गठित करो; (3) प्रत्येक हथियारबन्द टुकड़ी को राजनीतिक शिक्षा दो। यदि ऐसा आह्वान न किया जाय, तो यह बिना सोचे-समझे निशस्त्र जनता को मौत के मुँह में धकेलना हो जायेगा।'

'आज पार्टी कार्यकर्ता ग्रुपों का मतलब है कि उनको "युद्धरत टुकड़ियाँ" होना होगा। उनका मुख्य दायित्व राजनीतिक प्रचार अभियान और प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियों पर प्रहार करना होगा। हमें हमेशा माओ त्सेतुङ की इस शिक्षा को याद रखना होगा कि – "हमले केवल हमले करने के लिए ही नहीं किये जाते, हमले सफाया करने के लिए किये जाते हैं।" हमले मुख्यतः निम्न पर किये जाने चाहिए – (1) पुलिस, सेनाधिकारी सरीखे राजकीय तन्त्र के प्रतिनिधि; (2) घृणित नौकरशाही; (3) वर्ग दुश्मन। इन हमलों का मकसद हथियारों का संग्रह करना भी होना चाहिए। आज के जमाने में ऐसे हमले हर कहीं किये जा सकते हैं, शहरों में भी और देहातों में भी। हमें खास तौर पर किसानों के इलाकों पर ध्यान देना होगा।'

'जब हम सशस्त्र बल की बात करते हैं तब हमारे दिमाग में किसानों द्वारा बनाये गये हथियार होते हैं। हमें भी ऐसे ही हथियार चाहिए। किसान हथियार एकत्रित करने के लिए आगे आ रहे हैं या नहीं, इस आधार पर हम तय कर सकते हैं कि

(शेष भाग पृष्ठ-11 में...)

कामरेड कन्हाई चटर्जी की रचनाओं से

'कृषि-क्रांति ही है साम्राज्वाद तथा सामंतवाद विरोधी राष्ट्रीय व जनवादी क्रांति अथवा नवजनवादी क्रांति की धुरी या अन्तर्वस्तु। यह कृषि-क्रांति ही है व्यापक किसानों को सक्रिय बनाने का एवं नवजनवादी क्रांति के उभार में शामिल करने की मूल कुंजी। कृषि-क्रांति ही है, वह बीज जिससे क्रमशः परन्तु, सुनिश्चित रूप से ही जन्म ले सकती है व विकसित हो सकती है वह दुर्जय लाल फौज जो दुश्मन की सैनिक शक्ति की ताकत को सहज से ही अतिक्रमण कर सकती है एवं अन्त तक दुश्मन को अन्तिम रूप से पराजित कर सकती है।'

'देहाती इलाकों में कृषि-क्रांति के छापामार युद्ध का विकास और विस्तार न केवल किसानों के संग्राम के दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण है बल्कि, वह मजदूर वर्ग और शहर की व्यापक जनता के संग्राम के दृष्टिकोण से भी असाधारण महत्वपूर्ण है।

वास्तविक तजरूबा ही यह शिक्षा देता है कि अंतिम विश्लेषण में, अर्द्ध-औपनिवेशिक और अर्द्ध-सामंती किसी भी देश में कृषि-क्रांति का सशस्त्र संग्राम के निर्माण तथा विकसित करने के काम से अलग-थलग रूप में चलाए गए किसी भी संग्राम - चाहे वह देहात में ही हो अथवा शहर में ही हो - वह अर्थवादी, सुधारवादी और संशोधनवादी दोषों से मुक्त रह नहीं सकता। केवलमात्र कृषि-क्रांति के सशस्त्र संग्रामों के निर्माण तथा विकसित करने के काम के साथ युक्त होकर ही अथवा दूसरे शब्दों में कृषि-क्रांति के सशस्त्र संग्रामों को केन्द्रित कर और इसके सहायक संग्रामों के रूप में ही, गांव और शहर का कोई भी संग्राम सही मायने में क्रांतिकारी चरित्र प्राप्त कर सकता है। जब किसान-क्रांति का गुरिल्ला युद्ध शुरू नहीं हुआ है तब समस्त संगठनों और संघर्षों का उद्देश्य और काम होता है इस प्रकार के युद्ध का निर्माण करना। जब इस प्रकार का युद्ध शुरू हुआ है तब समस्त संगठनों और संघर्षों का उद्देश्य और काम होता है इस प्रकार के युद्धों के साथ युक्त होना और उनको आगे बढ़ाते हुए उन्हें उन्नत करना। इस नीति को कथनी और करनी दोनों में न मानने से कृषि-क्रांति का गुरिल्ला युद्ध और दीर्घकालीन लोकयुद्ध का निर्माण करना तथा उसे आगे बढ़ाना कदापि संभव नहीं है।'

'अर्द्ध-औपनिवेशिक तथा अर्द्ध-सामंती व्यवस्था के दबाव से जर्जरित व उत्पीड़ित किसान-समुदाय ही है इस नयी जनवादी क्रांति में सर्वहारा वर्ग का सबसे दृढ़ व भरोसेमंद दोस्त एवं सशस्त्र कृषि-क्रांति ही है विशाल किसान जनता की हथियारबन्द क्रांतिकारी शक्ति का अथाह स्रोत सृजन करने और दुर्जय जनफौज कायम करने की मूल कुंजी। किसान-जनता को नयी जनवादी क्रांति के छापामार युद्ध तथा दीर्घकालीन लोकयुद्ध के मार्ग में संचालन करके ही एवं सिर्फ इस रूप से ही मजदूर-वर्ग तथा उनकी कम्युनिस्ट पार्टी नेतृत्व दे सकती है। यही है सर्वहारा-वर्ग के नेतृत्व को कायम करने की एक अनिवार्य कार्यनीतिगत नीति और शर्त भी। हथियारबन्द संघर्षों के लिए बनी मजदूर-किसान की सही मैत्री की बुनियाद पर ही कायम हो सकता है सामंतवाद, साम्राज्यवाद तथा दलाल पूंजीपति गुट के खिलाफ जनता का वृहत्तर संयुक्त मोर्चा। संयुक्त मार्चा ही है सशस्त्र क्रांति का एक अन्यतम हथियार।'

'सही लाइन और नीति एवं पद्धति अपनाकर सुनियोजित ढंग से देहाती

(शेष भाग पृष्ठ-11 में...)

की राह तय करने में...

(कामरेड चारू मजुमदार की रचनाओं से...)

वे राजनीतिक रूप से जागरूक हो चुके हैं या नहीं।'

'मजदूर वर्ग के हिरावल दस्ते को गाँव में सशस्त्र संघर्ष में हिस्सेदारी करने जाना होगा। मजदूर वर्ग का मुख्य कार्यभार है – ''देहाती इलाकों में हथियार इकट्‌ठा करें और सशस्त्र संघर्ष के आधारों का निर्माण करें।'' मजदूर वर्ग की राजनीति, सत्ता दखल की राजनीति इसी को कहा जाता है। हमें मजदूर वर्ग को इसी राजनीति के आधार पर जागरूक करना होगा।'

'किसानों को बन्दूकें कहाँ से मिलेंगी? वर्ग दुश्मनों के पास बन्दूकें होती हैं और वे गाँव में ही रहते हैं। उनसे बन्दूकें जबरन लेनी होंगी। वे स्वेच्छा से अपने हथियार हमें नहीं सौंपेंगे। इसीलिए हमें उनसे जबरन बन्दूकें छीननी होंगी। इसके लिए लड़ाकू किसानों को वर्ग दुश्मनों के घरों को आग लगाने से लेकर सारी कार्यनीति सिखानी होगी। इसके अलावा हमें सरकार के सशस्त्र बलों पर अचानक हमला करते हुए उनसे बन्दूकें हासिल करनी होंगी। जिस इलाके में हम बन्दूक इकट्‌ठा करने का अभियान चला पायेंगे वह जल्द ही मुक्त इलाके में रूपान्तरित होगा।'

'हम प्रतिक्रान्तिकारी आक्रमण को कितनी जल्दी शान्त करा सकते हैं यह इस पर निर्भर करता है कि हम जनता के सशस्त्र बलों को कितनी जल्दी विकसित कर पाते हैं। यह सही है कि शुरूआत में हमें कुछ सफलता मिल सकती है, पर भारी प्रतिक्रान्तिकारी आक्रमण का सामना करने पर हमें आत्म-संरक्षण के हित में ही जवाबी हमला करना पड़ता है। इस लम्बे समय तक चलने वाले कठिन संघर्ष के जरिये ''जन क्रान्तिकारी सेना'' विकसित होगी, ऐसी सेना जो राजनीतिक चेतना से प्रेरित होगी और राजनीतिक अभियान आन्दोलनों तथा मुठभेड़ों के जरिये दृढ़ता हासिल करती जायेगी। इस किस्म की एक सेना के बिना क्रान्ति को सफल बनाना सम्भव नहीं है, जनता के हितों की रक्षा करना सम्भव नहीं है।' ★

(कामरेड कन्हाई चटर्जी की रचनाओं से...)

इलाकों में – विशेषकर जनफौज तथा लाल आधार-क्षेत्र कायम करने के दृष्टिकोण से सबसे सुविधाजनक (न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही बल्कि, भौगोलिक और सामरिक दृष्टिकोण से भी सबसे सुविधाजनक) दूर-दराज देहाती इलाकों में कृषि-क्रांतिकारी छापामार युद्ध के लिए जनता को जागरूक व संगठित करना एवं छापामार युद्ध के दौर से जनफौज और लाल आधार इलाका की स्थापना करना ही वर्तमान समय का प्राथमिक, प्रधान और केन्द्रीय कार्य है।'

'आधार इलाके पर निर्भर कर एवं जनफौज की मदद से एक ओर जैसे कृषि-क्रांतिकारी संग्रामों को और अधिक सुव्यवस्थित और अधिक गहन तथा और अधिक प्रसारित किया जाएगा, दूसरी ओर फिर इस कार्य के दरमियान ही जनफौज और आधार इलाकों को और अधिक सुव्यस्थित तथा और अधिक प्रसारित करने के दौरान भारत के क्रांतिकरी युद्ध को नयी-नयी सफलता की दिशा में आगे बढ़ा कर ले जाने का मार्ग भी साफ होगा। वास्तव में, दीर्घकालीन लोकयुद्ध को कायम करने के मार्ग में एक अनिवार्य और अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है जनफौज और लाल आधार इलाके का निर्माण करना।'

'दीर्घकालीन लोकयुद्ध का मार्ग इस प्रकार है : सर्वहारा वर्ग तथा उनकी पार्टी के नेतृत्व में दुश्मन के सबसे कमजोर स्थल विशाल देहाती इलाकों में कृषि-क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध चलाने के लिए किसान जनता तथा व्यापक जनसमुदाय को जागरूक व संगठित कर जमींदार-जोतदार तथा महाजन-सूदखोर एवं सामंतवाद के दलाल स्थानीय गुण्डों और अत्याचारी बुरेशरीफजादों को मार-मार कर पूरी तरह से खत्म करते हुए एवं उनके पहरेदार पुलिस-मिलिटरी और शासन-यंत्र के खिलाफ हथियारबन्द संघर्ष चलाने की प्रक्रिया में सामंती शोषण-शासन को निर्मूल कर किसान जनता को मुक्त करने के दौरान विशाल किसान जनता की सशस्त्र क्रांतिकारी शक्ति का अक्षय स्रोत सृजन करना, किसान-जनता को क्रातिकारी युद्ध के दृढ़तम विशाल समर्थक और शागिर्द के रूप में संगठित करना, एक शक्तिशाली जनफौज तथा जन मिलिशिया कायम करना एवं देहाती इलाकों में निर्भरयोग्य शक्तिशाली स्वयं-संपूर्ण क्रांतिकारी आधार क्षेत्र कायम करना, जनफौज व आधार इलाके को क्रमिक रूप से सुव्यस्थित व प्रसारित करते हुए, धीरे-धीरे देहाती इलाके को मुक्त कर गांवों की ओर से शहर को घेर डालना, अंत में शहर को दखल कर प्रतिक्रियावादियों की राजसत्ता को अंतिम रूप से चकनाचूर कर पूरे देश में जनता की अपनी राष्ट्र-व्यवस्था तथा राजनीतिक प्रभुत्व कायम करना।'

'अतएव कृषि-क्रांति को धुरी के रूप में मानकर, दुश्मन के सबसे कमजोर स्थल विशाल देहाती इलाकों एवं जनता के विशाल बहुसंख्यक भाग और क्रांति के प्रधान मित्र किसानों पर निर्भर कर एवं माओ त्से-तुङ द्वारा दिखलाये मार्ग को अपना कर ही सर्वहारा वर्ग तथा कम्युनिस्ट पार्टी किसान-समुदाय को छापामार युद्ध के लिए जागरूक व संगठित कर प्रतिक्रियावादियों के शोषण तथा शासन से मुक्त करने के संग्राम के दौरान जनफौज कायम कर सकते हैं। इस तरह ही यह विशाल देहाती इलाके क्रमागत स्वयंसम्पूर्ण, शक्तिशाली व निर्भरयोग्य सामरिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक रूप से क्रांति के आधार इलाके में बदल सकते हैं एवं यहां से ही वे दुश्मनों के अपेक्षाकृत मजबूत गढ़ शहरी इलाकों पर अचूक और मजबूत हमले चला सकते हैं, शहरी इलाकों को दुश्मन के कब्जे से मुक्त कर सकते हैं और इस तरह से दीर्घकालीन लोकयुद्ध के मार्ग से बढ़ते हुए ही वह समूचे देश में जनता की राजनीतिक सत्ता यानी जनवादी अधिनायकत्व की स्थापना कर सकती है।' ★

विशाल ग्रामीण इलाकों में गुरिल्ला युद्ध को संचालित किया। इन राज्यों में कुछ नये इलाकों में गुरिल्ला युद्ध को विस्तार किया। खासकर मध्य व पूर्वी भारत में आधार इलाके स्थापित करने के लिए मजबूत प्रयास किया। पार्टी विभिन्न स्तरों के कमिशनों व रीजनल ब्यूरो के स्तर में इआरसी, सीआरसी कमानों से लेकर निचले स्तर तक कमानों व विभागों का गठन कर उन्हें संचालित किया। कई प्लाटून, कंपनी और कुछ बटालियन जैसे उन्नत स्तर के सैनिक फारमेशनों का गठन कर उन्हें संचालित किया। इसने युद्ध में उल्लेखनीय बदलाव की तरफ रास्ता बनाया। अभूतपूर्व ढंग से व्यापक जनसमूहों का दीर्घकालीन लोकयुद्ध में भागीदारी लेने के जरिए वह सचमुच में जन स्वभाव का रूप लिया। गुरिल्ला युद्ध-लोकयुद्ध का विस्तार के साथ राजनीतिक आंदोलनों व पार्टी यूनिटों में जनता की भागीदारी बढ़ी। पीएलजीए संख्या में मजबूत होकर उसकी लड़ाकू क्षमता बढ़ने के साथ पार्टी मजबूत हुई। दुश्मन द्वारा चलाये गये कई प्रतिक्रांतिकारी घेरा डालो-विनाश करो के अभियानों को, सलवा जुडूम व सेंद्रा जैसे अत्यंत पाशविक दमन अभियानों को हराने में; साम्राज्यवाद, सामंतवाद तथा दलाल नौकरशाही पूंजीवाद के खिलाफ व्यापक जनता को गोलबंद कर जन आंदोलनों को गठन करने में, खासकर, जल-जंगल-जमीन-इज्जत-अधिकार की समस्याओं पर किसानों को एकत्र करने में पार्टी सुसंपन्न व नया अनुभव हासिल किया।

गुरिल्ला युद्ध के नियम- गोपनीयता, रफ्तार, दृढ़संकल्प को परिस्थिति के मुताबिक सृजनात्मक ढंग से अमल कर धीरज, दृढ़ संकल्प व आत्मबलिदान की चेतना से लड़ाई लड़ने द्वारा ही उक्त युद्ध कार्यवाहियों में उसने सफलता प्राप्त की। इन नियमों व लड़ाकू शैली को सटीक अमल नहीं करने के कारण कुछ हमलों में वह या तो विफल हुई या आंशिक सफलता से उसे संतुष्ट होना पड़ा। गुरिल्ला हमलों में मार खाने के हरएक मामले में दुश्मन लोकयुद्ध को कुचलने के लिए नई कार्यनीति को अपनाया। इन्हें विफल करने के लिए पीएलजीए ने वीरतापूर्ण व आत्मबलिदान की चेतना के साथ लड़ते हुए जबरदस्त जवाब दिया। दुश्मन के साथ युद्ध में विकास करते हुए पार्टी व पीएलजीए ने कार्यनीति को तैयार करने में बहुमूल्य अनुभव हासिल किया। युद्ध के विकास में आनेवाले बदलावों के अनुसार गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में, पीएलजीए को पीएलए में बदलने की लक्ष्य से पार्टी ने सही समय में कई भर्ती अभियान चलाए। उन्नत स्तर के गुरिल्ला युद्ध करने के क्रम में चलायमान युद्ध के लक्षणों से भरी कुछ हमलों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इस 11 साल में उसने 2,240 पुलिस व अर्द्ध सैनिक जवानों का सफाया किया और 2,301 को घायल किया। 2,250 से ज्यादा हथियार और एक लाख 10 हजारों से ज्यादा गोला-बारूद दुश्मन के बलों से जब्त किया।

पार्टी ने सेना को संगठित, विस्तार व विकास करने; रणनीतिक इलाकों में जनता की जनवादी सत्ता की इकाइयों का निर्माण व इनकी सांगठनिक इकाइयों के तौर पर गुरिल्ला बेसों (छापामार आधार क्षेत्र) की स्थापना करने; शुद्धिकरण अभियान व कार्यनीतिक जवाबी हमलों को योजनाबद्ध तरीका से संचालित करने के लिए विशेष कार्यभारों की रूपरेखा तैयार की। इन कार्यभार को पूरा करने के लिए किए गए कार्य से ही क्रांतिकारी संघर्ष आज इस मुकाम तक पहुंच पाया है।

हमारी पार्टी के नेतृत्व में चल रहा दीर्घकालीन लोकयुद्ध के दौरान संघर्ष व सांगठनिक मामले में बहुमूल्य अनुभव हासिल हुए हैं। गुरिल्ला युद्ध, जनसेना, गुरिल्ला जोनों, जनता की सत्ता के अंगों, छापामार आधार क्षेत्र और आधार इलाकों के संबंध पार्टी का अनुभव व समझदारी बढ़ी है। हमारा व्यवहार में और एक बार यह साबित हुआ है कि गुरिल्ला जोनों में गुरिल्ला सेना व गुरिल्ला युद्ध मुख्य सांगठनिक व संघर्ष के रूपों के तौर पर रहेगा तथा पीएलजीए मजबूत होने के साथ गुरिल्ला युद्ध भी तेज होते जाएगा और दुश्मन की सत्ता का खात्मा एवं क्रांतिकारी जनता की राजनीतिक सत्ता की स्थापना के लिए रास्ता साफ होगा।

माओ द्वारा बनाया गया लोकयुद्ध के सिद्धांत को हमारे क्रांतिकारी युद्ध की विशेष परिस्थितियों से सृजनात्मक ढंग से जोड़ते हुए, व्यवहार से हासिल किये गये महत्वपूर्ण अनुभवों का संश्लेषण कर पार्टी ऐसे निष्कर्ष पर पहुंची है कि गुरिल्ला जोनों में मुख्य रूप से दुश्मन और हमारे बीच राजसत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा जारी रहेगी। ऐसी जगहों पर पार्टी दुश्मन की राजसत्ता को ध्वस्त करते हुए, जनता की सत्ता का निर्माण करने के लिए प्रयास कर रही है। गुरिल्ला बल दृढ़संकल्प के साथ संघर्ष करते हुए दुश्मन के बलों पर जब वर्चस्व स्थापित करते हैं तब जनता की राजसत्ता को निर्माण करने में आसानी हो रही है। दूसरी तरफ तीव्र दमन के चलते गुरिल्ला बल का रिट्रीट करना जब जरूरी होती है तब दुश्मन अपना शासन को पुनःस्थापित कर रहा है। अर्थात, गुरिल्ला जोनों में सत्ता के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा जारी रहेगी। संक्षिप्त में, गुरिल्ला जोनों में हमारी ताकत [पार्टी और पीएलजीए (जनसेना) की ताकत, जनता की सांगठनिक शक्ति व जनयुद्ध में उनकी भूमिका] के मुताबिक तथा दुश्मन की ताकत के अनुसार राजनीतिक सत्ता हमेशा हाथ बदलती रहेगी और जनसेना उस सत्ता को पूर्णतः दुश्मन के हाथों से छीन कर मुक्त इलाका स्थापित करने तक, यानि लम्बे समय तक ऐसा ही चलता रहेगा। यह अपने अनुभव में और एक बार साबित हो चुका है।

हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी (सी.सी.), केन्द्रीय सैनिक कमिशन (सी.एम.सी.) एकता कांगेस-9वीं कांग्रेस द्वारा समृद्ध हुई दस्तावेजों पर, उन से बनाई गई पॉलिसी दस्तावेजों पर निर्भर होकर अत्यंत मूल्यवान पॉलिसी दस्तावेज, सर्कुलर, सैनिक किताब, दुश्मन की काउण्टर इनसर्जेन्सी रणनीति को समझने के लिए जरूरत होने वाली किताबों को प्रकाशित किया गया था। सैनिक पत्रिका अवामी जंग, अवामी जंग की अध्ययन श्रृंखला प्रकाशित किया जा रहा है। केन्द्र व राज्य के सैनिक कमिशनों, राज्य, रीजियन, जिला व एरिया के कमानों द्वारा पीएलजीए के राजनीतिक व सैनिक स्तर को उन्नत करने के लिए राजनीतिक व सैनिक प्रशिक्षण कैम्प व सैद्धांतिक व राजनीतिक क्लास संचालित किए गए हैं। खासकर, महिलाओं के लिए राजनीतिक, सैनिक कैम्प चलाए गए हैं। निचले स्तर पर मिलिशिया प्रशिक्षण कैम्प चलाए गए हैं।

पीएलजीए मजबूती से काम करने के लिए उसमें केन्द्रीय स्तर पर व विभिन्न गुरिल्ला जोनों में तकनीकी विभाग, सप्लाई, इन्टेलिजेंस, कम्युनिकेशन, प्रेस, शिक्षा, चिकित्सा विभाग और अन्यान्य विभाग अलग-अलग स्तरों पर गठन हुआ है और काम कर रहा है।

पीएलजीए दुश्मन के बलों को नष्ट करने व हथियार जब्त करने में मुख्य भूमिका निभाते हुए दुश्मन की हमलों से पार्टी नेतृत्व को, राजनीतिक सत्ता के अंगों को, पार्टी कांग्रेस, कॉन्फरेन्स, प्लेनम, अध्ययन कैम्प, प्रशिक्षण कैम्प, पार्टी कमेटियों की बैठक, तकनीकी, शिक्षा, चिकित्सा, अन्यान्य पार्टी, सैनिक व संयुक्त मोर्चा के कार्यकलापों को सुरक्षा देने के रणनीतिक कार्यभार को भी पूरा करने में सक्रिय भूमिका निभायी। पीएलजीए द्वारा सतर्क रहकर वीरतापूर्वक दुश्मन के हमले का मुकबला करने के जरिए ही हम इन सभी कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालन कर पाये हैं। पीएलजीए कुछ इलाकों में जनता को उत्पादन में इकट्ठा करने के साथ स्वयं कृषि उत्पादन में शामिल हुई है।

साम्राज्यवादी व सामंतवादी कुसंस्कृति को जनता के मन से जड़ से उखाड़ कर वैज्ञानिक, प्रगतिशील, जनवादी व क्रांतिकारी संस्कृति को जनता के मन में गाड़ने की सांस्कृतिक कार्यभार भी पीएलजीए निभा रही है। पीढ़ियों से ब्राह्मणीय, सामंतवादी व पितृसत्तात्मक संस्कृति तथा साम्राज्यावादी जहरीली संस्कृति के खिलाफ वक्तव्य देना, आमसभा व बैठकें करना, नाच-गान व अन्यान्य कला रूपों को जनता के अंदर ले जाने के सांस्कृतिक कार्यभार को वह निभा रही है।

नव गठित पीएलजीए के नारे इस प्रकार हैं: 1) लोकयुद्ध को तेज करो, जनता पर हो रहे चौतरफा हमला को हरा दो। 2) पीएलजीए को हथियारबंद करने के लिए दुश्मन से हथियार जब्त करो। 3) पीएलजीए को पीएलए में विकास करने के लिए बड़ी संख्या में युवक-युवतियों की भर्ती करो। 4) जनता की सत्ता के इकाइयों को गठन करने के लिए जनता को मदद करो। 5) जनता से घुलमिल जाओ, जनता की सेवा करो। पिछले 11 साल में इन्हें व्यवहार में लागू करते हुए वह राजनीतिक व सैनिक तौर पर मजबूत हुई है।

पीएलजीए का राजनीतिक व सैनिक तौर पर मजबूत होते हुए नये अनुभवों को हासिल करने के बावजूद उसकी कार्यनीतिक व लड़ाकू क्षमता को बढ़ाने की जरूरत कहीं ज्यादा है। दुश्मन की कार्यनीति में बदलावों के मुताबिक, जन आंदोलनों में आये दिन आने वाले ज्वार व भाटों तथा सामाजिक बदलावों का सटीक राजनीतिक व सैनिक कार्यनीति में बदलाव लाते हुए वह और प्रभावशाली बन सकती है। पीएलजीए खास तौर पर पार्टी व पीएलजीए के नेतृत्व में आंदोलन की जरूरतों के मुताबिक विकसित होकर गुरिल्ला युद्ध को विकास करते हुए राजनीतिक लक्ष्य के बारे में स्पष्टता होनी चाहिए, फौलादी अनुशासन को पालन करते हुए युद्ध के स्तर के मुताबिक व कर्तव्य पूरा करने के लिए कतारों व पीएलजीए बलों को अच्छा प्रशिक्षण देना चाहिए।

वर्ग दुश्मनों के खिलाफ जारी वर्ग संघर्ष में कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों व जनता द्वारा अनेकों आत्मबलिदान किए गये हैं व किये जा रहे हैं। भारतवर्ष में कम्युनिस्ट सिद्धांत जब से जड़ जमाया है तब से देश की मुक्ति हेतु कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों व जनता द्वारा उज्ज्वल आत्मबलिदान करना हमारा क्रांतिकारी आंदोलन के अत्यंत प्रमुख लक्षणों में से एक है। इस 11 साल सहित पिछले 48 सालों के समय काल में भारतीय क्रांति में अनगिनत अमर शहीद इस तरह का आत्मबलिदान अगर नहीं किए होते, तो उक्त प्रमुख व नई सफलताओं में से एक भी हम हासिल नहीं कर पाते।

पिछले 11 सालों में झूठी मुठभेड़ों में पांच केन्द्रीय कमेटी व पोलित ब्यूरो सदस्य शहीद होने के साथ और पांच सीसीएम/पीबीएम बीमारी से शहीद हुए। 16 केन्द्रीय कमेटी व पोलित ब्यूरो सदस्यों के साथ दसियों की संख्या में राज्य कमेटी स्तर के कामरेड आज भी जेलों में सड़ रहे हैं। 2009 से 2012 के बीच दुश्मन हमारे केन्द्रीय विभागों को बहुत नुकसान किया। इससे पार्टी, सेना व संयुक्त मोर्चा के विकास पर भी नकारात्मक असर दीखा। उसके मुताबिक पीएलजीए के लड़ाकू क्षमता, युद्ध स्त्रोतों व कार्यनीति के विकास में सीमिततताएं आई हैं।

जहां क्रांतिकारी संघर्ष जारी है, उन इलाकों में (मुख्य रूप से सरकार द्वारा चिह्नित 82 जिलों में) केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा हर साल हजारों-लाखों करोड़ रूपये बहाकर जारी सुधार कार्यक्रम की वजह से जनता के शिविर में फूट शुरू हो गई और एक छोटा सा तबका शोषक वर्गों का सामाजिक आधार के रूप में बदल गया। फलस्वरूप क्रांतिकारी आंदोलन के सामने कई नकारात्मक पहलू उभर कर आ रहा है। आंदोलन सभी इलाकों में कृषि क्रांति के कार्यक्रम के आधार पर वर्ग संघर्ष को आगे बढ़ाने में अलग-अलग अंतर के साथ जारी कमजोरियां इस स्थिति के उभरने के कई कारणों में से एक है।

हमने अभी तक दुश्मन को जितना भी नुकसान क्यों न किए हों, जितने भी सफलता हासिल क्यों न किए हों, हमें स्पष्ट रूप से यह समझना होगा कि दुश्मन अभी भी शक्तिशाली है, हमारे अंदर अभी भी कमजोरियां मौजूद हैं, संघर्ष लम्बा समय लेगा व कठिन होगा। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद (मा-ले-मा) सिद्धांत को अध्ययन करते हुए हमारी पार्टी व पीएलजीए कतारों में सही विश्व दृष्टिकोण को विकसित करते हुए क्रांतिकारी व्यवहार में उसे जोड़ते हुए, दृढ़संकल्प के साथ क्रांति को जारी रखते हुए ही लोकयुद्ध को जीत की ओर आगे बढ़ा सकते हैं। इस समझदारी, विश्वास को पूरी पार्टी, पीएलजीए व जनता में भरना होगा। इस मामले में दुश्मन की रणनीतिक कमजोरियों को और क्रांतिकारी शिविर की रणनीतिक ताकत को; देशभर में जारी पुराना अर्द्ध औपनिवेशिक, अर्द्ध सामंती उत्पादन संबंधों की वजह से जनता का जीवन प्रतिदिन दूभर होने, पिछले 20 से अधिक सालों से शासक वर्ग जनविरोधी व देशविरोधी नयर उदारतावादी नीतियां की वजह से भारतवर्ष में मुख्य अंतरविरोध तीव्रगति से बढ़ने, साम्राज्यवादी देशों का आर्थिक संकट की वजह से विश्व के मौलिक अंतरविरोध तीव्र होते हुए अलग-अलग रूपों में दुनिया के पैमाने पर जनता संघर्षरत होने, अभी भी हमारे पास मौजूद जन आधार, नेतृत्वकारी शक्तियां व उसे बनाने के स्रोतों को, लोकयुद्ध में पीएलजीए व जनता द्वारा हासिल की गई सफलताएं व मूल्यवान अनुभवों को पार्टी व पीएलजीए कैडरों व जनता में व्यापक तौर पर प्रचार करके क्रांतिकारी आंदोलन पर विश्वास बढ़ाना है। दुश्मन द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी चौतरफा हमले को परास्त करके ही हमारा क्रांतिकारी आंदोलन और एक कदम बढ़ सकता है। जनमुक्ति के लिए, नव जनवादी क्रांति की जीत के लिए हमारी पार्टी के क्रांतिकारी सिद्धांत व राजनीति ही, राजनीतिक लाइन ही, दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन ही एकमात्र रास्ता है- इस पर पूरी तरह विश्वास रखकर दुश्मन के साथ दृढ़तापूर्वक अगर संघर्ष नहीं करेंगे दुश्मन के देशव्यापी चौतरफा हमले को हम हरा नहीं सकते।

पार्टी, पीएलजीए व जनता की राजसत्ता के इकाइयों में जो दृढ़ता मौजूद है उस पर चोट पहुंचाने के लिए दुश्मन अन्तहीन साजिशें कर रहा है। दुश्मन क्रांतिकारी कतारों में अपना कोवर्टों को घुसाकर नुकसान पहुंचाने के अलावा क्रांतिकारी कतारों के अंदर ही अविश्वास पैदा करने का प्रयास कर रहा है। मोदी के नेतृत्व में केन्द्र व राज्य सरकारें एक तरफ गिरफ्तारियां करने, यातना देने, झूठी मुठभेड़ों में आम जनता का नरसंहार करके श्वेत आतंक पैदा करते हुए ऑपरेशन ग्रीन हण्ट का तीसरा चरण शुरू की हैं। इसलिए आज की परिस्थिति हमारी क्रांतिकारी कतारों व पीएलजीए से मांग करती है कि दुश्मन के इस हमले को अत्यंत दृढ़तापूर्वक, साहस व आत्मबलिदान के साथ मुकाबला करना होगा।

हमारी नई पार्टी की राजनीतिक रणनीति के बारे में, सैनिक रणनीति के बारे में हमें स्पष्ट समझ होनी चाहिए, इसके द्वारा ही जवाबी हमले की कार्यनीति को सही तरीका से बना सकते हैं। वर्तमान परिस्थिति में का. माओ बनाये गये गुरिल्ला युद्ध नियमों का अध्ययन कर उन्हें जरूर सृजनात्मक व दृढ़तापूर्वक अमल करना चाहिए व हमारे पीएलजीए तथा जनमिलिशिया बलों को तैयारी करनी चाहिए।

चाहे कोई भी युद्ध हो सफलता उस हक में जाती है जो साहस व दृढ़ता के साथ संघर्ष करते हैं। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है। तथ्य यह भी है कि वह इस विषय पर ध्यान रखता है कि खुद को कम नुकसान और दुश्मन को ज्यादा नुकसान करते हुए उन्हें पूरी तरह हरा देने की तरफ बढ़ सके। हमारे लोकयुद्ध में भी बार-बार यह साबित हुआ है कि हमारी पार्टी, पीएलजीए व जनता की सत्ता की इकाइयां दुश्मन के हमलों से बचाने के लिए, नई सफलताएं हासिल करना, लम्बे डग भरते हुए आगे बढ़ना, दुश्मन को ज्यादा नुकसान पहुंचाना है तो हमें बहुत जरूरी है कि साहस, धीरता व आत्मबलिदान की चेतना के साथ संघर्ष करें। इसलिए, दुश्मन पर हमें हमला हमेशा वर्ग घृणा, निर्भयता व दृढ़संकल्प के साथ करना चाहिए। हमें यह चिह्नित करना चाहिए कि आत्मबलिदान नहीं है तो हमारा राजनीतिक लक्ष्य को हासिल करना, जनता के सामूहिक हित को पूरा करना नामुमकिन है तथा दुश्मन के बलों के साथ भिड़ने में साहसिक ढंग से अगली पंक्ति में खड़े रहना मुश्किल है।

माओवादी सिद्धांत है कि लोकयुद्ध जनता द्वारा चलाने वाला युद्ध है। हमारी पार्टी, पीएलजीए व जनता की सत्ता की इकाइयां, क्रांतिकारी जन संगठन सभी हर विषय में जनता पर निर्भर होकर लोकयुद्ध को चलते हुए ही क्रांतिकारी लक्ष्य को हासिल करने के नजदीक तक पहुंच सकते हैं। जनता के कष्ट व मुश्किलों, दैनन्दिन व मैलिक समस्याओं

से पूरी तरह घुलमिल कर उन्हें सभी क्षेत्रों में सेवा करते हुए, उनकी चेतना बढ़ाते हुए, उनकी सक्रिय भागीदारी पर निर्भर होकर उन्हें हथियारबंद करना आज का हमारा मुख्य कार्यभार है। व्यापक तौर पर संगठित किए गए जनमिलिशिया ही हमारे लक्ष्य को हासिल करने, पीएलजीए को पीएलए में बदलने का मुख्य आधार है। जनता से क्रांतिकारियों को अलग करने की दुश्मन द्वारा जारी हर कोशिशों का मुकाबला करते हुए, जन आधार को बढ़ाते हुए, जन आधार पर निर्भर होकर दुश्मन को जनता से अलग करके, अकेले पड़े हुए स्थिति में उस पर चोट पहुंचाना चाहिए।

इन परिस्थितियों में, हमारे द्वारा लिए गए बोल्शेवीकरण अभियान के तहत व्यापक तौर पर मा-ले-मा व इतिहास का अध्ययन करना, कमियों को सुधारना, पार्टी व पीएलजीए के अंदर सर्वहारा वर्ग के विचार व दृष्टिकोण और गैर-सर्वहारा वर्ग के विचार व दृष्टिकोण के बीच एक विभाजन रेखा खींचना चाहिए। सर्वहारा वर्ग के विचार व दृष्टिकोण को स्वीकार करना व सुनिश्चित करना चाहिए। गैर-सर्वहारा वर्ग के हर वस्तु का घृणा व त्याग करना चाहिए। बोल्शेवीकरण अभियान के तहत गलतियों को सुधारने, उत्पादन के लिए प्रयास करने में पीएलजीए को सक्रिय भागीदारी लेनी चाहिए। ये दोनों सैद्धांतिक क्षेत्रों में व वास्तविक/भौतिक जीवन में अत्यंत निर्णायक भूमिका निभाएंगे। सही सैद्धांतिक दृष्टिकोण एकमात्र लक्ष्य हासिल करने के लिए स्पष्ट कार्यक्रम, सही कार्यनीति, दृढ़ संकल्प के साथ काम करना- इन सबों के साथ ही पीएलजीए कमांडर व योद्धा मन लगाकर व्यवहार से ग्रहण कर सकते हैं। पार्टी, पीएलजीए की वर्ग संरचना की पृष्ठभूमि को अगर जांच करेंगे तो इनमें से ज्यादातर गैर-सर्वहारा वर्ग के श्रेणियों खासकर, किसान, निम्न पूंजीपति वर्ग से आए हुए कामरेड ही हैं। इन्हें लक्ष्य हासिल करने के लिए समाज में शोषण व उत्पीड़न को ध्वस्त करने के संघर्ष में शामिल करने के अलावे, पार्टी नेतृत्व द्वारा सैद्धांतिक व राजनीतिक तौर पर प्रशिक्षित करना होगा; इनके सैद्धांतिक दृष्टिकोण को बेहतर करना होगा। इस सैद्धांतिक-राजनीतिक प्रयास को हमें एक प्रक्रिया के बतौर लगातार तथा अभियानों के तौर पर जारी रखना होगा। इनमें फौलादी अनुशासनात्मक जोश भरना होगा। युद्ध क्षेत्र में, पृष्ठभाग (rear) में सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व के साथ चिपके रहने, नव जनवादी क्रांति व समाजवाद और साम्यवाद के लक्ष्य के लिए संघर्ष करने लायक उन्हें ढालना होगा। पीएलजीए को लोकयुद्ध के दौरान मजबूत जनमुक्ति सेना के रूप में विकास करना होगा। उस तरह की जनसेना ही आज के समाज में मौजूद शोषण व उत्पीड़न को जड़ से उखाड़ फेंक कर समाज को समाजवाद और साम्यवाद की ओर आगे बढ़ा सकती है। आज दुश्मन बहुत ही निर्मम तरीके से हमला कर रहा है, हम गंभीर मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। हमें ठीक इसी समय ही दुश्मन के लिए प्रतिकूल और हमारे लिए अनुकूल हो, परिस्थिति में ऐसा बदलाव लाने के लिए पहलकदमी के साथ सचेतन प्रयास करना होगा।

दुश्मन के हमले को परास्त करना है तो दुश्मन का सही आकलन करने, गुरिल्ला युद्ध में पहला उसूल 'गोपनीयता' का पालन करने, सही समय पर सही कार्यनीति को तैयार कर उसे अमल करने के लिए आखिरी दम तक युद्ध क्षेत्र में साहस व मौत को भी मिटानेवाली धीरता पर निर्भर होना होगा; इसके मुताबिक पीएलजीए को संगठित करना होगा,

28 जुलाई 2015 को एक गुरिल्ला जोन में संपन्न अमर शहीदों की स्मृति सभा का एक दृश्य

सिद्धांत के अध्ययन को बेहतर करना होगा, कामकाज की पद्धतियों को सुधारना होगा; लगातार चलायमान में रहते हुए कहीं भी, कभी भी हमारे बलों को तैनात करने या वापस लेने में काबिल हो इस तरह के कमांडिंग का विकास करना होगा; परिस्थितियों पर पकड़ हासिल करना, विशेष लक्ष्यों को चिह्नित करना, बलों को सही ढंग से विभाजन करना, राजनीतिक-सैनिक प्रशिक्षण देना, सामान सप्लाई, हथियारों का सही रखरखाव, जनता की सहायता का सही तरीका से इस्तेमाल करना आदि कार्यभारों को विभिन्न स्तर के कमान को स्वतंत्र रूप से चलाने में काबिल हो ऐसा विकास करना होगा। सही कमांडिंग नहीं होने से बलों की गतिशीलता में रुकावट पैदा होती है। कमानों की तरफ उसे घुसने नहीं देना होगा। गोपनीयता, गतिशीलता, आत्मरक्षा-हमला की कार्यनीति को सही ढंग से समन्वय करते हुए दुश्मन के दमनकारी हमले को मुकाबला करना होगा।

देश में जमीन की समस्या को पूरी तरह हल करने के लिए, सशस्त्र कृषि क्रांति में किसानों को अगर जुझारू रूप से गोलबंद करते हैं तो हम सभी दुश्मनों को हराकर नव जनवादी क्रांति को सफल बनाने की आवश्यक व बहुत ही मौलिक परिस्थिति व शर्तें पूरा कर सकते हैं। क्रांतिकारी भूमि-सुधार को लागू करते समय अति गरीब व भूमिहीन किसानों तथा मजदूरों के हितों को प्रमुखता देकर ही उन्हें कृषि क्रांति में व्यापक, सक्रिय व जुझारू रूप से गोलबंद कर सकते हैं। इस मामले में हमें मध्यम किसानों से दृढ़ता के साथ एकता कायम करना होगा। उनके हितों पर चोट नहीं पहुंचानी होगी।

पीएलजीए युद्ध स्रोतों के अलावा हर विषय में जनता पर तथा आत्मगत प्रयास पर जब निर्भर करती है तब वह आत्मनिर्भर हो सकती है। परिस्थिति के अनुरूप लचीले कार्यनीति अपना सकती है। इस तरह आज की परिस्थिति में अपना संघर्ष को सिलसिलेवार ढंग से जारी रखने में और उसे एक स्तर से दूसरा उन्नत स्तर में ले जाने में विजय प्राप्त कर सकती है।

पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए के कमांडर व योद्धा तथा हर व्यक्ति लक्ष्य हासिल करने के लिए आत्मबलिदान करने में पीछे न हटकर, व्यवहार में सामना करने वाले कष्ट व मुश्किलों तथा बाधाओं को कम्युनिस्ट जागरूकता के साथ पार करते हुए अपना ज्ञान व दक्षता को सृजनात्मक ढंग से युद्ध क्षेत्र में इस्तेमाल कर पूरी पीएलजीए को एक ही आदमी जैसा दृढ़ रूप में एकताबद्ध करना होगा। अत्यंत वीरतापूर्वक लड़ते हुए दुश्मन को नाश करने के लिए साहस करने वाली अजेय लाल सेना के रूप में पीएलजीए को तैयार करना होगा। पार्टी के नेतृत्व में इस तरह की लाल सेना द्वारा जारी लोकयुद्ध अजेय होगी। ★

(पृष्ठ-7 के शेष भाग...)

योद्धा शहीद हुए। इसके साथ-साथ सैकड़ों **क्रांतिकारी जनता, समर्थक** सरकारी पुलिसिया, अर्द्धसैनिक बल व प्रतिक्रांतिकारी गुटों के निर्मम नरसंहारों में अपनी जान गंवाए।

कामरेड आजम आली (एपीसीएलसी, आंध्र प्रदेश), एपीसीएलसी वरिष्ठ नेता व प्रमुख वकील के.जी. कन्नबीरन (आंध्र प्रदेश), कनकाचारि (तेलंगाना जनसभा), मन्नेम देवीप्रसाद (जाति उन्मूलन संघर्ष समिति, आंध्र प्रदेश), पश्चिम बंग के जेल में सही इलाज नहीं मिलने के कारण स्वपनदास गुप्ता (पीपुल्स मार्च संपादक, पश्चिम बंग संस्करण), खगेन दास (एआईएलआरसी, पश्चिम बंग), लालगढ़ आंदोलन के नेता लालमोहन टुडु, उमाकांत महतो, सिद्धु-कान्हू जन मिलिशिया का कमांडर-इन-चीफ सिधु सोरेन (लालगढ़), चासी मुलिया आदिवासी संगठन का सचिव व घेनुवा वाहिनी का कमांडर-इन-चीफ वाडेका सिंगन्ना, आर. सोमेश्वरराव (सर्वहारा वर्ग के क्रांतिकारी बुद्धिजीवी, ओड़िशा), बी.एस.ए. सत्यनारायण (जनवादी व मजदूर आंदोलन के नेता, आंध्र प्रदेश), पेंदुरु भीम राव (आदिवासी नेता, तेलंगाना), आलूरि भुजंगराव (क्रांतिकारी लेखक, आंध्र प्रदेश), आकुला भूमैया (तेलंगाना जनसभा के नेता), देवेंद्र (दिशा सांस्कृतिक मंच, हरियाणा), सुनिति कुमार घोष (सर्वहारा वर्ग के क्रांतिकारी बुद्धिजीवी, पश्चिम बंग), चलसानि प्रसाद (विरासम व एआईएलआरसी के संस्थापक नेता, आंध्र प्रदेश), सुंदर मरांडी (सांस्कृतिक क्षेत्र के नेता, झारखण्ड एभेन के संस्थापक) आदि क्रांतिकारी व जनवादी आंदोलनों के लिए अंतिम सांस तक अथक संघर्ष करते हुए शहीद हुए।

जनता के लिए मरना हिमालय पर्वत से भी ऊंचा है, शोषक-शासक वर्गों के लिए मरना पंख से भी हल्का है। व्यापक मजदूर-किसान, अन्यान्य उत्पीड़ित वर्गों के हित के लिए कुछ लोगों का अपनी जान देना व खून बहाना दीर्घकालीन लोकयुद्ध में अनिवार्य है, इसके द्वारा ही समाजवाद व साम्यवाद की स्थापना के लिए मार्ग सुगम होता है- इस चेतना के साथ हमारे अमर शहीद अपना अनमोल प्राणों को त्याग किया। ये अमर शहीद जिस राह पर चले व उसे प्रकाशित किए, उस पर हम अंतिम सांस तक आगे बढ़ेंगे। उनके अरमानों को एक भौतिक शक्ति के रूप में बदलने तथा नव जनवादी व्यवस्था, अंत में समाजवाद व साम्यवाद की स्थापना करने के उनके सपनों को पूरा करने के लिए हम पूरी ताकत को झोंक देंगे - ऐसी शपथ लेते हैं। ★

दुश्मन के काल कोठरियों में...और एक युद्ध क्षेत्र

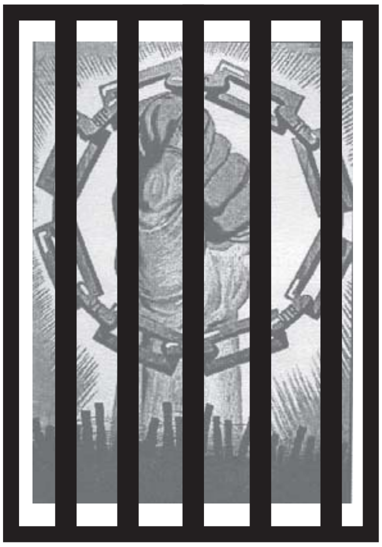

हमारी पार्टी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) विश्व समाजवादी क्रांति के तहत हमारे देश में तीन लक्ष्य- साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीपति और बड़े सामंती वर्गों को उखाड़ फेंककर नव जनवादी क्रांति को, उसके बाद समाजवाद व साम्यवाद को जीतने के लक्ष्य से दीर्घकालीन लोकयुद्ध की राह पर क्रांतिकारी आन्दोलन को आगे बढ़ा रही है। इसे थोड़ा सा भी सहन नहीं करते हुए साम्राज्यवादियों और उसके दलाल शासक वर्गों द्वारा हमारी पार्टी पर प्रतिबंध लगाया गया था। क्रांतिकारी आन्दोलन को पूरी तरह सफाया करने के लिए, अमरीकी खुफिया संगठन एफबीआई की प्रत्यक्ष देखरेख में 'कम तीव्रता वाला युद्ध' (एलआईसी) रणनीति को भारतीय शासक वर्गों द्वारा बनाया गया था। इन 11 सालों में एक के बाद एक चलाये गये कई दमनकारी अभियानों में, 2009 से जारी 'जनता पर युद्ध'- ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के तहत आन्दोलन के इलाकों में बड़े पैमाने पर मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हुए अनगिनत अत्याचार किये जा रहे हैं। 'यूएपीए (उपा)' जैसे फासीवादी काले कानूनों के तहत हजारों माओवादियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, जनवादी-बुद्धिजीवियों और जनता को गिरफ्तार करना, बेरहमी से यातनाएं देना, फर्जी मुठभेड़ों में हत्या करना, सामूहिक नरसंहार करना, महिलाओं पर अत्याचार करना फासीवादी अर्द्धसैनिक, पुलिस और कमांडो बलों की दिनचर्या बन गई है।

परिणास्वरूप जेलों में कैदियों की संख्या और जेलों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है और जेलों सब गरीबों से भर रहे हैं। इनमें अधिकतर समाज के अतिनिचले श्रेणी के मजदूर, गरीब किसान, छात्र, महिला, आदिवासी और विभिन्न उत्पीड़ित राष्ट्रीयता की जनता शामिल है- सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के निरंकुश मालिकानाओं के खिलाफ बगावत करने वाले मजदूर संगठन के जुझारू नेता और कार्यकर्ता; सभी राज्यों के युद्ध क्षेत्रों के गरीब आदिवासी किसान; दलित खेतिहर मजदूर, पिछड़ी जातियों के गरीब किसानों के साथ सभी उत्पीड़ित वर्गों और तबकों की जनता; लाखों की तादाद में जनता को विस्थापित करने वाली मेगा 'विकास' परियोजनाओं के खिलाफ संघर्ष में उतरी हजारों जनता; राष्ट्रीय मुक्ति के लिए लड़ने वाली कश्मीरी, सिख, मणिपुरी, असमी, बोडो, नागा, कामतापुरी, अन्य; कई मानवाधिकार संगठन, स्वतंत्र स्वयंसेवी सामाजिक, जन आन्दोलन, कर्मचारी, छात्र, राजनीतिक-सांस्कृतिक क्षेत्र के कार्यकर्ता; 'आतंकवाद पर युद्ध' के पंजों में फंसे मुसलिम युवा; विद्वान; माओवादी .... यह तालिका बहुत बड़ा है ....

देश भर में खासकर भारतीय राजसत्ता के खिलाफ लोहा ले रहे क्रांतिकारी इलाकों (बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओड़िशा, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंग, कर्नाटक, केरलम, तमिलनाडु राज्यों) के जेलों में बंद पड़ी राजनीतिक कैदियों की संख्या दसियों हजार में होगी। उदाहरण के लिए पिछले दस सालों में सिर्फ बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंग, उत्तरी छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश राज्यों के हमारे संघर्षरत इलाकों में 10 हजार से ज्यादा हमारे पार्टी के नेता, कार्यकर्ता और जनता को 'यूएपीए (उपा)' आदि काले कानूनों के तहत पुलिस गिरफ्तार की है। खासकर, हमारी पार्टी के 17 पोलित ब्यूरो (पीबी) और केन्द्रीय कमेटी के सदस्यों सहित हजारों राज्य/स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनल, जोनल /डिविजिनल/जिला, सबजोनल, एरिया कमेटी के सदस्य, पार्टी सदस्य, क्रांतिकारी जन संगठनों के नेता, कार्यकर्ता और जनता जेलों में सड़ रहे हैं। इनमें से कई साथी वृद्धावस्था के साथ होने वाली कई बीमारियों से जूझ रहे हैं। इन्हें फौरन व अधिकतम स्वास्थ्य सेवाओं की जरूरत है। लेकिन शासक वर्ग एक सोची-समझी साजिश के तहत इन्हें इस तरह की स्वास्थ्य सेवाएं न देकर जेलों में ही अंत करना चाहता है। सात साल की कठिन कारावास में गंभीर बीमारियों से ग्रस्त होने के बावजूद जानबूझ कर शोषक-शासक वर्ग सही समय पर स्वास्थ्य सेवा न देकर एक सुनियोजित साजिश के जरिए हमारे प्रिय नेता कामरेड सुशील राय (पीबीएम) को मृत्यु की ओर धकेल दिया। इसी तरह 'पीपुल्स मार्च' बंगला संस्करण के संपादक कामरेड स्वप्न दास गुप्ता, हाल ही में झारखण्ड एभेन के संस्थापकों में से एक कामरेड सुंदर मरांडी जैसे कइयों की मृत्यु भी ऐसे ही हुई।

और इस 11 साल की समयकाल में माओवादियों से संबंध या राजद्रोह के मामले थोपते हुए डाक्टर विनायक सेन, लेखिका-सामाजिक कार्यकर्ता अरुंधती राय, दलित अधिकारों का सांस्कृतिक कार्यकर्ता सुधीर धावले, अभय साहू, मनोरमा देवी, जीतन मरांडी, वेरनान गोंजालवेज, सरकारी कर्मचारी सोनी सोढ़ी, स्वतंत्र पत्रकार प्रशांत राही, सांस्कृतिक कार्यकर्ता हेम मिश्रा, आरडीएफ के नेता, विकलांग प्रोफेसर साईंबाबा, सामाजिक कार्यकर्ता अरुण फरेरा, कंचन ननवरे, जाइसन कूपर, तुषार सारथी जैसे आदमियों को भी जेलों में ठूंस दिया गया था।

जेलों में बंदी क्रांतिकारियों और क्रांतिकारी जनता को फांसी, आजीवन कारावास की सजा देना क्रमशः बढ़ रहा है। सामंती दुराहंकारिता पर एक शानदार हमले के रूप में जाना जाने वाले बारा मामले में बिहार के पांच आम खेतिहर

दलित किसानों को टाडा न्यायालय द्वारा सुनाई गई फांसी की सजा को उच्चतम न्यायालय ने बरकरार रखा। फांसी की सजा उत्पीड़ित वर्गों, दलित और पिछड़ी जातियों, आदिवासियों, मुस्लिमों को ही दे रही है। सवर्ण सामंतों द्वारा दलितों पर किए गए अत्याचारों, हत्यकाण्डों के प्रति कभी और कहीं भी साजा न दिलाने वाली न्यायालयों ने बुनियादी वर्गो और जातियों से संबंधित लोगों को, खासकर क्रांतिकारियों को फांसी की सजा देना उस के ही वर्ग स्वभाव को दर्शाता है। झारखण्ड में क्रांतिकारी कलाकार कामरेड जीतन मरांडी और तीन सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं को फांसी की सजा देना इसका ही एक हिस्सा है। इसके खिलाफ बड़े पैमाने पर जन प्रतिरोध का उभार आने के बाद उस फैसले से सरकार पीछे हट गई। ओड़िशा के रायगड़ा जिला मंद्राबाजा गांव में जमीन को कब्जा कर, महिलाओं को परेशान करते हुए पुलिस द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों और हमलों का प्रतिरोध करने पर गोलीबारी कर कुछ लोगों मार दिया गया और आदिवासी किसानों पर हत्या का मामला दर्ज कर न्यायालय द्वारा छः लोगों को आजीवन सजा दी गयी। महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में 10 लोगों का आजीवन कारावास की सजा दी गयी। बिहार-झारखण्ड में 7-8 लोगों को फांसी की सजा दी गयी और दो दर्जन से ज्यादा लागों को आजीवन कारावास की सजा दी गयी। बंगाल में दो लोगों को फांसी की सजा दी गयी। आंध्र प्रदेश में 10 लोगों ने आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं।

विभिन्न राज्यों में वरिष्ठ महिला कामरेडों सहित सैकड़ों महिला कार्यकर्ता सबसे बुरी हालत में जेल जीवन बिताने को मजबूर हो रही हैं। इनमें से कुछ महिला कामरेड ऐसे हैं जो अपने बच्चों को लेकर क्रूर जेल-यातना की मार झेल रही हैं। इनमें से कई महिला कामरेड ऐसे हैं जिन्हें लम्बी अवधि की सजा सुनाई गई हैं।

जेल संघर्ष

इस 11 साल की समयकाल में देशभर में दुश्मन के काल कोठरियों में बंदी बनाई गई हमारे पार्टी के कई वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता दुश्मन द्वारा ऑपरेशन ग्रीन हण्ट जैसे भीषण दमनकारी ऑपरेशनों को चलाते हुए जितने भी आतंक फैलाने के बावजूद सभी तरह के अवरोधों, यातनाओं और धमकियों को धिक्कार करते हुए दृढ़संकल्प के साथ नेतृत्व देकर हमारे पार्टी के जेल कम्यून के कार्यक्रम और संविधान को लागू किया गया और कई जेलों में कम्यूनों को स्थापित किया गया। वह इस दस साल के समयकाल में 'राजनीतिक कैदियों को बिना शर्त फौरन रिहा करना है, उन्हें राजनीतिक कैदियों का दर्जा देना है, संघर्षरत इलाकों में सरकारी सशस्त्र बलों को हटाना है' जैसे प्रधान मांगों सहित आम कैदियों और राजनीतिक कैदियों के न्यायपूर्ण मांगों को हासिल करने के लिए कई आन्दोलनों को नेतृत्व प्रदान करने द्वारा सलाखों के पीछे और नए युद्ध क्षेत्र को खोल दिया गया। जेलों को राजनीतिक पाठशालाओं और संघर्ष क्षेत्रों के रूप में तब्दील किए जा रहे हैं। बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंग, ओड़िशा, असम, केरलम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश में इस तरह के बहुत ही संघर्ष हो रहे हैं। इन संघर्षों में आम कैदी भी माओवादी कैदियों के साथ एकजुट हो रहे हैं। पूरी तौर पर किसी एक राज्य में और समूचे देश में भी जेलों में समन्वय के साथ राजनीतिक कैदियों के आन्दोलन हो रहे हैं। इनकी मदद में राजनीतिक कैदियों को बिना शर्त रिहा करने की मांग करते हुए, उनकी जनवादी अधिकार के लिए, उन्हें कानूनी सहायता और अन्य रूपों में मदद करने के लिए जेलों के बाहर एकता मंचों, सुरक्षा समितियों आदि गठित हुई हैं। इस तरह के संगठनों, विभिन्न जन संगठनों, जनहितैषियों के नेतृत्व में भाईचारा अभियानों को संचालित किया जा रहा है।

राजनीतिक कैदियों द्वारा लगातार आन्दोलनों और राजनीतिक कैदियों के अधिकारों के लिए, उनकी रिहाई के लिए देशव्यापी भाईचारा आन्दोलनों के परिणामस्वरूप जेलों में कैदियों ने कई मांगों को हासिल करने में सफलता पायी हैं। उनके मनोबल बढ़ रहे हैं। 2012 अक्टूबर में पश्चिम बंग के कोलकाता उच्च न्यायालय द्वारा माओवादी कैदियों को राजनीतिक दर्जा देने का फैसला उल्लेखनीय जीत था। छत्तीसगढ़ के रायपुर जेल में 2013 में महिला कैदियों द्वारा चलाया गया जुझारूपूर्ण संघर्ष के जरिए अपनी मांगों को हासिल कर पाई थी। वर्ष 2011-12 में पीएलजीए छापामार सैनिकों द्वारा ओड़िशा के मलकानगिरि जिला कलेक्टर विनील कृष्णा, विधायक झिना हिकाका और छत्तीसगढ़ के सुकमा जिला कलेक्टर अलेक्स पाल मेनन को बंदी बनाए गए थे, दोनों कार्रवाइयां आदिवासियों पर ओड़िशा और छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा चलाई जा रहे फासीवादी दमन और उनकी गैरकानूनी गिरफ्तारियों का भण्डाफोड़ करने के लिए की गयी थी। इन मौकों पर उन राज्य सरकारों और जनवादी-बुद्धिजीवियों के बीच हुए समझौतों के अनुसार फौरन सैकड़ों आम आदिवासी जनता को जेलों से रिहा करना पड़ा था। इन समझौतों के अनुसार जेलों में सड़ रहे और सैकड़ों लोगों की रिहाई के लिए ओड़िशा और छत्तीसगढ़ के जेलों में आन्दोलन चलाए गए। इनकी मदद के रूप में हजारों की संख्या में जनता एकजुट होकर कोरापुट, दंतेवाड़ा और बीजापुर में आन्दोलन चलाए। 30 जनवरी, 2014 को एक ही समय में महाराष्ट्र, बिहार, झारखण्ड, ओड़िशा, और कुछ अन्य राज्यों के जेलों में राजीनीतिक बन्दियों द्वारा आन्दोलन चलाए गए। इनकी मदद में देशभर में कई शहरों और कस्बों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। दिल्ली विश्वविद्यायल के प्रोफेसर जी.एन. साईंबाबा की रिहाई के लिए देश और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चलाए गए आन्दोलनों की वजह से उन्हें कई महीने के लिए जमानत मिल पाई थी। इस तरह के आन्दोलनों के कारण ही कई सामाजिक कार्यकर्ताओं को सरकार

रिहा करने को मजबूर हो रही है।

बन्दियों के आन्दोलनों को तेज करने और उनकी मांगों को लेकर व्यापक जनता से मदद एकजुटता के लिए हर साल स्वतंत्रता संग्राम के वीर योद्धा यातिन दास का शहादत दिवस 13 सितम्बर को राजनीतिक बन्दियों के दिवस के रूप में और भारत देश की आजादी के लिए लड़े क्रांतिकारियों कामरेड भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव को फांसी पर लटकाए गए दिवस को 23 से 29 मार्च तक बन्दियों के अधिकार सप्ताह के रूप में मनाया जा रहा है। कानूनी तौर पर राजनीतिक बन्दियों का दर्जा, उनकी बिना शर्त रिहा करने की मांगों को केंद्र बिन्दु बनाकर हजारों जनता को इकट्ठा करते हुए धीरे-धीरे देशभर में जनवादी आन्दोलन तेज हो रहा है। भारत का जनयुद्ध के समर्थन में अंतरराष्ट्रीय कमेटी (इंटरनेशनल कमेटी टु सपोर्ट पीपुल्स वार इन इंडिया-ICSPWI) के आह्वान पर 2014 की शुरुआत में भारत के राजनीतिक बन्दियों की रिहाई के लिए लिये गए अंतरराष्ट्रीय विरोध अभियान जैसे भाईचारा आन्दोलनों द्वारा भी संघर्षरत बन्दियों को प्रोत्साहन मिल रहा है।

विभिन्न जेलब्रेक की कार्रवाइयां

शासक वर्गों द्वारा जेल में बंद कामरेडों पर दसियों की संख्या में मामले दर्ज करवाकर जमानत पाने या रिहा होने की लगभग असंभव की स्थिति पैदा करने, कानूनी सहायता दिलाने वाले वकीलों को 'माओवादी' कहकर खुफिया अधिकारियों से धमकियां देने, जमानत मिलने पर भी जेल गेट के बाहर ही फिर गिरफ्तार करने, जीवन का अंत तक जेल में ही बंदी बनाने की साजिशों के साथ दुश्मन का आतंक चरम सीमा तक पहुंचने, जेलों में जिंदगी दूभर हो जाने, सालों भर ऐसी स्थिति जारी रहने की वजह से जेलों में सड़ रहे राजनीतिक बन्दियों में किसी तरह बाहर निकलने का जिद या दृढ़संकल्प बढ़ता जा रहा है। इसलिए उन्होंने अपनी पहलकदमी से जेलों में तैनात सुरक्षा बलों के खिलाफ बगावत कर, जेलों को तोड़कर खुद को मुक्त कर रहे हैं। हमारी पार्टी द्वारा योजनाबद्ध तरीके से दुश्मन की कमजोरियों को पहचान कर पहलकदमी के साथ पीएलजीए बलों को तैनात कर सफलतापूर्वक सशस्त्र हमले कर जेलों में सड़ रहे हमारी पार्टी के नेता, कार्यकर्ता और सैकड़ों उत्पीड़ित जनता को रिहा करवा रही है। इन 11 सालों में इस तरह 2005 में जहानाबाद (बिहार), 2007 में दंतेवाड़ा (दण्डकारण्य), 2009 में लखीसराय (बिहार), जमुई (बिहार) में न्यायालय के परिसर में हमले, 2012 में गिरिडीह (झारखण्ड) शहर के बाहर कोर्ट में कैदियों को ले जाने वाली स्काट गाड़ियों के काफिला पर हमला, 2011 में चाईबासा-1 (झारखण्ड), राउरकेला (ओड़िशा), 2014 में चाईबासा-2 (झारखण्ड) जैसे साहसिक जेलब्रेक की कार्रवाइयों को कार्यान्वित किये गये। दण्डकारण्य में सलवा जुडूम बंदी शिविरों पर पीएलजीए द्वारा लगातार किये गए हमलों के जरिए उन शिविरों में सड़ रहे हजारों जनता को मुक्ति दिलाई गई और अपने गांवों में वापस ले जाया गया। और कुछ पार्टी कार्यकर्ता और क्रांतिकारी जनता एक-दो व्यक्तियों या टीमों के रूप में दृढ़ता से की गई कोशिशों के द्वारा दुश्मन की जंजीरों को तोड़कर खुद को मुक्त किए हैं।

राजनीतिक बन्दी खासकर माओवादी बन्दी शासक वर्गों द्वारा चलाये जा रहे कई जुल्म-अत्याचारों, दबावों, विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियों को झेलते हुए दुश्मन की काल कोठरियों में भी संघर्ष के झण्डे को बुलन्द रखना, अपनी पहलकदमी से कुछ जेलब्रेक की कार्रवाइयों को चलाकर खुद को मुक्त करके फिर से नया जोश के साथ क्रांतिकारी आन्दोलन में कूद पड़ना और हमारी पार्टी के नेतृत्व में लाल पीएलजीए बलों द्वारा सशस्त्र हमले कर सैकड़ों कामरेडों और जनता को जेलों से, दुश्मन के बंदी शिविरों से मुक्ति दिलाना बहुत ही अभिनन्दनीय है। यह जेल संघर्ष और जेलब्रेक की कार्रवाइयां बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इसने हमारे क्रांतिकारी आन्दोलन की प्रतिष्ठा को और बढ़ा दिया है। इसके लिए जेल कामरेडों को, उनको हर तरह की मदद पहुंचाने वाले विभिन्न जन संगठनों, जनवादी-बुद्धिजीवियों, जनता, जनहितैषियों को और सशस्त्र हमलों को सफलतापूर्वक अंजाम देने वाले हमारे लाल पीएलजीए बलों को हम अभिवादन पेश करते हैं! ★

(पृष्ठ-20 के शेष भाग...)

4) जनमिलिशिया और जनता को प्रशिक्षण देकर जनप्रतिरोध का नेतृत्व प्रदान करती है।
5) क्रांतिकारी राजनीतिक अधिकार अंगों को गठित करने और उसे स्थापित करने के लिए जनता को सहयोग करती है।
6) पार्टी के विभिन्न संगठनों को गठित करती है।
7) जन उत्पादन में भाग लेती है। जनता से घुलमिलकर उनकी सेवा करती है।
8) क्रांतिकारी जन संस्कृति के विकास के लिए प्रयास करती है।
9) जनता के साथ संबंधों में और पीएलजीए के अंदर क्रांतिकारी अनुशासन विकास करने में कामरेड माओ द्वारा निर्देशित तीन-आठ नियमों को लागू करती है। ★

पीएलजीए में पार्टी और कमान तथा उसका कार्यभार

पीएलजीए को राजनीतिक और सैनिक नेतृत्व प्रदान करने के लिए केन्द्रीय स्तर पर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्व में सेण्ट्रल मिलिटरी कमीशन (केन्द्रीय सैन्य आयोग-सीएमसी), राज्य/स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनल और रीजनल स्तर पर मिलिटरी कमीशन (एसएएमसी/एसएमसी, आरएमसी) गठित किए गए हैं। पीएलजीए में तीन किस्म के बल गठन किये गये हैं: 1) प्रधान बल, 2) द्वितीय बल और 3) आधार बल। प्रधान और द्वितीय बलों को केन्द्रीय स्तर पर पूर्वी (इस्टर्न) व मध्य (सेन्ट्रल) रीजनल ब्यूरो स्तर की कमान से लेकर राज्य स्तर की रीजनल कमान, जिला/जोन/डिवीजन, सबजोन, एरिया स्तर की कमान; आधार बलों को एरिया मिलिशिया कमान, ग्राम स्तर पर क्रांतिकारी जन मिलिशिया कमान प्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व प्रदान कर रही है।

आज पीएलजीए में विभिन्न कार्यों को पूरा करने के लिए सेक्शन स्तर से लेकर प्लाटून, कंपनी और कुछ छापामार बटालियन स्तर तक फारमेशन गठन कर काम कर रहे हैं। नेतृत्व प्रदान करने के लिए प्रत्येक पीएलजीए इकाई में पार्टी इकाई होगी। अर्थात, प्रत्येक दस्ता/सेक्शन में पार्टी सेल या पार्टी ब्रांच या सबब्रांच, प्रत्येक प्लाटून में प्लाटून पार्टी कमेटी (पीपीसी), कंपनी में कंपनी पार्टी कमेटी (सीवाईपीसी), बटालियन में बटालियन पार्टी कमेटी (बीएनपीसी) गठित की गयी है। पीएलजीए में विभिन्न स्तर की यूनिटों में गठित पार्टी कमेटियां ही अपने स्तर के सैनिक फारमेशनों की कमानों के रूप में भी काम करती है। उदाहरण के लिए पीपीसी ही प्लाटून की कमान के रूप में काम करती है। पार्टी कमेटियों/कमीशनों/कमानों के नेतृत्व में विभिन्न पीएलजीए यूनिटों को शिक्षा विभाग के सहयोग से राजनीतिक शिक्षा व मिलिटरी इंस्ट्रक्टरों के सहयोग से सैनिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। तय समयावधि के अंदर विभिन्न पीएलजीए यूनिट अपने दायरे में पीएलजीए के काम-काज की समीक्षा करती है। गलतियों को सुधारने की शिक्षा देती है। गलतियां गैरसर्वहारा वर्ग रुझान के रूप में प्रबल होने पर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी, विभिन्न राज्य कमेटियों के आह्वानों के अनुसार शिक्षा व सुधारने के अभियानों (Education and Rectication Campaign-ERC) को पहले ऊपर स्तर से लेकर निचले स्तर तक; उसके बाद निचले स्तर से लेकर ऊपर स्तर तक संचालन कर रही हैं। प्रधान बलों के काम-काज, उसकी विभिन्न यूनिटों की (सैनिक) पार्टी कमेटियों के अधिवेशन (कान्फेरेन्स) और प्लेनमों के जरिए; द्वितीय व आधार बलों के काम-काज जिला/जोन/डिवीजन, सबजोन, एरिया स्तर की पार्टी कमेटियों के अधिवेशनों व प्लेनमों के जरिए समीक्षा की जा रही है। इन अधिवेशनों व प्लेनमों में ही विभिन्न पीएलजीए के सैनिक फारमेशनों को जो कमेटियां व कमान संचालन करती हैं उन्हें पीएलजीए कार्यक्रम व संविधान के अनुसार जनवादी तरीके से चुनी जाती हैं।

पीएलजीए के कार्यभार

विश्व समाजवादी क्रांति के तहत भारत में नवजनवादी क्रांति को सफल करने के लक्ष्य से दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन में विभिन्न क्रांतिकारी राजनीतिक कार्यभार को पूरा करने के लिए हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में गठित किया गया हथियारबंद संगठन है पीएलजीए। पीएलजीए अजेय है, इसलिए कि वह सही भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व का अनुसरण करती है। वह सही नवजनवादी क्रांति की आम लाइन को दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए लागू करती है। वह क्रांतिकारी सशस्त्र संघर्ष को नव जनवादी क्रांति के मुख्य तत्व रही सशस्त्र कृषि क्रांति से, लोकयुद्ध व कानूनी संघर्ष के रूपों को जारी रखने का एक जरिया संयुक्त मोर्चा से जोड़ती है। किसी भी मामले में यह संयुक्त मोर्चा दुश्मन को अलगाव में डालकर, कमजोर व नष्ट करने के लिए व्यापक जनसमुदायों को गोलबंद करता है। पीएलजीए सशस्त्र संघर्ष को कृषि क्रांति से, जन आधार निर्माण करने की प्रक्रिया से जोड़ती है। वह क्रांति के चरण और विशेष परिस्थितियों के मुताबिक न्यूनतम भूमि सुधारों (भूमि के लगान को कम करना, सूदखोर व्यापार का सफाया, खेती मजदूरी बढ़ाना, बंजर, मंदिर व जंगल जमीन को जब्त करना, फसल उत्पादों के लिए समर्थन मूल्य और उत्पादन को बढ़ाना) को और अधिकतम भू सुधारों (बड़ा जमींदारों, बहुराष्ट्रीय और दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों व कंपनियों से भूमि जब्त करना तथा खेतीहर, गरीब और निम्न मध्यम किसानों को जमीन बराबर वितरण करना) को लागू करती है। वह राजसत्ता के अंगों को और मजदूर, किसान, आदिवासी जनसमुदायों, महिलाओं, दलितों, युवाओं, बाल-बच्चों, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं और अन्यान्य जनसंगठनों का निर्माण करती है। संक्षिप्त में पीएलजीए के कार्यभार इस प्रकार हैं:

1) पीएलजीए मुख्य रूप से दुश्मन की सैनिक शक्ति को ध्वस्त करने के लिए क्रांतिकारी लोकयुद्ध का संचालन करती है।

2) जनता के अंदर क्रांतिकारी प्रचार व प्रसार करती है।

3) जनता को विभिन्न संघर्षों और जनसंगठनों में संगठित कर उन्हें हथियारबंद करती है।

(शेष भाग पृष्ठ-19 में...)

कर्तव्य पूरा करने में पीएलजीए

गुरिल्ला युद्ध को उच्च स्तर तक विकास करने में पीएलजीए की भूमिका

21 सितम्बर, 2004 को दो क्रांतिकारी धाराएं- पूर्ववर्ती एसीसीआई और पूर्ववर्ती भाकपा (मा-ले) पीडब्ल्यु विलय होकर सापेक्षिक रूप से मजबूत पार्टी भाकपा (माओवादी) गठन होने के साथ, उनके दोनों गुरिल्ला सेनाएं मिलकर एक मजबूत व एकताबद्ध पीएलजीए और विभिन्न जनसंगठन मिलकर मजबूत व एकताबद्ध जनसंगठन स्थापित हुआ। सच्ची माओवादी पार्टियों के विलय को सफल करने के प्रयास में और एक मोड़ के रूप में भाकपा (माओवादी) व भाकपा (मा-ले) नक्सलबाड़ी का विलय हुआ। भारतीय क्रांति को एक ही केन्द्र से निर्देशित करने की एक अनुकूल परिस्थिति बन गई। हमारी पार्टी एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस को सफलतापूर्वक संपन्न कर दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन पर आधार इलाकों को स्थापित करने के लिए यानी गुरिल्ला जोनों को आधार इलाकों में विकसित करने के लक्ष्य से गुरिल्ला युद्ध को तेज व व्यापक करते हुए उसे चलायमान युद्ध में बदलने और पीएलजीए को नियमित सेना-पीएलए के रूप में तब्दील करने के केन्द्रीय, प्रधान व फौरी कार्यभार ली है। इसके अनुरूप पिछले 11 सालों में हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए द्वारा गुरिल्ला युद्ध को उच्च स्तर में विकसित करने का प्रयास किया गया है।

दूसरी तरफ भारतीय शोषक-शासक वर्गों को इसे देखकर नींद उड़ गई कि अभूतपूर्व ढंग से भारत में क्रांतिकारी शक्तियां एकताबद्ध हो रही हैं। अतएव पिछले 11 सालों में शासक वर्गों द्वारा एलआईसी रणनीति और कार्यनीति के जरिए कपटपूर्ण युद्ध जारी है, अपनी ही द्वारा बनाई गई संविधान व कानूनों का उल्लंघन करते हुए हमारी पार्टी, पीएलजीए और संयुक्त मोर्चा (विभिन्न स्तर के आरपीएसी और जन संगठन) पर और क्रांतिकारी आंदोलन पर दिन ब दिन फासीवादी और प्रतिक्रांतिकारी युद्ध को तेज करते आ रहे थे। इसके लिए केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा आन्दोलन के इलाकों में हजारों करोड़ रुपए आवंटन कर 'हमले-सुधार कार्यक्रम' के साथ चौतरफा हमले के तहत सरकारी सशस्त्र बलों की तैनाती को धीरे-धीरे बढ़ाते आ रहे हैं। यह चौतरफा हमला देश में क्रांतिकारी राजनीतिक विकल्प के रूप में रणनीतिक इलाकों में अंकुरित हो रही क्रांतिकारी जनता की सत्ता को उखाड़ने, इसके द्वारा साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों और कारपोरेट घरानों की लूट-खसोट के लिए मार्ग सुगम करने के लक्ष्य से बिहार-झारखंड (बीजे), उत्तर छत्तीसगढ़ (उछ), उत्तर प्रदेश (यूपी), पश्चिम बंग (डब्ल्युबी), दण्डकारण्य (डीके-छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र), आंध्र प्रदेश (एपी), ओड़िशा (ओएस), तेलंगाना (टीएलजी), मध्य प्रदेश (एमपी), तमिलनाडु (टीएन), कर्नाटक (केएन), केरलम (केएल), असम (एएस) आदि राज्यों में तीव्र स्तर पर चलाया गया।

एकीकृत कार्य योजना (आईएपी) के तहत बड़े पैमाने पर सुधार कार्यक्रम को लागू करते हुए उत्पीड़ित जनता के अंदर दरार पैदा कर एक छोटे-से तबके को अपने सामाजिक आधार बनाकर प्रतिक्रांतिकारिता को बढ़ा रहे हैं। सेन्द्रा (झारखण्ड), सलवा जुडूम (दण्डकारण्य) जैसे प्रतिक्रांतिकारी अभियानों, नागरिक सुरक्षा समिति (झारखण्ड और पश्चिम बंग), शांति कमेटी (नारायणपटना) जैसे प्रतिक्रांतिकारी गुटों को संगठित किया गया है। बिहार-झारखण्ड-उत्तर छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंग में टीपीसी, जेपीसी, एसपीएम, पीएलएफआई, जेजेएमपी, जेएलटी, शांतिसेना, दलमा आंचलिक समिति, पश्चिम बंग में हर्मद वाहिनी, भैरव सेना जैसे 17 प्रतिक्रांतिकारी गुटों को इसके लिए भरपूर इस्तेमाल कर रहे हैं।

दुश्मन द्वारा समय-समय पर लिए जाने वाले नई-नई कार्यनीतियों को हराने के लिए इस 11 साल में हमारी पार्टी नेतृत्व में पीएलजीए द्वारा गुरिल्ला युद्ध को तेज किया गया है। शोषक-शासक वर्गों के प्रतिक्रांतिकारी दुष्प्रचार का पर्दाफाश करते हुए क्रांतिकारी प्रचार-प्रसार को व्यापक जनता के बीच ले जाने के लिए प्रयास किया गया है। सरकार के सशस्त्र बलों, प्रतिक्रांतिकारी अभियानों और गुटों का प्रतिरोध किया गया है। सेन्द्रा और सलवा जुडूम के खिलाफ जनता को बड़े पैमाने पर संगठित-हथियारबंद किया गया है। उन्हें जनमिलिशिया में संगठित किया गया है। पीएलजीए के नेतृत्व में जनता द्वारा उच्च स्तर में चलाए गए प्रतिरोध में सेन्द्रा और सलवा जुडूम को हराया गया है। पश्चिम बंग के सामाजिक फासीवादी माकपा की निजी सेना- हर्मद वाहिनी पर लालगढ़ की जनता द्वारा पार्टी और पीएलजीए के नेतृत्व में पुलिस अत्याचारों के खिलाफ जन कमेटी (पीसीएपीए) और सिद्धू-कान्हू जनमिलिशिया में संगठित होकर लगातार बड़े पैमाने पर किए गए हमले में उसे ध्वस्त व परास्त किया गया है। नारायणपटना में शांति कमेटी के खिलाफ जनप्रतिरोध के कारण उसे कई जगहों में पीछे हटना पड़ा। बिहार-झारखण्ड-उत्तर छत्तीसगढ़ में कई प्रतिक्रांतिकारी गुटों पर पीएलजीए द्वारा कई हमले कर उसके कई सरगनाओं, सदस्यों का सफाया किया गया है। रणवीर सेना जैसे कई सामंती निजी सेनाओं को हराया गया है।

इसके बाद इससे कई गुना अधिक फासीवादी तरीकों को अपनाते हुए शोषक-शासक वर्गों द्वारा अगस्त 2009 से बड़े पैमाने जनता पर युद्ध- 'ऑपरेशन ग्रीन हण्ट' को जनता पर थोप दिया गया है। कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए-2 द्वारा इस ग्रीन हण्ट के तहत 1, 2 चरणों में बड़े पैमाने पर दमनकारी हमले किए गए हैं। इसके बाद सत्ता को कब्जा करने वाली भाजपा नेतृत्वाधीन एनडीए सरकार ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के तीसरे चरण को शुरू कर आक्रामक रूप से अमल कर रही है।

2011 से देश में माओवादी 'बैकफूट' पर था, उसका आन्दोलन कमजोर हो रहा है, कुछ सालों में ही उन्हें पूरी तरह सफाया करने का दावा शासक वर्गों द्वारा बढ़ा-चढ़ाकर किये जाने के बावजूद, आज भी, यानी पांच साल के बाद भी ऐसे ही घोषणा करने को मजबूर हैं कि देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए 'वामपंथी उग्रवाद' ही सबसे बड़ा खतरा है। अतएव वर्तमान में केन्द्र सरकार द्वारा अर्द्धसैनिक बलों के 106 बटालियन, आईआरबी/एसआईआरबी के 37 बटालियनों को तैनात किया गया है और 9 बटालियनों को जल्द ही तैनात किया जाएगा। इसके अलावा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा आंध्र प्रदेश के कुख्यात ग्रेहाउंड्स कमांडो के तर्ज पर हजारों विशेष कमांडो बलों को गठित कर क्रांतिकारी इलाकों में तैनात किया गया है। आईएपी योजना की समयावधि को बढ़ाकर सुधार कार्यक्रमों पर जोर दिया जा रहा है। रोड और संचार तंत्र को युद्ध स्तर पर विकसित किया जा रहा है जैसा कि दूसरे देश पर युद्ध के लिए तैयारी हो रही हो।

हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए बलों द्वारा लगातार समन्वयपूर्वक किए गए सैकड़ों छोटे, मध्यम और बड़े किस्म के हमलों के जरिए दुश्मन द्वारा चलाए गए विभिन्न प्रतिक्रांतिकारी अभियानों को और समय-समय पर संचालित किए गए दमन अभियानों को हराया गया। वर्तमान में जारी ऑपरेशन ग्रीन हण्ट को हराने के लिए, जनयुद्ध को और उच्च स्तर तक आगे बढ़ाने के लक्ष्य से इस तरह के कई हमले किए गए हैं। खासकर, इस 11 साल में संचालित कुछ जेल ब्रेक ऑपरेशन उल्लेखनीय है।

ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के पहले चरण में दुश्मन के बलों को पीएलजीए द्वारा बड़े पैमाने पर नष्ट किया गया। इनमें से सबसे बड़ा धक्का मुकराम-ताड्मेट्ला-2 एम्बुश से हुआ। दूसरा चरण पहुंचते ही देशभर में क्रांतिकारी आंदोलन को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। पार्टी, जनसेना और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा गंभीर नुकसान झेलते हुए भी दृढ़तापूर्वक जनयुद्ध की लाइन पर अडिग रहते हुए, छोटे और मध्यम किस्म के हमले, कुछ बड़े हमलों को संचालित करते हुए दुश्मन के भीषण हमलों का मुकाबला करने के लिए प्रयास किया। पीएलजीए अपने अन्दर मौजूद गैर-सर्वहारा रूझानों को सुधारने और उसे संगठित करने के लिए एक योजना के तहत प्रयास जारी रखने की वजह से धीरे-धीरे कुछ परिणाम हासिल करते हुए दुश्मन की योजनाओं को हराते आ रही है। ग्रीन हण्ट के तीसरे चरण में पहुंचते ही हमारी आत्मगत शक्तियों में हल्की वृद्धि हुई है।

कुल मिलाकर इस 11 साल में हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए बल दिन-ब-दिन मजबूत और व्यापक हो रहे कारपेट सुरक्षा के बीच ही डीके, बीजे, ओएस, डब्ल्युबी, एओबी में गुरिल्ला युद्ध में महत्वपूर्ण नमूने के तौर पर खड़े करने वाले रेड/शार्ट सरप्राइज अटैक, दुश्मन के शस्त्रागार पर हमले संचालित किया है। विस्फोटक पदार्थों की आपूर्ति में क्रांतिकारियों को दुश्मन द्वारा कई तरह का बाधा पैदा करने के बावजूद पीएलजीए बलों द्वारा उन सभी को पार पाते हुए न केवल विस्फोटक पदार्थ इकट्ठा किए गए, बल्कि लैंड माइन, इंप्रूवाइज्ड एक्सप्लोजिव डिवाइस (आईडी), बूबीट्रैप, विभिन्न तरह के इंप्रूवाइज्ड एक्सप्लोजिव को रचनात्मक तरीके से विकसित किए गए और माइन युद्ध तंत्र को एक शक्तिशाली अस्त्र के रूप में इस्तेमाल किया गया है। इसके तहत पीएलजीए स्पेशल एक्शन टीमों द्वारा कुछ एक/दो/तीन आदमी का एम्बुश कार्यान्वित किया गया है। माइनप्रूफ गाड़ियों (एमपीवी) के अभेद्यता के बारे में दुश्मन

द्वारा कई तरह के भ्रम, भय और अफवाहों को पैदा किया गया है। उनके खोखलापन को इस 11 साल में पीएलजीए बलों द्वारा कई एमपीवी को चकनाचूर करते हुए भण्डाफोड़ कर दिया गया। सिर्फ फायर पावर द्वारा ही पैदल और विभिन्न तरह की गाड़ियों में आनेवाले दुश्मन के बलों पर कई एम्बुश सफलतापूर्वक कार्यान्वित किए गए। दुश्मन अपने नुकसानों को कम करने के लक्ष्य को लेकर और तेजी से अपनी गतिविधियों को चलाने के लिए मोटर साइकिलों को इस्तेमाल कर रहा है, लेकिन इस तरह मोटर साइकिल वाहिनियों पर भी पीएलजीए बलों द्वारा प्रभावशाली ढंग से हमलों को कार्यान्वित किया गया। रेलवे थानों पर, रेल गाड़ियों से कूच करनेवाली गश्ती/स्कॉट पार्टियों पर हमले कर हथियार जब्त किए गए। नमूने के तौर पर खड़े होने वाले कुछ एरिया एम्बुश कार्यान्वित कर बड़े पैमाने पर दुश्मन के बलों का सफाया किया गया। दुश्मन एक कार्यनीति के तहत रात के समय में मौजूद अनुकूलताओं को इस्तेमाल कर काउण्टर गुरिल्ला युद्ध को तेज करने की कोशिशों को नाईट एम्बुशों द्वारा मुकाबला किया गया। दुश्मन के कुछ एक्सप्लोजिव गाड़ियों पर, बड़े पैमाने पर नकद राशि ले जाने वाली बैंक गाड़ियों पर हमले कर विस्फोटक पदार्थ और आर्थिक निधि को हासिल करने के लिए प्रयास किया गया। पीएलजीए बलों से बचाने के लिए, अपने नुकसान कम कर हमें नष्ट पहुंचाने के लिए दुश्मन द्वारा रोज-रोज हेलिकॉप्टरों का इस्तेमाल बढ़ रहा है, लेकिन ये हेलिकॉप्टर भी पीएलजीए बलों के निशाने से अछूत नहीं रहा और उस पर भी हमारे बलों द्वारा किए गए कुछ हमले ने दुश्मन को परेशानी में डाल दिया है।

इस तरह बड़े पैमाने पर कार्यान्वित किये गये कार्यनीतिक जवाबी अभियानों और कार्रवाइयों में बड़ी संख्या में दुश्मन का सफाया करते हुए हथियार और कारतूस जब्त करने में हमारी पीएलजीए एक हद तक कामयाब हुई है। प्रधान गुरिल्ला जोनों में गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करने के लक्ष्य के तहत रानीबोदली (बीजापुर, डीके), उरपलमेट्टा (दंतेवाड़ा), खास महल (बोकारो, झारखण्ड), राजपुर-बघेला (रोहतास, बिहार), नयागढ़ (ओड़िशा), बलिमेला (आंध्र-ओड़िशा सीमा-एओबी), मदनवेड़ा (राजनंदगांव, डीके), मुकराम-ताड़मेट्ला-2 (दंतेवाड़ा, डीके), सिल्दा (पश्चिम मेदिनीपुर, डब्ल्युबी), ममाइल, सारंडा जबाबी हमले (झारखण्ड), कजरा (शीतल कोड़ासी), (लखीसराय, बिहार), अमवाटीकर (लातेहार, झारखण्ड) जैसे चलायमान युद्ध लक्षण युक्त कुछ कार्रवाइयों को पीएलजीए द्वारा सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया।

उसी तरह सैकड़ों सिंगल एक्शन कार्रवाइयों को कार्यान्वित कर जन जालिमों और कट्टर राजनेता, जमीन्दार, पुलिस अफसर, पुलिस मुखबिर और गद्दारों का सफाया कर जनपीड़ा को मुक्त कर दिया गया है।

गुरिल्ला युद्ध और चलायमान युद्ध के बारे में हमारी पार्टी मौलिक दस्तावेज 'भारतीय क्रांति की रणनीति-कार्यनीति' में संक्षिप्त रूप में इस प्रकार बताई गई है :

''**छापामार युद्ध :** छापामार युद्ध, युद्ध का वह तरीका है जिसके जरिए मजदूर वर्ग और किसानों के उत्पीड़ित जनसमुदाय अपने आपको मुक्त करते हैं। .... यह लोकयुद्ध है। .... जो भी छापामार युद्ध के सिद्धांतों को लागू करने की उपेक्षा करेगा, वह परास्त होगा। .... यह युद्ध का एक ऐसा तरीका है जिसे संसाधनों की कमी वाली ताकतें, अपने बहादुराना क्रांतिकारी जीवट व उत्साह के भरोसे अपनाती हैं। छापामार युद्ध के तरीके हैं : जब शत्रु शक्तिशाली हो तो उससे युद्ध में मत उतरो, बल्कि उसपर हमला तब करो जब वह कमजोर हो; कभी छापामार फौजों को बिखेर दो तो कभी उन्हें केंद्रित करो, जब भी मौका हो तो शत्रु को विनष्ट कर दो, अन्यथा पीछे हट जाओ, कहीं भी शत्रु का मुकाबला करने के लिए हर समय तैयार रहो; आदि।

छापामार युद्ध, युद्ध का एक ऐसा तरीका है जिसके जरिए .... कमजोर शक्ति मजबूत शत्रु से .... अपनी सुरक्षा करता है तथा हमला करने और हट जाने एवं छोटी-छोटी दुश्मन की टुकड़ियों को खत्म कर देने के तौर-तरीकों के जरिए अपने दुश्मन पर प्रहार करता है। चौकसी, चुस्ती-फुर्ती, गतिशीलता और कम से कम समय में अचानक हमला अर्थात छोटा, तेज एवं अचानक (Short, Swift & Sudden) छापामार युद्ध के रणनीतिक बिंदु है।

.... छापामार युद्ध के दरम्यान हमें लम्बे समय तक चलने वाली लड़ाइयों से बचना होगा। इस दौरान हमें तुरन्त निर्णय की कार्यवाहियां करनी चाहिए। छापामार युद्ध का निचोड़ है : जब दुश्मन आगे बढ़ता है तो हम पीछे हटते हैं; जब दुश्मन पड़ाव डालता है, तो हम उसे हैरान-परेशान करते हैं; जब दुश्मन थक जाता है तो हम उसपर हमला करते हैं; और जब दुश्मन भागने लगता है, तो हम उसका पीछा करते हैं।

.... रणनीतिक लिहाज से देखें तो छापामार युद्ध दुश्मन को भारी नुकसान पहुंचाता है और उसके लिए काफी कठिनाइयां पैदा करता है। उसका मनोबल टूट जाता है। .... कई छोटी-छोटी लड़ाइयों में हासिल की गई जीतों का कुल परिणाम यह होता है कि दुश्मन संख्या बल के मामले में असमर्थ व असहाय हो जाता है। ये बिखरी हुई लड़ाइयां एक ज्यादा केंद्रित युद्ध के रूप में विकसित होंगी। दुश्मन की सेनाओं को भारी पैमाने पर विनष्ट करने और आधार क्षेत्रों की स्थापना करने के लिए छापामार युद्ध को खुद को चलायमान युद्ध में बदल लेना चाहिए।

.... छापामार युद्ध बिल्कुल स्वाधीन रूप से अपने आप ही क्रांतिकारी युद्ध में विजय नहीं दिला सकता। .... छापामार सेना कदम-ब-कदम विकसित होते-होते एक नियमित सेना (पीएलए) की शक्ल लेकर पीएलए बन जाने के बाद विजय हासिल होना तभी संभव होगा, जबकि छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध और मोर्चाबद्ध युद्ध में विकसित करते हुए और इनके साथ तालमेल रखकर उसे संचालित करते हुए शत्रु को विनष्ट कर डाला जाय।

चलायमान युद्ध

चलायमान युद्ध एक ऐसा युद्ध है जिसे नियमित सेना अस्थिर युद्ध-पंक्तियों वाले विस्तीर्ण क्षेत्र में अपनी शक्तियों को केंद्रित करते हुए, वहां उसे तैनात करते हुए और एक जगह से दूसरी जगह उनका स्थान बदलते हुए संचालित करती है। इसमें इतनी चलायमानता रहनी होगी कि यह दुश्मन के अपेक्षाकृत रुप से नाजुक स्थानों पर हमला कर सके, तुरंत ही वहां से हट सके और परिस्थितियों के बदलते जाने के साथ ही साथ अपनी कार्यनीति को बदलते जाने में समर्थ हो जाय। *"तभी लड़ो जबकि जीत सकते हो और जब जीतना संभव नहीं हो , तब वहां से चल पड़ो"* – चलायमान युद्ध का यही वास्तविक निचोड़ है।

चलायमान युद्ध का उद्देश्य किसी भूभाग पर कब्जा जमाना या उसपर कब्जा बरकरार रखना नहीं होगा। इसके बजाय इसका उद्देश्य दुश्मन की फौजों का विनाश करना होगा।

जहां मोर्चेबद्ध युद्ध में सेनाओं की सुरक्षा को रक्षात्मक मोर्चेबंदियों और किलेबंदियों के जरिए सुदृढ़ बनाया जाता है, वहीं चलायमान युद्ध में इसे जल्दी-जल्दी स्थान बदलते रहने, तेज गति से प्रत्याक्रमण की कार्यवाहियां करने और सेनाओं को केंद्रित करने एवं बिखेर देने के तरीके के व्यापक इस्तेमाल के जरिए हासिल किया जाता है।

चलायमान युद्ध में भी, प्राथमिक रुप से तुरंत निर्णय की लड़ाइयां चलायी जानी चाहिए।

छापामार युद्ध और चलायमान युद्ध में महत्वपूर्ण अंतर यह है कि चलायमान युद्ध में सेनाओं का बड़ी संख्या में केंद्रीकरण किया जाएगा। चलायमान युद्ध चला रही फौज ऐसे नियमित सैनिकों की फौज होगी, जिनमें अपेक्षाकृत रुप से ज्यादा ऊंचे स्तर की राजनीतिक चेतना होगी, ज्यादा अनुशासन होगा और जिन्हें उच्च सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त होगा। छापामार युद्ध चला रही छापामार फौजों में उपरोक्त चीजें अपेक्षाकृत निम्न स्तर की रहेंगी।

इस चलायमान युद्ध में, जिसमें कि नियमित युद्ध के प्राथमिक लक्षण पाए जाते हैं, बड़े पैमाने पर दुश्मन के बलों का विनाश करने का सामर्थ्य रहेगा। इस प्रकार .... यह दुश्मन पर हावी हो जाने और रणनीतिक रक्षा के स्तर से रणनीतिक ठहराव या बराबरी के स्तर तक और रणनीतिक ठहराव के स्तर से रणनीतिक प्रत्याक्रमण के स्तर तक ले जाने में मूल रणनीतिक भूमिका निभाएगा।'' (‘भारतीय क्रांति की रणनीति-कार्यनीति’- पृष्ठ : 130-134)

उक्त अवधारणा की रोशनी में अगर देखें तो हमारा पीएलजीए पिछले 11 साल में कई कष्ट व कठिनाइयों और उतार-चढ़ावों का सामना करते हुए गुरिल्ला युद्ध को उच्च स्तर में संचालन करने का प्रयास जारी रखी है और गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध के रूप में विकसित करने के लिए चलायमान युद्ध की लक्षणयुक्त कुछ युद्ध कार्रवाइयों को सफलतापूर्वक संचालित कर अपने बलों के तैनाती क्षमता और बड़े पैमाने पर दुश्मन के बलों को सफाया करने की क्षमता कुछ हद तक बढ़ायी है। लेकिन यह समुद्र में एक बूंद मात्र ही है। इससे दस गुना अपनी क्षमता को बढ़ाकर ही वह अपनी पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस द्वारा लिए गए केन्द्रीय, प्रधान एवं फौरी कार्यभार को पूरा कर सकता है।

साहसिक ढंग से कार्यान्वित कुछ जेल-ब्रेक की कार्रवाइयां

शासक वर्गों द्वारा जेल कामरेडों पर दसियों की संख्या में झूठे मामले थोपकर जब जमानत हासिल करना या रिहाई होना लगभग असंभव की स्थिति पैदा कर गया है, कानूनी सहायता दिलाने वाले वकीलों को ‘माओवादी’ कहकर खुफिया अफसरों की चेतावनी, जमानत मिलने पर भी जेल गेट के बाहर ही फिर से गिरफ्तार करने, आजीवन जेल बंदी बनाने की साजिशों के साथ दुश्मन का आतंक चरम सीमा तक पहुंचने, जेल में जिंदगी दूभर हो जाने, कई सालों से यही स्थिति मौजूद होने की वजह से जेलों के अंदर बंद राजनीतिक बन्दियों में किसी तरह बाहर निकलने की ढीठता बढ़ती गयी है। इसलिए वे अपने आप पहलकदमी के साथ जेलों में तैनात सुरक्षा बलों के खिलाफ बगावत कर जेलों को तोड़कर मुक्त हो रहे हैं। हमारी पार्टी योजनाबद्ध तरीके से दुश्मन की कमजोरियों का अध्ययन कर पहलकदमी के साथ पीएलजीए बलों को तैनात कर सफलतापूर्वक हथियारबंद हमले करके जेलों में सड़ रहे हमारी पार्टी नेतृत्व, कार्यकर्ता और सैकड़ों उत्पीड़ित जनता को मुक्त करवा रहे हैं। इन 11 सालों में इस तरह कुछ साहसिक जेल-ब्रेक की कार्रवाइयां कार्यान्वित की गयी हैं। दण्डकारण्य में सलवा जुडूम बंदी शिविरों पर पीएलजीए द्वारा हमले करके शिविरों में सड़ रही जनता को मुक्त कर फिर अपने-अपने गांवों में पहुंचा दिया। कुछ पार्टी कार्यकर्ता, क्रांतिकारी जनता द्वारा एक-एक, जोड़ी या टीमों के तौर पर की गई दृढ़ कोशिशों से दुश्मन की जंजीरों को तोड़कर मुक्त हो गए। खासकर

बिहार में लखीसराय जिला कोर्ट पर कार्यान्वित की गई हमले में हमारी पार्टी के सीएमसी सदस्य कामरेड सुनिर्मल जी को मुक्त करवाना एक निर्णायक सफलता है। इस तरह कई कामरेडों का जेल की जंजीरों को तोड़कर फिर से नए जोश के साथ क्रांतिकारी आन्दोलन में कूद पड़ना व जनता को मुक्त करवाना बहुत ही अभिवादन करने की बात है। ये जेल ब्रेक की कार्रवाइयां बहुत ही महत्व रखते हैं। इन्हें साहसिक ढंग से सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने वाले पीएलजीए बलों को और जेल कामरेडों को लाल अभिवादन पेश करते हैं!

जहानाबाद 'ऑपरेशन जेल ब्रेक'

बिहार के जहानाबाद जिला जेल पर 13 नवम्बर, 2005 को सीएमसी के नेतृत्व में दो कंपनियों की संख्या में पीएलजीए बलों ने 'ऑपरेशन जेल ब्रेक' को अंजाम दिया। पीएलजीए बलों ने बहुत ही साहसिक ढंग से लड़ते हुए शहर को घेर लिया। इस हमला को समय पर आरंभ नहीं करने और तकनीकी कारण से पुलिस लाइन के पास अनापेक्षित विस्फोट होने के कारण पहले पुलिस वाले ही सतर्क हो गए और वहां के हमारी टीम पर गोलीबारी शुरू कर दी। तब तक हमारी कोई भी टीम शहर में प्रवेश नहीं की थी। शहर में सभी पुलिस बल धीरे-धीरे सकर्त हो रही थी। इसके बावजूद अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने का आदेश कमांडर की तरफ से जारी हो गए। इससे हमारे सभी पीएलजीए टीम धीरता के साथ, थोड़ा-सा भी समय न छोड़ते हुए दुश्मन से पहलकदमी छीनकर अपने हाथ में रखते हुए अपने लक्ष्यों की ओर तेजी से चल पड़े। 15 मिनट में सभी अपने-अपने पोजिशन तक पहुंचकर सभी जगहों पर अपना नियंत्रण कायम किए। जिला जज के भवन के पास और शहर के थाना के पास रणवीर सेना के गुण्डों द्वारा गोलीबारी करने के बावजूद हमारी टीमों द्वारा जवाबी गोलीबारी से वे दुम दबाकर भाग निकले और घरों के अंदर शरण लिए। इसी दौरान जहानाबाद जिला जेल पर हमारा हमला शुरू हो गया। दोनों तरफ से गोलीबारी हुई। इसमें दो पुलिस मारे गए और दो घायल हो गए। दूसरी जगह पर एक पुलिस घायल हो गयी। कुछ देर के बाद जेल पूरी तरह अपने नियंत्रण में आ गया। 8 हथियार और 265 कारतूस जब्त की गयी। रणवीर सेना के एक सरगना को जेल के अंदर ही हमारे लाल योद्धाओं ने सफाया किया। इसके बाद जेल से 388 संख्या में कैदियों को मुक्त किया गया। इसी दौरान पुलिस लाइन के पास हुई गोलीबारी में कामरेड अशोक (पीएम) शहीद हो गए। कामरेड इंदल (सबजोन सदस्य) गंभीर रूप से घायल होकर बाद में शहीद हो गए। भारत में जारी सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए केन्द्रीय गृह मंत्रालय के नेतृत्व में ज्वाइंट ऑपरेशनल कमान (जेओसी) द्वारा क्रांतिकारी नेता और कार्यकर्ताओं को एवं क्रांतिकारी जनता को गिरफ्तार करने, बेरहमी से पिटाई करने, लम्बे समय तक जेलों में बंदी बनाने जैसी करतूतों से तेज होते जा रहे दुश्मन के दमन अभियान के खिलाफ इस कार्रवाई को पीएलजीए द्वारा अंजाम दिया गया। इस हमले में जिला मुख्यालय को दो घंटों तक अपने कब्जे में लेने के कारण सरकार और प्रशासन स्तब्ध हो गए। इस तरह आने वाले दिनों में यह कार्रवाई एक नमूने के तौर पर खड़ी है।

दुश्मन के शिविर के अंदर साहसिक बगावत- दंतेवाड़ा जेल ब्रेक

दण्डकारण्य के दंतेवाड़ा जिले में क्रांतिकारी राजनीतिक बन्दी समर्थक और सभी आम कैदियों व बन्दियों की मदद से बगावत कर जेल को तोड़कर भाग निकले। 16 दिसम्बर, 2007 को यह वीरोचित घटना घटी। इस कार्रवाई का नेतृत्व करने वाली टीम में एक महत्वपूर्ण कामरेड कीर्ति (वर्गेश) 2009 के गर्मियों में एओबी इलाके में हुई नालको बहुआयामी रेड में दुश्मन के साथ बहुत ही साहसिक ढंग से लड़ते हुए शहीद हो गए।

दंतेवाड़ा जेल ब्रेक की कार्रवाई किसी आधी रात में नहीं हुई। शाम के समय तब तक सूरज भी नहीं डुबा था, यानी 4:10 बजे हुई। सालों-साल कोर्ट द्वारा जमानत न देकर जेलों में बंदी बनाने की शासक वर्गों की साजिशों को देखकर सभी माओवादी बन्दी किसी तरह जेल से मुक्त होने की आम राय बनायी। जेल में बदतर खाना, बीमारी, गंध से भरी जेल की परिस्थितियों और परिवार से अलग होकर कितने समय तक जेल में रह सकेंगे- इस तरह के सोच ने साथ दिया। इसके बाद उन्होंने दुश्मन की कमजोरियों को गहराई से जांच की। एक सोची-समझी योजना के तहत अंतिम रेकी भी पूरा करने के बाद दुश्मन की कमजोरियों पर घात लगाते हुए हमले को कार्यान्वित किए। पहले एक टीम द्वारा अकेला रहने वाले मुख्य गेट की संतरी को चुपचाप एक कमरे में बंदी बनाया गया। तुरंत बाद दूसरी टीम ने शस्त्रागार को कब्जे में लेकर 6 हथियारों को जब्त कर लिया। उसी समय में तीसरी टीम ने जेल के अंदर बैरकों में घूम रहे दो पुलिस वालों को बंदी बनाया। तभी ज्यादा से ज्यादा माओवादी बन्दी और आम बन्दी व कैदी भी मुख्य गेट में जमा हो गए। गेट का ताला खोलकर बहुत ही खुशी से गेट को पार कर तेजी से नजदीक जंगल में घुस गए। एक रात एक दिन भूख और थकावट का परवाह न करते हुए लगातार कूच कर कुल 299 कैदी जेल से मुक्त हो गए और ऐसा साबित किए कि अगर आत्मबलिदान के लिए तैयार होते हैं, तो कोई भी सफलता हासिल कर सकते हैं। जहानाबाद जेल ब्रेक के बाद इस घटना से देश की जनता और जनवादियों में खुशी की लहर दौड़ गयी। खासकर, बाहर से मदद कुछ भी नहीं मिलने के बावजूद अपनी पहलकदमी के साथ राजनीतिक चेतना दर्शाई और माओवादी

कैदियों के नेतृत्व में सभी कैदी संगठित होकर बगावत कर जेल की चार दीवारियों से मुक्त होने से एक बढ़िया संघर्ष के रूप को जेलों में सड़ रहे कैदियों के सामने लाए।

जमुई जिला कोर्ट पर रेड

बिहार के जमुई जिला कोर्ट पर 16 जनवरी 2009 को पीएलजीए बलों द्वारा साहसिक ढंग से हमला कर 10 कैदियों को मुक्त किया गया। इसमें से दो हमारे पार्टी कार्यकर्ता थे। पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने पुलिस के आंखों में मिर्ची पावडर डाल कर, बमबारी करते हुए कोर्ट प्रांगण को पूरी तरह अपने कब्जे में ले लिया। पुलिस के पास से हथियार छीन लिया। कोर्ट पेशी के लिए लाये हमारे दो कार्यकर्ताओं को मुक्त करवाकर सफलतापूर्वक रिट्रीट हो गए। दुश्मन शिविर में ही घटी इस हमले से क्रांतिकारी कतारों में आनन्द और उत्साह भर गया।

लखीसराय जिला कोर्ट पर साहसिक हमला - सीएमसी सदस्य कामरेड सुनिर्मल की मुक्ति

बिहार के लखीसराय जिला कोर्ट प्रांगण में 23 जून 2009 को पीएलजीए बलों द्वारा बहुत ही सरप्राइज ढंग से हमला कर दुश्मन के चंगुल से हमारे पार्टी सीसी/पीबी/सीएमसी सदस्य और पूर्वी रीजनल कमान के कमांडर-इन-चीफ कामरेड सुनिर्मल को मुक्त किया गया। गुरिल्ला जोन इलाके से बहुत दूर में, पूरी तरह दुश्मन के शिविर में रहे लखीसराय जिला कोर्ट पर हमला करना सही में एक चुनौती थी। सीएमसी के प्रत्यक्ष नेतृत्व में दुश्मन के शिविर का पूरी तरह से एक आकलन करके, दुश्मन की कमजोरियों को जांच की गयी और बहुत ही सुनियोजित तरीके से एक योजना बनायी गयी। जब कामरेड सुनिर्मल को कोर्ट पेशी के लिए लाया गया उस योजना के तहत अपनी जान की परवाह न करते हुए पीएलजीए बलों द्वारा साहसिक ढंग से इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया। पहले हमारे लाल योद्धा कामरेड सुनिर्मल का स्काट कर रहे पुलिस वालों पर सरप्राइज हमला कर उन्हें अपने कब्जे में ले लिए। उनके हथियारों में से कुछ छीन लिया गया। इसी दौरान एक पुलिस जवान द्वारा गोलीबारी करने के बावजूद उसे बम और ग्रेनेडों से भगा दिया गया। उसके बाद कामरेड सुनिर्मल को सफलतापूर्वक मुक्त करवाकर सुरक्षित जगह के लिए पीएलजीए बल रिट्रीट हो गए। इस पूरे हमले को अंजाम देने के लिए मोटर साइकिलों का घेरा और सुरक्षा घेरा बना लिया गया, तभी पीएलजीए इसे सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर पाया था।

दुश्मन के बंदिखाना में रहे हमारी केन्द्रीय कमेटी के नेता को कोर्ट प्रांगण पर हमला कर मुक्त करवाना यही पहली घटना है। लगातार गिरफ्तारियों से तीव्र नुकसानों को झेलने की स्थिति में घटी यह हमला क्रांतिकारी कतारों में नयी जोश और नयी तेजी, नया उल्लास, नयी शक्ति, नयी जान फूंक दी।

चाईबासा जेल ब्रेक-1 : जेल बंधनों को तोड़कर मुक्त हुए माओवादी नेता

16 जनवरी, 2011 को झारखण्ड के पश्चिमी सिंहभूम जिला के चाईबासा जेल के बंधनों को तोड़कर माओवादी नेता कामरेड मोतीलाल सोरेन (संदीप, सेण्ट्रल इंस्ट्रक्टर), कामरेड मंगरू महतो (धीरेन्द्र, उत्तम- ओड़िशा एसओसी सचिव), रीजनल कमेटी सदस्य कामरेड रघुनाथ हेम्ब्रम (निर्भय) निकल भागे। जेल की सलाखों को काटकर बहुत ही साहसिक ढंग से जेल से मुक्त होकर फिर से क्रांतिकारी आन्दोलन में कूद पड़े।

राउरकेला बाल कारागार को तोड़कर मुक्त हुए बाल गुरिल्ला योद्धा

21 जून, 2011 को ओड़िशा के सुंदरगढ़ जिला के राउरकेला शहर के पानपोश एरिया में स्थित बाल कारागार से सात बाल गुरिल्ला योद्धा बहुत ही चालाकी से अपने बंधनों को तोड़कर जेल से मुक्त हुए।

चाईबासा जेल ब्रेक-2 : जेल सुरक्षा बल पर शानदार बगावत- 15 माओवादी मुक्त

झारखण्ड के पश्चिम सिंहभूम जिला के इस चाईबासा जिला कारागार में चार साल पहले एक जेल ब्रेक को अंजाम देकर हमारी पार्टी के तीन नेतागण मुक्त हुए थे। फिर से उसी कारागार के अंदर ही माओवादी कैदी बहुत ही साहसिक ढंग से बगावत कर और एक जेल ब्रेक की कार्रवाई को कार्यान्वित कर 15 साथी जेल से मुक्त हुए। माओवादी कैदियों के मामलों पर कोई सुनवाई न कर सालों-साल जेल में बंदी बनाना, गैरकानूनी तरीके से सजा सुनाने, उनके परिवारों को परेशान करने, दूभर जेल जीवन से त्रस्त माओवादी कैदी ऐसी निष्कर्ष तक पहुंचे कि बगावत के बिना और कोई चारा नहीं है। दुश्मन की कमजोरियों को जांच किए और जब कोर्ट पेशी में हाजिर करने के बाद वापस जेल लाकर जब जेल गाड़ी से कैदियों को उतारते हैं उसी समय बगावत करने की योजना बनायी। चाईबासा में प्रसिद्ध प्रति मंगलवार बैठनेवाली मंगला हाट-बाजार में क्रय-विक्रय करने के लिए हजारों जनता आते हैं। यह बाजार जेल की बगल में बैठता है। इसका फायदा उठाते हुए ऐसी योजना बनायी गयी कि उस दिन बगावत करने से जेल से आसानी से निकल पाएंगे। इसी के तहत उसी दिन कोर्ट पेशी तारीख मिलने के लिए चालाकी से काम किया।

उस दिन 9 दिसम्बर, 2014 के मंगलवार को योजना में जैसा सोचे वैसा ही सुबह कैदियों को स्कॉट गाड़ियों में

भर कर कोर्ट पेशी में हाजिर करवाकर फिर से शाम लगभग 4 बजे उन्हें जेल लाया गया। कैदियों की गाड़ी जेल के मुख्य गेट से जेल प्रांगण में प्रवेश कर गई। गेट को बंद कर दिया गया। (लेकिन ताला नहीं डाला। ताला डालने के लिए और कुछ समय लगेगा। इसे कैदी साथी पहले से ही जानते थे। इस कमजोरी को इस्तेमाल करते हुए इस हमले की योजना बनायी गयी।) इसी दौरान हमारे माओवादी कैदी के कमांडर बाहर स्कॉट पार्टी की गाड़ियों की स्थिति का जायजा लिए। वह एक मिनट के बाद वापस चले जाने के तुरंत बाद अपनी योजना के तहत कमांडर के इशारा पर वहां तैनात सुरक्षा पुलिस पर कैदियों की बगावत शुरू हो गयी। लेकिन कुछ अपराधी कैदी बाकी हमारे माओवादी कैदियों को गाड़ी से कुछ देर तक उतरने में रुकावट पैदा किए। इसी वजह से सभी हमारे कैदी एक साथ पुलिस पर हमला नहीं कर पाए। इससे पुलिस को संभलने का कुछ मौका मिला। हमारे सभी कामरेड गाड़ी से उतर कर हमले में शामिल होने तक दुश्मन भी कुछ हद तक संभाल पाए। वे हमारे कामरेडों से लाठियों से भिड़ गए। योजना के मुताबिक मौका देखकर कुछ कामरेड पुलिस की आंखों में मिर्च पाउडर डाल दिए। इससे कुछ पुलिस वाले गिर गए। उनके पास से तीन इनसास राइफल भी हमारे कामरेड जब्त किए। जिम्मा के अनुसार एक कामरेड संतरी पोस्ट में तैनात पुलिस जवान को नियंत्रण में ले लिए। लेकिन उससे हथियार जब्त किये या नहीं पता नहीं चला। क्योंकि वहां से वे कामरेड वापस नहीं आ पाये। पुलिस के प्रतिरोध से वहां अफरातफरी फैल गई। हमारे कामरेडों के बीच समन्वय में कमी आई। इसी दौरान एक कामरेड ने जेल का मुख्य गेट खोल दिया। तुरंत बाद कुछ कामरेड गेट से बाहर निकल गए। इसको देखकर बाकी सभी कामरेड भी बाहर निकल गए। इसी अफरातफरी में जब्ती हथियार वहीं पर छूट गए। इस तरह कुल 15 कामरेड दुश्मन के कैद से मुक्त हो पाने में सफल हो गए। मंगला हाट बाजार के हजारों जनसमूह में घुलमिल गए। लेकिन 5 कामरेडों को दुश्मन जेल प्रांगण में ही फिर से पकड़ने में कामयाब हुआ। उसमें से दो कामरेड रामविलास तांती, टीपा दास (इस बगावत में इन दोनों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया) को जेलर के आदेश से गोली मार दी गई। बाकी तीन कामरेडों को बेरहमी से पिटाई कर फिर से कैद कर दिए। जेल से मुक्त होने वाले कामरेड दो रात और एक दिन चलकर सुरक्षित इलाके में पहुंच गए। उनमें से अधिकतर फिर से क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गए।

पिछले कुछ सालों से जेलों में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के बावजूद, खासकर 2011 में हुई चाईबासा जेल ब्रेक कार्रवाई के बाद दुश्मन के और चौकस होने के बावजूद हमारे कामरेड साहसिक ढंग से बगावत कर फिर से क्रांतिकारी आंदोलन में कूद पड़े। इससे क्रांतिकारी कतारों और जनता में बहुत ही उत्साह पैदा किया। दुश्मन हताश होकर हमारे कामरेडों को फिर से पकड़ने के नाम पर आम गरीब आदिवासी जनता को पकड़कर मारपीट किया। उसने ड्रोन विमानों द्वारा उनका पता लगाने की कोशिश की। इसके बावजूद वह कुछ भी परिणाम हासिल नहीं कर पाया।

क्रांतिकारियों को जेलों में अनन्तकाल बंदी नहीं बना सकते, अगर उसमें दृढ़संकल्प, उच्च मनोबल हो तो जितनी भी बड़ी-बड़ी रुकावटें होने के बावजूद उन्हें रोक नहीं सकता- यह इतिहास ने बार-बार साबित किया है। जहानाबाद, दंतेवाड़ा, चाइबासा-1, 2, राउरकेला जेल ब्रेक इसके ताजा नमूने हैं।

कारपेट सुरक्षा को चोट पहुंचाते हुए दुश्मन के शिविरों पर विभिन्न स्तरों पर पीएलजीए द्वारा कार्यान्वित रेड/शार्ट सरप्राइज अटैक

क्रांतिकारी आन्दोलन को उखाड़ने के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा काउण्टर गुरिल्ला युद्ध तेज करने के लिए देशभर में कारपेट सुरक्षा के तहत किलेबंदी (fortified) कैंपों और थानों का व्यापक तौर पर निर्माण कर रहे हैं। इसे चोट पहुंचाने के लिए इन 11 सालों में हमारे पीएलजीए बल बदलते दुश्मन की कार्यनीतियों और तैनातियों के खिलाफ अपनी कार्यनीतिक क्षमता और लड़ाकू क्षमता को बढ़ाने के लिए समयानुरूप सैनिक प्रशिक्षण करते हुए युद्ध क्षेत्र में दुश्मन के बलों के साथ लड़ते हुए युद्ध कर युद्ध को सीखते हुए आगे बढ़ा है। इन 11 सालों में हुई कुछ खास रेड और शार्ट सरप्राइज अटैक की कार्रवाइयां इस प्रकार हैं :

अप्रैल 2005 में भटगांव रेड पहला ऐसा रेड है जिसे उत्तर छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया। इसमें हमारे लाल योद्धाओं ने बहुत भीड़भाड़ वाले इलाके में स्थित भटगांव थाना पर बिजली की गति से किया गया हमला में दो पुलिस वाले मारे गये, 20 हथियार और 350 कारतूस को जब्त किया गया। उत्तर बिहार के मधुबन (पूर्वी चम्पारण) में जून 2005 में दुश्मन के कई लक्ष्यों- थाना, ब्लॉक कार्यालय, स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक, स्थानीय एमपी का घर- पर पीएलजीए बलों द्वारा बहुआयामी रेड- 'ऑपरेशन धमाका' कार्यान्वित किया गया। इसमें दो पुलिस मारे गए और 7 हथियार और 120 कारतूस जब्त किए गये। इस रेड के बाद पीएलजीए बलों का सफाया करने के लिए 4-5 गुना अधिक संख्या में घेरे पुलिस बलों के साथ हुई दो मुठभेड़ों में हमारे लाल योद्धाओं ने कई घंटों तक वीरतापूर्ण लड़ते हुए दो पुलिस वालों का सफाया किया गया। रेड के बाद थाना को आग के हवाला कर दिया गया। लगभग 9 लाख रूपए नकद, कुछ सोना-चांदी भी जब्त किया गया। इसमें दुश्मन के साथ वीरोचित ढंग से लड़ते

हुए प्लाटून कमांडर कामरेड राजेन्द्र, पीएलजीए सदस्य कामरेड गौरव, सौरव, मोहम्मद सब्बीर, वैज्ञ, जितेन्द्र शहीद हुए। यह हमला पूरा मैदानी इलाके में होने के बाद भी दुश्मन के घेरे के बलों में से एक छोटी टुकड़ी को पीएलजीए बलों द्वारा घेर कर दुश्मन को नुकसान कर हथियार जब्त करने का यह क्रम गुरिल्ला युद्ध को उच्च स्तर तक पहुंचाने में हमें एक शिक्षा की तरह मदद की थी।

फरवरी 2006 में दण्डकारण्य में एनएमडीसी (दंतेवाड़ा) के विस्फोटक गोदाम पर बहुत ही साहसिक ढंग से और गुप्त रूप से एक हजार जनमिलिशिया बल की मदद के साथ कार्यान्वित की गयी इस कार्रवाई में 8 सीआरपीएफ पुलिस का सफाया किया गया और 8 को घायल किया गया। किलेबंदी संतरी बंकरों और टावरों पर रहे टॉप संतरियों को निष्क्रिय करने का इस कार्रवाई में एक अच्छा अनुभव हासिल हुआ। 19 टन विस्फोटक पदार्थ और 15 आधुनिक हथियार, 2,430 कारतूस आदि जब्त किया गया। इस तरह आधुनिक हथियारों के साथ टनों की तादाद में विस्फोटक पदार्थ को जब्त करना पीएलजीए के इतिहास में पहली बार हुआ। बड़े पैमाने पर विस्फोटक पदार्थ पीएलजीए के कब्जे में आने के बाद गुरिल्ला युद्ध को तेज करने और सलवा जुडूम को रोकने में बहुत ही मदद किया।

उत्तर छत्तीसगढ़ में आरा (जशपुर) पुलिस चौकी पर फरवरी 2006 में माओवादी गुरिल्ला योद्धाओं द्वारा सुबह उजाला होते ही बिजली की गती से रॉपिड फायर करते हुए हमला कर दिया गया और चौकी पर विस्फोटक पदार्थ फेंककर उसे नियंत्रण में लाये। इसमें हमारे योद्धाओं द्वारा दो पुलिस मारे गये और 8 को घायल किये गए। इस हमले में 16 हथियार जब्त किये गये।

मार्च 2006 में झारखण्ड के दमोदा (बोकारो जिला) कोयला खदान की सुरक्षा में लगाया गया सीआईएसएफ कैंप और उससे एक किलोमीटर के अंदर लगाई गई झरिया पुलिस चौकी- इन दोनों पर हमारे पीएलजीए के लाल योद्धाओं द्वारा एक ही समय में दोपहर 2:30 बजे संयुक्त रेड किया गया। रैडिंग पार्टियां ढोल-डफली के साथ बाराती के छद्म वेष में गाड़ियों से अपने लक्ष्यों के नजदीक तक पहुंच पाए। बाराती को देखने के लिए समीप में आए पुलिस वालों पर गुरिल्ला लड़ाकू योद्धाओं द्वारा सरप्राइज हमला किया गया। बाघों की तरह कूद कर रेड को सफल बनाए। इसमें 5 पुलिस वाले मारे गए, चार हथियार और 100 कारतूस तथा अन्य सामग्री जब्त किया गया। इसमें कंपनी सेक्शन कमांडर कामरेड वासुदेव टुडु शहीद हो गए।

अप्रैल 2006 में दण्डकारण्य में पीएलजीए बलों द्वारा कार्यान्वित की गयी मुरकीनार (बीजापुर) रेड - 'ऑपरेशन मापना दिया' (सफाया का दिन) में 11 पुलिस मारे गए और 7 घायल हुए। 49 आधुनिक हथियार और 2,700 कारतूस जब्त किया गया। एक यात्री गाड़ी को अपने कब्जे मे लेकर उसमें सवार ग्रामीणों को समझाया और दिनदहाड़े सुबह 9 बजे पीएलजीए बल बस में सवार होकर मुरकीनार कैंप पहुंचकर सफलतापूर्वक इस हमले को अंजाम दिए। वह कैंप जिला मुख्यालय बीजापुर से नजदीक होता है और कैंप में दुश्मन हमेशा सतर्क रहता है। वह ऐसे घमण्ड से रहता है कि वहां हमें कुछ नहीं होगा। ऐसी स्थिति में इस सरप्राइज हमला ने एसपीओ में खलबली मचा दी। इस हमले के बाद पीएलजीए और जनता के सामने आत्मसमर्पण करने वाले एसपीओ की संख्या बढ़ गयी। सलवा जुडूम के खिलाफ साहसिक ढंग से लड़ने वाले दण्डकारण्य के क्रांतिकारी जनता का मनोबल इस हमले से बढ़ गया। पीएलजीए में भर्ती होने के लिए सैकड़ों की संख्या में नवयुवती-युवक आगे आए। इससे सांगठनिक तौर पर पीएलजीए को विस्तार करने में मदद मिली।

एओबी के आर. उदयगिरी में बासाधारा डिविजन आन्दोलन को कुचलने के लिए गठित एक प्लाटून वाली ओएसएपी पुलिस कैंप, खजाना-थाना, उपकारा, कम्युनिकेशन टावरों को लक्ष्य में रखकर मार्च 2006 में उजाला होते ही पीएलजीए के तीनों बलों ने कंपनी स्तर पर आर. उदयगिरी बहुआयामी रेड (गजपति) को बहुत ही साहसिक ढंग से कार्यान्वित किए। किलेबंदी निर्माण, टॉप संतरी बंकर रहनेवाला कैंप पर हमला कर सफल करने में यह हमला एक बेहतर अनुभव दिया है। इसमें तीन पुलिस मारे गए और तीन पुलिस घायल हो गए। कुल 34 आधुनिक हथियार, 4,000 कारतूस, ग्रेनेड-10 आदि जब्त किए गए। 17 किसान कार्यकर्ता और जन मिलिशिया सदस्यों को जेल से मुक्त कराया गया। इस हमले में दुश्मन के साथ साहसिक ढंग से लड़ते हुए कामरेड सत्तीश और किरण शहीद हो गए।

रानीबोदली शार्ट सरप्राइज अटैक

मार्च 2007 में दण्डकारण्य में रानीबोदली पुलिस बेस कैंप (बीजापुर) पर सफलतापूर्वक अंजाम दिए गए शार्ट सरप्राइज अटैक में 55 सशस्त्र पुलिस मारे गए और 12 घायल हो गए। 33 आधुनिक हथियार, 2107 कारतूस, 18 ग्रेनेड, तीन बुलेटप्रूफ जैकेट, दो नाइट विजन आदि सामग्री पीएलजीए द्वारा जब्त किया गया। इस हमले को इसलिए बहुत ही प्रमुखता मिली कि भारत देश में क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध में और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों में अभूतपूर्व ढंग से बड़ी संख्या में दुश्मन के बलों का सफाया करके शासक वर्गों को कंपित कर दिया गया था। यह एक राजनीतिक और सैनिक सफलता है। यह शार्ट सरप्राइज अटैक सफल होना सलवा जुडूम के लिए बड़ा झटका था। दुश्मन सोच

सकता है कि एक इलाका अपने हाथ में है लेकिन अगर वहां हमें जन आधार हो तो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दुश्मन की कमजोरियों को पहचान कर उस पर सफलतापूर्वक हमला कर सकते हैं। यह शार्ट सरप्राइज अटैक इसका एक जीवंत उदाहरण है। यह हमला सफल होने के बाद चारों तरफ थाना होने के बावजूद जनता की मदद से और तेज गतिविधियों के कारण दुश्मन के जाल में न फंसते हुए हमारे पीएलजीए बल बच पाया। इस तरह कारपेट सुरक्षा के बीच ही यह हमला सफल हुआ। मुख्य रूप से इस कार्रवाई को सफल करने के लिए हमारे कामरेड साहसिक ढंग से लड़ते हुए बहुत ही योगदान दिए। दुश्मन पर आक्रमण करते समय जान की परवाह न करते हुए कमांडर के आदेशों का पालन किए। कुछ कामरेड घायल हो जाने और कुछ कामरेड अपने सामने ही शहीद होने के बावजूद आगे-पीछे नहीं हुए। सभी कामरेडों में वर्गघृणा और वर्ग चेतना मौजूद होने के कारण अंत तक अपनी ढीठता को दर्शाए। इस हमले में दुश्मन के साथ साहसिक ढंग से लड़ते हुए डिविजनल कमांडर-इन-चीफ कामरेड मोहन, सेक्शन कमांडर कामरेड लिंगन्ना, जनमिलिशिया कमांडर कामरेड भगत, पीएलजीए सदस्य कामरेड कैलास, भीमाल, चैतु शहीद हो गए। इस हमला से दण्डकारण्य में गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध की दिशा के अंदर विकास करने में पीएलजीए में स्पष्ट रूप से एक कदम आगे बढ़ाया। व्यवहार में यह एक चलायमान युद्ध चरित्र वाली नमूना कार्रवाई के रूप में खड़ी है। दण्डकारण्य में गठित जनता की सत्ता को बचाने में इस कार्रवाई से मदद मिली।

अप्रैल 2007 में झारखण्ड के बोकारो थर्मल शहर के पास खासमहल के सीआरपीएफ कैंप पर साढ़े तीन घंटों तक पीएलजीए बलों द्वारा कार्यान्वित की गयी सरप्राइज रेड में 4 पुलिस मारे गए और 7 घायल हो गए। 4 हथियार, 265 कारतूस दुश्मन से हमारे लाल योद्धा द्वारा जब्त की गयी। दुश्मन के साथ साहसिक रूप से लड़ते हुए कामरेड पुनीत गंझू (प्रदीप-सैक इनस्ट्रक्टर), पीएलजीए सदस्य कामरेड निर्मल शहीद हो गए। हमारे लाल योद्धाओं ने कमांडर के आदेशों का पालन करते हुए सैनिक तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए अपने सूझबूझ के साथ ताकत लगाते हुए खासमहल कैंप को पूरी तरह अपने कब्जा में ले लिया।

अप्रैल 2009 में ओड़िशा के दामनजोड़ी पहाड़ों पर एशियाई महाद्वीप में ही सबसे बड़े नालको बॉक्साइट खदानों पर, जेलेटिन गोदाम पर और किलेबंदी सीआईएसएफ कैंप पर बहुत ही सुनियोजित योजना के साथ साहसिक ढंग से लगभग 8 घंटों तक लगातार कार्यान्वित की गयी बहुआयामी रेड में 11 सीआईएसएफ जवान मारे गए और 6 घायल हो गए। इस हमले में 12 हथियार, 2000 कारतूस और ढाई टन जेलेटिन आदि जब्त किये गये। यह हमला शुरू होने से पहले उस इलाके के मोबाइल टावर को पीएलजीए द्वारा गिरा कर कम्युनिकेशन को ठप्प कर दिया गया। कैंप के आने वाले सभी मुख्य मार्गों में माइन और बूबीट्रैप लगाए गए और पुलिस के अतिरिक्त बलों को रोक कर तुरंत मदद करने नहीं दिया गया। इस रेड में दुश्मन के साथ घमासान संघर्ष में हमारे चार लाल योद्धा सीआरसी कंपनी-2 के कामरेड वर्गेश (कीर्ती-पीपीसीएम और सेक्शन कमांडर), श्रीकाकुलम-कोरापुट डिविजन के कामरेड राजू (एसीएम), कंपनी सदस्य कामरेड रघु और सुखराम शहीद हो गए।

जून 2009 के अंत में बिहार में कार्यान्वित किया गया 'ऑपरेशन दमन ब्रेक'- राजपुर-बघेला शार्ट सरप्राइज संयुक्त रेड (रोहतास) में 5 पुलिस मारे गए और दो घायल हुए। जब हम रेड की तैयारियां कर रहे थे तो एक मुठभेड़ में दो सीआरपीएफ पुलिस मारे गए। इस रेड में कुल 46 हथियार और 333 कारतूस जब्त किया गया। राजपुर रेड में जोनल कमेटी सदस्य कामरेड अरुण शहीद हो गए। रेड के बाद मैदानी इलाका में दिनदहाड़े 7 बजे हुई एक मुठभेड़ में पीएलजीए ने साहसिक ढंग से दुश्मन से लोहा लिया। हजारों पुलिस द्वारा घेरने के बावजूद कुछ भी नहीं कर सके।

अक्टूबर 2009 में पश्चिम बंग के पश्चिमी मेदिनीपुर में सांक्रैल थाना पर दिनदहाड़े पीएलजीए के नेतृत्व में सिद्धु-कान्हू जन मिलिशिया बलों द्वारा कार्यान्वित किया गया रेड में दो एएसआई मारे गए और 9 रायफल, 6 पिस्टॉल जब्त किया गया। थानेदार और एक पुलिस कांस्टेबल को बंधक बनाया गया। इसके साथ-साथ नजदीक में रहे स्टेट बैंक से 9 लाख 23 हजार नकद राशि जब्त की गयी। 15 मिनट में यह हमला पूरा हो गया। लाल योद्धाओं ने मोटर साइकिलों से आकर इस हमले को अंजाम दिया। जेल में बंदी बनाए गए आम आदिवासी के 21 महिला और पुरुषों को रिहा करने के बाद ही उक्त बंदी पुलिस कर्मियों को पीएलजीए द्वारा छोड़ा गया।

10 जनवरी, 2010 को बिहार के पूरे मैदानी इलाका में रहे अकबरनगर (भागलपुर) तथा शाहकुण्ड थाना के बीच पचरूखी गांव के समीप चंदन पुल के पास बीएमपी चौकी पर एक छोटा-सा पीएलजीए बैच द्वारा दो मेटाडोर में जाकर बिजली की गति से हमला कर दो पुलिस वालों का सफाया कर चार को घायल कर दिया गया। उनसे 6 हथियार और 700 कारतूस जब्त किया गया। हमला करने के तुरंत बाद दुश्मन उसका पीछा किया। इसके कारण रातों-रात तेज गति से पैदल में विस्तार से फैले हुए खेत, मिट्टी के ढेला, दलदल नदी और नाला को पार करते हुए आरवी जगह पर पहुंचने तक 4-5 जगह पर दुश्मन का सामना करना पड़ा। तीसरे दिन वैकल्पिक आरवी पहुंचने के लिए जब जा रहे थे उसी क्रम में दुश्मन के साथ भीषण मुठभेड़ हुई। लाल योद्धाओं ने दृढ़ता के साथ प्रतिरोध करने की वजह से पुलिस

को पीछे हटना पड़ा। इस तरह हमारे आन्दोलन के इलाका के बाहर चारों ओर पुलिस कैंप और थानों से घेरे हुए व्यापक मैदानी इलाके में हमारा बैच सफलतापूर्वक हमले को अंजाम देकर सुरक्षित जगह पहुंचने में कामयाब हुआ।

सिलदा रेड

फरवरी, 2010 में पश्चिम बंग में कार्यान्वित किया गया सिलदा (पश्चिमी मेदिनीपुर) रेड से शासक वर्गों के दिलों में कंपन पैदा हो गया। लाल योद्धाओं द्वारा मोटर साइकिल और मेटाडोर पर सवार होकर शाम 5:30 बजे सिलदा में इस्टर्न फ्रंटियर रायफल्स के कैंप पर साहसिक ढंग से हमला किया गया। पहली असाल्ट टीम के हमले में ही एक संतरी का सफाया किया गया और एक संतरी भाग गया। उसके बाद असाल्ट टीम थाना के अंदर घुसा और लगभग 20 मिनट तक पुलिस के द्वारा प्रतिरोध करने के बावजूद लाल योद्धाओं ने बहुत ही साहसिक ढंग से लड़ते हुए 15 पुलिस वालों का सफाया किया। काम्पाउण्ड दीवार के नजदीक ही स्थित त्रिपाल से बने शिविरों पर पेट्रोल बम फेंका गया। इससे उसमें आग लग गई। इसके बाद कैंप को माइन लगाकर विस्फोट कर उसे पूरी तरह ध्वस्त किया गया। इस कार्रवाई में कुल 24 पुलिस मारे गए और एके-47-10, एसएलआर-16, इनसास-15, स्टेन-1, पिस्तॉल-1, कारतूस-2000 आदि को पीएलजीए द्वारा सफलतापूर्वक जब्त किया गया। दुश्मन के साथ घमासान लड़ाई में लालगढ़ इलाके के धर्मपुर एरिया कमांडर और एसीएम कामरेड सुसेन महतो, पार्टी और पीएलजीए के सदस्य कामरेड विजय (सिद्धू हांस्दा), चंदन (विद्या किस्कू), पीएलजीए सदस्य कामरेड सूर्या (ठाकूर दास मुर्मू), सुजीत सोरेन शहीद हो गए। इस रेड ने केन्द्र और राज्य सरकार के संयुक्त सशस्त्र बलों द्वारा चलाये जा रहे दमन अभियानों के बीच में ही लालगढ़ संघर्ष को और विकास के लिए पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी जनसंगठनों में आत्मविश्वास बढ़ा दिया। यह कार्रवाई गुरिल्ला युद्ध में एक मिसाल के रूप में खड़ी है।

17 जुलाई, 2013 को बिहार के औरंगाबाद जिले के गोह थाना क्षेत्र में जाजापुर में पड़ाव डाली एमवीएल निर्माण कंपनी को सुरक्षा देने वाले एसएपी (सैप) बलों पर पीएलजीए द्वारा सरप्राइज हमला किया गया। इस हमले में तीन सैप पुलिस जवान, दो निजी सुरक्षा गार्ड और एक व्यक्ति मारे गए और तीन घायल हो गए। उससे 33 हथियार लाल योद्धाओं द्वारा जब्त किया गया। इसमें 3 एके-47, 9 एसएलआर और 21 इनसास शामिल हैं। यह एक ऐसा रेड के रूप में उल्लेख कर सकते हैं कि कठिन परिस्थितियों को भी पार करते हुए दुश्मन की कमजोरियों को पहचान कर सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया।

इन हमलों के द्वारा देशभर में गुरिल्ला युद्ध को बहुत ही प्रेरणा मिली थी। वे समय-समय पर दुश्मन के किलेबंदी कैंप और थाना के बलों का मनोबल पर धक्का पहुंचाया।

दुश्मन के शस्त्रागार पर हमले

पीएलजीए में नया और उच्च स्तर के फारमेशन विकास करने और उसे हथियारबंद करने के उद्देश्य से 2005 में गिरिडीह, 2008 में ऑपरेशन रोप वे 'नयागढ़', झाझा (जमुई) जैसे शहरों में दुश्मन के शस्त्रागार पर युद्ध कार्रवाइयों को पीएलजीए द्वारा अंजाम दिया गया। सैकड़ों की संख्या में हथियार और दसियों हजार संख्या में कारतूस जब्त किया गया।

गिरिडीह रेड

गिरिडीह जिला मुख्यालय में होमगार्ड के शस्त्रागार पर सरप्राइज रेड सिर्फ 14 मिनट के अंदर ही सफल हुआ था। बटालियन स्तर पर किया गया यह हमला पीएलजीए की शक्ति में गुणात्मक बदलाव को दर्शाता है। भारत वर्ष में सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) गठित होने, उसके नेतृत्व में एकताबद्ध पीएलजीए गठन होने की वजह से ही यह सम्भव हुआ। झारखण्ड में इस तरह का यह पहला कार्यनीतिक जवाबी हमला है। इस रेड के लिए वहां होने वाला मेला को कैमोफ्लेज के रूप में पीएलजीए द्वारा इस्तेमाल किया गया। योजना के अनुसार होमगार्ड कैंप पर बिजली गति से पीएलजीए द्वारा हमला शुरू हो गया। लाल योद्धाओं द्वारा संतरी और पुलिस वालों को अपने कब्जे में ले लिया गया। उनके हथियारों को छीन लिया गया। अपने योद्धा द्वारा कुछ मिनटों में शस्त्रागार से हथियारों को ले जाकर अपनी गाड़ियों में भर दिया गया। अपेक्षित समय से पहले ही लक्ष्य को पूरा करके रेडिंग पार्टी रिट्रीट हो गई। हमले के समय में, रिट्रीट के समय में रेडिंग पार्टी की सुरक्षा के लिए- जिला मुख्यालय, जमुआ, मुफसिल, पीरटांड़, निमियाघाट, डुमरी, बगोदर, नवादा थानों और सीआरपीएफ कैंपों से एवं धनबाद, बोकारो, हजारीबाग से अतिरिक्त पुलिस बल का आने से रोकने के लिए सात स्टॉप पार्टियों को योजना के अनुसार पहले ही तैनात किया गया था। पीएलजीए द्वारा रिट्रीट मार्गों की सुरक्षा प्रदान करने के लिए दुश्मन के अतिरिक्त बल आने वाले मार्गों को ध्वस्त कर एम्बुश लगाया गया था। रेलवे क्रासिंग को बंद किया गया था। इससे रेडिंग पार्टी सुरक्षित रिट्रीट हो गयी। इस हमले में कुल 6 पुलिस, एक प्रतिक्रियावादी गुण्डे का सफाया किया गया और 14 को घायल किया गया। कुल 194 हथियार

और 2639 कारतूस आदि जब्त किये गये।

बिहार के झाझा रेलवे स्टेशन (जमुई) में 60 की संख्या में रह रही जीआरपी पुलिस थाना पर पीएलजीए बलों द्वारा सरप्राइज रेड का कार्यान्वयन सफलतापूर्वक किया गया। शाम सूरज ढलते समय पीएलजीए के असाल्ट टीमों द्वारा बहुत ही साहसिक ढंग से समन्वयपूर्वक थाना के सभी कमरे और संतरी को अपने कब्जे में कर लिया। हल्के प्रतिरोध के बाद शस्त्रागार के सभी हथियारों को जब्त किया गया। इस हमले में दो पुलिस मारे गए। यह सूचना पाते ही सैप के पुलिस बल हमारे पीएलजीए बलों पर हमला करने के लिए जब आ रहा था, उस पर हमारी स्टॉप पार्टी द्वारा माइन विस्फोट की गयी और गोलीबारी की गयी। इसमें दो पुलिस मारे गए और 4 घायल हो गए। इस हमले में कुल 4 पुलिस मारे गए और दुश्मन से 42 हथियार और 1231 कारतूस पीएलजीए द्वारा जब्त की गयी।

नयागढ़ कार्रवाई - 'ऑपरेशन रोप वे'

नयागढ़ कार्रवाई - 'ऑपरेशन रोप वे' पीएलजीए द्वारा और उच्च स्तर में संचालित किया गया। इसमें 1200 से ज्यादा हथियार और एक लाख 75 हजार से ज्यादा कारतूस जब्त किये गये। (सही समय पर पीएलजीए द्वारा पर्याप्त संख्या में बलों को तैनात नहीं कर पाने की वजह से इसमें 315 आधुनिक हथियार और 50 हजार कारतूस ही बचा पाए।) इससे पीएलजीए द्वारा भारतवर्ष में जारी सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध में एक नया अध्याय को लाल अक्षरों से लिखा गया। यह देश में भाकपा (माओवादी) नेतृत्व में जारी लोकयुद्ध में एक छलांग को चिन्हित करता है। पीएलजीए को पीएलए में तब्दील करने की दिशा में यह एक मील का पत्थर होगा। बहुत ही साहसिक ढंग से कार्यान्वित की गयी इस चलायमान युद्ध कार्रवाई में बेहतरीन ढंग से प्रज्ञा-क्षमता को दर्शाया, गुप्तता का पालन किया, बहुत ही विशाल मैदानों, जंगली इलाकों और नदी-नालाओं को पार करते हुए सी4 को बेहतरीन ढंग से लागू करते हुए, फायर एण्ड मूवमेंट और विभिन्न सैनिक विन्यास करवाने में निपुणता को दर्शाया। व्यापक जनता पर निर्भर होकर पीएलजीए द्वारा संचालित किया गया इन लम्बे विन्यासों को देखकर शासक वर्ग कंप गया।

इस कार्रवाई में नयागढ़ जिला मुख्यालय पर, उसके आसपास में छः लक्ष्यों (1. जिला शस्त्रागार और नयागढ़ टाउन थाना, 2. पुलिस ट्रेनिंग स्कूल और उसके शस्त्रागार, 3. महीपुर पुलिस चौकी, 4. नुवागांव थाना, 5. दसपल्ला थाना, 6. गल्लेरी थाना) पर वीर पीएलजीए के प्रधान, द्वितीय और मिलिशिया बलों द्वारा जैसे दुश्मन को अंदाजा भी नहीं है- हमला किया गया। भाकपा (माओवादी) के सेण्ट्रल मिलिटरी कमीशन (सीएमसी) के निर्देशन में सेण्ट्रल रीजनल कमाण्ड (सीआरसी) और इस्टर्न रीजनल कमाण्ड (इआरसी) के संयुक्त नेतृत्व में एओबी एसजेडसी, ओड़िशा एसओसी के पूरे सहयोग से, बिहार-झारखण्ड के सैक की भागीदारी से और व्यापक ओड़िशा के उत्पीड़ित जनता की सक्रिय मदद से इस कार्रवाई को कार्यान्वित कर पाया।

नयागढ़ कार्यनीतिक जवाबी हमला राजनीतिक, सैनिक और लाजिस्टिक (सभी तरह की सप्लाई) तौर पर पीएलजीए के सामने एक चुनौती थी। इस हमला के लिए सुदूर दण्डकारण्य, एओबी और बिहार-झारखण्ड से विभिन्न यूनिटों को बहुत ही गुप्त तरीके से पीएलजीए द्वारा इकट्ठा किया गया। सैकड़ों किलोमीटर कूच करते हुए, गुप्त तरीके से व्यापक जनता के साथ संबंध बनाते हुए और मजबूत करते हुए एक राजनीतिक-सैनिक अभियान के रूप में इस कार्रवाई को संचालन करना पड़ा। इस विस्तार वाले नये इलाके में अपरिचित ऊंचे पहाड़, जंगल, नदी-नालों से भरा कठिन धरातल को समझने के लिए पीएलजी द्वारा भरपूर कोशिश की गयी। विभिन्न भाषा, संस्कृति, आहार-व्यवहार वाली जनता से घुलमिल जाते हुए, उनकी भाषा, संस्कृति को सीखते हुए उन्हें जागरूक और गोलबंद किया। इस जनता पर ही निर्भर होकर इस कार्रवाई के लिए तैयारियां की गई। हमारे काम-काज का मुख्यालय (administrative place) में रिहर्सल पूरा करके, वहां से बहुत ही गुप्त रूप से जैसाकि दुश्मन को अंदाजा भी नहीं हो- 300 किलो मीटर दूर कूच कर इस कार्रवाई को कार्यान्वित किया गया।

पीएलजीए बल वेन, जीप, मोटर साईकिल पर सवार होकर, सिविल कपड़ा पहन कर अपने लक्ष्यों के पास पहुंच गया। मुख्य लक्ष्य- नयागढ़ जिला शस्त्रागार और पुलिस ट्रेनिंग स्कूल पर पीएलजीए असाल्ट बैचों द्वारा एक ही समय में बिजली की गति से हमला कर अपने कब्जे में ले लिए। ठीक उसी समय में ही और एक बैच नयागढ़ जिला एसपी कुमार के घर को घेर लिया और उसे बाहर निकलने से रोक दिया। पूरी कार्रवाई में हल्का प्रतिरोध से ही ज्यादातर पुलिस पीएलजीए के सामने आत्मसमर्पण कर दी। हमारे माओवादी लड़ाकों की चेतावनी को परवाह न कर गोलीबारी पर उतरे 14 पुलिस इस ऑपरेशन में मारे गए और 10 घायल हो गए। लेकिन शस्त्रागारों में अपने आकलन से ज्यादा यानी 1200 से ज्यादा हथियार, एक लाख 75 हजार कारतूस होने के कारण उसे जब्त करने के लिए ज्यादा ही समय लगा। यह रिट्रीट पर असर दिखाई दिया। योजना के अनुसार रिट्रीट होने में कई समस्या उभरकर आने के कारण वह दूसरा दिन वीरोचित गोसामा संघर्ष के लिए रास्ता दिखाई दी।

नयागढ़ जिला मुख्यालय में जब पीएलजीए बल अपनी कार्रवाई का कार्यान्वयन कर रहा हो और कार्रवाई पूरी करने

के बाद हो – यानी 2 घंटों तक बारूदी सुरंग और एम्बुश के डर से अतिरिक्त पुलिस बल उस इलाके में घुसने का साहस नहीं किया। सुबह उजाला होने के बाद ही ओड़िशा एसओजी, आंध्र प्रदेश ग्रेहाउण्ड्स, ओएसएपी, सीआरपीएफ बल भारतीय वायुसेना के हेलिकॉप्टरों की मदद से संयुक्त रूप से भारी कूंबिंग अभियान चलाया।

गोसामा संघर्ष में वीर लाल योद्धा जरा भी न हिचकते हुए किए गए प्रतिरोध में ओड़िशा एसओजी के असिस्टेंट कमांडेंट के साथ तीन पुलिस कमांडो मारे गए। उनसे हथियार भी पीएलजीए द्वारा जब्त की गयी। यह भाड़े के पुलिस बलों में तीव्र आतंक मचा दिया और उसका एडवांस रूक गया। इस वीरोचित संघर्ष में दुश्मन के साथ साहसिक ढंग से लड़ते हुए कंपनी–7 के प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्या कामरेड रामबत्ति, सीआरसी कंपनी सदस्य कामरेड इकवाल शहीद हो गए। पीएलजी के लाल योद्धा द्वारा इस कार्रवाई में जब्त हथियार फिर से दुश्मन के हाथों न पड़ने के उद्देश्य से कम किस्म के हथियार और कारतूस को मोटर गाड़ियों के साथ आग के हवाला कर दिया गया। आधुनिक हथियारों को सुरक्षित अपने साथ ले गए। पीएलजीए ने गुरिल्ला युद्ध नियमों को अमल करते हुए– गुप्त रूप से कूच करना और दुश्मन के हमले का मुकाबला करने के लिए सदा तैयार रहना– का पालन कर दुश्मन के 'ऑपरेशन फ्लश आउट' को विफल कर दिया। लेकिन रिट्रीट पूरा होने के क्रम में शबरी नदी में बहकर कामरेड अर्जुन शहीद हो गए।

नयागढ़ कार्रवाई– 'ऑपरेशन रोप वे' से यह शिक्षा मिलती है कि जैसेकि कामरेड माओ ने शिक्षा दी है कि एक कमजोर जनसेना अगर कड़ाई से गुरिल्ला युद्ध नियमों में अडिग रहता है, सभी तरह से मजबूत दुश्मन पर भी कार्यनीतिक तौर पर सफलता हासिल कर सकता है। नेतृत्वकारी साथी इकट्ठा होने, बलों का केन्द्रीकरण करने, नया इलाका होने के बावजूद जनता में राजनीतिक काम चलाते हुए व्यापक जनता की मदद हासिल करने, प्रतिकूल परिस्थितियों को पार पाने के लड़ाकू चिंतन आदि सभी सकारात्मक पहलुओं का ही परिणाम है 'ऑपरेशन रोप वे'। इस युद्ध कार्रवाई में दुश्मन से जब्त किए गए सैकड़ों हथियार और हजारों कारतूस पीएलजीए को मजबूत करने के लिए बहुत ही योगदान दिया।

पीएलजीए के हाथ में मजबूत हथियार है– माइन युद्ध-तंत्र

लोकयुद्ध में शुरुआत से लेकर अंत तक माइन युद्ध-तंत्र एक मजबूत हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा। इसे पीएलजीए द्वारा रचनात्मक रूप से विकसित कर विभिन्न आकार के इंप्रूवाइज्ड माइन, एक्सप्लोजिव डिवाइज को तैयार कर दुश्मन के बल सवार साधारण या बारूदी सुरंग विरोधी (एमपीवी) या बुलेटप्रूफ गाड़ियों पर सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया गया। उल्लेखनीय संख्या में दुश्मन के बलों को सफाया कर उसके पास से हथियार जब्त किया गया। अक्टूबर, 2004 में लालगढ़-1 (पश्चिमी मेदिनीपुर), नवम्बर में चन्दौली (उत्तर प्रदेश), 2005 में भीम बांध (जमुई), भट्टीटोला (बिहार), गम्पाकोण्डा (मल्कानगिरि), पदेड़ा (बीजापुर), विंजरम (दंतेवाड़ा), नवाटोला (गोन्दिया); 2006 में कोत्ताचेरुवु (दंतेवाड़ा), किरिबुरू (पश्चिमी सिंहभूम), बोकारो; 2007 में बण्डा-1 (दंतेवाड़ा), दर्भगुड़ा-2 (दंतेवाड़ा); 2008 में तेल्लाराइ (मल्कानगिरि), बुरुडी बांध (पूर्वी सिंहभूम), समरीपाट (बलरामपुर); 2009 में लांदुप (लातेहार), गोयेलकेरा-1 (पश्चिमी सिंहभूम), पालूर (कोरापुट), कोकावाड़ा (दंतेवाड़ा), बोकारो, करमाडीह (लातेहार), आसिरगुड़ा (दंतेवाड़ा), फुलबसी नदी (झारखण्ड-छत्तीसगढ़ सीमा), पश्चिम बंग के मुख्यमंत्री बुद्धदेव पर सालबोनी (पश्चिमी मेदिनीपुर) के पास; 2010 में विशुनपुर-2 (गुमला), चिंगवरम (दंतेवाड़ा), लातेहार, मंत्रियांबा (कोरापुट), पेदा कोड़ेपाल (बीजापुर); 2011 में इरुपगुट्टा (कांकेर), भण्डरिया (गढ़वा), बलथरवा (गया), अवस्पित (छकरबंधा, गया); 2013 में उंचला-मझौली (गया), टण्डवा-नवीनगर (चिंदगढ़, औरंगाबाद), उत्तरी कोयल नहर (गया), राल्लागड्डा (कोरापुट); 2014 में कामानार (दंतेवाड़ा), मुरमुरी (गढ़चिरौली); 2015 में जांबाइ घाट (मल्कानगिरी) जैसे एम्बुश इसके नमूने हैं।

जहां दुश्मन की कारपेट सुरक्षा मजबूत हुई है, उन इलाकों में दुश्मन अपना दबदबा कायम रखने के लिए सफल रहा है, ठीक उन्हीं इलाकों में पीएलजीए के लाल योद्धा एक व्यक्ति, एक जोड़ी या तीन-पांच संख्या में एक स्पेशल एक्शन गुरिल्ला टीम के रूप में बहुत ही गुप्त रूप से विन्यास करते हुए माइन युद्ध-तंत्र के जरिए 2005 में दोड़राज (गढ़चिरौली); 2006 में बोकारो; 2008 में बासो (हजारीबाग), चेरीबेड़ा (नारायणपुर), गोलावण्ड (नारायणपुर); 2009 में गणेश बहार नाला (दंतेवाड़ा); 2012 में पूसुटोला (गढ़चिरौली); 2014 में कामानार (दंतेवाड़ा), मुरमुरी (गढ़चिरौली) जैसी कार्रवाइयों में बड़ी संख्या में दुश्मन के बलों का सफाया किया गया। यहां कुछ खास घटनाओं को देखेंगे :

अक्टूबर, 2004 में पश्चिम बंग के पश्चिमी मेदनीपुर जिला, लालगढ़ एम्बुश में चार पुलिस मारे गए और चार घायल हो गए। नवम्बर, 2004 में दक्षिणी उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले में चंद्रप्रभा बांध पर हीनात घाट के पास पीएलजीए बलों द्वारा दुश्मन के बलों को बड़ा धक्का दिया। एक मार्शल जीप, एक पुलिस वेन, एक ट्रक पर सवार होकर सर्चिंग पर निकली पुलिस बल पर बारूदी सुरंगों से विस्फोट किया गया। इसमें ट्रक में सवार 16 पुलिस, एक

चालक सहित घटना स्थल पर ही मारे गए। उनके पास से 9 हथियार और 304 कारतूस लाल योद्धाओं द्वारा जब्त किया गया।

जनवरी, 2005 में बिहार के मुंगेर जिला में पीएलजीए बलों द्वारा पहले कजरा रेलवे स्टेशन पर बिहार मिलिटरी पुलिस पर हमला कर दुश्मन को चारा डाला गया, उसके बाद घटना स्थल के लिए रवाना हुई जिला एसपी सुरेन्द्र बाबु के पुलिस काफिला को बारूदी सुरंग से निशाना बनाकर ध्वस्त किया गया। इसमें लोकयुद्ध के कट्टर दुश्मन जिला एसपी सहित 6 पुलिस वाले मारे गए। दो हथियार जब्त किया गया। जनवरी में ही बिहार और झारखण्ड विधान सभा का धोखाधड़ीपूर्ण चुनाव का बहिष्कार अभियान के तहत छत्तरपुर चुनाव क्षेत्र में भट्टीटोला गांव के पास स्पेशल पुलिस बल पर पीएलजीए द्वारा किया गया एम्बुश में 7 पुलिस मारे गए। उनके पास से हथियार और कारतूस जब्त किया गया। मई महीना में महाराष्ट्र के नवाटोला (गोन्दिया) में बारूदी सुरंग विस्फोट से पुलिस गाड़ी को उड़ा दी गयी। इसमें 9 पुलिस मारे गए और एक घायल हुआ, 8 हथियार और 6 ग्रेनेड उनसे जब्त किये गये। जून में दण्डकारण्य में विंजरम (दंतेवाड़ा) में दो पुलिस गाड़ियों को निशाना बनाकर बारूदी सुरंग विस्फोट से उड़ा दी गयी। इसमें 6 पुलिस मारे गए और 14 घायल हुए। जून में ही एओबी के गम्पाकोण्डा (मल्कानगिरि) एम्बुश में दुश्मन की गाड़ी को उड़ा दी गयी। इसमें 10 पुलिस मारे गए।

फरवरी, 2006 में दण्डकारण्य के दोरनापाल (दंतेवाड़ा) शहर में आमसभा के बाद कोण्टा शहर वापस लौट रहे एसपीओ और सलवा जुडूम गुण्डों के 5 ट्रकों के काफिला पर एक को निशाना बनाकर बारूदी सुरंग से उड़ा दिया गया। इसमें 28 एसपीओ और गुण्डे मारे गए और 41 घायल हुए। फरवरी में दण्डकारण्य में ही कोत्ताचेरुवु (दंतेवाड़ा) के पास नागा रायफल बल की गाड़ी को विस्फोट से उड़ा दी गयी। इसमें 12 नागा पुलिस मारे गए और 9 घायल हुए। जून में झारखण्ड के सारंडा-किरिबुरू (पश्चिमी सिंहभूम) के पास एक मिनी बस में सवार सीआरपीएफ और राज्य पुलिस बल को विस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें एंटी माइन स्क्वाड के तीन विशेषज्ञ सहित 12 सीआरपीएफ जवान मारे गए।

मार्च, 2007 में दण्डकारण्य के दर्भागुड़ा (दंतेवाड़ा) के पास नागा रायफल बल और एसपीओ सवार एक ट्रक को उड़ा दिया गया। इसमें 8 पुलिस मारे गए और 3 घायल हो गए। उनसे 7 हथियार जब्त किया गया। नवम्बर में सप्लाई की एक पुलिस जीप को बण्डा (दंतेवाड़ा) गांव के पास उड़ा दिया गया। इसमें 8 क्रूर मिजो रायफल जवान मारे गए। उनसे 10 हथियार जब्त किया गया।

अगस्त, 2008 में झारखण्ड के बुरुडी बांध (पूर्वी सिंहभूम) के पास एक पुलिस जीप को उड़ा दिया गया। इसमें 11 पुलिस मारे गए। सितम्बर में उत्तर छत्तीसगढ़ के समरीपाट के पास एक सीआपीएफ जीप को उड़ा दिया गया। इसमें 6 पुलिस मारे गए और 6 घायल हो गए।

जनवरी, 2009 में झारखण्ड के बोकारो जिला में एक पुलिस गाड़ी को उड़ा दिया गया। इसमें 6 पुलिस मारे गए। जनवरी में ही करमाही-दोमुहान (लातेहार) गांवों के बीच नदी के पास एक पुलिस जीप को उड़ा दिया गया। इसमें जीप पूरी तरह ध्वस्त हो गया और 6 पुलिस मारे गए। उनसे 4 हथियार और 300 कारतूस जब्त की गयी। अप्रैल में लांदुप गांव (लातेहार) के पास बीएसएफ बल सवार बस को उड़ा दिया गया। इसमें 8 पुलिस मारे गए और 12 गम्भीर रूप से घायल हुए। मई में दण्डकारण्य के आसिरगुड़ा (दंतेवाड़ा) गांव के पास एक ट्रेक्टर में सवार पुलिस वालों को विस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें 7 पुलिस और 4 सलवा जुडूम गुण्डे मारे गए। उनसे 5 हथियार और 240 कारतूस जब्त किये गये। जून में गोयलकेरा इलाके में सरेनगड़ा-ओरेंगा गांव (पश्चिमी सिंहभूम) के पास सीआरपीएफ और राज्य बल के संयुक्त दल सवार एक ट्रक को उड़ा दिया गया। इसमें 14 सीआरपीएफ जवान मारे गए। जून में ही एओबी के पालूर (कोरापुट) के पास एक पुलिस गाड़ी को उड़ा दिया गया। इसमें 10 पुलिस मारे गए। उनसे 8 हथियार और कारतूस जब्त किये गये। इसी महीना में दण्डकारण्य के तोंगपाल इलाके में कोकावाड़ा (बस्तर) गांव के पास सीआरपीएफ बल सवार ट्रक को उड़ा दिया गया। इसमें 11 पुलिस मारे गए और 8 गम्भीर रूप से घायल हुए। इसी महीने में झारखण्ड के फुलबसी नदी (गुमला) में पुलिस गश्ती दल सवार एक डम्फर को उड़ा दिया गया। इसमें 7 पुलिस मारे गए और चालक भी मारा गया।

जनवरी 2010 को झारखण्ड के गुमला जिला, विशुनपुर थाना क्षेत्र में डुमर पाट नवाटोली पुलिस पिकेट के पुलिस दल जब गश्त कर वापस बॉक्साइट ट्रक में बैठकर लौट रहे थे, पर पूरी मैदानी धरातल में दोपहर ढाई बजे को बारूदी सुरंग से विस्फोट कर उड़ा दिया गया। जिसमें 7 पुलिस मारे गए और दो पुलिस घायल अवस्था में सरेंडर किए। इसमें 4 इंसास, 1 इंसास एलएमजी, 3 एसएलआर और कुल 1300 कारतूस आदि पीएलजीए के योद्धाओं ने जब्त कर लिया। अप्रैल में एओबी कोरापुट-मल्कानगिरि राष्ट्रीय राजमार्ग पर मंत्रियांबा घाट के पास एसओजी कमांडो सवार एक पुलिस गाड़ी को बारूदी सुरंग विस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें 11 कमांडो मारे गए और 8 घायल हो गए। मई महीने में

दण्डकारण्य के चिंगवरम (दंतेवाड़ा) के पास कोया कमांडो और एसपीओ सवार एक बस को विस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें 16 पुलिस मारे गये और 17 घायल हो गए। जुलाई में झारखण्ड के लातेहार जिले में एक पुलिस गाड़ी को उड़ा दिया गया। इसमें 5 पुलिस मारे गए और 5 घायल हो गए।

फरवरी, 2012 में झारखण्ड के सुरंगी टोंगरी (पलामू) गांव के पास पुलिस गाड़ी पर किया गया एम्बुश में 4 झारखण्ड पुलिस मारे गए और 3 घायल हुए, 4 हथियार और 237 कारतूस जब्त की गयी। मार्च में दण्डकारण्य के इरुपगुट्टा (कांकेर) के पास बीएसएफ बल सवार एक गाड़ी को विस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें 6 पुलिस मारे गए और 6 घायल हुए।

फरवरी, 2013 में बिहार के बालासोत-रोशनगंज के मुख्य राजमार्ग पर उंचला गांव (गया) के पास कोयली पुल के नजदीक एक पुलिस जीप को बारूदी सुरंग से उड़ा दिया गया। इसमें रोशनगंज के एसआई, एक हेड कांस्टेबल सहित 8 पुलिस मारे गए। अगस्त में एओबी के कोरापुट जिला के पोट्टंगी थाना क्षेत्र में राष्ट्रीय पथ-26 पर राल्लागड्डा गांव के पास बीएसएफ की गाड़ियों के काफिला का निशाना बनाकर तीन गाड़ियों को बारूदी सुरंग विस्फोट से उड़ाया गया। इसमें एक गाड़ी पूरी तरह ध्वस्त हो गए और 4 पुलिस मारे गए एवं तीन गम्भीर रूप से घायल हुए।

अगस्त, 2015 में एओबी के मल्कानगिरि जिला के चित्रकोण्डा एरिया में पीएलजीए द्वारा कार्यान्वित किया गया जांबाइ घाट एम्बुश में तीन बीएसएफ जवान सहित 4 मारे गए और 6 गम्भीर रूप से घायल हुए।

एक, दो या तीन योद्धाओं द्वारा किया गया एम्बुश

मजबूत दुश्मन पर धक्का पहुंचाने के लिए, जनयुद्ध में पहलकदमी अपने हाथ में रखने के लिए पीएलजीए बल अपने एक, दो और तीन योद्धाओं द्वारा किये गये कई एम्बुशों को कार्यान्वित किये गये हैं।

दोड़राज एम्बुश- फरवरी, 2005 में दण्डकारण्य के दोड़राज (गढ़चिरौली) गांव के पास कार्यान्वित किया गया दो आदमियों के एम्बुश में 8 सी-60 कमांडो मारे गए और 11 घायल हुए।

बोकारो थर्मल प्लांट एम्बुश- 2 दिसम्बर, 2006 को एक तरफ पीएलजीए की वर्षगांठ मना रहा है, तो दूसरी तरफ झारखण्ड के कंजकिरो (बोकारो) थार्मल प्लांट के पास पीएलजीए द्वारा कार्यान्वित दो आदमियों के एम्बुश में सीआरपीएफ गाड़ी को पूरी तरह ध्वस्त किया गया। इसमें 16 पुलिस मारे गए और एक पागल हो गया।

चेरीबेड़ा एम्बुश- अगस्त, 2008 में दण्डकारण्य के चेरीबेड़ा (नारायणपुर) के पास पीएलजीए की एक्शन टीम द्वारा किया गया एक साहसिक एम्बुश में एक सीआरपीएफ जीप को विस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें 7 पुलिस मारे गए और 2 घायल हुए। इसी तरह अप्रैल में झारखण्ड के बनासो (हजारीबाग) गांव के पास कार्यान्वित और एक दो आदमियों के एम्बुश में 17 पुलिस गम्भीर रूप से घायल हुए। नवम्बर में दण्डकारण्य के गोलावण्ड (नारायणपुर) गांव के पास पुलिस गाड़ी को बारूदी सुरंग से उड़ा दिया गया। इसमें 7 पुलिस मारे गए और 3 गम्भीर घायल हुए।

कुडु एम्बुश- अप्रैल, 2009 में चंदवा सीमा पर कुडु गांव के पास दुश्मन की गाड़ी को बारूदी सुरंग से विवस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें 10 बीएसएफ जवान मारे गये और 12 घायल हो गये।

गणेश बहार नाला एम्बुश- जुलाई, 2009 में गणेश बहार नाला (दंतेवाड़ा) के पास सीआरपीएफ जवान सवार एक ट्रक को विस्फोट से उड़ा दिया गया। इससे वह पूरी तरह ध्वस्त हो गयी। उसमें सवार 7 पुलिस मारे गए और 3 घायल हुए।

चिंदगढ़ एम्बुश- दिसम्बर, 2013 में पूरी मैदानी इलाका में स्थित टण्डवा-नवीनगर (औरंगाबाद) रोड पर किया गया एक आदमी के एम्बुश में टण्डवा थाना एसआई सहित 9 पुलिस मारे गए।

कामानार एम्बुश- अप्रैल, 2014 में धोखाधड़ीपूर्ण लोकसभा चुनाव का बहिष्कार अभियान के तहत दण्डकारण्य में जहां कारपेट सुरक्षा मजबूत है उस इलाके में दुश्मन के रोड ओपेनिंग पार्टी (आर.ओ.पी.) चुपचाप सिविल गाड़ियों का इस्तेमाल कर रहा है। यह पीएलजीए की नजर में आयी और वह दुश्मन को बड़ा धक्का पहुंचाने के लिए एक टीम को तैनात किया। यह टीम बहुत ही गुप्त रूप से मैदान में ही तैयारियां पूरी कर ली। 10 की संख्या वाली एक सीआरपीएफ गश्ती दल पैदल गश्ती कर वापस जाते वक्त एम्बुलेन्स गाड़ी का सहारा लिया। वह गाड़ी कामानार (सुकमा) गांव के पास आते ही बारूदी सुरंग से उड़ा दी गयी। इसमें 6 पुलिस मारे गए और 4 घायल हुए। इसमें दुश्मन द्वारा मानव कवच के रूप में इस्तेमाल किए गए एम्बुलेन्स चालक और मेडिकल तकनीशियन भी मारा जाना अफसोस की बात है।

मुरमुरी एम्बुश- शासक वर्ग ऐसा सोच कर सांस ले रहा था कि महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव शांति से संम्पन्न हो गया है। लेकिन चुनाव के अंतिम चरण के मतदान से एक दिन पहले 11 मई को एक पुलिस दल सर्चिंग पूरा करके वापस सुमो वाहन में लौट रहा था, मुरमुरी (गढ़चिरौली) गांव के पास पीएलजीए टीम उसे विस्फोट से उड़ा दी। इसमें

सी-60 के 7 कमांडो मारे गए और 4 घायल हुए।

कई एमपीवी गाड़ियां ध्वस्त और दुश्मन के बल का सफाया

विभिन्न गुरिल्ला जोनों में पीएलजीए बलों का सामना करने के लिए इस दशाब्दी में दुश्मन द्वारा सयम-सयम पर माइनप्रूफ गाड़ियों (एमपीवी) को विकसित करते हुए तैनात करता आ रहा था। दुश्मन की कार्यनीतियों को विफल करते हुए एमपीवी गाड़ियों में सवार दुश्मन के बलों पर धक्का पहुंचाना पीएलजीए बलों के लिए एक आम बात हो गयी।

पदेड़ा में एमपीवी पर एम्बुश- सितम्बर, 2005 में दण्डकारण्य के बीजापुर जिला के गंगालूर रोड पर सीआरपीएफ बल सवार माइनप्रूफ गाड़ी (एमपीवी) पर पीएलजीए द्वारा पहली बार जोरदार हमला किया गया। तब तक प्रतिक्रांतिकारी सलवा जुडूम अभियान शुरू हुए 3 महीने हो रहा था। इसे हराने के लिए कार्यान्वित की गयी एक कार्यनीतिक जवाबी कार्रवाई है यह पदेड़ा एम्बुश। योजना के अनुसार दुश्मन के माइनप्रूफ गाड़ी को उड़ाने के लिए बड़े पैमाने पर विस्फोटक पदार्थ के साथ बारूदी सुरंग लगाए गए थे। इन माइनों को उड़ाने से दुश्मन जिसे 'माइनप्रूफ' गाड़ी का नाम देकर बड़े पैमाने पर प्रचार-प्रसार कर रहा था, वह दो टुकड़ों में अलग होकर दूर-दूर गिर पड़ी थी। इसमें 24 सीआरपीएफ जवान कुत्ते की मौत मरे और 3 गम्भीर रूप से घायल हुए।

तेल्लराइ एम्बुश- जुलाई, 2008 में एओबी में तेल्लराइ (मल्कानगिरि) के पास ओड़िशा एसओजी कमांडो बल सवार माइनप्रूफ गाड़ी को बारूदी सुरंगों से उड़ा दिया गया। इससे वह पूरी तरह ध्वस्त हो गया और 17 कमांडो मारे गए। उनसे एके-6 और 300 कारतूस जब्त की गयी। इस कार्रवाई से दुश्मन के ऐसे प्रचार को फिर एक बार चकनाचूर कर दिया गया था कि माइनप्रूफ गाड़ियों में बदलाव लाया गया है, वे बारूदी सुरंग के विस्फोट को संभाल सकती हैं।

पेदा कोड़ेपाल एम्बुश- मई, 2010 में दण्डकारण्य के बीजापुर राष्ट्रीय राजमार्ग-16 पर शक्तिशाली बारूदी सुरंगों से उड़ा देने से सीआरपीएफ बल सवार माइनप्रूफ गाड़ी चकनाचूर हो गयी। उसमें सवार कुल 8 जवान मारे गए।

भण्डरिया एम्बुश- 21 जनवरी, 2012 को झारखण्ड के गढ़वा जिला भण्डरिया इलाके में एक माइनप्रूफ गाड़ी को उड़ा दिया गया। इसमें 14 पुलिस मारे गए और एक घायल हुआ एवं 13 आधुनिक हथियार और 12 ग्रेनेड आदि जब्त किये गये।

पूसुटोला एम्बुश- 27 मार्च, 2012 को दण्डकारण्य के गढ़चिरौली जिला पूसुटोला गांव के पास 6 गाड़ियों में आ रहे सीआरपीएफ और कोबरा बलों के काफिला को लक्ष्य करके एक पीएलजीए टीम द्वारा कार्यान्वित किया गया एक साहसिक एम्बुश में एक मिनी बस पूरी तरह ध्वस्त हो गयी। उसमें सवार 13 कोबारा कमांडो मारे गए और 27 घायल हुए।

बलथरवा एम्बुश- 10 जून, 2012 को बिहार के बलथरवा (गया) रोड पर सीआरपीएफ और जिला बल के संयुक्त दल सवार मोटर साईकिल, भेन और माइनप्रूफ गाड़ी के काफिले बारूदी सुरंग की चपेट में आने से माइनप्रूफ गाड़ी ध्वस्त हो गयी। उसमें तीन सीआरपीएफ जवान मारे गए और 10 घायल हुए।

अवस्पित दो आदमियों का एम्बुश- बिहार के औरंगाबाद-गया सीमा पर मदनपुर थाना क्षेत्र के छकरबंधा जंगलों में अवस्पित पहाड़ों पर हमारे साथी शहीद कामरेड नितांत 'बम चक्र परियोजना' (बम तैयारी परियोजना) कैंप को चला रहे थे। 18 अक्टूबर, 2012 को उस कैंप पर हमला करने के लिए रोड पर माइनप्रूफ गाड़ियां और मोटर साईकिलों पर आ रहे 159वीं सीआरपीएफ बटालियन के बल को निशाना बनाकर उसी रोड पर पहले ही निगरानी के लिए तैनात दो कामरेडों द्वारा विस्फोट कर उड़ाने से एक माइनप्रूफ गाड़ी ध्वस्त हो गयी। विस्फोट की आवाज सुनकर हमारी स्पेशल अफेन्सिव कंपनी घटना स्थल तक डेढ़-दो घंटे दौड़कर पहुंच गयी और दुश्मन के साथ मोर्चा संभाला। 10 घंटों तक संघर्ष जारी रहा। इस संघर्ष में एक इंस्पेक्टर, एक सब-इंस्पेक्टर, दो हवलदार सहित छः सीआरपीएफ जवान मारे गए और एक सहायक कमांडेंट सहित 9 जवान घायल हुए।

अप्रैल, 2015 को दण्डकारण्य के बचेली (दंतेवाड़ा) इलाके में सीआरपीएफ गश्ती दल माइनप्रूफ गाड़ी पर सवार होकर जा रहा था, खुडियापारा के पास उसे विस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें 5 पुलिस मारे गए और 11 घायल हुए।

(माइन युद्ध तंत्र को रात का युद्ध से जोड़कर पीएलजीए बलों द्वारा कई कार्रवाइयां सफलतापूर्वक कार्यान्वित किए गए। इसके बारे में 'रात का युद्ध' के अंश में देखें।)

एक्सप्लोजिव/नान-एक्सप्लोजिव बूबीट्रैप

2005 में बारिकुल (मेदिनीपुर), 2006 में बनियाडीह (चतरा), लालगढ़ (पश्चिम मेदिनीपुर), 2007 में पूंड्री (बीजापुर), 2010 में लोद्रा (गया), 2012 में अल्लेंगपाड़ा (कोरापुट), 2013 में बरंडा मोड़ (औरंगाबाद) आदि जगहों पर पीएलजीए द्वारा बड़े, मझौले और छोटे किस्म की बूबीट्रैप (अनकन्ट्रोल्ड माइन) को इस्तेमार कर दुश्मन के बलों को धक्का पहुंचाया गया। सिर्फ 2015 में ही दण्डकारण्य में जनमिलिशिया बल द्वारा जनवरी से सितम्बर तक 15

बूबीट्रैप कार्रवाइयां कार्यान्वित कर दुश्मन के बलों को परेशानी में डाल दिया गया।

2006 में झारखण्ड के चतरा जिला बनियाडीह गांव में 'पार्टी फण्ड' (डम्प) को जब्त करने के लिए आया सीआरपीएफ बल पार्टी फण्ड के नाम से एक संदूक में पीएलजीए द्वारा लगाया गया एक बड़ा बूबीट्रैप के जाल में फंस गया। इसमें एसडीओपी सहित 12 जवान मारे गए और छः घायल हुए। 2007 में दण्डकारण्य में पूंड्री (बीजापुर) गांव के पास पीएलजीए द्वारा एक बड़ा बूबीट्रैप को राष्ट्रीय राजमार्ग-16 पर लगाकर छः पुलिस वालों का सफाया किया गया और 12 को घायल कर दिया गया। इसमें सलवा जुडूम के दो मुख्य सरगना भी गम्भीर रूप से घायल हुए। इन दो घटनाओं द्वारा पेश किये गये नमूने को पीएलजीए द्वारा सभी गुरिल्ला जोनों में विस्तार किया गया। दण्डकारण्य में प्रतिक्रांतिकारी अभियान सलवा जुडूम का मुकाबला करने के लिए हजारों जनता एकजुट होकर लगाई/खोदी गयी सैकड़ों पारम्परिक ट्रैपों से दुश्मन के बलों और सलवा जुडूम गुण्डा वाहिनी की नींद उड़ा दी गयी। उदाहरण के लिए माड़ इलाके के इंद्रावती एरिया में प्रधान, द्वितीय और मिलिशिया बल द्वारा व्यापक तौर पर लगाये गये पारम्परिक ट्रैपों की चपेट में आ कर कई पुलिस वाले घायल हो गए। इससे दुश्मन को अपना अभियान रोकना पड़ा। उसके बाद, इस अनुभव को ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के खिलाफ चलाये जा रहे प्रतिरोध युद्ध में क्रांतिकारी जनता प्रभावशाली ढंग से लागू कर रही है। 2013 में छत्तीसगढ़ का धोखाधड़ीपूर्ण विधान सभा चुनाव का बहिष्कार अभियान के तहत क्रांतिकारी जनताना सरकारों के नेतृत्व में जन मिलिशिया और क्रांतिकारी जनता हजारों की संख्या में एकत्र होकर पारम्परिक ट्रैपों को खोद कर, उसमें लोहा, बांस से तैयार कीलें लगाकर दुश्मन के बलों को जनता की ताकत कितनी होती है दिखा दी। पूरा डीके गुरिल्ला जोन में लगाये गये इस तरह के ट्रैपों में गिर कर लगभग 100 पुलिस वाले गम्भीर रूप से घायल हुए। इन ट्रैपों की वजह से इलाके में घुसना है तो दुश्मन डर से कंप जाता था।

बूबीट्रैप और पारम्परिक ट्रैपों को विकसित करने में प्रधान, द्वितीय और बुनियादी बलों के कई कामरेड और जनता भी अपनी अनमोल प्राणों को न्योछावर कर दी। कई गम्भीर घायल हुए। बूबीट्रैप और पारम्परिक ट्रैप युद्ध तंत्र के विकास में उससे हासिल किया गया सबक बहुत ही महत्वपूर्ण है।

मजबूत कारपेट सुरक्षा वाले इलाकों में पैदल आने वाले दुश्मन को घेरकर सफाया करने वाले हमले

दुश्मन द्वारा हमारे आन्दोलन के इलाकों में गुरिल्ला गतिविधियों पर चोट पहुंचाने के लिए लगातार हजारों बलों के साथ कारपेट सुरक्षा को मजबूत और विस्तार किया जा रहा है। बावजूद लगातार जारी पीएलजीए हमलों की वजह से अपना थाना और कैंपों में ही सिमट रहा है। ऐसी स्थिति में सुबह उठते ही अपने बलों के साथ पैदल रोड ओपनिंग पार्टियों द्वारा गश्ती करवा कर रोड साफ (क्लियर) करना, एरिया डोमिनेशन चलाना, घेराव और सर्च के तरीके से कूंबिंग करना, हमले करना, अंदरूनी इलाकों में घुसकर सफाया की कार्रवाइयां चलाने जैसी काउण्टर गुरिल्ला कार्रवाई चलाते हुए पीएलजीए हमलों को रोकने और पीएलजीए बलों का सफाया करने की कार्यनीति को दुश्मन लागू कर रहा है। इस तरह की रोड ओपनिंग पार्टी (आरओपी), एरिया डोमिनेशन बलों को निशाना बनाकर पीएलजीए कई हमले की है। दुश्मन के बलों को पीछा कर उसे टुकड़ों में बांट कर कमजोर टुकड़ी के ज्यादातर का सफाया करने के लिए प्रयास किया। इन कार्रवाइयों में वह अपना विन्यास करने की क्षमता को विकसित करते हुए पैदल आनेवाले दुश्मन के बलों को नष्ट करने में एक गुणात्मक बदलाव लाने में कामयाब हुई। इस तरह के अनुभवों से ही पीएलजीए बलों द्वारा भारत के शोषक-शासक वर्गों और उनके साम्राज्यवादी मालिकों को हिलाकर रखने वाला मुकराम-ताड़मेट्ला एम्बुश को अंजाम दिया।

उरपलमेट्टा, ताड़मेट्ला-1, तोमगुड़ा, बट्टिगुड़ा एम्बुश

पैदल आ रहे दुश्मन के बलों का सफाया करने में पहले उल्लेखनीय है 2007 में दण्डकारण्य के दक्षिण बस्तर में पीएलजीए के मुख्य बल के एक कंपनी को केन्द्र में रखकर द्वितीय और बुनियादी बलों को मिलाकर कार्यान्वित किया गया उरपलमेट्टा, ताड़मेट्ला-1, तोमगुड़ा, भट्टिगुड़ेम एम्बुश। इन कार्रवाइयों में 58 पुलिस वालों का सफाया कर 5 को घायल किया गया और 53 हथियार और 3,602 कारतूस पीएलजीए के लाल योद्धाओं द्वारा जब्त किये गये। इसके जरिए वे देशभर में हमारे पीएलजीए बल के लिए एक शानदार मिसाल पेश किये। इसमें भट्टिगुड़ेम एम्बुश में दुश्मन के साथ साहसिक ढंग से लड़ते हुए हमारी कंपनी के सेक्शन कमांडर कामरेड बामन, सेक्शन डिप्यूटी कामरेड सुक्कु और प्लाटून सदस्य कामरेड उंगाल शहीद हो गये।

इन कार्रवाइयों से कुछ पहले जनवरी, 2007 में माड़ डिविजन में एक कंपनी को केन्द्र में रखकर कार्यान्वित किया गया झाराघाटी एम्बुश में भी अच्छा खासा अनुभव मिला। मोटर साईकिल पर और पैदल आने वाले सीआरपीएफ बलों पर पीएलजीए द्वारा किया गया साहसिक एम्बुश में 7 पुलिस मारे गए और 5 घायल हुए। उनसे 7 आधुनिक हथियार

और 316 कारतूस जब्त किये गये। दुश्मन के बलों को विभाजन कर पहला बैच का सफाया कर बाद-बाकी को भगा देनेवाली इस कार्रवाई द्वारा एक अच्छा अनुभव हासिल किया गया। कमांडर के आदेशों को सख्ती से पालन करते हुए फायर एण्ड मूवमेंट से आगे बढ़ने के क्रम में हमारे लाल योद्धा और कंपनी सदस्य कामरेड कुम्मा शहीद होकर मिसाल बन गई।

इन युद्ध कार्रवाइयों में पीएलजीए बलों द्वारा गुरिल्ला युद्ध नियमों को अमल करने, दुश्मन के बलों को 'वी', 'ओ', 'यू' आकार में घेरकर हमला करने, युद्ध विन्यास करने, फायर एण्ड मूवमेंट करने, सीक्युबी कार्यनीतियों को लागू करते हुए दुश्मन के नजदीक पहुंच कर सफाया करने, ग्रुप, सेक्शन और प्लाटूनों के बीच बेहतर समन्वय हासिल करने और कमांडिंग करने, किसी भी धरातल में एम्बुश के कार्यान्वयन में माइन पर ही निर्भर न होकर रायफलों से गोलीबारी द्वारा ही एम्बुश सफल करने में दक्षता हासिल की गयी। इन अनुभवों से देशभर में हमारे पीएलजीए बल को बहुत ही प्रेरणा मिली।

तड़केल एम्बुश- फरवरी, 2008 में दण्डकारण्य के तड़केल (बीजापुर) गांव के पास खेतों में दुश्मन के बलों के साथ हुए घमासान संघर्ष में 6 सीआरपीएफ जवान मारे गए और 3 घायल हुए। उनसे 6 आधुनिक हथियार और 187 कारतूस जब्त किये गये। इस संघर्ष में कंपनी-2 के कमांडर कामरेड मधु, डिप्यूटी कमांडर कामरेड बद्रु सहित 6 कामरेड दुश्मन के साथ वीरतापूर्ण ढंग से लड़ते हुए शहीद हो गये।

मोदुगपाल-2 एम्बुश

दण्डकारण्य में राष्ट्रीय राजमार्ग-16 पर मोदुगपाल गांव (बीजापुर) के पास अक्टूबर, 2008 में पीएलजीए द्वारा सीआरपीएफ गश्ती दल को घेर कर 12 पुलिस का सफाया किया गया और 10 को घायल किया गया। उनसे 9 हथियार जब्त किया गया। आसपास के दो गांवों में पुलिस कैंप होने, दो गांवों के बीच केवल 3 किलोमीटर दूरी होने के बावजूद जन आधार पर निर्भर होकर पीएलजीए द्वारा दुश्मन को बड़ा धक्का दिया गया। इसमें दुश्मन के साथ वीरतापूर्ण लड़ते हुए कंपनी के सेक्शन डिप्यूटी कमाण्डर कामरेड देवाल, कंपनी सदस्य कामरेड सुखराम और रीना शहीद हो गए।

मरकानार एम्बुश

फरवरी, 2009 में पीएलजीए द्वारा कार्यान्वित किया गया मरकानार एम्बुश में पुलिस आरओपी के पूरे 15 पुलिस मारे गए और 16 हथियार और 761 कारतूस जब्त किये गये। इसमें पीएलजीए द्वारा चारा डाल कर दुश्मन को इलाके के अन्दर बुलाया गया था। पैदल सर्चिंग कर रही पुलिस पार्टी को खेतों में ही रोक दी गयी और 'ओ' आकार में घेरकर पूरी तरह सफाया कर दिया गया। इस कार्रवाई में दुश्मन के साथ लड़ते हुए कामरेड रामजी शहीद हो गए।

मिनपा एम्बुश- अप्रैल, 2009 में दण्डकारण्य के दंतेवाड़ा जिले में हमारे लोकसभा चुनाव बहिष्कार अभियान को विफल करने के लिए पुलिस बल गुरिल्ला जोन में प्रवेश कर मिनपा गांव पर हमला किया। इस पुलिस बल पर एक गुरिल्ला बटालियन की संख्या में पीएलजीए बल द्वारा घेरकर वीरतापूर्ण ढंग से हमला किया गया। दोनों तरफ से घमासान संघर्ष हुआ। इसी बीच दुश्मन के क्विक रियाक्शन टीम (क्यूआरटी) बल वहां पहुंच गया। इससे दुश्मन की संख्या कुल एक कंपनी संख्या तक पहुंच गयी, इसके बावजूद पीएलजीए ने साहस के साथ उसका मुकाबला किया। इस भीषण संघर्ष में सीआरपीएफ के डिप्यूटी कमांडेंट सहित 11 पुलिस मारे गए और 16 घायल हुए। दुश्मन के बलों से वीरतापूर्ण ढंग से लड़ते हुए हमारी कंपनी-3 के डिप्यूटी कमांडर कामरेड चंदु, प्लाटून कमांडर कामरेड बाबु, सेक्शन कमांडर कामरेड दसरू, कंपनी सदस्य कामरेड रिंकू शहीद हो गए। इस संघर्ष में दुश्मन से तीन एके-47, तीन इनसास, छः बुलेटप्रूफ जैकेट (11 बुलेटप्रूफ प्लेट) और दो ग्रेनेड पीएलजीए द्वारा जब्त किये गये। दुश्मन के अतिरिक्त बल का भी सामना करते हुए संचालित इस संघर्ष से पीएलजीए को एक नया अनुभव मिला।

जोरको-इंदिपिड़ी एम्बुश- अप्रैल, 2009 में ही झारखण्ड के जोरको-इंदिपिड़ी जंगल (खुंटी) में पीएलजीए पर हमला करने आए पुलिस बल ही पीएलजीए के एम्बुश में फंस गया। पीएलजीए का डेरा की सूचना पाकर पुलिस बल 200 (एसओजी, एसटीएफ और सीआरपीएफ) की संख्या में सुबह उजाला होते ही हमले के लिए चल पड़ा। यह सूचना पाकर पीएलजीए लाल योद्धाओं ने भी योजनाबद्ध ढंग से अपना डेरा से थोड़ा-सा आगे सामने की तरफ एक जगह (साइट) को चुनकर पोजिशन ले लिया। 20 पुलिस हमारे साइट में घुसते ही पीएलजीए द्वारा सरप्राइज हमला कर दिया गया। दोनों तरफ से आमने-सामने युद्ध हुआ। इसमें मारे गए तीन पुलिस वालों का हथियार तुरंत हमारे लाल योद्धा द्वारा जब्त कर लिया गया। पुलिस को भगाते हुए, संघर्ष तीन घंटे होने के कारण पीएलजीए बल रिट्रीट हो गया। कुछ समय के अन्दर ही एक गांव में हमारे योद्धा जब पानी पी रहे थे, पुलिस के अतिरिक्त बल से सामना होने पर फिर से संघर्ष शुरू हो गया। पीएलजीए बल पहलकदमी को अपने हाथ में रखते हुए प्रतिरोध किया। इससे दुश्मन के अतिरिक्त बल पीछे हटने को मजबूर हो गया। इस संघर्ष के दौरान मूल संघर्ष में तीन पुलिस मारे गए और तीन घायल

उदारवादी बुद्धिजीवियो!
क्या आप भारतीय नव जनवादी क्रांति के पक्ष में हैं? या शोषक-शासक वर्गों के पक्ष में?

''आप की क्रांतिकारी स्फूर्ति बहुत बढ़िया है। लेकिन कार्रवाई करने की आपकी पद्धति को कोई समर्थन नहीं करेंगे।'' यह उदारवादी जनवादियों से हमेशा प्रकट होने वाला एक मिलावट (eclectic) व्याख्यान है। क्रांतिकारियों की क्रांतिकारी स्फूर्ति हमेशा प्रत्येक कार्रवाई में भी व्यक्त होती है। आप एक तरफ क्रांतिकारियों को समर्थन करते हैं, दूसरी तरफ हजार-एक पद्धतियों से उनकी क्रांतिकारी कार्रवाइयों की आलोचना करते हैं। क्या आपका ''समर्थन'' ''स्वीकृति'' पूरी तरह खोखलापन नहीं है? आप क्रांतिकारियों की स्फूर्ति को ऊंचा उठाते हुए उनकी क्रांतिकारी कार्रवाइयों का विरोध करते हैं। आप दो नावों पर पैर कैसे रख सकते? ऐसा सम्भव नहीं कि क्रांतिकारियों की लड़ाई के दौरान कोई भी हो, कुछ गलतियां किए बिना रोक सकते हैं। क्रांतिकारियों पर हमला करने के लिए उस तरह के कुछ अपवादजनक कमजोरियों और अल्प विषयों को इस्तेमाल करने के लिए कोशिश करने वालों का अंत जरूर अपमानजनक होगा। यह ऐतिहासिक सच्चाई है। इसलिए आप या तो क्रांतिकारियों की क्रांतिकारी कार्रवाइयों का सक्रिय मदद दीजिए या उसे दृढ़तापूर्वक विरोध कीजिए। विभिन्न दृष्टकोण से उधार लिए गए सोच (मिलावटवाद-eclecticism) से आप संकीर्ण सोच मत अपनाए। विश्व समाजवादी क्रांति के तहत जारी भारत की नव-जनवादी क्रांति से एकात्म होकर उसमें सक्रिय रूप से शामिल हो जाइए!

हुए। दो एके-47, एक इनसास, कारतूस-146, ग्रेनेड-6, मोर्टार सेल-5, आदि दुश्मन से पीएलजीए द्वारा जब्त किये गये।

बेहराडीह एम्बुश- जून, 2009 में झारखण्ड के पलामू जिला के बेहराडीह के पास कूंबिंग कर रहे पुलिस बलों पर किया गया एक मौकेपरस्त एम्बुश में 5 एसओजी पुलिस को पीएलजीए द्वारा सफाया और 11 को घायल किया गया। जनमिलिशिया बलों द्वारा पुलिस की सूचना पाते ही पीएलजीए ने तुरंत योजना बना दी। लेकिन इससे पहले ही दुश्मन के साथ पीएलजीए बलों का सामना होने के कारण फायरिंग शुरू हो गयी। पीएलजीए योद्धाओं ने पहलकदमी को अपने हाथ में लेते हुए कुछ दूर आगे एडवांस होकर, दुश्मन को कोई भी मौका न देते हुए उस पर हमला कर दिया। इससे दुश्मन को ही नुकसान उठाना पड़ा। इसमें विशेष बात यह है कि दुश्मन के बल कंपनी संख्या में होने के बावजूद प्लाटून की संख्या वाले पीएलजीए बल द्वारा दुश्मन को धक्का देना।

लातेहार एम्बुश- जून, 2009 में ही झारखण्ड के लातेहार जिले में लांग रेंज पेट्रोलिंग कर वापस जा रहे पुलिस बल पर पीएलजीए द्वारा हमला किया गया। इसमें 4 पुलिस मारे गए और उससे ज्यादा घायल हो गए।

पालचेलमा एम्बुश

अगस्त, 2009 में दुश्मन देशभर में भारी चौतरफा हमला, जनता पर युद्ध 'ऑपरेशन ग्रीन हण्ट' को प्रारंभ करने में अगली पंक्ति में रहनेवाले विशेष कोबरा (COBRA-Combat Battalian for Resolute Action) कमांडो बल पर पालचेलमा गांव के पास पीएलजीए बलों द्वारा बड़ा धक्का दिया गया। इस खूंखार बल ने गच्चमपल्ली और उसके आसपास के गांवों में 12 आम ग्रामीणों को जान से मार दिया और उन गांवों को तहस-नहस कर वापस जा रहा था। सूचना पाकर हमारे वीर पीएलजीए बल लगभग दो घंटे दौड़कर 4 किलोमीटर दूर तक उसका पीछा करते हुए घेरकर उस पर हमला बोला। इस हमले में कोबरा के दो सहायक कमांडेंट, एक एसआई सहित 6 कमांडो मारे गए और तीन घायल हो गए। उससे दो एके, दो एसएलआर, एक इनसास, 806 कारतूस आदि हमारे वीर योद्धाओं द्वारा जब्त किया गया। इस हमले की वजह से कोबरा द्वारा बंधक बनाए गए कुछ ग्रामीण उनके चुगंल से छूटकर मुक्त हो गए। पीएलजीए द्वारा की गई इस युद्ध कार्रवाई से कोबरा बल के मनोबल पर तीव्र असर पड़ा। कई विशेष अधिकारी, सैकड़ों सपोर्ट बल की मदद से कोबरा बल द्वारा संचालित ऑपरेशन इस तरह विफल होने से असल में उस खूंखार बल की ताकत कितनी है उजागर हो गयी। देशभर में कोबरा (विशेष) बल के बारे में दुश्मन द्वारा बढ़ाचढ़ा कर किया गया प्रचार-प्रसार को बड़ा धक्का लगा।

मल्लमपोडूर एम्बुश

अक्टूबर, 2009 में महाराष्ट्र के लाहेरी थाना से बहुत ही नजदीक वाला मल्लमपोडूर गांव के पास किया गया इस एम्बुश में 17 एसटीएफ, सी-60 के कमांडो मारे गए और 19 हथियार जब्त किया गया। दुश्मन की सूचना पाने के तुरंत बाद पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने भूख और थकावट की परवाह न करते हुए सुबह से दोपहर तक दुश्मन पर

हमला के लिए कई किलो मीटर दूर तक दौड़कर गया था। दुश्मन को पहुंचाने के तुरंत बाद साहस के साथ 'ओ' आकार में घेरकर साढ़े तीन घंटे तक दुश्मन के बलों के साथ लड़ाई लड़े। दुश्मन के बलों में से एक टुकड़ी का सफाया कर बाकी बलों को लाहेरी थाना तक भगा दिया। इस कार्रवाई में डीवीसीएम कामरेड मंगेश लड़ाई के दौरान दुश्मन की गोली लगने से शहीद हो गए।

ऐतिहासिक मुकराम-ताड़मेट्ला-2 एम्बुश

6 अप्रैल, 2010 को छत्तीसगढ़ में पीएलजीए द्वारा कार्यान्वित किया गया ऐतिहासिक मुकराम-ताड़मेट्ला-2 (दंतेवाड़ा) एम्बुश में सीआरपीएफ के एक कंपनी बलों (बटालियन के एक डिप्यूटी कमांडेंट और एक सहायक कमांडेंट सहित 75 सीआपीएफ जवान और एक जिला पुलिस) को फायर पावर के जरिए पीएलजीए द्वारा पूरी तरह सफाया किया गया और 7 जवानों को घायल कर दिया गया। 79 आधुनिक हथियार, 3,122 कारतूस, 39 ग्रेनेड, 14 मोर्टार सेल आदि दुश्मन के बलों से जब्त किये गये। पीएलजीए बलों को रोकने के लिए एम्बुश साइट में दुश्मन एक माइनप्रूफ गाड़ी को तैनात करने के बावजूद बारूदी सुरंग से उसे पूरी तरह ध्वस्त कर तथा उसकी इस कार्यनीति को तात्कालिक तौर पर स्थगित कर दिया गया। इस युद्ध कार्रवाई में पीएलजीए के 8 लाल योद्धाओं ने अपनी जान की कुरबानी दी। इस कार्रवाई से ऑपरेशन ग्रीन हण्ट को तेज करने के लिए आक्रामक हो रहे दुश्मन को बड़े पैमाने पर सफाया कर उसके मनोबल पर जबर्दस्त धक्का पहुंचाया गया। काउण्टर गुरिल्ला युद्ध कार्यनीतियों से आक्रामक हो रहे दुश्मन के बलों को चोट पहुंचाने के लिए बड़ी संख्या में एक व्यापक इलाके में हमारे पीएलजीए बलों को केन्द्रित कर सफलता पाते हुए एक नया अनुभव हमने हासिल किया है। दुश्मन के बलों की गतिविधि, तैनाती, धरातल के अनुरूप सही योजना तय करके इस कार्रवाई को सफल किया गया। इस हमले में सी4आई बेहतरीन ढंग से पालन किया गया। दुश्मन की तरफ से रैपिड फायरिंग करते हुए हमें नुकसान पहुंचा रहा है, बावजूद हमारे लाल योद्धाओं ने वीरतापूर्ण, आक्रामक ढंग से और तेजी से तथा महान आत्मबलिदान की चेतना, साहस, पहलकदमी एवं समझ से दुश्मन पर कूद पड़े और उन्हें सफाया किया। इस युद्ध कार्रवाई की सफलता के लिए जनता, क्रांतिकारी जनताना सरकारों और जन मिलिशियाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यह युद्ध कार्रवाई भारत के जनयुद्ध के इतिहास में एक नया अध्याय का सृजन की है। यह देश और दुनिया में हमारा जनयुद्ध की प्रतिष्ठा को न केवल बढ़ा दी बल्कि सभी उत्पीड़ित जनता को माओवादी जनयुद्ध की तरफ आकर्षित करने में मदद दी।

कोंगेरा एम्बुश

जून 2010 में छत्तीसगढ़ के कोंगेरा (नारायणपुर) में पीएलजीए द्वारा कार्यान्वित किया गया एम्बुश में सीआरपीएफ प्लाटून के कुल 28 लोगों का सफाया कर 7 को घायल किया गया। 26 हथियार और 1053 कारतूस जब्त किये गये। 63 जवानों वाली सीआरपीएफ रोड ओपनिंग पार्टी में एक बड़ा हिस्सा पीएलजीए हमले होते ही आतंकित होकर भाग गए और एक प्लाटून संख्या में पुलिस हमारे पीएलजीए एम्बुश में फंस गए। दोनों के बीच 4 घंटे तक घमासान संघर्ष हुआ। हमारे लाल योद्धा पुलिस वालों को एक-एक कर सफाया करते हुए, हथियारों को जब्त करते हुए 'मुकराम-ताड़मेट्ला-2' के नमूने के तौर पर इस हमले को संचालित किया। इस भीषण संघर्ष में दुश्मन के बलों के साथ वीरतापूर्वक लड़ते हुए कंपनी पार्टी कमेटी सदस्य कामरेड बण्डु और शंकर एवं एलएमजी पर्सन कामरेड रमेश शहीद हो गए।

कजरा एम्बुश

29 अगस्त, 2010 को बिहार के लखीसराय जिला अन्तर्गत कजरा थाना क्षेत्र में शीतल-कोड़ासी कानीमोह गांव के पास मौकापरस्त एम्बुश में 8 पुलिस कर्मियों को मार गिराया गया और 10 को घायल किया गया।

यह एम्बुश ऐसे समय में किया गया कि रेलवे सुरक्षा के लिए जिला के किउल स्टेशन पर करीब एक कम्पनी बीएमपी के पुलिस वालों पर हमला करने के लिए पीएलजीए की ओर से तय योजना के मुताबिक हमारे लाल योद्धओं ने अपने लक्ष्यों की तरफ जाना शुरू ही किया था कि पार्टी के भीतर घुसे कुछ कोवर्टों ने दुश्मन को हमारी योजना के बारे में जानकारी दे दी और दुश्मन तुरंत सतर्क होकर जवाबी अभियान चलाना शुरू कर दिया।

हमारा हमला के जवाब में दुश्मन ने सभी रोड-रास्ते में तलाशी अभियान शुरू कर दिया। यह रिपोर्ट सुनने से हमारी कार्यवाही को तत्काल स्थागित कर दी गयी। हमारे नेतृत्वकारी बॉडी पर हमला करने के लिए लखीसराय जिला के एसपी के नेतृत्व में बीएमपी, जिला पुलिस और सीआरपीएफ के करीब 200 की संख्या में पुलिस बल कजरा होते हुए पुनाडीह के रास्ते घोघरघाटी गांव के पूरब रास्ते से जहां हमारा डेरा था वहां सीधा जंगल में घुसना शुरू किया। इसकी सूचना पाते ही हमारे पीएलजीए के कामरेडों ने तुरंत मौकापरास्त एम्बुश की योजना बनायी। दुश्मन का बल कानीमोह गांव पहुंचने के पहले ही साथियों ने जिधर से दुश्मन आएगा उस दिशा में एम्बुश में बैठ गया। जैसे ही दुश्मन वहां

पहुंचा वैसे ही साथियों ने पहले गोलबारी शुरू कर दी। शुरूआती गोली से ही दो पुलिस मौके पर ही मारे गये। इसके बाद दोनों तरफ से ताबड़तोड़ फायरिंग हुई। हमारे बहादुर पीएलजीए योद्धाओं की फायरिंग से 5 पुलिस वाले मारे गये और 10 से अधिक घायल हुए। इसके बाद पुलिस वालों को सरेण्डर होने के लिए कॉशन दिया गया। इसी बीच स्टॉप पार्टी के कामरेड रतन यादव मदद करने के लिए दौड़ते हुए आए। दुश्मन के बल पर फायर एण्ड मूवमेंट पोजिशन में गोली चलाते हुए आगे बढ़ने लगे। तभी भागकर छूपे 2 पुलिस वालों ने उनके ऊपर गोली चलायी जिससे का. रतन को माथा में व कान के बगल में गोली लगी और का. रतन वहीं पर शहीद हो गए। पर, पीएलजीए योद्धाओं ने हमला जारी रखा और पुन: सरेंडर होने का कॉशन दिया। चंद मिनटों के अंदर ही दुश्मन ने आत्मसमर्पण कर दिया। हमने उससे 16 एसएलआर, 16 इनसास, और 4 पिस्तौल जब्त किया। उनसे हमने दरोगा रैंक के 4 अधिकारियों को बंदी बनाया।

बहुत ही वीरोचित ढंग से कार्यान्वित किया गया इस हमला द्वारा दुश्मन पर बड़ा धक्का पहुंचाया गया, उसकी आक्रामकता कम हो गई और उसका मनोबल पर अस्थायी तौर पर धक्का लगा। इसके चलते लखीसराय जिला एसपी को तबादला कर दिया गया। पुलिस बंदियों की रिहाई के एवज में पीएलजीए बलों द्वारा की गई मांगों को बिहार की नीतिश सरकार नजरअंदाज करने के कारण एक पुलिस सबइंस्पेक्टर को सफाया करने में पीएलजीए मजबूर हुई। इस हमले के बाद पुलिस बल पागल होकर केन्द्र सरकार की मदद और नीतिश सरकार की विशेष योजना के तहत लखीसराय, जमुई, बांका, भागलपुर जिलों में विशेष दमन अभियान चलाया। उससे हमारे ऊपर कोई दबाव तो नहीं पड़ा, निचले स्तर के पुलिस अधिकारी रहने की वजह से हमारी मांगों पर ध्यान नहीं देते देख पीएलजीए ने बाद में बाकी निचले स्तर के पुलिस अधिकारियों को छोड़ दिया और पहले एक पुलिस बंदी का सफाया करने पर अपना अफसोस जताया और निचले तबके के पुलिस अधिकारियों का सरकार की तरफ से हो अथवा उसके विभाग की तरफ से कोई मूल्य नहीं दिया जाता है इस तरह से उसका राजनीतिक भण्डाफोड़ भी किया गया। सरकार के इस दमन अभियान के खिलाफ बिहार-झारखण्ड-उत्तरी छत्तीसगढ़ स्पेशल एरिया कमेटी द्वारा 9 सितम्बर को बंद बुलाया गया।

धरधरिया एम्बुश

ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत बड़े पैमाने पर केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों को तैनात करने के कारण हमारे इलाकों में पुलिस अत्याचारों में बढ़ोत्तरी हुई है। दुश्मन को हमारे बलों की सही सूचना पर बड़े पैमाने पर बलों को उतार कर हमें नुकसान पहुंचा रहा है। दुश्मन की इस आक्रामकता को ही उनकी कमजोरी के रूप में इस्तेमाल करने का निर्णय पीएलजीए कमान द्वारा लिया गया। हमारे एक प्लाटून की सूचना कुछ मुखबिरों द्वारा दुश्मन को पहुंचा कर उसे हमारे जाल में फंसाने का उपाय के बतौर इस्तेमाल किया गया।

ज्यादातर दुश्मन के आने वाली जगह को एम्बुश साइट के रूप में पीएलजीए बलों द्वारा चुना गया और वहां बड़ी संख्या में सीरियल (लड़ी) माइन लगाई गई। 3 मई, 2011 को एक कंपनी से ज्यादा पुलिस बल हमारे प्लाटून के लिए सर्च करते हुए उरुमुरि गांव (लोहरदगा जिला) आया। हमारा भनक नहीं लगा तो वापस जा रहा था, जब धरधरिया जलप्रपात के पास पहुंच गया उसे पूरी तरह हमारा एम्बुश साइट में घुसने देने के बाद साहसिक ढंग से उस पर हमारे लाल योद्धाओं ने हमला बोल दिया। 500 मीटर दायरे में लगाये गये सीरियल बारूदी सुरंगों के विस्फोट में 14 पुलिस कर्मी मारे गए और 62 घायल हो गए। इस कार्रवाई से बड़ा धक्का लगने के कारण दुश्मन में आतंक छा गया। उसकी पहलकदमी पर चोट पहुंची। लातेहार, लोहरदगा ओर गुमला जिलों के एसपी को सरकार तबदला कर दी। हमारे ऊपर हमले करने के तय योजना की फिर से समीक्षा करने को दुश्मन मजबूर हो गया। उसको नए सिरे से फिर तैयारियां करना पड़ा। इसके कारण गर्मियों में दुश्मन के हाथ से दो महीना छूट गए। इस लड़ाई से लड़ी माइन लगाने का अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ है, जो काफी महत्वपूर्ण बात है। यह लड़ाई दुश्मन द्वारा फैलाये जा रहे ग्रीन हंट ऑपरेशन के भयावह दृश्य से जनता के अन्दर फैल रहे निराशा व हताशा को रोकने में कमो-बेश कामयाब रहे तथा हमारी पार्टी और पीएलजीए के प्रति जनता में विश्वास बढ़ा है। इस लड़ाई के बाद से हमारे पीएलजीए के अन्दर लड़ाकू मानसिकता में वृद्धि हुई है तथा गुरिल्ला युद्धकला के प्रति विश्वास बढ़ा है।

कसलपारा एम्बुश

दण्डकारण्य में दिसम्बर 2014 के कसलपारा (सुकमा) और अप्रैल 2015 के पिड़मेल एम्बुश में पीएलजीए बलों द्वारा बेहतर स्किल और सैनिक विन्यास करते हुए, पहलकदमी को अपने हाथ में रखते हुए, फायर एण्ड मूवमेंट विन्यासों को इस्तेमाल करते हुए दुश्मन के बलों को 3-4 तरफ से घेराबंदी कर, सापेक्षिक तौर पर लम्बा समय दुश्मन के बलों के साथ संघर्ष करते हुए और उसे सफाया करते हुए उससे हथियार जप्त किया गया। साहसिक कसलपारा एम्बुश में 14 सीआरपीएफ जवान मारे गए और 15 घायल हो गए। वहीं पिड़मेल एम्बुश में 7 पुलिस कमांडो मारे गए और 11 घायल हो गए।

टाहकावाड़ा एम्बुश

अप्रैल 2014 में दण्डकारण्य के राष्ट्रीय राजमार्ग-221 पर टाहकावाड़ा (सुकमा) गांव के पास दुश्मन के मजबूत कारपेट सुरक्षा के बीच ही सीआरपीएफ और जिला पुलिस के संयुक्त रोड ओपनिंग पार्टी पर पीएलजीए बलों द्वारा कार्यान्वित किया गया एक साहसिक एम्बुश में 15 पुलिस मारे गए ओर 10 घायल हो गए। उसके पास से 20 आधुनिक हथियार और 1436 कारतूस जप्त किया गया। इस युद्ध कार्रवाई में जनता और मिलिशिया बलों को सक्रिय रूप से शामिल किया गया। धरातल (टेरेन) को भरपूर इस्तेमाल करते हुए सिंगल लाइन फारमेशन में आने वाले दुश्मन के बलों को दो टुकड़ों में बांट कर अगला टुकड़ा का सफाया करने की कार्यनीति को सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया। पीएलजीए बलों द्वारा दृढ़संकल्प और धीरज के साथ तेजगति से निशानेबाजी कौशल और युद्ध विन्यासों को प्रभावशाली ढंग से अमल किया गया।

इसी तरह दुश्मन के आरओपी पर 2013 में किष्टारम (सुकमा), कोसलनार (नारायणपुर), टेडुम (बस्तर), चित्रम (कांकेर), मांझीपारा (सुकमा), नूकनपल्ली (बीजापुर), 2014 में पीरटांड़ (गिरिडीह), चिंतागुफा (सुकमा) जैसे कई बड़े और मध्यम किस्म के हमलों द्वारा दुश्मन का सफाया करते हुए, समय-समय पर उसकी सप्लाई, बलों का आवागमन, अधिकारियों के दौरों के कोई भी गारंटी नहीं होने की स्थिति में धकेल दिया गया।

दुश्मन की कमजोरियों का इस्तेमाल करते हुए कई कार्रवाइयों में थाना/कैंप के नजदीक तक पहुंच कर पीएलजीए द्वारा उसे धक्का पहुंचाया गया। 2011 में झारा (नारायणपुर), भेज्जी (सुकमा), मदनवेड़ा (राजनांदगांव) आदि घटनाओं में फ्रंटल अटैक, एम्बुश कार्यान्वित कर दुश्मन के बलों का सफाया किया गया और हथियार जब्त किया गया। 2014 में निशानेबाजी के जरिए बुरकापाल (सुकमा), चिंतलनार (सुकमा) में पुलिस बलों को खत्म किया गया।

युद्ध के लिए तैयार रहना, जीत हासिल करने में दृढ़संकल्प, दुश्मन की कमजोरियों को सही तरीके से अध्ययन करना, सही योजना के साथ सही समय पर युद्ध कार्रवाइयों को प्रारंभ कर दुश्मन का घेराव करते हुए सफाया करने की कार्यनीतियों को अमल करना, सी4आई, सीक्यूबी तकनीकों और फायर एण्ड मूवमेंट पद्धति को बेहतरीन ढंग से लागू करने के जरिए ही दुश्मन पर बड़ा धक्का पहुंचाकर उसकी आक्रामकता को समय-समय पर रोकने में पीएलजीए कामयाब हुई है।

फायर पावर से दुश्मन की गाड़ियों पर हमले

पीएलजीए अपना फायर पावर के द्वारा दुश्मन की गाड़ियों को प्रभावशाली ढंग से निशाना बनाया। वह कई बिजली गति वाले हमलों को अंजाम देकर पुलिस बलों को नुकसान पहुंचाया।

करेंमरका एम्बुश- मई 2005 में दण्डकारण्य में बीजापुर जिला के राष्ट्रीय राजमार्ग-16 पर नक्सलवादियों पर एक गुप्त ऑपरेशन के लिए जाने वाला सीआरपीएफ बल सवार दो गाड़ियों पर करेंमरका गांव के पास हमला हुआ। पहले उसे मुख्य रूप से फायर पावर के द्वारा ही पीएलजीए ने हमला कर 5 पुलिस का सफाया किया और 8 को घायल कर दिया।

बदरामा बनदुर्गा पहाड़ी मंदिर के चौकी पर हमला- अक्टूबर 2005 में ओड़िशा में सम्बलपुर जिला बदरामा पहाड़ी मंदिर के पुलिस चौकी पर पीएलजीए द्वारा हमला कर एक कांस्टेबल का सफाया कर 4 को घायल कर दिया गया तथा 4 हथियार और 90 कारतूस को जब्त किया गया।

ऋषिकुण्ड हमला- जनवरी 2008 में बिहार में मुंगेर जिला के ऋषिकुण्ड पर्यटन स्थल के पास आई सैप पुलिस गश्ती वाहन पर पीएलजीए द्वारा सरप्राइज हमला कर 4 पुलिस का सफाया किया गया और 4 हथियार को जब्त किया गया।

रानीगंज बाजार में हमला- बिहार के गया जिले के इमामगंज थाना क्षेत्र में रानीगंज बाजार के पास अगस्त 2008 में सैप गश्ती दल पर पीएलजीए द्वारा किये गये सरप्राइज हमले में 5 सैप जवान मारे गए और एसआई एवं जीप ड्राइवर घायल हो गए। हर रोज की तरह पुलिस गश्ती दल की जीप जब पंजाब नेशनल बैंक के पास आई, सादे लिबास में पहले ही वहां पहुंचकर जनसमूह के बीच घुलमिल कर तैनात पीएलजीए बल ने 'सी' फारमेशन में अचानक हमला कर दिया। पुलिस की गोलीबारी में एसीएम कामरेड शिबू यादव शहीद हो गए। इस कार्रवाई में 5 एसएलआर, 80 कारतूस सफलतापूर्वक जब्त कर हमारे लाल योद्धा रिट्रीट हो गए।

मांधागिरी एम्बुश

मई 2009 में दण्डकारण्य गुरिल्ला जोन से बाहरी घेरे में रहे माइनपुर जंगल तक गुरिल्ला युद्ध को विस्तार करने के लक्ष्य से मांधागिरी गांव (धमतरी) के पास पीएलजीए के एक अस्थाई बटालियन द्वारा अंजाम दिया गया मौकेपरस्त एम्बुश में 12 स्पेशल टास्कफोर्स के जवान और गाड़ी चालक मारे गए और 18 पुलिस घायल हो गए। 8 हथियार और

7 ग्रेनेड पीएलजीए द्वारा जब्त किये गये। सही योजना, कमांडिंग, कंट्रोल, कम्युनिकेशन बेहतर ढंग से संचालन करने के कारण गुरिल्ला युद्ध के नियमों को सख्ती से अमल करते हुए दुश्मन के प्रभुत्व वाले इलाके में भी पीएलजीए द्वारा सफलतापूर्वक इस हमले को अंजाम दिया गया। आन्दोलन नया इलाका में विस्तार न हो इसे रोकने के लिए दुश्मन द्वारा जारी कोशिशों को विफल करने में यह एम्बुश कारगर साबित हुआ।

लातेहार जिला में एम्बुश- जून 2009 में झारखण्ड के लातेहार जिला में लांगरेंज पेट्रोलिंग कर वापस जा रहे पुलिस बलों पर पीएलजीए द्वारा हमला किया गया। इसमें 4 पुलिस मारे गए और उससे ज्यादा घायल हो गए।

टाण्डवा बाजार एम्बुश- मई 2010 में बिहार के औरंगाबाद जिला अन्तर्गत टाण्डवा बाजार इलाके में बिहार मिलिटरी पुलिस (बीएमपी) और जिला पुलिस द्वारा संयुक्त रूप से गश्ती करने के दौरान पीएलजीए बल द्वारा सरप्राइज हमला किया गया। इसमें 4 बीएमपी पुलिस मारे गए और कुछ घायल हो गए। इस घटना में 5 रायफल को हमारे लाल योद्धाओं द्वारा जब्त किया गया।

महुलियाटांड़ हमला

बिहार के नवादा जिला (गिरिडीह-जमुई जिला के सीमावर्ती क्षेत्र) के कौआकोल थानान्तर्गत महुलियाटांड़ गांव में फरवरी 2009 में हो रहे रविदास जयन्ती मेला में सुरक्षा के नाम पर तैनात बीएमपी और सैप पुलिस बलों पर पीएलजीए द्वारा सरप्राइज हमला किया गया। सेन्द्रा समिति (पुलिस संरक्षित प्रतिक्रियावादी गिरोह) के गुण्डों का दबदबा रहे इस इलाके में दुश्मन को एक सबक सिखाने के लक्ष्य से इस हमले को अंजाम दिया गया। कुछ ही देर में जब त्यौहार शुरू होने वाला था कौआकोल एसआई के नेतृत्व में एक माइप्रूफ गाड़ी, दो जीप में 20 पुलिस वहां आई। माइनप्रूफ गाड़ी में दो को छोड़कर बाकी पुलिस सभी मंदिर में और मेला के मंच के पास पहुंच गई। वह जैसे ही वहां पर पहुंचा पीएलजीए के कमांडर द्वारा हमला का कॉशन देने के साथ ही पीएलजीए की असाल्ट टीमों द्वारा चाकू से वार कर हथियार छीन लिया गया। प्रतिरोध करने वाले पुलिस वालों को जान से मारा गया। इसी बीच माइनप्रूफ गाड़ी में रहे दो पुलिस वालों द्वारा गोलीबारी किये जाने से तीन साथी घायल भी हुए। अतिरिक्त बल आने की सूचना भी मिली। इससे कार्रवाई को सफलतापूर्वक संपन्न करते हुए पीएलजीए बल सुरक्षित रिट्रीट हो गए। इस सरप्राइज हमले में 13 सैप और बीएमपी पुलिस मारे गए। कुल 15 आधुनिक हथियार (एके-2, एसएलआर-5, इंसाल-5, पिस्तौल-2, स्टेन कारबाइन-1) और 1500 कारतूस एवं दो ग्रेनेड जब्त किया गया।

सोनो एम्बुश- बिहार के जमुई जिला मुख्यालय में एक गश्ती दल पर अगस्त 2009 में पीएलजीए बलों द्वारा अंजाम दिए गए एक सरप्राइज हमलें में 5 पुलिस मारे गए और एक पुलिस घायल हो गए। गश्ती कर वापस जा रहे 6 पुलिस वालों पर यह हमला हुआ था। उसके पास से 6 आधुनिक हथियार पीएलजीए द्वारा जब्त किया गया।

टव्वेटोला एम्बुश

दण्डकारण्य के गढ़चिरौली जिला के धनोरा तालूका में नागपुर-राजनांदगांव अंतरराज्यीय राजमार्ग पर टव्वेटोला गांव के पास मई 2009 में पीएलजीए बलों द्वारा किया गया और एक साहसिक एम्बुश में सी-60 कमांडो पुलिस गश्ती दल के एक थाना इंचार्ज (टीआई), एक सबइंस्पेक्टर सहित कुल 16 पुलिस वालों का सफाया किया गया। इसमें एके-3, एसएलआर-13, लगभग 1000 कारतूस पीएलजीए द्वारा जब्त किया गया।

टोल प्लाजा रेड- बिहार के गया जिला के आमस थाना क्षेत्र में जीटी रोड पर मार्च 2010 में सरकारी टोल प्लाजा को पीएलजीए द्वारा विस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें एक निजी सुरक्षा गार्ड और एक ट्रक चालक मारे गए। इसके बाद लाल योद्धाओं ने 16 हथियार जब्त की।

सनबाइल एम्बुश

ओड़िशा के नुवापाड़ा जिला के कोमना ब्लॉक अन्तर्गत सरबाइल गांव के पास मई 2011 में जीप में सवार एक पुलिस पार्टी पर पीएलजीए द्वारा सरप्राइज हमला किया गया। इसमें गड़ियाबंद (छत्तीसगढ़) जिला एएसपी सहित 9 पुलिस मारे गए। 9 आधुनिक हथियार और 652 कारतूस उससे जब्त किया गया।

मेट्लाचेरुवु एम्बुश

अगस्त 2011 में दण्डकारण्य के बीजापुर जिला मंदेड़ एरिया में मेट्लाचेरुवु गांव के पास पीएलजीए द्वारा किया गया एम्बुश में 13 पुलिस वालों का सफाया किया गया और 6 हथियार एवं 419 कारतूस जब्त किया गया। खाने-पीने सप्लाई से भरे एक ट्रैक्टर पर बैठकर आ रही पुलिस की सूचना पाने के तुरंत बाद पहले ही तय एम्बुश साइट में हमारे बल दौड़कर पहुंचा और पोजिशन लिया। पुलिस ट्रैक्टर किलिंग जोन पर जैसे ही घुसी, एक ही समय में तीनों तरफ से रैपिड फायरिंग करते हुए पीएलजीए अडवांस हुई। पुलिस वालों को कोई भी मौका न देते हुए उन्हें सफाया किया

गया और उससे सफलतापूर्वक हथियार जब्त किया गया। 15 मिनटों के अंदर इस एम्बुश को सफल किया गया। एरिया में हमारी पहलकदमी धक्का खाकर दुश्मन की पहलकदमी हावी होने की स्थिति में दृढ़संकल्प के साथ पीएलजीए द्वारा इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया।

पाकुड़ एसपी के काफिला पर हमला

2 जुलाई, 2013 को झारखण्ड के दुमका जिला मुख्यालय में पुलिस अधिकारियों की बैठक में शामिल होकर पाकुड़ जिला मुख्यालय वापस जा रहे जिला एसपी अमरजीत बलिहार के काफिला पर काठीकुण्ड जंगल इलाके में दोपहर के समय पीएलजीए द्वारा सरप्राइज हमला किया गया। इसमें एसपी और उनके 5 अंगरक्षक मारे गए और तीन पुलिस घायल हो गए। उससे 6 आधुनिक हथियार और 1351 कातूस जब्त किया गया।

मोटर साइकिल पर आने वाले दुश्मन के बलों पर हमले

दुश्मन अपनी कार्यनीति के तहत हमले करने के लिए मोटरसाइकिलों का इस्तेमाल करता है उसको दण्डकारण्य में 2007 में झाराघाटी (नारायणपुर), कुदुर (बस्तर), 2008 में बेरेवेड़ा (नारायणपुर), 2014 में सांगड़ी (दंतेवाड़ा), 2015 में परालकोट-हवलबरस (कांकेर) जैसी कार्रवाइयों से पीएलजीए द्वारा मुकाबला किया जा रहा है और दुश्मन के ऐसे विश्वास को झूठा साबित कर रहा है कि बुलेटप्रूफ जैकेट पहनकर मोटरसाइकलों से तेजगति में अतिरिक्त बलों को तैनात कर सकते हैं।

मई 2007 में बस्तर जिले के कुदुर (बस्तर) गांव के पास मोटरसाइकिल पर आ रहे विशेष कमांडो ग्रुप पर पीएलजीए द्वारा किये गये हमले में 9 पुलिस मारे गए और 3 घायल हो गए। उससे 13 आधुनिक हथियार और 611 कारतूस एवं 11 ग्रेनेड जब्त किया गया। विभिन्न विन्यास करते हुए समन्वय के साथ फायरिंग, ग्रेनेड, पेट्रोल बम जैसे एरिया हथियारों द्वारा दुश्मन का सफाया करने में इस कार्रवाई से एक अनुभव मिला।

फरवरी 2008 में नारायणपुर जिले बेरेवेड़ा गांव के पास मोटरसाइकिलों पर जा रही पुलिस पार्टी पर पीएलजीए द्वारा बिजली गति से हमला कर 4 पुलिस का सफाया कर 4 आधुनिक हथियार और 155 कारतूस को जब्त किया गया।

मतनाग अपर्च्युनिटी एम्बुश

24 मार्च, 2011 को झारखण्ड के पलामू जिला के पांकी थानान्तर्गत मतनाग गांव के पास जंगल में 150 की संख्या में 60 मोटरसाइकिल पर 120 जवान और बाकी पैदल गश्त करने वाले सीआरपीएफ (कोबरा) बलों पर हमारे एक कंपनी द्वारा एक मौकापरस्त एम्बुश किया गया। दुश्मन नजदीक आने पर हमारे कमाण्डर के कॉशन के अनूसार दिन में 3:30 से शुरू कर चार घंटे तक चला इस संघर्ष में कुल दो कोबरा कमांडो मारे गए और 12 घायल हुए। X-95-1, कारतूस-12, मैगजीन-4 आदि जब्त किये गये। लकड़ाही नाइट एम्बुश के कुछ ही दिन के बाद यह कार्रवाई टीपीसी के अन्दर खलबली पैदा कर दी। इस हमले से हमें और एक बार अनुभव मिला कि गुरिल्ला दांव-पेंच का सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो हम छोटी से छोटी शक्ति को लेकर भी दुश्मन के बड़े फॉरमेशनों को भी परास्त कर उल्टे पांव पीछे भागने को मजबूर कर सकते हैं। आमने-सामने की मुठभेड़ में फायर एंड मूवमेण्ट का सही ढंग से उपयोग करें तो अपने को सुरक्षित रखकर भी दुश्मन को नुकसान पहुंचा सकते हैं। कमाण्ड, कण्ट्रोल, कम्युनिकेशन और को-ऑर्डिनेशन का सही तरीके से कमाण्डर के कॉशन के अनुसार पालन करें तो दुश्मन को तितर-बितर करके भी हम तितर-बितर होने से बच सकते हैं। दुश्मन के एक बड़े फॉरमेशन को तितर-बितर कर एक भाग को घेरकर ध्वस्त कर सकते हैं तथा युद्ध सामग्री जब्त कर सकते हैं।

फरवरी 2014 में दंतेवाड़ा जिले के सांगड़ी गांव के पास मोटरसाइकिल पर आ रहे रोड ओपनिंग पार्टी पर किए गए सरप्राइज हमले में 5 पुलिस मारे गए और तीन गम्भीर रूप से घायल हो गए। उनके पास से 6 आधुनिक हथियार और 419 कारतूस जब्त किया गया।

फरवरी 2015 में कांकेर जिले के परालकोट-हवलबरस एम्बुश पीएलजीए द्वारा सफल किया गया ऐसा एम्बुश था जिसे एक योजना के तहत दुश्मन को चारा डालकर अपना जाल में फंसाकर सरप्राइज को प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल कर मोटरसाइकिल पर आने वाले दुश्मन के बैच पर धक्का पहुंचाया गया था। इस हमले में परालकोट टी.आई., एक कांस्टेबल मारे गए और 6 पुलिस घायल हो गए। उसके पास से 2 हथियार जब्त किया गया।

बलिमेला के पास ग्रेहाउण्ड्स के मोटार बोट पर हमला

पानी जहाज से नदियों पर सफर करने वाले दुश्मन के बलों की कमजोरियों का पीएलजीए द्वारा अध्ययन किया गया। उसके आधार पर आंध्रा-ओड़िशा सीमा पर होने वाले सीलेरु नदी के बलिमेला बांध में बिजली की गति से हमला

कर दुश्मन को बड़ा धक्का पहुंचाया गया। इस हमला से हमें एक नया अनुभव मिला। इस हमले में घमण्ड से चिल्लाने वाले आंध्रप्रदेश के 38 ग्रेहाण्उड्स कमांडो, एक एसआई और तीन होमगार्ड का सफाया किया गया और 24 को घायल किया गया। ओड़िशा के मलकानगिरि जिले के बोड़ापोड़ा इलाके में कुंबिंग करके जनबाई गांव से स्पील वे कंपनी के लिए एक नाव में वापस जाने वाले ग्रेहाउण्ड्स बलों पर पुलुसु कैंप गांव के पास पीएलजीए द्वारा हमला किया गया। पीएलजीए के लाल योद्धाओं के रैपिड फायरिंग से नाव में छेद हो गया। इस छेद से पानी तेजी से नाव के अंदर घुस रहा है। इससे सभी पुलिस वाले नाव में एक तरफ हो गए और एकदम एक ही तरफ वजन होने के कारण नाव नदी में डूब गयी। नाव में केबिन के बाहर डेक पर बैठे सभी पुलिस चिल्लाते हुए पानी में गिर गए और नाव के ट्यूबों की मदद से भागने लगे। इन्हें कोई भी मौका नहीं देते हुए नदी की दोनों तरफ तैनात पीएलजीए की असाल्ट टीमों द्वारा गोलीबारी की गयी। हमारे लाल योद्धाओं द्वारा की गयी अचूक निशानेबाजी से इनमें से कई पुलिस वाले घायल हो गए। कुछ पुलिस वाले पानी में डूब कर मर गए। लेकिन केबिन के अंदर जितनी पुलिस थी उसको यह मौका भी नहीं मिला। उन सबको नाव के पल्टी होने से अपना जान को हाथ से धोना पड़ा। पानी में सफर करने वाले दुश्मन के बलों को जबर्दस्त चोट पहुंचाने में लम्बे समय तक यह एम्बुश एक मिसाल के तौर पर बना रहेगा।

दुश्मन जितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, उसके कमजोर पहलू पर हमला करके, कमजोर होते हुए भी उन्हें धक्का पहुंचाना संभव है- इस माओवादी जनयुद्ध के सिद्धांत को यह घटना और एक बार सच साबित किया। देश के भाड़े की पुलिस, अर्द्धसैनिक और कमांडो बलों को एक मिसाल के रूप में शोषक-शासक वर्गों द्वारा दिये जानेवाले खिताब प्राप्त आंध्रप्रदेश के नायक के रूप में घमण्ड से चिल्लाने वाले ग्रेहाउण्ड्स कमाण्डों को अचेत करने वाला इस धक्का से देश के उत्पीड़ित जनता बहुत खुश हुई। दुश्मन के 'कागजी बाघ' चरित्र को यह घटना और एक बार उजागर कर दी। आंध्रप्रदेश में हमारा क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी तौर पर पीछे हटने की स्थिति में यह एम्बुश उत्पीड़ित जनता के मनोबल को बढ़ाया है।

रेलवे पुलिस बलों पर हमले

रेलवे को सुरक्षा देने के नाम पर तैनात पुलिस बलों की कमजोरियों को पहचान कर हथियार जब्त करने के लक्ष्य से पीएलजीए द्वारा उस पर कई हमले किये गये हैं। प्रतिरोध करने वाले पुलिस वालों का सफाया कर उससे उल्लेखनीय संख्या में हथियार जब्त किया गया है। जनवरी 2005 में बिहार के कजरा (लखीसराय) रेलवे स्टेशन पर हमला कर 5 पुलिस वालों को घायल कर 5 हथियार जब्त किया गया। दिसम्बर के अंत में आंध्रा-ओड़िशा सीमा पर कोमराड़ा मंडल के कूनेरु (विजयनगरम) रेलवे स्टेशन के पास रेलवे बलों पर हमला कर 8 हथियार और 200 कारतूस एवं लगभग 8 लाख रूपए नकद; दिसम्बर 2006 में चाकुलिया (पश्चिम बंग) के पास ट्रेन पर हमला कर दो हथियार; बिहार के खटाउना (जमुई) के पास ट्रेन पर किए गए हमले में 3 हथियार; रफीगंज (औरंगाबाद) के पास रेलवे पुलिस पर किए गए हमले में 4 थ्रीन नॉट थ्री; अप्रैल 2007 में नरगंजो (जमुई) के पास 4 हथियार; जुलाई में उत्तर बिहार के अवतार नगर (छपरा) के पास बाघ एक्सप्रेस ट्रेन में आरपीएफ पर हमला कर तीन थ्री नाट थ्री, एक एसएलआर; पश्चिम बंग में किए गए और एक हमले में 4 हथियार; 2008 में गोघी-बरियारपुर (लखीसराय) के पास किए गए हमले में 4 हथियार और 75 कारतूस; 2009 में झारखण्ड के बिरामडीह (धनबाद) हमले में 4 हथियार; पश्चिम बंग के बुवाण्डी (पुरुलिया) हमले में 4 हथियार; 2013 में बिहार के भालुई (जमुई) के पास किए गए हमले में 3 हथियार; जमालपुर (मुंगेर) के पास ट्रेन पर किए गए हमले में 5 हथियार जब्त किया गया।

एरिया एम्बुश

दुश्मन के सफाया कार्रवाइयों या अभियानों का मुहतोड़ जवाब देने के लिए पीएलजीए द्वारा कुछ एरिया एम्बुश भी चलाए गए हैं। पीरटांड़ थानान्तर्गत दुलवाडीह (गिरिडीह); 2009 में फुसरो-केन्दुवाडीह बिडवा (बोकारो), मदनवेड़ा (राजनंदगांव), 2013 में अमवाटीकर (लातेहार) आदि जगहों पर किए गए एरिया एम्बुश में एक हद तक दुश्मन के बलों का सफाया कर हथियार जब्त किया गया। इन युद्ध कार्रवाइयों द्वारा दुश्मन की आक्रामकता पर अस्थायी तौर पर रोक लगा दिया गया। गुरिल्ला बलों और पीएलजीए कमांडरों के लिए यह अच्छा व नया अनुभव है।

दुलवाडीह एरिया एम्बुश- गिरिडीह जिला के पीरटांड़ थानान्तर्गत दुलवाडीह गांव के पास रोड पर झारखण्ड के पारसनाथ जंगलों में पीएलजीए बलों पर हमले करने के लिए आ रहे एसटीएफ और सीआरपीएफ बलों पर पीएलजीए द्वारा घात लगाकर हमला किया गया। इसमें दो सीआरपीएफ जवान मारे गए और 4 गम्भीर रूप से घायल हो गए। मारे गए पुलिस वालों की लाश लेकर वापस जा रहे बलों पर पिपराडीह-भेड़ी-सीतानाला रोड पर किए गए और एक हमले में तीन सीआरपीएफ जवान मारे गए और 8 गंभीर रूप से घायल हो गए।

फुसरो-कोदवाडीह बिडवा एम्बुश

जून 2009 में झारखण्ड के बोकारो जिला के फुसरो शहर में गश्ती कर रहे पुलिस पार्टी के जवान ही स्टेट बैंक

के पास आकर रोज की तरह बैंक, दुकान और होटलों में घुसकर बकवास करते समय, पहले की तय योजना के मुताबिक पीएलजीए द्वारा उस पर सरप्राइज हमला किया गया। तीन पुलिस का सफाया कर उनके पास से 4 आधुनिक हथियार और 213 कारतूस जप्त किया गया। हमला के दौरान अतिरिक्त बलों को रोकने के लिए 6 रोड पर जनमिलिशिया के नेतृत्व में टू और थ्री मैन एम्बुश की टीमों को तैनात किया गया था। फुसरो हमला के तुरंत बाद नवाडीह थाना से एसआई के नेतृत्व में एक प्लाटून की संख्या में पुलिस माइनप्रूफ गाड़ी में चल पड़ी। इस गाड़ी को कोदवाडीह बिडवा गांव के पास पहुंचते ही हमारी एम्बुश टीम पहले ही बिछाये गये बारूदी सुरंग को बराबर लक्ष्य को देखकर विस्फोट से उड़ा दिया गया। इससे माइनप्रूफ गाड़ी पूरी तरह ध्वस्त हो गई। 10 सीआरपीएफ जवान मारे गए और 6 गंभीर रूप से घायल हो गए। बाद-बाकी लोग अतिरिक्त बल आने तक क्षत-विक्षत गाड़ी में ही कई घंटें फंसे रहे और काफी आतंकित हो गए। दुश्मन बड़े पैमाने पर घेराव-दमन और हमला करने के बावजूद हमारी तय सही क्रांतिकारी गुरिल्ला कार्यनीतियों के तहत सफल इन हमलों से हमें सीख लेना जरूरी है।

मदनवेड़ा एम्बुश

जुलाई 2009 में दण्डकारण्य के राजनंदगांव जिले के मानपुर इलाके में कोरकोट्टि गांव के पास गढ़चिरौली-दुर्ग अंतरराज्यीय राजमार्ग पर 4 घंटे के अंदर एक ही एम्बुश साइट में हमारा पीएलजीए गुरिल्ला बटालियन ने दो बार एम्बुश कर दुश्मन के दिल में दहशत फैला दिया। घटना स्थल के लिए रवाना हुए अतिरिक्त बलों पर कारेकट्टा के पास और एक हमला किया गया। मदनवेड़ा बेस कैंप के नजदीक दो पुलिस वालों का सफाया करने के बाद घटना स्थल के लिए रवाना हुए अतिरिक्त बलों पर अलग-अलग जगहों में एम्बुश करना इस एरिया एम्बुश की खासियत है। इस एम्बुश में दुश्मन के ऐसे भ्रम को चकनाचूर कर दिया गया था कि माइनप्रूफ गाड़ी को एम्बुश साइट में लाकर खड़े करके पीएलजीए बलों का मुकाबला कर सकते हैं। क्योंकि पेट्रोल बम फेंकने और साहसिक असाल्ट विन्यासों द्वारा उसे विफल कर दिया गया। भीषण संघर्ष के जरिए पीएलजीए बल द्वारा एरिया एम्बुश को सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर नया अनुभव हासिल किया गया। इस एम्बुश में जिला एसपी विवेक चौबे, दो एसआई सहित 30 पुलिस वालों को पीएलजीए द्वारा सफाया किया गया और 12 को घायल कर दिया गया। 25 आधुनिक हथियार, 923 कारतूस, 15 ग्रेनेड और 3 मोर्टार सेल जब्त किये गये।

अमवाटीकर एम्बुश

7 जनवरी, 2013 को झारखण्ड के लातेहार जिला के बरवाडीह थानान्तर्गत अमवाटीकर जंगल में हमारे पीएलजीए कैंप पर 3-4 कंपनियों की सख्या में सीआरपीएफ और कोबरा बल हमला करने आ रहे हैं- यह सूचना हमारे बलों को मिला। तुरंत वहां हमारी कमान चारों तरफ साथियों को भेज कर सूचना इकट्ठा की और कैंप की रक्षा की तैयारियों का जायजा ली। हमारे विशेष कंपनी से एक आक्रामक प्लाटून को गठित कर पुलिस बल आने की दिशा में जाकर उस पर हमला करने का निर्णय लिया गया। यह प्लाटून 10 मिनट भी आगे नहीं बढ़ा था कि 'पुलिस बल गांव तक पहुंच गई है' की सूचना मिली। यानी, सिर्फ 10 मिनट के अंदर ही वह हमारे कैंप के आउटर पोस्ट तक आ सकता है, इस अंदाजा से तुरंत आक्रामक प्लाटून को यह सूचना दी गयी। यह सूचना पाते ही वह दौड़ते हुए गांव की तरफ एडवांस हुआ। अनुकूल साइट को देखकर पोजिशन लेने के लिए जब तैयारी में जुटा, पुलिस बल नजदीक तक पहुंच गया था। दोनों के बीच आमने-सामने संघर्ष शुरू हो गया। पहला दिन का संघर्ष 6 घंटों तक चला। इसमें पुलिस के 12 जवान मारे गए और 6 हथियार हमारे योद्धाओं द्वारा जब्त किया गया। यह संघर्ष तीन दिन तक जारी रहा। दुश्मन के बालों को पीएलजीए के लाल योद्धाओं द्वारा खदेड़ दिया गया। पूरे संघर्ष में 12 जवान मारे गए और 14 घायल हो गए।

इस तरह बड़े पैमाने पर आए दुश्मन के बलों के साथ तीन दिन तक लगातार जारी यह संघर्ष एक मौकापरस्त एम्बुश के रूप में शुरू हो गया। बिहार-झारखण्ड में अभूतपूर्व ढंग से क्रूर तरीके से जारी युद्ध अभियान 'ऑपरेशन एनाकोंडा-2' के खिलाफ यह कार्रवाई कार्यान्वित की गयी। हमारी पीएलजीए जब भी कैंप लगाया हो, नियमित रूप से सक्रिय रक्षा व्यवस्था को तय करके केन्द्रित और विकेन्द्रित कार्रवाइयों के जरिए आक्रामक दुश्मन पर करारी झटका दी है। इस घटना से दुश्मन कुछ दिनों तक अचंभित होकर आतंकित माहौल में बिताया। पीएलजीए ने नजदीकी लड़ाई में वर्ग घृणा, दृढ़संकल्प, साहस के साथ, तेज गतिविधियों के जरिए, युद्ध विन्यास और फायर एण्ड मूवमेंट को प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल करते हुए दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब दिया।

रात का युद्ध

दुश्मन द्वारा रात के समय होने वाली अनकूल स्थिति का इस्तेमाल कर अपने बलों को भेजना और तैनात करना, रातों-रात संघर्ष के इलाकों में बलों को तैनात कर उजाला होते ही गांवों पर, जनमिलिशिया और पीएलजीए के डेरा एवं कैंपों पर हमला करना, एरिया डोमिनेशन चलाना धीरे-धीरे बढ़ रहा है। इससे पीएलजीए बलों द्वारा भी नाइट एम्बुश

पर ध्यान देकर दुश्मन को बड़ा धक्का दिया गया। इन कार्रवाइयों में पीएलजीए द्वारा माइन युद्ध तंत्र को प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया गया। कुछ कार्रवाइयों में दुश्मन के नजदीक पहुंच कर असाल्ट रायफल से सरप्राइज हमला करके उसे नुकसान पहुंचाया गया। शाम ढलने के समय धीरे-धीरे अंधेरा छाने के वातावरण को कवर के रूप में इस्तेमाल कर कुछ हमले सफलतापूर्वक कार्यान्वित किये गये हैं। 2010 में श्यामपुर भट्टा (शिवहर, उत्तर बिहार), 2011 में किरंदूल-1 (दंतेवाड़ा, डीके), सतनदिया में एमपी इंद्रसिंह नामधारी के काफिला पर एम्बुश (लातेहार, झारखण्ड), बोरगुड़ा (दंतेवाड़ा, डीके), गट्टम (दंतेवाड़ा, डीके), 2012 में किरंदूल-2 (दंतेवाड़ा, डीके), 2013 में सत्तीघाट (कांकेर, डीके), बड़ा झलिया नाइट मौकापरस्त रेड (गढ़चिरौली, डीके), 2014 में इटखोरी (चतरा, झारखण्ड), सलैया-ठकठकवा (गया) आदि कार्यनीतिक जवाबी कार्रवाइयों में पीएलजीए द्वारा दुश्मन को उल्लेखनीय संख्या में सफाया कर हथियार जब्त किया गया। मिसाल के तौर पर खड़े होने वाले कुछ रात के हमले इस प्रकार हैं :

श्यामपुर भट्टा नाइट एम्बुश- बिहार राज्य विधानसभा अक्टूबर 2010 में पहला चरण का मतदान शांतिपूर्ण संपन्न होने से सरकारी अधिकारी बहुत खुश नजर आए। लेकिन राज्य के शिवहर जिले में पीएलजीए द्वारा कार्यान्वित किया गया एक नाइट एम्बुश में एक एसआई सहित 6 पुलिस मारे गए। श्यामपुर भट्टा थाना क्षेत्र में चुनाव कर्मचारियों की रक्षा के नाम पर रोड ओपनिंग कर रहे दो पुलिस वाहनों में से अगला वाहन को पीएलजीए द्वारा निशाना बनाया गया। इस घटना में और एक कांस्टेबल घायल भी हुआ। इसके बाद पीछे वाली गाड़ी में सवार पुलिस आतंकित होकर अपनी गाड़ी को पीछे मोड़ कर भाग गई।

लकड़ाही मोड़ में नाइट एम्बुश- 28 फरवरी, 2011 को झारखण्ड के चतरा जिला, टण्डवा थाना से 3 किमी उत्तर टण्डवा-सिमरिया रोड पर स्थित विमलात गाँव के बगल में लकड़ाही मोड़ के पास रात 7:30 बजे जीप में सात की संख्या में गश्त कर वापस जाने वाला एक पुलिस दल पर पीएलजीए द्वारा किया गया सिविल व रायफल एम्बुश में जैप और होमगार्ड बल के 4 पुलिस मारे गए और 3 घायल हो गए। उसके पास से दो हथियार, 150 कारतूस जब्त कर, बाद में जीप को जला दिया गया। टण्डवा के मैदानी इलाके में घुसकर की गयी यह कार्रवाई हमारे पीएलजीए व क्रान्तिकारी जनता के मनोबल तथा आत्मविश्वास में उर्जावान साबित हुई है, वहीं लम्बे अन्तराल के बाद यह कार्रवाई दुश्मन के मनोबल को एक हद तक तोड़ने और पुलिस व टीपीसी गठजोड़ द्वारा जारी लूट-पाट व मचाए जा रहे आतंक पर एक हद तक रोक लगा है।

बोरगुड़ा नाइट एम्बुश- 17 मई, 2011 को रात लगभग 8 बजे दण्डकारण्य के सुकमा जिला के बोरगुड़ा गांव के पास रात को गश्त कर रहे सीआरपीएफ के तीन वाहनों के काफिला पर आखरी वाहन को निशाना बनाकर पीएलजीए के लाल योद्धाओं द्वारा बारूदी सुरंग से उड़ा दिया गया। इसमें 7 पुलिस मारे गए और एक गम्भीर रूप से घायल हो गया।

गट्टम नाइट एम्बुश- 9 जून, 2011 को दण्डकारण्य के दंतेवाड़ा जिला, गट्टम गांव के पास रात 10:55 बजे पीएलजीए द्वारा कार्यान्वित नाइट एम्बुश में कोया कमांडो और जिला पुलिस के संयुक्त दल सवार माइनप्रूफ गाड़ी बारूदी सुरंग से पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। 10 जवान मारे गए और तीन गम्भीर रूप से घायल हो गए। उनके पास से 8 आधुनिक हथियार जब्त किया गया।

किरंदूल-1 नाइट एम्बुश- 26 जून, 2011 को दण्डकारण्य के दंतेवाड़ा जिला के मलिंगेर एरिया में रात लगभग 8 बजे किरंदूल थाना के नजदीक ही गश्त कर रहे पुलिस वाहन को बहुत ही नजदीक से हमारे लाल योद्धाओं द्वारा उड़ा दिया गया। इसमें टीआई, तीन जवान मारे गए और तीन गम्भीर रूप से घायल हो गए।

सतनदिया नाइट एम्बुश- 3 दिसम्बर, 2011 को हमारी पार्टी के पीबीएम कामरेड रामजी (किशन जी) की हत्या के बदले में झारखण्ड में गारू-डालटेनगंज रोड (लातेहार) पर सतनदिया गांव के पास एमपी इन्द्रसिंह नामधारी का स्कॉट पार्टी पुलिस सवार माइनप्रूफ गाड़ी को निशाना बना कर बारूदी सुरंग से उड़ा दी गयी। इससे उसमें सवार 11 पुलिस मारे गए। उससे 8 इंसास और दो एसएलआर राइफल तथा 800 कारतूस आदि जब्त किया गया। इस कार्रवाई से पक्की रोड़ में माइन लगाने का अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ।

किरंदूल-2 नाइट एम्बुश- 13 मई, 2012 को दण्डकारण्य के दंतेवाड़ा जिले, किरंदूल शहर के बाहर रात 9 बजे थाना से पहाड़ पर एक बंकर में संतरी करने जीप में जा रहे एक पुलिस बैच पर असाल्ट रायफलों द्वारा हमारे लाल योद्धाओं ने हमला किया। उन्हें प्रतिरोध करने के लिए कोई भी मौका नहीं दिया गया। 2-3 मिनटों में ही पुलिस बलों का सफाया किया गया। वहां से नजदीक में रहे अलग-अलग बंकरों में ड्यूटी कर रहे पुलिस बैच को भटकाने के लिए पीएलजीए के डाइवर्शन ग्रुप उन्हें उलझा कर रखा। इससे वे बंकरों से भाग गए। इस घटना में 7 सीआईएसएफ जवान मारे गए और 6 आधुनिक हथियार और 784 कारतूस जब्त किया गया।

इटखोरी कम दृश्यता वाला (low visibility) एम्बुश- 24 दिसम्बर, 2014 को झारखण्ड के चतरा जिलान्तर्गत इतखोरी थाना से 150-200 मीटर की दूरी पर ही शाम ढलते समय पुलिस से सवार एक माइनप्रूफ गाड़ी को विस्फोट से उड़ा दिया गया। इसमें एक हेड कांस्टेबल मारा गया और तीन गम्भीर रूप से घायल हो गए।

सलैया-ठकठकवा एम्बुश- फरवरी 2015 में बिहार के गया जिला में राज्य का मुख्य राजमार्ग-69 पर शाम ढलते समय सलैया-ठकठकवा गांव के पास यह घटना घटी। पुलिस गश्ती मिनी बस बारूदी सुरंगों से उड़ा दिया गया। इसमें दो कोबरा कमांडो मारे गए और 12 घायल हो गए। सलैया-ठकठकवा हमला के एक दिन पहले दुश्मन के बलों पर पीएलजीए द्वारा हमला किया गया। दुश्मन के अतिरिक्त बलों की तैनाती से एरिया में सनसनी फैल गयी थी। इसके बावजूद दुश्मन अपने आपको सुरक्षित महसूस करने वाली, खतरे वाली सूची में नहीं शामिल होने वाली जगह में, कोबरा बल स्वेच्छा से गाड़ियों को इस्तेमाल करने की जगह नियमित रूप से यातायात होने वाली हाईवे पर, हमारे लिए अनुकूल होने लायक शाम ढलते समय इस घटना को अंजाम दिया गया। यह पीएलजीए की सैनिक क्षमता को दर्शाता है।

दुश्मन की कार्यनीतियों और कमजोरियों का अध्ययन करना और सही खुफिया सूचना इकट्ठा करना, धरातल (टेरेन) पर पकड़ हासिल करना, सी4 को बेहतर ढंग से लागू करने लायक सरल और निश्चित योजना तय करना, तय योजना को रात के अंधेरा में भी दृढ़संकल्प के साथ अमल करना, माइन युद्ध तंत्र और अचूक निशानेबाजी को प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल करना, अनुशासन को पालन करना, गुप्त तरीकों को पालन करते हुए सरप्राइज के साथ हमले करने, अंधेरा में हथियार जब्त करने में सामने आने वाली समस्याओं को पार पाने के लिए प्रयास करना- रात के युद्ध में उल्लेखनीय पहलू है। रात के समय में कार्यान्वित किए गए इन कार्रवाइयों के जरिए पीएलजीए बलों में ऐसा विश्वास पैदा किया गिया था कि दुश्मन जितना भी मजबूत हो, गुरिल्ला युद्ध तंत्र को लागू करते हुए उन्हें सफाया किया जा सकता है।

दुश्मन के एक्सप्लोजिव और आर्थिक निधि ले जाने वाली गाड़ियों पर हमले

पीएलजीए के हाथ में एक मजबूत हथियार के रूप में इस्तेमाल होने वाला माइन युद्ध तंत्र को निरस्त्र करने के लिए दुश्मन कई तरह के बंदोबस्त कर रहा है। विस्फोटक पदार्थ इकट्ठा करने में पीएलजीए को मुश्किलें पैदा करना, इकट्ठा करने के बावजूद उसका इस्तेमाल आसानी से न होने देना, उसे निश्चित समय-सीमा के अंदर ही काम करने की तरह बनाना आदि इसमें उल्लेखनीय है। दूसरी तरफ विभिन्न स्तरों में हमारे तकनीकी विभाग को नष्ट करने के लिए दुश्मन अपना ध्यान केन्द्रित किया।

शोषक-शासक वर्गों द्वारा इस तरह चार कटौती (खाने-पीने की सामान, नकद, हथियार-कारतूस-सप्लाई, जनता की मदद-भर्ती) पॉलिसी को लागू करते हुए चारों तरफ से जनयुद्ध को नाकेबंदी करने की स्थिति में दुश्मन की इन कार्यनीतियों को पलटवार करने के लिए पीएलजीए कमीशनों और कमानों द्वारा कुछ कार्रवाइयां ली गयी थी। दुश्मन के विस्फोटक पदार्थ ले जाने वाली गाड़ियों और गोदामों पर, आर्थिक निधि ले जाने वाले बैंक गाड़ियों पर हमले कर बड़े पैमाने पर राशि जब्त की गयी।

2006 में एनएमडीसी (दंतेवाड़ा) रेड, 2008 में महामाया (राजनंदगांव) खदान के एक्सप्लोसिव गाड़ी, बीजे में और एक विस्फोटक पदार्थ गाड़ी (सारंडा), 2010 में टिप्रागढ़ (गढ़चिरौली), बस्तर में दो अलग-अलग घटनाओं में दो एक्सप्लोसिव गाड़ियों की जब्ती कार्रवाइयों में दसियों टन विस्फोटक पदार्थ को जब्त करने और जनता पर निर्भर होकर विस्फोटक पदार्थ मंगवाने के जरिए इस कमी को पार पाने के लिए प्रयास किया गया है। दुश्मन से विस्फोटक पदार्थ जब्त करने के लिए जनता के खुफिया विभाग को इस्तेमाल किया गया है। दुश्मन के हमले में हमारे तकनीकी विभाग धक्का खाकर युद्ध सप्लाइयों के लिए सीमाएं पैदा होने के बावजूद, सीमित संसाधनों को प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल करते हुए, खासकर बीजे, बंगाल, डीके, एओबी में इंप्रूवाइज्ड विस्फोटक पदार्थ तैयार करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इसमें लाल योद्धाओं को प्रशिक्षण देने के लिए कैंप और वर्कशॉप चलाया गया। उल्लेखनीय संख्या में जनमिलिशिया को भी इसमें शामिल किया गया।

वैसा ही दुश्मन आर्थिक निधियों पर पीएलजीए द्वारा कई हमले कार्यान्वित किये गये। 2008 में झारखण्ड में आईसीआईसीआई बैंक गाड़ी पर हमले (राष्ट्रीय राजमार्ग-33, रांची) में पांच करोड़ रुपए, 2010 में राउरकेला-बरसवां रोड पर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की गाड़ी पर हमले में 49 लाख रुपए, मलकानगिरि- चित्रकोण्डा रोड पर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की गाड़ी पर हमले में एक करोड़ रुपए जब्ती की कार्रवाइयां मिसाल के तौर पर बनी रहेगी।

दुश्मन के हेलिकॉप्टरों पर हमला

हमारी पार्टी के नेतृत्व में गुरिल्ला युद्ध को तेज व व्यापक करने के क्रम में पीएलजीए हमलों में दुश्मन के बल

उल्लेखनीय संख्या में मार खाने के कारण गुरिल्ला जोनों में पैदल कूच करना, सप्लाई करना उसके लिए मुश्किल होता जा रहा था। नतीजतन पीएलजीए गुरिल्ला बलों से बचाने के लिए, सप्लाई के लिए, बलों को लाने-ले जाने, बदली करने और तैनात करने के लिए, गांवों पर, पीएलजीए बलों पर हमलों के लिए हेलिकॉप्टरों का इस्तेमाल करना इस दस साल में ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई है। इस स्थिति में हमारे पीएलजीए कमीशन और कमान द्वारा वायु मार्ग से होने वाले हमलों के बारे में अध्ययन करना, उससे आत्मरक्षा करने के लिए सभी एहतियात बरतना, हमारे पास मौजूद हथियार के साथ ही उस पर हमले करने के लिए कार्यनीतियां बनाना और प्रशिक्षण देने का प्रयास किया जा रहा था।

इसी क्रम में पीएलजीए ने अपनी आत्मरक्षा के लिए पहलकदमी और समझ के साथ दुश्मन के हेलिकॉप्टरों पर हमले करते हुए जनयुद्ध में और एक नया अध्याय को जोड़ दिया है। नवम्बर 2008 में डीके में पिड़िया (बीजापुर), 2010 में झारखण्ड के ममाइल (पश्चिम सिंहभूम), अक्टूबर 2011 में कोलाद (रांची-खूंटी सीमा पर), दिसम्बर में डीके के पेदा केड्वाल (दंतेवाड़ा), अप्रैल 2012 में करमडीह (लातेहार), जनवरी 2013 में डीके के तेमेलवाड़ा (सुकमा), अप्रैल में बड़ा भट्टुम (सुकमा) के पास सैनिक हेलिकॉप्टरों पर पीएलजीए द्वारा किए गए हमले से दुश्मन के बलों को परेशानी में डाल दिया गया।

पिड़िया हमले में वायुसेना के सार्जेंट स्तर का अधिकारी मारा गया और तीन पुलिस घायल हो गए। रूस निर्मित वायुसेना हेलिकॉप्टर एमआई-8 को आंशिक तौर पर नुकसान हुआ। कोलाद हमले में ध्रुव हेलिकॉप्टर को गिराया गया। इसमें सवार तीन बीएसएफ जवान मारे गए। पेदा केड्वाल हमले में हेलिकॉप्टर पर 9 गोली लगी। करमडीह हमले में हेलिकॉप्टर क्षतिग्रस्त हो गया। एक कोबरा कमांडो मारा गया और दो घायल हो गए। तेमेलवाड़ा हमले में चॉपर हेलिकॉप्टर पर 16 गोली लगने के कारण इंधन टंकी को धक्का लगा, घना जंगल इलाके में हेलिकॉप्टर को आपातकालीन लैंडिंग करना पड़ा। वायरलेस ऑपरेटर गम्भीर रूप से घायल हो गया। बड़ा भट्टुम हमले में हेलिकॉप्टर काकपिट (पायलट बैठने की जगह) पर गोली लगी। इसके बावजूद दुश्मन जान बचाने के लिए हेलिकॉप्टर से किसी तरह उड़ान भरते हुए भाग गया। हेलिकॉप्टर चढ़ने से पिछड़ जाने के कारण ग्रेहाउण्ड्स का एक सीआई पीएलजीए हमले में मारा गया। उससे एक एके-47 जब्त किया गया। चार पुलिस जान बचाते हुए दुम दबाकर भाग गए।

इन हमलों में ज्यादातर हेलिकॉप्टर उड़ान भरने के क्रम में, हेलिकॉप्टरों को कम ऊंचाई में उड़ान भरते वक्त हमारे पीएलजीए बलों पर हमले करने के क्रम में उस पर हमले हुए हैं। इसी वजह से हमारे पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने अपने असाल्ट रायफलों द्वारा हेलिकॉप्टरों को नजदीकी रेंज में ही (100 मीटर से 300 मीटर रेंज में) निशाना साधकर फायर करना और उसे क्षतिग्रस्त करना मुमकिन हुआ। इस तरह की समझ के साथ हमले करने के जरिए पीएलजीए कई अनुभवों को हासिल कर रही है।

पीएलजीए के हमलों में कट्टर जनविरोधियों का सफाया

क्रांतिकारी आन्दोलन आगे बढ़ने में रोड़ा बने कई जमीन्दारों, उनके एजेंटों, राजनेताओं, प्रतिक्रांतिकारी ताकतों का सफाया पीएलजीए द्वारा सैकड़ों सिंगल एक्शन की कार्रवाइयों के जरिए किया गया। सितम्बर 2005 में गिरिडीह जिला के भेलवाघाटी गांव में 15 प्रतिक्रांतिकारी 'सेन्द्रा समिति' के सदस्यों को पीएलजीए द्वारा सफाया किया गया। पश्चिमी झारखण्ड में सरकार पोषित प्रतिक्रांतिकारी गिरोह तृतीय प्रस्तुती कमेटी (टीपीसी) के राज्य स्तर के सरगना मुरारी, स्थानीय नेता सुधीर सिंह, करीमन गंझू, भोला उरांव उर्फ महेश, कामता प्रसाद उर्फ हकड़, कलजीत गंझू के साथ देवचरण महतो, चनारिक तुरी, सत्यानंद महतो, प्रभु यादव, श्रवण कुमार सिंह जैसे कई सदस्यों, सिर्फ 2014 में ही टीपीसी सरगना रवीन्द्र गंझू (चतरा), कुलदीप यादव (पलामू), छोटी कौरिया (पलामू) में कुछ टीपीसी सरगना सहित 16 सदस्यों को; वैसा ही पलामू जिला के जेपीसी (झारखण्ड प्रस्तुती कमेटी) का एरिया कमांडर शफीक अंसारी उर्फ राजेश, जेपीसी के सरगना गुड्डू गंझू (चतरा), जेपीसी के 5 सदस्य (चतरा); गद्दार रवीन्द्र महतो गुट के सरगना अजय यादव, सुरेन्द्र महतो, सुरेन्द्र उरांव सहित हेमन्त उरांव, सोनूलाल उरांव, संजय पासवान; नागरिक सुरक्षा समिति (नासुस) के रणनीतिक कर्ता, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के सरगना और विधायक सुनील महतो, इसका दाहिना हाथ कृष्ण महतो, नासुस संस्थापक नेता रघुनाथ किस्कू, संतोष महतो (घाटशिला), सशस्त्र पीपुल्स मोर्चा (एसपीएम) के अमित (पहले टीपीसी का साथ दिया) जैसे प्रथम, द्वितीय स्तर के सरगना; शांति सेना के हत्यारा गिरोह का सरगाना भादो सिंह सहित उसके कई सदस्य; रणवीर सेना के कमांडर सुशील पांडे सहित सात सदस्य, वैसा ही पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट आफ इंडिया (पीएलएफआई) और जेएलटी (झारखण्ड लिबरेशन टाइगर्स) के सदस्यों का सफाया किया गया।

वैसा ही सलवा जुडूम के लिए नींव रखने वाले जनविरोधी बुर्जुआ पार्टी के नेता (बुधराम राणा, तानसेन कश्यप, बुधराम सोढ़ी, सन्नू कर्मा, मोहन, जिल्लाल, बुरका सम्मैया, गजेन्दर, लच्चूराम कश्यप, सिखा मांझी, मड़काम सोमडू, नोहर सिंह, बोग्गम चन्द्रु, रघु, रघु सिंह, मोडियम नागा, चिन्ना गोटा, सोयम मूका, बनसीलाल गोटा आदि) सहित कई जालिम जनविरोधियों, जुडूम के गुण्डों, एसपीओ और कोया कमांडो को पीएलजीए द्वारा सफाया किया गया।

सलवा जुडूम के संस्थापक नेता, हत्यारा, जमीन्दार

महेन्द्र कर्मा का सफाया

मई 2013 में सलवा जुडूम के संस्थापक नेता, हत्यारा, कट्टर जनविरोधी, जमीन्दार महेन्द्र कर्मा को जीरम घाटी-1 एम्बुश में 10 अंगरक्षकों के साथ सफाया कर पीएलजीए द्वारा शोषक-शासक वर्गों के दिलों में हड़कंप मचाया गया। इस भारतीय अर्द्ध औपनिवेशिक-अर्द्ध सामंती व्यवस्था के वैकल्पिक तौर पर दण्डकारण्य में अंकुरित होकर मजबूत एवं व्यापक हो रहे क्रांतिकारी जनता की राजसत्ता को और उसका नेतृत्व कर रहे हमारी पार्टी और पीएलजीए का सफाया कर, साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को वहां के खनिज संपदाओं और प्राकृतिक संसाधनों को लुटुवाने का भारतीय शासक वर्गों के दुष्ट रणनीति के तहत महेन्द्र कर्मा, रमण सिंह प्रतिक्रांतिकारी सलवा जुडूम अभियान को 5 जून, 2005 को शुरुआत की। भारतीय सेना के मार्गदर्शन में तय दमनकारी योजना के तहत 2005 से 2009 के बीच पश्चिम और दक्षिण बस्तर के इलाकों में चलाया गया सलवा जुडूम अभियान में 700 गांवों को जला दिया गया। जनता की संपत्ति, फसल, सामान और खाने का पदार्थ सहित सभी तहस-नहस किया गया। कुल नुकसान लगभग 300 करोड़ रुपए तक आकलन किया गया। लगभग 1500 आदिवासियों की सरकारी सशस्त्र बल, सरकार पोषित सलवा जुडूम गुण्डों द्वारा निर्मम हत्या की गयी। सैकड़ों महिलाओं पर अमानवीय ढंग से अत्याचार किया गया। 50 हजार से ज्यादा लोगों को 'राहत' शिविर के नाम से कहा जाने वाला बंदी कैंपों में ले जाया गया। और कई लोग डर से आसपास के राज्यों में पलायन करने को मजबूर कर दिया गया। इस श्वेत-आतंक के खिलाफ पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा के नेतृत्व में दण्डकारण्य आदिवासी जनता एकजुट होकर खड़े हो गए। भूमकाल मिलिशिया में संगठित होकर 'भूमकाल अभियान' संचालित करते हुए सलवा जुडूम का पांव पसारे हर एक इंच जमीन को युद्ध क्षेत्र में तब्दील करते हुए प्रतिरोध किए। पीएलजीए के नेतृत्व में कई कार्यनीतिक जवाबी हमले करके सरकारी सशस्त्र बलों पर, सलवा जुडूम के सरगनाओं पर करारी झटका दिए। अनगिनत मुश्किल-नुकसानों को सहते हुए अनेकों आत्मबलिदान करते हुए सलवा जुडूम की हार तक थके बिना संघर्ष किए। सलवा जुडूम विरोधी 'भूमकाल अभियान' को देश-विदेशों से बड़े पैमाने पर जनता, क्रांतिकारी बुद्धिजीवी और जनवादियों से मदद मिली। दण्डकारण्य के आदिवासी जनता के अधिकार के लिए कई आन्दोलन चलाये गये। व्यापक जन प्रतिरोध के नतीजतन सलवा जुडूम को हार का सामना करना पड़ा। अंत में देश के उच्चतम न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) भी 5 जून, 2011 को सलवा जुडूम को संविधान विरोधी कहकर फैसला सुनाने के लिए मजबूर हो गया।

सलवा जुडूम के हथकण्डों का मुख्य जिम्मेवार महेन्द्र कर्मा का सफाया करने की मांग पहले से ही दण्डकारण्य के आदिवासी जनता से गूंज उठ रही थी। इसे साकार करने के लिए पीएलजीए बलों द्वारा उसको उसकी छाया जैसा पीछा करते हुए उस पर कई हमले किए गए। अंत में साहसिक जीरम घाटी-1 एम्बुश में महेन्द्र कर्मा का सफाया कर जनता की मांग को पीएलजीए ने पूरा कर पाया।

वैसा ही 2014 में झारखण्ड के जनता दल (यू) के नेता रमेश सिंह मुण्डा, तीन कांग्रेस नेता, सितम्बर में और एक राजनेता, जेवीएम नेता कपिलदेव यादव, पश्चिम बंग के रविन्द्रनाथ कर सहित कई सीपीएम नेता और गुण्डों, हर्मद वाहिनी के गुण्डों, दण्डकारण्य के राजनांदगांव में भाजपा नेता रामप्रसाद, एओबी के मालकानगिरि में भाजपा नेता नंदकुमार कर्तामी, समृद्ध ओड़िशा पार्टी के नेता सोमनाथ मड़कामी जैसे कई राजनेताओं का पीएलजीए द्वारा सफाया किया गया।

2015 में शिवाजी, भद्रु, भगत, महदेव मंड़ावी जैसे गद्दारों का पीएलजीए द्वारा सफाया किया गया।

2008 में ओड़िशा में हिन्दु फासीवादी गिरोहों के नेता लक्ष्मणानंद पर पीएलजीए का हमला भगवा आतंकवाद का भण्डाफोड़ करना ही नहीं, बल्कि वहां के जनयुद्ध के विकास के लिए भी बहुत ही मददगार रहा।

कूछ क्रूर पुलिस अधिकारी 2005 में एसपी सुरेन्द्र बाबु (भीमबांध, मुंगेर), एक एसआई (वेंकटम्माहल्लि, रायसीमा, एपी), सीआरपीएफ सहायक कमांडेंट (विंजरम, दंतेवाड़ा), 2006 में एसडीओपी विजय भारती (बनियाडीह, चतरा), डीएसपी अखिलेश्वर प्रसाद सिंह (मझवालिन, रोहतास), 2007 में सीआरपीएफ के सहायक कमांडेंट (झाराघाटी, नारायणपुर), नागा रायफल्स के एक सहायक कमांडेंट, एक प्लाटून कमांडर (पूंड्री, बीजापुर), एक सीआरपीएफ कमांडेंट (कदमा, शिवहर), 2008 में सीआरपीएफ एसआई (बेरेवेडा, नारायणपुर), एसओजी के सहायक कमांडेंट (गोसामा, गजपति), एक एसआई (झाड़ग्राम, पश्चिमी मेदिनीपुर), एक एसआई (डाहुदाग, हजारीबाग), एक एसआई (पोखरिया, दुमका), एक एसआई (आमढामा, मुजफ्फरपुर), एक एसआई (रानीगंज बाजार, गया), एक एसआई (चेरीबेड़ा, नारायणपुर), एक एसआई (बुरुडीह, पूर्वी सिंहभूम), एक एसआई (कोरेपल्ली, गढ़चिरौली), डीएसपी प्रमोद कुमार (पूण्डीधिरी, रांची), आंध्रप्रदेश ग्रेहाउण्ड्स के एक सीआई, चार एसआई (बलिमेला, मलकानगिरि), एसओजी के सीआई शरत चंद्रा (तेल्लाराई, मालकानगिरि), 2009 में एक एसआई (कर्माडीह, लातेहार), सीआरपीएफ

के उपकमांडेंट (मिनपा, दंतेवाड़ा), टीआई अब्दुल वहीद खान (फर्सागांव, नारायणपुर), एसपी वीके चौबे, और दो एसआई (मदनवेड़ा, राजनांदगांव), एक सीआरपीएफ इनस्पेक्टर, एक टीआई (गोयलकेरा, पश्चिमी सिंहभूम), एक एसआई (मोहब्बतपुर, मुजफ्फरपुर), दो कोबरा सहायक कमांडेंट, एक एसआई (पालचेलमा, दंतेवाड़ा), एक सीआरपीएफ कमांडेंट (मिनपा, दंतेवाड़ा), एक टीआई, एक एसआई (टव्वेटोला, गढ़चिरौली), 2010 में एक टीआई (विष्णुपुर, गुमला), सीआरपीएफ बटालियन के उपकमांडेंट सत्यवान, सहायक कमांडेंट बीएल मीना (मुकराम-ताड़मेट्ला, दंतेवाड़ा), उप कमांडेंट विजयपाल सिंह (लालगढ़, पश्चिमी मेदिनीपुर), सीआरपीएफ सहायक कमांडेंट जितिन गुलाटी (कोंगेरा, नारायणपुर), एक एसआई (श्यामपुरभट्टा, शिवहर), 2011 में एएसपी राजेश पवार (सनबैल, गड़ियाबंद), सी-60 कमांडो लीडर चिना वेंटा, 2012 में एक टीआई (भण्डारिया, गढ़वा), कोया कमांडो बल के कंपनी कमांडर इस्माइल खान (सुकमा), करटम (गोरगोण्डा, सुकमा), बीएसएफ कमांडेंट (जन्नुगुड़ा, मालकानगिरि), एक टीआई, एक एसआई (अवस्पित, गया), 2013 में एसपी अमरजीत बलिहार (काठीकुण्ड, पाकुड़), एसटीएफ कंपनी कमांडर लवकुमार भगत (टेडुम, बस्तर), सीआरपीएफ के सहायक कमांडेंट (कल्लारी, धमतरी), 2014 में सीआरपीएफ उपकमांडेंट निहिल आलम (बोदिराज, सुकमा), टीआई विवेक शुकला (सांगड़ी, दंतेवाड़ा), सीआरपीएफ उपकमांडेंट बीएस वर्मा, सहायक कमांडेंट राजेश (कसलपारा, सुकमा), एक एसआई (कामानार, दंतेवाड़ा), सीआरपीएफ बेस कैंप के सेकण्ड इन कमांड हीरा कुमार (लखिरिया, जमुई), 2015 में टीआई अविनाश शर्मा (परालकोटा, कांकेर), एसटीएफ के प्लाटून कमांडेंट शंकरराव, एसटीएफ के प्लाटून सहायक कमांडेंट कृष्णपाल सिंह (टोटापारा, बस्तर) जैसे कई पुलिस अधिकारियों को पीएलजीए द्वारा सफाया किया गया।

साप्ताहिक बाजारों में पीएलजीए द्वारा लगातार हमले

लगातार दुश्मन की कमजोरियों का अध्ययन करते हुए साप्ताहिक बाजारों में एक-एक, जोड़ी या टीम के रूप में घुमने वाले पुलिस बलों पर हमला कर उन्हें सफाया करके, उनसे आधुनिक हथियार छीनने की कई घटनाओं को जन मिलिशिया द्वारा स्वतंत्र रूप से और पीएलजीए के प्रधान और द्वितीय बलों से मिलकर संयुक्त रूप से अंजाम दिया गया है। बड़ी संख्या में हुए इन हमलों से दुश्मन के बलों की गतिविधियों और खुफिया कार्यकलापों पर कई सीमाएं लगाई गयी।

वैसा ही उक्त सिंगल एक्शन की कार्रवाइयों में जनविरोधियों, एसपीओ, दुश्मन के एजेंटों, मुखबिरों को चाटने में जनमिलिशिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। जनमिलिशिया के बिना इन कार्रवाइयों का अंदाजा भी नहीं किया जा सकता।

समय-समय पर हुआ झूठा चुनाव का बहिष्कार अभियान पीएलजीए द्वारा सफल

भारतीय अर्द्ध औपनिवेशिक-अर्द्ध सामंती व्यवस्था में लोकसभा और विधानसभा जनता की नजर में ज्यादातर अभास हो गए। इनके खिलाफ जनता में बढ़ रहा असंतोष को कुचलने के लिए देश के शासक वर्गों द्वारा झूठी लोकसभा और विधानसभाओं में अपने प्रतिनिधियों की चुनावी औपचारिकता को पूरा करने हेतु हजारों अर्द्धसैनिक बलों को तैनात कर बंदूक के बल पर संचालित किया जा रहा है। इस तरह 2004, 2009, 2014 में हुई झूठी लोकसभा चुनावों और समय-समय पर झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश आदि राज्यों में हुई झूठी विधान सभा चुनावों का बहिष्कार करने के अभियानों को विभिन्न कार्यनीतिक जवाबी कार्रवाइयों, जनप्रतिरोध आन्दोलनों और ध्वस्त कार्रवाइयों को समन्वय करते हुए पीएलजीए अपनी ताकत के मुताबिक भरपूर कोशिश करते हुए उसे सफल किया गया है। कृषि क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध को तेज करने के क्रम में विभिन्न स्पेशल जोन/स्पेशल एरिया/राज्यों में शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ वैकल्पिक क्रांतिकारी जनता की राजसत्ता के संगठनों का गठन किया जा रहा है। यह रोज-रोज देश की जनता का विश्वास जीत रहा है।

पुलिस मुखबिर-कोवर्ट नेटवर्क पर जनता की निगाह और हमले

इस दस साल की अवधि में आन्दोलन के इलाकों में कारपेट सुरक्षा मजबूत होने के क्रम में पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा से संबंधित गुप्त समाचार इकट्ठा करने के लिए करोड़ों रुपए लगाकर मुखबिर-कोवर्ट तंत्र को मजबूत करने के लिए दुश्मन कोशिश कर रहा है। क्रांतिकारी आन्दोलन पर हमले करने के लिए दुश्मन की आंख और कान के रूप में काम करने वाला इस मुखबिर-कोवर्ट तंत्र को ध्वस्त करने पर पीएलजीए अपना ध्यान केन्द्रित कर दिया है।

हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए और संयुक्त मोर्चा दोनों व्यापक जनता पर निर्भर होकर कई जगहों पर इस

(शेष भाग पृष्ठ-56 में...)

झूठे 'अहिंसा' के सिद्धांतों का परदाफाश करो! क्रांतिकारी हिंसा को ऊंचा उठाओ!

वर्तमान आधुनिक समाज में उत्पीड़ित वर्गों द्वारा किए जाने वाले प्रतिहिंसा/क्रांतिकारी हिंसा को हर देश के शासक वर्गों द्वारा बढ़ा-चढ़ाकर दिखाते हुए, ऐसा दुष्प्रचार लगातार करना हम देख सकते हैं कि वह संविधान का उल्लंघन है। भारतवर्ष में शोषक-शासकों ने इसे 'एक परम्परा' जैसी बना दी है। जुझारू आन्दोलनों को जनता से अलग कर कुचलने के लिए वे 'अहिंसा' का मुखौटा पहन रहे हैं। 'अहिंसा' के नाम से वे न्यायपूर्ण जन आन्दोलनों और जन प्रतिवाद-प्रतिरोध आन्दोलनों पर 'लक्ष्मणरेखा' खींच रहे हैं। कानूनी विरोध और गैरकानूनी विरोध के बीच विभाजन खींचने की कोशिश कर रहे हैं। उनका कहना है कि 'कोई भी अपना विरोध दर्ज करा सकता है, लेकिन उसको हिंसा का रूप नहीं लेना है।' शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने वाली जनता पर अपने सरकारी पुलिस की क्रूरता से गिर पड़ने पर भी जनता को 'शांति' बनाके रखना चाहिए। ऐसा कोई भी कहने पर कि पुलिस हिंसा भी गैरकानूनी है, वह बहरे के सामने शंखनाद जैसा रह जाता है। 'कोई भी हो, कानून अपने हाथ में लेने से' उसे वे हिंसा कहते हैं (पुलिस इससे परे हैं) और देश की 'परम्पराओं' को उल्लंघन करार देते हैं। मुट्ठीभर भी नहीं होने वाले शोषक-शासक वर्ग- जमींदार लोग किसानों पर अपनी मनमानीपूर्वक जुल्म ढाते हैं; दलाल नौकरशाह पूंजीपति लोग मजदूरों की समस्याओं को निपटने के लिए कोशिश करते हैं मजदूर नेताओं की हत्या कर।

'अहिंसा' का पाठ पढ़ाने वाले सभी शोषक-शासक वर्गों का अपना गुण्डा गिरोह है। इसका 'कर्तव्य' है असंतुष्ट या विरोध को हिंसात्मक रूप से कुचलना। 'चुनाव' के समय में मतदाताओं को धमकाना एक 'परम्परा' हो गयी है। इसके लिए शासक वर्गों की प्रधान पार्टियां - कांग्रेस और आरएसएस से जन्मी भाजपा अत्यंत क्रूर तरीके से जनता का कत्लेआम की गई घटनाएं अनगिनत हैं। उदाहरण के लिए, 1984 में सिख समुदायों पर कांग्रेस द्वारा किया गया कत्लेआम और 2002 में गुजरात में मुसलमान समुदायों पर आरएसएस के संघ परिवार द्वारा किए गए नरसंहार। ये क्रमबद्ध तरीके से हर साल धर्मांधता से होने वाले नरसंहारों का एक अभिन्न हिस्सा भी है। इतना करने के बावजूद ये सभी पूरी तरह 'अहिंसा' और 'धर्मनिरपेक्षता' के नाम से होते हैं।

यह 'अहिंसा' अत्यंत झूठी है। समाचार देखने-सुनने वाले सभी यह सब जानते हैं। कानून किस तरह का करता है- सबूत होने के बावजूद अत्यंत घोर कृत्यों के जिम्मेदार लोग अगर धनी हैं तो उसे छोड़ देने की बात भी सभी लोग जानते हैं। लेकिन कुछ 'बुद्धिजीवियों' ने इस तरह की करतूतों को 'असामान्य घटना' का नाम देकर, कहते हैं कि 'ये सभी घटनाएं निन्दनीय ही हैं, लेकिन ऐसा करना हमारी परम्परा नहीं है।' इन बुद्धिजीवियों की दुनिया के अनुसार भारत सदियों से अहिंसा का गढ़ रहा है, यह बुद्ध, अशोक और गांधी की जन्मभूमि है। इसलिए, शासक वर्गों के हिंसात्मक कारतूतों को देखकर वे (बुद्धिजीवी) बहुत परेशान हैं। वे उत्पीड़ित जनता के न्यायपूर्ण विरोध से सहमत हैं। इस तरह की कारतूतों को वे भी निन्दा करते हैं और अपना विरोध दर्ज कराता है। लेकिन कहते हैं कि सब शांतिपूर्ण तरीके से होना चाहिए और हिंसा का समाधान हिंसा नहीं होना चाहिए। इनसे बताए जाने वाली 'अहिंसा' सिर्फ भ्रम फैलानेवाली भी है और अत्यंत खतरनाक भी है। इनमें से कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें शासक वर्गों द्वारा खरीदा गया है, वे जानबूझ कर झूठी 'अहिंसा' की वकालत करते हैं। ये सभी बुद्धिजीवी जनता द्वारा किए जाने वाली हर जवाबी हिंसात्मक कार्रवाई को इस तरह की असंदिग्ध दावों से अपने हाथ झाड़ते हैं कि 'दोनों पक्ष में कोई भी हो अगर हिंसा पर उतारू हो तो सहमत नहीं हैं।' वे प्रतिक्रियावादी सामाजिक मूल्यों और परम्पराओं द्वारा होने वाली हिंसा और उत्पीड़ित जनता अपनी जिन्दगी में हर मिनट झेलने वाली हिंसा को जानबूझ कर छिपाते हैं। किसी भी फैसला लेने में असमर्थ इनके इस तरह के संदिग्ध दृष्टिकोण को ही अगर सही मानकर चले तो, यह जनयुद्ध में जन योद्धाओं द्वारा किए जाने वाले क्रांतिकारी हिंसात्मक कार्रवाइयों को भी निन्दा करने की ओर ले जाती है। लेकिन, इन 'बुद्धिजीवियों' में से कुछ लोग आमतौर पर जनता का पक्ष लेनेवाले ही हैं।

भारत में इस झूठी 'अहिंसा' के सिद्धांत को, कपट गांधीवादी सिद्धांत को जनयुद्ध द्वारा चकनाचूर कर दिया गया है। एक नया सामाजिक दृष्टिकोण को सामने लाया है। जनयुद्ध द्वारा इस बात पर स्पष्टता देती रही है कि क्रांतिकारी हिंसा अवश्य है, अगर देश के हित और जनता के हित को पूरा करना है तो वह बहुत ही जरूरी है। इस तरह वह क्रांतिकारी जनयुद्ध की सृजनात्मक क्षमता को दर्शाया है। जैसे कामरेड माओ का कहना है कि "... बंदूक हो... हमें... कार्यकर्ताओं को बना सकते हैं, स्कूलों को बना सकते हैं, संस्कृति को बना सकते हैं, जन आन्दोलन को निर्माण कर सकते हैं", वह (जनयुद्ध) इसे साकार करते हुए भारत की निर्दिष्ट परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार में लाकर दिखाया है।

क्रांतिकारी युद्ध का उत्पीड़ित मजदूर-किसान जनता द्वारा हमेशा स्वागत किया जा रहा है और उसे मदद दिया जाता है। इसका कारण यह है कि प्रतिक्रियावादी बलों और उनके गुण्डा बलों से वह उसे मुक्ति दिया है। क्रांतिकारी हिंसा के द्वारा ही वे अपनी जिन्दगियों में एक बदलाव को देखे हैं। गांधीवाद को जनयुद्ध के जरिए न केवल पर्दाफाश किया है, बल्कि गांधीवादियों द्वारा अनुसरण करने वाले बेकार पद्धतियों की विफलता की वजह से भी वह (गांधीवाद) स्वयं भण्डाफोड़ हो गया है। इसका उदाहरण है, अहिंसा की अपनी रणनीति-कार्यनीति बनाने वाले कई प्रसिद्ध आन्दोलनों की विफलता। इस तरह के आन्दोलनों में देश भर में लोग बड़े पैमाने पर एकत्र हुए हैं। 'विकास' के नाम पर शोषक-शासक वर्गों द्वारा अपनाने वाले जनविरोधी नीतियों का, उससे होने वाले विनाश का उसके द्वारा भण्डाफोड़ किया गया है। इसके बावजूद, राज्यहिंसा के सामने वे 'निरस्त्र' होने के कारण दमन का शिकार हो रहे हैं। अंत में यह 'अहिंसापूर्वक' सरकारी न्याय तंत्र भी उसे बचा नहीं पाया। शोषक-शासक वर्गों और उनके साम्राज्यवादी मालिकों द्वारा आक्रामक रूप से जैसे-जैसे जनविरोधी और देश विरोधी नीतियों को लागू किया जाता रहा, वैसे-वैसे यह और स्पष्ट रूप से उजागर होता गया। इसके विपरीत शोषक-शासक वर्गों के नीतियों और उनके दमनकारी हमलों का सामना क्रांतिकारी युद्ध-जनयुद्ध द्वारा किया गया है। क्रांतिकारी हिंसा अन्य हिंसा के मुकाबले एक क्रांतिकारी लक्ष्य से लैस होती है। वह क्रांतिकारी पद्धतियों का पालन करती है। वह एक माओवादी पार्टी के नेतृत्व में सर्वहारा सिद्धांत मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद (मालेमा) के दिशा-निर्देशन में पुराने को उखाड़ कर एक नया राज्य और समाज को स्थापित करने हेतु जनता को शिक्षा देती है। यह नया राज्य आज निर्दिष्ट तौर पर जनसत्ता के केन्द्र के तौर पर उभरनेवाली क्रांतिकारी जन कमेटियों के रूप में मौजूद है।

क्रांतिकारी युद्ध द्वारा जनता को ऐसा तैयार किया जाता है कि वे अपने जमीन और प्राकृतिक सम्पदाओं को साम्राज्यवादियों और भारतीय कारपोरेटों की लूट का शिकार हुए बिना अपने-आप बचा ले। वह पितृसत्ता, जातिवाद और कबिलाई की जंजीरों को तोड़ते हुए महिलाओं, दलितों और आदिवासियों को स्वायत्तता प्रदान करता है। उन्हें ऐसा तैयार करता है कि वे उस महान मुक्ति युद्ध की पहली पंक्तियों में खड़ा हो सके और उत्पीड़ित जनता हथियारबंद होकर अपना भविष्य को अपने हाथ में ले सके।

भारतीय राज्य द्वारा जब ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के जरिए 'जनता पर युद्ध' का एलान किया गया, तब शीघ्र ही प्रगतिशील बुद्धिजीवी और सभी जनता देश भर में उसके खिलाफ खड़े हुए हैं। सलवा जुडूम, सेन्द्रा और नागरिक सुरक्षा समिति (नासुस), शांति कमेटी आदि द्वारा चलाए गए अत्याचार ऑपरेशन ग्रीन हण्ट द्वारा जारी रखा गया है। वह एक तरफ जनता पर युद्ध थोपते हुए दूसरी तरफ बुद्धिजीवियों और सोच की रूपशिल्पियों (opinion makers) के एक गुट को तैयार कर मानवाधिकार को बचाने के नाम पर 'नक्सल हिंसा' पर पूरी तरह एक नयी चर्चा शुरू करने के लिए उकसाया गया है।

भारतीय राजनीति में यह एक निर्णायक समय है। वर्तमान में हिंसा किसलिए और किस लक्ष्य के लिए- इस पर चर्चा हो रही है। हमारे पीएलजीए बल द्वारा मुकराम-ताड़मेटला एम्बुश में जब 76 सीआरपीएफ जवानों का सफाया किया गया, तब 'नक्सल हिंसा' पर इस तरह की नयी चर्चा तेज हो गयी है। शासकों, उनके बुद्धिजीवियों और सोच की रूपशिल्पियों ने हमारी पार्टी और जनता पर गिर पड़े हैं। वे जनता पर होने वाले युद्ध पर आलोचनाओं के उभार को नकारने की कोशिश किये हैं। वे जनहित चाहने वाले बुद्धिजीवियों पर बहुत ही दबाव लाए हैं कि वे नक्सल हिंसा को निन्दा करें। इससे कुछ लोग झुकने के बावजूद कुछ लोग इसे तिरस्कार किया है। फिर भी इससे अहिंसा/हिंसा पर होने वाली चर्चा को एक कपटपूर्ण ढांचे से पूरी तरह बाहर लाकर एक नये दृष्टकोण की ओर खींचा गया है और भारतीय राजनीति में एक ध्रुवीकरण लाने के लिए मदद की है। यह देश के पैमाने पर जनयुद्ध द्वारा डाला गया प्रभाव को दर्शाता है। इस चर्चा पर स्पष्टता देकर सूत्रबद्ध करने की जरूरत है। वह पहले से एक रूप लेकर बढ़ रही है। जनता पर युद्ध को विरोध करने वाले कई लोग इसे एक रूप दे रहे हैं। और कई लोग एक हिंसात्मक क्रांति की तरफ ले जाने वाला साम्यवादी (कम्युनिज्म) सिद्धांत को ही पूरे तौर पर विरोध किए हैं। और कुछ लोग मार्क्सवाद को एक पुराना (outdated) सिद्धांत के रूप में चिन्हित करते हैं। इसके बावजूद, ये सभी लोग 'जनता पर युद्ध' को विरोध करने में एकजुट हैं। इन सभी का मानना है कि माओवादी पार्टी के नेतृत्व में जारी जनयुद्ध की वजह से ही शासकों और उनके विदेशी मालिकों द्वारा चलाए जा रहे तीव्र लूट-खसोट में रुकावट आयी है। जनयुद्ध के बारे में आम तौर पर सहानुभूति व्यक्त करने वाले एक बड़े तबके में अधिकतर लोगों का संबंध अत्यंत उत्पीड़ित आदिवासियों से ही है। इस तरह के लोगों में कुछ लोग मार्क्सवादी सिद्धांत का विरोध करने के बावजूद इन्हें ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के विरोध में भारतीय राज्य के खिलाफ एक व्यापक संयुक्त मोर्चा तले एकजुट करने के लिए प्रयास करना चाहिए। इसके लिए 'हिंसा' इस पर चर्चा को क्रांतिकारी दृष्टिकोण से समझते हुए, समझाने की जरूरत है।

1990 के दशक की शुरुआत से साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की वजह से विनाश और लूट में बहुत तेजी आयी। हमारे देश में तो 'विकास' के नाम पर 1947 से ही हर योजना लागू होने के बावजूद, वह साम्राज्यवादी नव औपनिवेशिक नीतियों के अंदर 'राष्ट्रीयता' और देश को 'स्वयंसमृद्ध बनाने' के मुखौटा में ही होता रहा। साम्राज्यवादी उदारीकारण-निजीकरण-भूमण्डलीकरण की नीतियां सामने आने के बाद, विदेशी निवेश और देश का बाजार किस हद तक विश्व बाजार में शामिल है- इस आधार पर वे 'विकास' की परिभाषा कर रहे हैं। इसके जरिए देश को पूरी तरह साम्राज्यवाद की अधिकाधिक गुलामी करते हुए, साम्राज्यवाद के लूट-खसोट को पूरी तरह छूट दे रहे हैं। साम्राज्यवादियों और उनके दलालों के हितों के लिए देश के प्राकृतिक संसाधनों को सीधे तौर पर बेचने, इसके साथ भ्रष्टाचार आसमान छूने के स्तर तक पहुंचने तथा इसको जारी रखने के लिए जनता पर चौतरफा हमला करने की वजह से देश भर में तीव्र विरोध का सामना कर रहे हैं। साम्यवाद पर किसका मत क्या है- इसे न देखते हुए, यह कोई भी इंकार नहीं कर सकता कि शासकों की योजनाओं को रोकने में जनयुद्ध द्वारा मजबूत भूमिका अदा किया जा रहा है। यह 'जनता पर युद्ध' थोपने वाले भारतीय राज्य के विरूद्ध प्रतिरोध में शामिल होने में सभी को प्रेरणा दे रहा है।

इसमें एक छोटा-सा तबका ही हो, इससे और आगे बढ़ रहा है। वह मानता है कि आम तौर पर सशस्त्र संघर्ष द्वारा ही प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा, जनता को रोजगार, आदिवासियों को बेहतर जीवन मिल सकता है और उस सशस्त्र संघर्ष द्वारा ही एक नया समाज और सत्ता स्थापित किया जा सकता है। जैसे-जैसे दीर्घकालीन लोकयुद्ध आगे बढ़ता है और नई सत्ता विकसित होती है वैसे-वैसे इस तरह का ध्रुवीकरण भी और आगे बढ़ता है।

जनयुद्ध-क्रांतिकारी युद्ध का मतलब है शोषणकारी व्यवस्था और उसकी सत्ता के खिलाफ संपूर्ण युद्ध। जनयुद्ध द्वारा उस सामाजिक जीवन के हर एक क्षेत्र को पूरी तरह उखाड़ देता है। इसलिए, वह जरूर-ही सुचिन्हित वर्ग दुश्मनों, उनके सशस्त्र बलों और दलालों का सफाया करने में निर्दयता दर्शाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि क्रूरता दर्शाता है या मानवाधिकारों का परवाह नहीं करता है। इसके बारे में यहां और विस्तार से बताना जरूरी है। खासकर, कुछ लोग इस पर लगातार चर्चा चलाते हैं, ठीक उन्हीं लोग जनयुद्ध के लिए जन आधार बनाने में भी मुख्य भूमिका निभाते हैं, ऐसी स्थिति में उनसे इस पर बात करना बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाती है।

क्रांतिकारी (नक्सल) हिंसा के बारे में एक समझ बनाने से पहले यहां एक विषय को स्पष्ट रूप से हमें समझना होगा कि क्रांतिकारी हिंसा से संबंधित इस समस्या से आम तौर पर मानवाधिकारों से संबंधित समस्या का कोई लेना-देना नहीं है। हर युद्ध इस मौलिक सिद्धांत के आधार पर चलता है कि ''आत्मगत बल की रक्षा करना और दुश्मन का सफाया करना।'' युद्ध में बड़े पैमाने पर लोग मर जाते हैं। शुद्ध शांतिवादी लोग (pacifists) इसी कारण से ही युद्ध का विरोध करते हैं। मानव जीवन के बारे में उनका वास्ता जितने भी अच्छा हो, लेकिन लुटेरी व्यवस्था के कारण प्रतिदिन और आम तौर पर होने वाला मानव जीवन का विनाश के साथ उनका कोई भी वास्ता नहीं होता। शासक वर्गों के खिलाफ उनका विरोध इतना सीमित है कि दूभर होने वाले लोगों की जिन्दगियों को ठीक करने के लिए उनके पास कोई ठोस कार्यक्रम नहीं है और हां! मुक्ति का कभी नहीं बल्कि सुधारों के अमल की मांग करते हैं। इससे अलावे कुछ मानव मूल्यों के अमल की मांग भी कर सकते हैं। संविधान द्वारा दिये गये अधिकारों के अलावे रोजगार का अधिकार जैसे अन्य सामाजिक पहलू से संबंधित अधिकार की मांग कर सकते हैं। वर्तमान समाज की सीमितताओं से अधिक शुद्ध मानव मूल्यों की मांग रखने का मतलब इस बात का पूरी तरह उपेक्षा करने के समान है कि ऐतिहासिक तौर पर मानवता की अवधारणा किस तरह विकसित होती आयी है और मानवता को विकसित करने में वर्ग संघर्षों की भूमिका, वर्ग संघर्षों से उसका संबंध क्या है। इस तरह का रवैया इससे अंत होगा कि वर्ग संघर्ष के हाथ में मुख्य हथियार के रूप में रहे 'क्रांतिकारी हिंसा' से विरोध जताना।

कम्युनिस्ट पार्टी शोषणकारी व्यवस्था को उखाड़ने के लक्ष्य से सशस्त्र क्रांति को संगठित कर उसका नेतृत्व प्रदान करती है। इसके लिए चुकाने वाले मानव जीवन के बारे में वह उपेक्षा नहीं करती। अगर युद्धों को हमेशा के लिए अंत करना है तो, लोगों को इस तरह का मूल्य चुकाना अनिवार्य है। इसलिए ही कामरेड माओ द्वारा यह शिक्षा दी गयी कि ''युद्ध, पारस्परिक जन-संहार का यह दानव, मानव-समाज के विकास द्वारा अन्तिम रूप से खत्म हो जाएगा तथा वह भी निकट भविष्य में ही। लेकिन, उसे खत्म करने का केवल एक ही उपाय है, वह यह कि युद्ध का युद्ध से विरोध किया जाए, प्रतिक्रांतिकारी युद्ध का क्रांतिकारी युद्ध से विरोध किया जाए, राष्ट्रीय क्रांतिकारी युद्ध का राष्ट्रीय क्रांतिकारी युद्ध से विरोध किया जाए तथा प्रतिक्रांतिकारी वर्ग-युद्ध का क्रांतिकारी वर्ग-युद्ध से विरोध किया जाए। .... जब मानव-समाज की प्रगति उस मंजिल तक हो जाएगी जहां वर्ग और राज्य का खात्मा हो जाएगा, तो युद्ध भी नहीं होंगे- न प्रतिक्रांतिकारी युद्ध होंगे और न क्रांतिकारी, न अन्यायपूर्ण युद्ध और न न्यायपूर्ण; वह मानव जाति के लिए स्थाई शान्ति का युग होगा। क्रांतिकारी युद्ध के नियमों का हमारा अध्ययन सभी युद्धों का खात्मा करने के हमारे इरादे से आरम्भ

होता है; यही हम कम्युनिस्टों और सभी शोषक वर्गों के बीच की विभाजन-रेखा है।''

युद्ध के प्रति सर्वहारा दृष्टिकोण जरूर ही पूरी तरह शोषक वर्गों से विपरीत होगा। शोषक वर्गों द्वारा चलाए जाने वाले युद्धों का उद्देश्य होगा किसी न किसी एक शोषणकारी व्यवस्था की स्थापना करना। लेकिन, उसमें एकत्रित और तैनात किए जाने वाले सैनिक उत्पीड़ित जनता से ही शामिल होते हैं। इसलिए, शोषक वर्गों द्वारा चलाए जाने वाले युद्ध के असली लक्ष्य को छुपाये जाते हैं; कपटता से उसे वैधता जोड़ते हैं। सर्वहारा द्वारा चलाए जाने वाले युद्ध इसके पूरे विपरीत होता है। इसके द्वारा चलाये जाने वाले युद्ध की जीत ऐसे अर्थ में पूरी तरह निर्धारित नहीं की जा सकती कि दुश्मन की हार हो गयी। इसके जीत का मतलब है, सभी युद्धों का अंत करने वाला वर्गरहित समाज की स्थापना की नींव रखना, मूल्यों का सृजन करना। इसका युद्ध का लक्ष्य पारदर्शक होता है। उसे पूरा करने के लिए जागरूक जनता से बलों को इकट्ठे करते हैं। मार्क्स और एंगेल्स ऐसा जिक्र किया कि ''बड़े पैमाने पर यह कम्युनिस्ट प्रेरणा देने, लक्ष्य को हासिल करने के लिए बड़ी संख्या में लोगों में परिवर्तन जरूरी है; व्यावहारिक तौर पर आन्दोलन व क्रांति द्वारा ही इस तरह का बदलाव सम्भव है। इस तरह की क्रांति आवश्यक है। क्योंकि, शासक वर्गों को उखाड़ने के लिए और दूसरा किसी रास्ते से सम्भव नहीं है। इसके साथ-साथ, एक वर्ग के तौर पर अपने आपको रद्द करना, सदियों के सभी तरह की गन्दगी को साफ करना, एक नया समाज को स्थापित करने के लिए अपने आपको ढालना क्रांति द्वारा ही सम्भव है।'' इसके दिशा-निर्देशन में, चीन के क्रांतिकारी अनुभवों को ध्यान में रखकर कामरेड माओ बताया है कि ''क्रांतिकारी युद्ध एक जहर मारने वाली दवा जैसा है, वह न केवल दुश्मन की जहर को साफ करता है बल्कि हमारे अंदर मौजूद गन्दगी को भी शुद्ध करेगा; वह कई पहलुओं को परिवर्तन करवाता है या उसका परिर्वतन के मार्ग को सुगम बनाता है।''

सर्वहारा वर्ग और उसके मित्र वर्ग द्वारा चलाए जाने वाले युद्ध जरूर ही शोषक वर्गों द्वारा चलाए जाने वाले युद्ध के मुकाबले विपरीत रास्ता को अपनाता है। चीन के लालसेना के लिए कामरेड माओ द्वारा तय किए गए तीन-आठ नियमों में सर्वहारा के सेना द्वारा अपनाए जाने वाले रास्ता के बारे में अच्छे तरीके से शामिल किये गये हैं। इसे सभी जनसेनाएं पालन करते हैं। (तीन-आठ नियम के बारे में नीचे दिए गए तालिका में देखें)। इसके दिशा-निर्देशन में जनसेना, जनता और बंदी बनाए गए दुश्मन के सैनिकों के बीच के संबंधों को सुधारा जाता है। ये नियम ऐसे कार्यनीतिक उपाय नहीं हैं जैसे जनता से संपर्क रखने के लिए अमेरिका प्रायोजित एलआईसी रणनीति के तहत भारतीय राज्य द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्रामों को अपनाया जा रहा है। ये जनता के 'मन और दिलों को जीतने के लिए' पीएलजीए द्वारा अपनाए जाने वाले अनुशासनात्मक मार्ग-निर्देशन नहीं हैं। सर्वहारा वर्ग के लिए जनता के 'मन और दिल को जीतना' जरूरी नहीं है। इसके विपरीत सर्वहारा वर्ग जनता के जीवन में कष्ट और तकलीफों के कारण के बारे में, इसके जिम्मेवार सामाजिक व्यवस्था को उखाड़ने के लिए जनयुद्ध में शामिल होने की जरूरत के बारे में जनता को अवश्य ही जागरूक करता है। विश्व की मुक्ति के लक्ष्य को लेकर उसके अनुरूप पद्धति में सर्वहारा वर्ग इस जनयुद्ध को चलाने के लिए बहुत ही सैद्धांतिक प्रतिबद्धता से कामरेड माओ द्वारा इस दिशा-निर्देशनों को तय किया गया है। उस

माओ द्वारा तय किये गये

अनुशासन के तीन मुख्य नियम

1) अपनी सभी कार्रवाइयों में आदेश का पालन करो।
2) आम जनता की एक सुई या एक टुकड़ा धागा तक न उठाओ।
3) दुश्मन से जब्त की गई हर चीज को सार्वजनिक उपयोग के लिए जमा करा दो।

ध्यान देने योग्य आठ बातें

1) नम्रता से बोलो।
2) जो कुछ खरीदो, उसकी ठीक-ठीक कीमत अदा करो और जो कुछ बेचो उसकी ठीक-ठीक कीमत लो।
3) उधार ली गई हर चीज को वापस लौटा दो।
4) हर ऐसी चीज की कीमत अदा करो जो तुमसे खराब हो गई हो।
5) जनता को न मारो और उसे अपशब्द न कहो।
6) फसल को नुकसान न पहुंचाओ।
7) महिलाओं से छेड़छाड़ न करो।
8) बन्दियों के साथ बुरा बरताव न करो।

तरह के मूल्यों का प्रोत्साहन जनयुद्ध द्वारा किया जाना चाहिए और उसे आत्मसात करना चाहिए।

हमारी पार्टी द्वारा अपने सदस्यों, पीएलजीए योद्धाओं, आरपीसीयों, क्रांतिकारी जन संगठनों के कार्यकर्ताओं को इस तरह के दृष्टिकोण से शिक्षा दे रही है। बंदी बनाए गए दुश्मन के सैनिकों को यातनाएं देने की इजाजत नहीं देती है। लेकिन बंदी बनाये गये दुश्मन के सैनिकों या कोवर्टों व एजेंटों पर- जनता के खिलाफ गम्भीर अपराध में दोषी साबित होने पर उसका सफाया पर पार्टी द्वारा रोक नहीं लगाया जाता है। इस तरह के लोगों को सबक सिखाने और जनता की रक्षा करने में ऐसी कार्रवाइयों को लागू करना जरूरी है। लेकिन कार्रवाई करने के पहले सम्भवत: जन अदालत में जनता के सामने उन्हें ले जाकर जनता का फैसला की मांग की जाती है। दुश्मन द्वारा क्रांतिकारी आन्दोलन के अंदर घुसाए गए गुप्तचर और एजेंटों एवं हमें गम्भीर नुकसान पहुंचाने वालों को सम्भवत: राजनीतिक तौर पर भण्डाफोड़ करने के बाद ही इस तरह की जन अदालतों के सामने रखकर जनता के फैसलों के अनुसार सजा दी जाती है। लेकिन यह अवश्य पालन करने का नियम नहीं है। खासकर, दुश्मन के गुप्तचर एजेंटों के बारे में ऐसे संदर्भ भी होते हैं कि इस नियम को अवश्य पालन नहीं कर पाते, क्योंकि तुरंत फैसला लेकर कार्रवाई करना भी जरूरी होती है। लेकिन कोई ऐसा सवाल कर सकता है कि पार्टी और क्रांतिकारी जनता को उस तरह के लोगों को बंदी बनाने, सुनवाई करने और सजा देने का अधिकार कौन दिया है? इसका जवाब बहुत ही स्पष्ट है कि जनता को बगावत करने, शोषणकारी राज्य के कानूनों को तोड़ने, इसी क्रम में एक नया समाज का निर्माण करने का अधिकार किस तरह होता है, उसी तरह जनता के प्रति जालिम लोगों को सजा देने का अधिकार भी जनता को जरूर होगा। यह वैध तरीका ही है। इसमें गलती होने पर इसके लिए कौन जिम्मेदार है- ऐसा सवाल भी तुरंत और कोई उठा सकता है। इसके लिए भी जवाब सीधा दे सकते हैं कि हां! गम्भीर गलतियां भी हो सकती हैं। उसे रोकने के लिए सभी तरह का प्रयास होगा। लेकिन इस कारण से ऐसा कहना सही नहीं होगा कि इस तरह की विभिन्न कार्रवाइयां करने का अधिकार क्रांतिकारी पार्टी के हाथ में नहीं है। कामरेड माओ ने जिक्र किया कि क्रांति एक चाय पार्टी नहीं है।

जब हमारी पीएलजीए सैनिक कार्रवाई करने जाती है, तो अवश्य ही जनता को हानि न हो इसके प्रति जरूरी सावधानियां बरतती है। लेकिन, वर्तमान में समस्या यह नहीं है कि हमारी पार्टी इस दृष्टिकोण को पूरी तरह अपनायी है या नहीं। गलत दृष्टिकोण से गलतियां होती हैं। अवांछित नुकसान भी हो सकता है। इस तरह की कार्रवाइयां जब होती हैं, आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण से गलतियों को सुधारने के लिए, इस पर हमेशा राजनीतिक शिक्षा देना जरूरी है। इस तरह की गलतियां होने पर पार्टी की तरफ से खुलेआम इसे कबूल की जाती है और क्षमा मांगी जाती है। गलतियों को कबूल करने के बारे में- क्रांतिकारी आन्दोलन को नजदीक से देखने वाले कोई भी बता सकते हैं कि ''जनता पर युद्ध'' चलाने वाले केन्द्र-राज्य सशस्त्र बलों और पीएलजीए के बीच कोई सरोकार नहीं है। लेकिन इसके विपरीत केन्द्र-राज्य के बलों द्वारा चलाए जाने वाले ऑपरेशनों में इस तरह की कारतूतों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है कि महिलाओं पर लैंगिक अत्याचार करना, गिरफ्तार किए गए पार्टी के नेतृत्वकारियों और कार्यकर्ताओं, पीएलजीए के कमांडरों और योद्धाओं, जनसंगठन के कार्यकर्ताओं, जन मिलिशिया और जनता को यातना देना, उसे जान से मारना, उनकी रोजगार और आजीविका को ध्वस्त करना आदि।

विश्व भर में प्रतिक्रियावादी सेनाओं की क्रूरता, खासकर उसके द्वारा जब क्रांतिकारी आन्दोलनों को कुचलने के लिए ऑपरेशन चलाये जाते हैं, युद्धों के बारे में अपने सरकारों द्वारा निर्देशित विभिन्न समझौतों के विपरीत व्यवहार इसे स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इस तरह के समझौतों में विभिन्न जेनेवा अधिवेशन और अतिरिक्त प्रोटोकॉल अत्यंत उल्लेखनीय है। इस समझौते के अनुसार बीमार और घायल सैनिकों की रक्षा करना है, वे जोर देकर बताते हैं कि युद्ध बंदियों को यातना नहीं दे सकते या अपमान नहीं कर सकते। उसके तहत हत्याओं और यातनाओं पर, अपहरण करने, कानून के परे नागरिकों को मृत्युदण्ड देने पर प्रतिबंध है। प्रोटोकॉल 1 ऐसा कानून है कि औपनिवेशिक प्रभुत्व, विदेशी सेना द्वारा अपने देश को कब्जा करने के खिलाफ या रंगभेदी सरकारों के खिलाफ स्वायत्तता के अधिकार के लिए लड़ने वाली जनता अगर सशस्त्र कार्रवाइयों से शिकार होने पर पीड़ित जनता को सुरक्षा देती है। प्रोटोकाल 2 ऐसा कानून है कि एक देश में आंतरिक युद्ध के दौरान एक हथियारबंद क्रांतिकारी सेना व्यापक इलाके को अपने कब्जे में लेकर अगर लगातार सैनिक कार्रवाइयों को अंजाम देती है, इस तरह की घटनाओं में शिकार लोगों को सुरक्षा प्रदान करता है। अमेरिका इन दो प्रोटोकॉलों पर सहमति नहीं, बल्कि इसको ठुकराया। क्योंकि, इन प्रोटोकॉलों द्वारा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन चलाने वालों या क्रांतिकारी युद्ध चलाने वालों को सुरक्षा मिलती है। भारत सरकार भी अभी तक इन प्रोटोकॉलों को कबूल नहीं की। जेनेवा अधिवेशनों और प्रोटोकॉलों से सहमति जताने वाले सभी देश भी उसे उल्लंघन कर रहे हैं। वर्तमान में साम्राज्यवाद के हमले और कब्जे से शिकार अफगानिस्तान में गिरफ्तार किए गए लोगों को 'गैरकानूनी लड़ाकू' के रूप में अमेरिका द्वारा घोषित किया गया। उन्हें जेनेवा अधिवेशनों द्वारा वादा किए गए अधिकारों से वंचित किया गया। इसे इस्तेमाल कर प्रतिक्रियावादी युद्धों में जीत का दावा करने वाले सरकारों द्वारा हार शिकार लोगों पर मुकद्मों को चलाया जा रहा है

और उन्हें सजा दिये जा रहे हैं। लेकिन वे अपने बलों द्वारा किए गए अपराधों और खुद अपने द्वारा किए गए गलतियों को छिपा रहे हैं।

अमेरिका में काल कोठरियों में बंद हजारों जापान-अमेरिकियों को गैर-कानूनी ढंग से बंदी बनाना, पश्चिम बंग में और 1942 के क्विट इंडिया आन्दोलन के संदर्भ में वजीरिस्तान में विरोध प्रदर्शन करने वाली जनता पर वैमानिक हमले कर बम बरसाने, द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रितानी गुट के मित्र देशों के वायुसेना द्वारा जर्मन शहरों के नागरिक इलाकों पर कारपेट बाम्बिंग करना या जापान के आत्मसमर्पण करने की स्थिति में है- ऐसी सूचना पाने के बावजूद अमेरिका हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम प्रयोग करना आदि मानवता के खिलाफ जर्मनी, इटली या जापान की सरकारों द्वारा किए गए अपराधों से कम नहीं है। लेकिन, उन पर युद्ध अपराधों के तहत कभी मुकद्दमें नहीं चलाया गया है। इस तरह उन समझौतों का उल्लंघन बार-बार किया गया है।

शोषक वर्गों द्वारा चलाए जाने वाले प्रतिक्रियावादी युद्धों में इस तरह की कपटपूर्ण गतिविधियों का भण्डार होना बहुत ही सहज है। इसकी तुलना में, कामरेड माओ द्वारा तय किए गए तीन-आठ नियमों को लागू करने वाले माओवादी बल गुणात्मक रूप से कहीं ज्यादा बेहतर है। क्योंकि, सर्वहारा दृष्टिकोण उसे हमेशा दिशा-निर्देशन करता है। वर्तमान में हमारे देश में क्रांतिकारी और प्रतिक्रांतिकारी आन्दोलन के बीच होने वाले युद्ध ही इसका अच्छा मानदण्ड है कि कौन युद्धबंदियों, नन-कम्बैटेंटों (नागरिक और गैर-फौजी पेशे करने वाले लोग) के अधिकारों का सम्मान कर रहे हैं। भारत सरकार द्वारा अनुमोदित जेनेवा अधिवेशनों, प्रोटोकॉलों और अंतरराष्ट्रीय मूल्यों को- वे नाम के वास्ते होने के बावजूद- उसके द्वारा उसे उल्लंघन करने के तरीके के आधार पर जनता में और बुद्धिजीवियों में उसे पर्दाफाश करना होगा कि उसका असली स्वभाव क्या है?

कुछ क्रांतिकारी मित्रों द्वारा हमारी पार्टी को ऐसा सुझाव दे रहे हैं कि जेनेवा अधिवेशनों से सहमति जताते हुए घोषणा करे और ऐसा करने पर आन्दोलन के लिए अच्छा होगा और अगर हमारी पार्टी उससे सहमति जताती है, तो भारत सरकार पर भी उसे कबूल करने के बारे में दबाव बढ़ेगी, इसके कारण सरकार के लिए ऐसा चिन्हित करना जरूरी हो जाती है कि क्रांतिकारी आन्दोलन एक आंतरिक युद्ध है। लेकिन, जैसे पहले ही बताया गया है कि युद्ध के बारे में माओवादी दृष्टिकोण ही जेनेवा प्रोटोकॉलों से कहीं ज्यादा बेहतर है। इसलिए, हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी जनयुद्ध को एक क्रांतिकारी आंतरिक युद्ध का दर्जा पाने के लिए जेनेवा प्रोटोकॉलों से सहमति जताना क्या जरूरी है?

हमारी पार्टी और उसके नेतृत्व के सभी संगठनों द्वारा भारतीय राज्य के खिलाफ आत्मरक्षात्मक युद्ध चला रहे हैं। इसलिए गिरफ्तार सभी हमारी पार्टी के कार्यकर्ता युद्धबंदी हो जाते हैं। हमारा युद्ध एक राजनीतिक युद्ध है। इसलिए हमारी पार्टी के कार्यकर्ताओं को अगर गिरफ्तार करते हैं तो उन्हें न केवल युद्धबंदी बल्कि राजनीतिक कैदी का दर्जा भी देना होगा। इसलिए मानवाधिकार कार्यकर्ताओं और मित्रों द्वारा भारतीय कानून के अंदर ही इन मांगों पर ध्यान देना ठीक होगा। इसके लिए हमारी पार्टी द्वारा जेनेवा अधिवेशन से सहमति जताना जरूरी नहीं है। इस संदर्भ में जेनेवा प्रोटोकॉलों को बढ़ा-चढ़ाकर करने वाले प्रचार को, झूठे 'अहिंसा' के सिद्धांतों का पर्दाफाश करते हुए क्रांतिकारी आन्दोलन को ऊंचा उठाएंगे! आवाज उठाएंगे कि युद्ध के बारे में माओवादी दृष्टिकोण जेनेवा प्रोटोकॉलों से कहीं ज्यादा बेहतर है! ✶

(पृष्ठ-50 के शेष भाग...)

तंत्र का भण्डाफोड़ किया है। इसमें शामिल जमीन्दार, जालिम, जनविरोधी और लंपट शक्तियों को चेतावनी दिए। जनता से दबाव डालकर उसे नियंत्रित किया है। चेतावनी, बेपरवाह करने वालों को जनअदालतों में पेश कर जनता के फैसले को लेकर पिटाई किया है। जनता के हित और क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए खतरा बनकर नुकसान करने वाले सैकड़ों दुश्मन के एजेंटों को इस दस सालों में जन दिशा पर निर्भर होकर जन अदालतों के फैसलों के अनुसार मौत की सजा दी गयी है।

पीएलजीए से हासिल इन सभी सफलताओं में जनता के महा आत्मबलिदान, युद्ध में उनकी सक्रिय भागीदारी ही मुख्य कारण रहा है। वैसा ही, युद्ध में महत्वपूर्ण बदलाव लाने के लिए हर मोड़ पर हर युद्ध कार्रवाई में अत्यंत साहस और आत्मबलिदान के गुण को दर्शाते हुए अपने अनुमोल प्राणों को न्योछावर कर नयी विकास के लिए नीव डालने वाले पार्टी के नेतृत्वकारी, सदस्य, पीएलजीए योद्धा और कमांडरों का खूनी बलिदान के सिवा इन सफलताओं को हम अंदाजा भी नहीं किया सकते। जन आधार पर निर्भर होकर, अमर शहीदों के अरमानों को पूरा करने के लिए वर्गदिशा को ऊंचा उठाते हुए दीर्घकालीन लोकयुद्ध की राह पर नव जनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए गुरिल्ला युद्ध को और उन्नत तक ले जाएंगे। ✶

मुठभेड़ : 2004-2015
दुश्मन के हमलों का मुहतोड़ जवाब देनेवाली पीएलजीए

हमारे देश में नव जनवादी क्रांति को सफल बनाने के लक्ष्य से हमारे पार्टी द्वारा जनयुद्ध का संचालन किया जा रहा है। इस दस सालों में दुश्मन द्वारा एलआईसी रणनीति के तहत हमारी पार्टी, क्रांतिकारी आंन्दोलन और पार्टी के नेतृत्व को पूरी तरह सफाया करने के लक्ष्य से काउण्टर गुरिल्ला युद्ध को और तेज किया गया है। इसके लिए फासीवादी शासक वर्गों द्वारा कई काले कानून लाये गये हैं और जनवादी आन्दोलनों का गला घोंट दिया गया है, हजारों लोगों को जेलों में ठूंसने के साथ-साथ एक तरफ फर्जी मुठभेड़ों, कोवर्ट ऑपरेशनों, प्रतिक्रांतिकारी गुटों और अभियानों द्वारा और लॉकप में 'आत्म' हत्याओं का बहाना बनाकर सैकड़ों पार्टी नेतृत्व, कैडर, जन संगठन के नेता, कार्यकर्ता और क्रांतिकारी जनता की हत्याएं और नरसंहार किये गये हैं; दूसरी तरफ रोड ओपनिंग, घेरा डालो और तलाश करो, एरिया डोमिनेशन, कूम्बिंग, लांग रेंज पेट्रोलिंग के नाम पर पीएलजीए बल और जन मिलिशिया पर सरप्राइज हमले, एनसर्किलमेंट (घेराव) हमले और घात लगाकर हमले (एम्बुश) करते हुए सफेद आतंक पैदा किया गया है।

दुश्मन के बल और पीएलजीए के बीच मुठभेड़ और प्रतिरोध

क्रांतिकारी आन्दोलन का सफाया करने के लिए 'नक्सल प्रभावित' राज्यों में तैनात विभिन्न केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल, राज्य के विशेष पुलिस, स्थानीय पुलिस बलों को समन्वय करने के लिए एकीकृत कमानों का गठन किया गया है। इन एकीकृत कमानों के नेतृत्व में आन्दोलन के इलाकों में सूचना आधारित सर्जिकल (अचूक निशाना लगाने वाले) ऑपरेशनों को चलाने के लिए कारपेट सुरक्षा के साथ-साथ मुखबिर-कोवर्ट तंत्र को मजबूत करने पर दुश्मन एड़ी-चोटी एक कर रहा है। इससे इकट्ठा की गयी सूचनाओं के आधार पर हमारे बलों का घेराव कर सफाया करने, रास्ते में घात लगाने वाले एम्बुश पार्टियों और कटाफ पार्टियों को तैनात कर चोट पहुंचाने के लिए कई कुटिल कार्यनीतियों को दुश्मन द्वारा लागू किया जा रहा है। 'गुरिल्ला का गुरिल्ला की तरह मुकाबला करो' के तर्ज पर सरकारी सशस्त्र बल और प्रतिक्रांतिकारी मिलिशिया को शिक्षित करने के लिए देशभर में दसियों की संख्या में काउण्टर गुरिल्ला/जंगल वारफेर का ट्रेनिंग स्कूल स्थापित किया गया है। इससे दुश्मन के बलों के हमलों में क्रमशः वृद्धि हुई है; इसके तहत दुश्मन और हमारे पीएलजीए बलों के बीच मुठभेड़ों के सिलसिले में भी वृद्धि हुई है।

दुश्मन द्वारा लागू एलआईसी की रणनीति-कार्यनीतियों पर समझ जहां गहराई से बनाई गयी है, गुरिल्ला युद्ध का प्रधान सूत्र गुप्तता का पालन किया गया है, पुलिस मुखबिर-कोवर्ट नेटवर्क का सफाया पर ध्यान दिया गया है, अतीत के अनुभवों से सबक लेकर जहां लागू किया गया है, जनता द्वारा जहां आंख की पलक की तरह बचा लिया गया है, हमारे पीएलजीए बलों को कई बार दुश्मन के बलों के हमलों से बचाया गया है।

दुश्मन की एलआईसी नीति को जहां समझ नहीं पाए हैं, गुप्त कामकाजों में गुप्तता को पालन करने में उदारता बरती गयी है और उसमें गलतियां हुईं, पुलिस मुखबिर तंत्र को सही तरीके से जांच न करते हुए जहां ऐसा सोच होता है कि सब ठीक है, दुश्मन द्वारा हजारों की संख्या में बलों को तैनात कर आन्दोलन के इलाकों की जहां छानबीन की गयी है, बदलती परिस्थिति को समय-समय पर समझते हुए उसके अनुरूप हमारी कार्यनीतियों को बदलने पर ध्यान नहीं दिया गया है वैसी जगहों में हमारे पीएलजीए बलों के समाचार पुलिस मुखबिर तंत्र के जरिए दुश्मन को मिलते गया है। इस तरह इन दस सालों में हमारे पीएलजीए बल दुश्मन के हमलों में फंसकर सैकड़ों मुठभेड़ें हुई हैं। इन हमलों में विभिन्न इलाकों में हमारे आन्दोलन के स्तर के मुताबिक प्लाटून की संख्या से लेकर कई बटालियनों तक दुश्मन द्वारा बलों को तैनात किया गया है।

इस तरह तेज होते जा रहे दुश्मन के चौतरफा हमलों के बीच ही पीएलजीए बल द्वारा पहलकदमी को अपने हाथ में रखते हुए, प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल परिस्थितियों में बदलते हुए दुश्मन के हमले का मुकाबला करने के लिए भरपूर कोशिश किया गया है। परिणामस्वरूप कई संदर्भों में हमारे पीएलजीए बलों पर हमले करने के लिए आए पुलिस बल को ही मार खाना पड़ा। हमें जबर्दस्त नुकसान पहुंचाने के उनके बुरे इरादे विफल हुए हैं। जन खुफिया तंत्र का जहां सही तरीके से इस्तेमाल किया गया है, दुश्मन की गतिविधियों के बारे में आलोचनात्मक दृष्टि है, वहां पीएलजीए बल दुश्मन के बड़े हमले से बचते हुए कई मौकों में पहले ही सुरक्षित रिट्रीट होकर अपने आपको बचाने की कार्यनीतियों को पालन किया है। जहां मौका मिला हो और युद्ध की तैयारी हो वहां दुश्मन के हमले का मुकाबला करने के लिए सक्रिय सुरक्षा बैच को गठित कर, हमले के लिए आने वाले उनके रास्ते में घात लगाकर उन्हें चोट पहुंचाया गया है। दुश्मन के हमलों को साहस, धीरता, तेजगति और दृढ़संकल्प के साथ मुकाबला कर दुश्मन के बलों को पीछे हटने में मजबूर कर दिया गया है। कुछ जगहों पर उन्हें नुकसान पहुंचाकर उनसे हथियार भी छीन लिया गया

है। दुश्मन के हमलों के बीच ही पहलकदमी को अपने हाथ में रखने में कामयाब हुआ है।

जहां गुप्तता का पालन नहीं किया गया है, धुवां, रोशनी, आवाज, गंध संबंधित अनुशासन का पालन नहीं किया गया, गुरिल्ला युद्ध में 24 घंटे सतर्क रहने के नियमों को पालन करने में लापरवाही बरती गयी, सिविलियन की मानसिकता से छुटकारा नहीं पाया गया, मुखबिर-कोवर्ट तंत्र को नहीं पहचाना गया, जन खुफिया तंत्र को इस्तेमाल करने में ध्यान नहीं दिया गया, जनता और कार्यकर्ताओं द्वारा सामने लायी गयी चीजों की जांच नहीं की गयी, जहां आलोचनात्मक दृष्टिकोण नहीं है, संदेहास्पद गतिविधियों पर नजर नहीं है, संदेह से मुक्ति पाने के लिए पेट्रोलिंग करने वाली हमारी टीमों द्वारा सही पद्धतियां नहीं अपनायी जाती है, दुश्मन के कूंबिंग को परवाह नहीं करते हुए रूटीन काम-काज का पालन किया जाता है, संतरी द्वारा दुश्मन का सामना करने पर सही सैनिक कार्यनीतियों का पालन कर प्रतिरोध न करके कायरता दिखाते हैं यानी संतरी फायर किए बिना भाग जाता है, सी3 को अमल किए बिना हड़बड़ाकर तितर-बितर होकर रिट्रीट हो जाता है, कुछ मौकों पर कमांडर ही गायब हो जाता है, हमारे गुरिल्ला बलों को सही समय पर सही सैनिक प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है, युद्ध की तैयारी नहीं रहती है, पीएलजीए के बल दुश्मन के घेराव में और उसका जाल में फंस जाता है तो गम्भीर नुकसान झेलना पड़ता है। इसमें गम्भीर भौतिक नुकसानों के साथ-साथ कम्युनिस्टों के लिए जो जान से भी अधिक मूल्यवान होती है पार्टी की गुप्त सूचनाएं नहीं बचा पाने की वजह से दुश्मन के हाथ में चली गई हैं। इस तरह विभिन्न तरीकों से इकट्ठा की गयी सूचानाओं पर आधारित दुश्मन हमारी पार्टी के गुप्त विषयों को यानी हमारी कार्यनीतियों को समय-समय पर अध्ययन करते हुए, क्रांतिकारी आन्दोलन के खिलाफ काउण्टर गुरिल्ला वार को तेज कर रहा है। पार्टी और पीएलजीए के बलों में मौजूद कमी-कमजोरियों को इस्तेमाल करते हुए दुश्मन द्वारा कुटिलपूर्ण युद्ध तेज किया जा रहा है और कुछ कोवर्ट ऑपरेशनों को कार्यान्वित कर हमें गम्भीर नुकसान पहुंचाया है।

बिहार-झारखण्ड-उत्तरी छत्तीसगढ़ स्पेशल एरिया

बिहार-झारखण्ड-उत्तरी छत्तीसगढ़ स्पेशल एरिया में कई घटनाओं में हमारे पीएलजीए के बलों द्वारा दुश्मन के बलों से लोहा लेते हुए उन्हें सफाया करते हुए हथियार जब्त किया गया है। कई संघर्षों में हमारे पीएलजीए के योद्धाओं द्वारा दुश्मन के खिलाफ साहसिक रूप से लड़ते हुए कई मिसाल पेश की गयी है। लेकिन कुछ कमी-कमजोरियों की वजह से कुछ घटनाओं में गम्भीर नुकसान भी हमारे बलों द्वारा झेलना पड़ा है। और कुछ घटनाओं में फर्जी मुठभेड़ों में हमारे कई कामरेडों और आम जनता दुश्मन का शिकार हुए हैं। पीएलजीए के बलों द्वारा दुश्मन को नुकसान पहुंचाने वाली घटनाओं के साथ हमें गम्भीर नुकसान झेलने वाली लकड़मंदा (चतरा) जैसी कुछ घटनाओं को यहां हम देखेंगे:

2005 में बिहार-झारखण्ड में दुश्मन के बल और पीएलजीए के बीच दंडीला के पास हुई एक भीषण मुठभेड़ में तीन पुलिस मारे गए।

2008 में झारखण्ड के गिरिडीह जिलान्तर्गत पारसनाथ पहाड़ की तलहटी में पीरटांड़ पुलिस थाना क्षेत्र में पीएलजीए के बलों की उपस्थिति की सूचना पाकर 150 की संख्या में एसटीएफ और सीआरपीएफ के बल एसपी मुरारी लाल मीणा, डीएसपी अमररंजन किस्सपोट्टा के नेतृत्व में हमला करने के लिए चल पड़ा। इधर दुश्मन के बलों की सूचना पाकर पीएलजीए के बल पहलकदमी अपना हाथ में रखते हुए जिरूआबेड़ा-दुलुआडीह रोड के पास घात लगाकर हमला किया। इस हमले में दो सीआरपीएफ जवान मारे गए और चार गम्भीर रूप से घायल हो गए।

पुलिस की लाशें लेकर वापस जा रहे पुलिस के बलों पर पिपराडीह-भेड़ी-सीतानाला रोड के पास पीएलजीए के बलों के द्वारा घात लगाकर और एक हमला किया गया। इस हमले में तीन सीआरपीएफ जवान मारे गए और 8 पुलिस गम्भीर रूप से घायल हो गए। रिट्रीट में भी हमला होने के कारण दुश्मन के बलों में आतंक पैदा हो गया। पुलिस को पीएलजीए के बलों द्वारा घेराव करने की वजह से वे बहुत परेशान होकर नजदीकी एक गांव में घुसकर अपनी वर्दी छोड़कर और जनता की आड़ में रात 12 बजे तक गांव के घरों में ही रह गए। पीएलजीए के बल रिट्रीट हो जाने के बाद, मेरू कैंप से तीन कंपनी बीएसएफ के बल आने के बाद ही पुलिस जान बचा कर वापस लौट सकी।

2008 में झारखण्ड के संथाल परगना प्रमण्डल में दुमका जिला के मसलिया थाना क्षेत्र में पोखरिया गांव के पास 26 अप्रैल को एक घर में डेरा डाले हुए हमारे दस्ता को पुलिस घेराव करके हमला करने की वजह से वहां मुठभेड़ हुई। दस्ता द्वारा वीरतापूर्वक दुश्मन से लोहा लिया गया और वह उसके घेराव को तोड़कर निकलने में कामयाब हुआ। इस मुठभेड़ में एक एसआई के साथ तीन पुलिस मारे गए। इसमें कामरेड सुरजू दुश्मन के साथ साहसिक ढंग से लड़ते हुए शहीद हो गया। कामरेड मंगल देहरी की पुलस द्वारा पकड़कर हत्या की गयी।

झारखण्ड के हजारीबाग जिलान्तर्गत चरही थाना क्षेत्र के डाहुदाग जंगल में 11 मई, 2008 को सुबह लगभग 10 बजे पीएलजीए के डेरा पर एक कंपनी की संख्या में सीआरपीएफ और एसओजी पुलिस द्वारा एक योजनाबद्ध ढंग से तीन ग्रुप होकर घेराव किया गया और अचानक हमला किया गया। इसके बावजूद गुरिल्ला योद्धाओं ने तुरंत उसे प्रतिरोध

किया। वहां एक युद्ध का माहौल पैदा हुआ। डेढ़ घंटे तक दोनों के बीच लड़ाई हुई। इस प्रतिरोध में एक एसआई और दो सीआरपीएफ जवान मारे गए और तीन पुलिस गम्भीर रूप से घायल हो गए। इससे दुश्मन के बल में आतंक मच गया। इसके बाद वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सका।

झारखण्ड के गिरिडीह जिला के निमियांघाट थाना क्षेत्र में 26 जून, 2008 को रंगामाटी के पास पुलिस और पीएलजीए के बलों के बीच हुई मुठभेड़ में दो पुलिस मारे गए और कई पुलिस घायल हो गए।

बिहार के गया जिला, इमामगंज थाना क्षेत्र में 25 अगस्त, 2008 में असुराइन पहाड़ों पर पथलौटिया गांव के पास पुलिस और पीएलजीए के बीच मुठभेड़ हुई। पीएलजीए की एक कंपनी और एक प्लाटून जब संयुक्त रूप से एक हमले के लिए तैयारी कर रही थी, तब ऐसी सूचना मिली कि सीआरपीएफ, एसएपी और एसटीएफ के संयुक्त बल कूम्बिंग के लिए आ रहे हैं। तुरंत पीएलजीए बल एक योजना बनाकर तीन अलग-अलग बैच बनाया। उसी समय तुरंत पहला बैच पर पुलिस द्वारा हमला हो गया। उस बैच द्वारा प्रतिरोध किया गया। इसी क्रम में बाकी दो बैच द्वारा पुलिस के फ्लैंकों पर घेराव करके हमला किया गया। इसमें एक एसटीएफ का हवल्दार घटना स्थल पर ही मारा गया और 7 पुलिस गम्भीर रूप से घायल हो गए। इनमें एक एसटीएफ का जवान अस्पताल में मारा गया। इससे आतंकित होकर भाड़े का पुलिस बल पूरी रातभर जंगल और मकई बारी में छिपा रहा। पुलिस की लाश रातभर वैसा ही पड़ी रही गई। इस हमले में एक इनसास, एक स्टेन कारबाइन आदि को पीएलजीए द्वारा जब्त किया गया। लेकिन हमारे पीएलजीए बलों के बीच क्रॉस फायरिंग में सबजोनल कमेटी के सदस्य कामरेड लाहौर (राहुल, इंस्ट्रक्टर) शहीद हो गये।

झारखण्ड के लातेहार जिलान्तर्गत बालूमाथ थाना क्षेत्र में 26 सितम्बर, 2008 को डुमरा गांव के पास पीएलजीए डेरा पर टीपीसी गुण्डों द्वारा हमला किया गया। इसे पीएलजीए योद्धाओं द्वारा मुहतोड़ जवाब दिया गया और उन गुण्डों को मार भगाया गया। भागते टीपीसी गुण्डों पर हमला करने के लिए पीएलजीए बल दो ग्रुपों में बंट कर जब सर्चिंग कर रहे थे, एक बैच का पुलिस से आमना-सामना हो गया और एक दूसरों से देखा-देखी होने के बाद फायरिंग शुरू हो गया। इस आवाज को सुनकर पीएलजीए का दूसरा बैच पुलिस को जिस रास्ता से रिट्रीट करने का मौका था उस रास्ता में आगे बढ़ रहा था, उस बैच को देखकर भाड़े का पुलिस बल दुमदबाकर भाग गया। भागने वाले पुलिस बलों को एक किमी. से ज्यादा ही दूर तक यानी मातकोमा गांव से बारीबाद गांव तक हमारे योद्धाओं ने भगा दिया। तब तक शाम ढलने लगी तो पुलिस वाले डर से आतंकित होकर बारीबाद गांव में आंगनबाड़ी भवन में घुसकर दरवाजा बंद कर दिया। इन्हें सुरक्षित वापस ले जाने के लिए लातेहार जिला एसपी को अतिरिक्त बलों के साथ आना पड़ा।

झारखण्ड के पूर्वी सिंहभूम जिला के घटाशिला इलाके में टेराशानी गांव के जंगलों में किया-झरना के पास हमारे पीएलजीए के कैंप होने की सूचना दुश्मन को मिली। 8 अगस्त, 2008 को सुबह जिला एसपी 300-400 पुलिस को वहां भेजने के साथ-साथ, दूसरा तरफ बसाडेरा गांव को भी 100 पुलिस को भेजा गया था। दीघा कैंप के 60 पुलिस दैनमरी गांव से गुजरते हुए पहाड़ों पर आकर घात लगाकर बैठा। कैंप पर हमला करने के बाद रिट्रीट होने वाले हमारे बलों पर एम्बुश करना इनका लक्ष्य था। दुश्मन के बलों की तैनाती की सूचना पाते ही हमारे कैंप की कमान द्वारा तुरंत कैंप करने का निर्णय लिया गया। अगर दुश्मन हमला करे तो उसे प्रतिरोध करने के लिए जरूरी तैयारियां की गयी। दोपहर डेढ़ बजे दुश्मन का हमला शुरू हो गया। दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए हमारे कामरेड सुरक्षित रिट्रीट हो गए। लेकिन कुछ सामग्री, एक पिस्तौल, कुछ कारतूस और पैसा वहां छूट गया।

2009 में झारखण्ड के गिरिडीह जिलान्तर्गत तीसरी थाना क्षेत्र में भलुवाई पंचायत के मेरमो पहाड़ी गांव के पहाड़ पर जंगल में पीएलजीए बल द्वारा 17 मार्च को डेरा डाला गया था। लेकिन इस पहाड़ पर लोगों का आना-जाना करने की वजह से हमारी सूचना दुश्मन तक पहुंच गयी। उस रात पीएलजीए के कामरेडों ने ग्रामीणों से बैठक भी की थी। उसके बाद वहीं पर खाना खाया। लगभग अधिकतर साथी खा लिया था। दोनों तरफ संतरी लगी हुई थी। रात 9:40 बजे एक संतरी में रहे दो कामरेड झाड़ियों में आदमियों की सुगबुगाहट होने का संदेह जताया। संदेह को स्पष्ट करने के लिए पत्थर फेंका गया। इसी बीच हमारा कमांडर द्वारा ऐसी चेतावनी देते हुए आदेश दिया गया कि 'कौन? साथियो! हथियार लोडकर आगे बढ़ो! अगर पुलिस हो, फायर कर सफाया करो!' तुरंत दो कामरेड अपना एसएलआर लोडकर संतरी के पास चले आये और पूछा किस दिशा में संदेह है? उस तरफ संतरी कामरेड आगे बढ़ रहा था, तो उस दिशा में सुखा पत्ता की आवाज सुनाई दी। अस्पष्ट रूप से एक आदमी दिखाई देने पर तुरंत उसपर निशाना साध दी। वह आदमी गुनगुनाते हुए बोला कि 'सर! हमला शुरू कीजिए!' इसके बाद हमारे कामरेडों ने उसपर फायरिंग किया। इसकी वजह से पुलिस पीछे भागने की तरह जूतों की आवाज सुनाई दी। हमारी गोली लगने से पुलिस वाला चिल्लाया कि 'मुझे बचाओ!' पुलिस 150 मीटर दूर तक भाग कर पोजिशन लेकर फायरिंग शुरू किया। उसे प्रतिरोध करते हुए पीएलजीए योद्धा सुरक्षित रिट्रीट हो गए। इसमें घायल डीएसपी का गार्ड घटना स्थल पर ही मारा गया। इस तरह हमारे पीएलजीए बलों द्वारा पुलिस वालों को मुहतोड़ जवाब दिया गया। इससे दुश्मन का हमला विफल हो गया।

झारखण्ड के खूंटी जिलान्तर्गत अड़की थाना क्षेत्र के जोरको जंगल में पीएलजीए बलों पर हमला करने के लिए आए पुलिस बल ही हमारे जाल में फंसने की घटना 4 अप्रैल, 2009 को घटी। पीएलजीए बलों के डेरा की सूचना पाकर 200 पुलिस (एसटीएफ और सीआरपीएफ) सुबह उजाला होते ही हमला के लिए निकली। यह सूचना पाकर पीएलजीए की कमान द्वारा तुरंत समझदारी के साथ पुलिस पर जवाबी हमला करने का निर्णय लिया गया। कमान के आदेश अनुसार हमारे लाल योद्धाओं ने अपना डेरा से कुछ ही आगे की तरफ एक साइट को चुनकर पोजिशन लिया। पुलिस इस डेरा की तरफ आ रही थी। लगभग 20 पुलिस हमारे साइट में प्रवेश करने के साथ ही पीएलजीए द्वारा उन पर सरप्राइज हमला कर दिया गया। दोनों के बीच आमने-सामने की लड़ाई हुई। पहले दो, उसके बाद तीन पुलिस वालों का सफाया किया गया और तुरंत उनके हथियारों को हमारे योद्धाओं द्वारा जब्त कर लिया गया। पुलिस को मार भगायी गयी। लड़ाई तीन घंटे तक चली। उसके बाद पीएलजीए का बल रिट्रीट हो गया। रिट्रीट होकर एक गांव में हमारे योद्धा जब पानी पी रहे थे उसी वक्त दुश्मन के अतिरिक्त बल एरिया में घुसने की सूचना वाइरलेस के जरिए मिल ही रही थी कि हमारे योद्धाओं का उस बल के साथ आमना-सामना हो गया और फिर एक बार लड़ाई शुरू हो गई। लेकिन पीएलजीए बल पहलकदमी को अपने हाथ में रखते हुए प्रतिरोध करने की वजह से उस अतिरिक्त बल को भी पीछे हटने को मजबूर कर दिया गया। पूरी इस कार्रवाई में 5 पुलिस मारे गए और तीन पुलिस घायल हो गए। हमारे तीन कामरेड इसमें घायल हुए। तीन आधुनिक हथियार, 146 कारतूस, 6 ग्रेनेड, 5 मोर्टार सेल आदि दुश्मन से पीएलजीए द्वारा जब्त किया गया।

झारखण्ड के हजारीबाग जिलान्तर्गत चौपारन थाना क्षेत्र के जंगली इलाके में पहाड़ पर बसे मुर्तिया गांव में 24 मई, 2009 को हमारे पीएलजीए का एक प्लाटून डेरा डला हुआ था। इस इलाके में बहुत दिनों से हमारा आना-जाना नहीं होने की वजह से हमारे किसी भी कामरेड को वहां की परिस्थिति कैसी है इसका अंदाजा नहीं था। कौन दोस्त है और कौन दुश्मन है पता नहीं था। इसलिए हमारा प्लाटून यहां होने का समाचार दुश्मन के पास पहुंच गया और वह शाम 4 बजे हमारे डेरा पर सरप्राइज हमला कर दिया। तुरंत प्लाटून के सभी साथी कवर लेकर पुलिस से भिड़ गए। लगभग एक घंटे तक दोनों के बीच गोलीबारी हुई। इसमें एक सीआरपीएफ जवान मारा गया। इससे पुलिस कुछ पीछे हट गए। उसके बाद प्लाटून जब रिट्रीट कर रहा था तो कामरेड नगीना और दिनेश को पुलिस की गोली लगने से दोनों वहीं पर शहीद हो गए।

शानदार मिसाल पेश करने वाला ममाइल वीरतापूर्ण प्रतिरोध

जून 2010 में ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत क्रांतिकारी आन्दोलन को गम्भीर नुकसान पहुंचने के बुरे मनसूबे से हमारे उच्च स्तर के नेतृत्व को सफाया करने के उद्देश्य से दुश्मन बड़े पैमाने पर तैयारियां करके बिहार-झारखण्ड स्पेशल एरिया कमेटी (सैक) इलाके के अन्दर दक्षिणी जोन के पश्चिमी सिंहभूम जिलान्तर्गत बंदगांव थाना के ममाइल गांव के जंगलों में लगाया गया हमारे कैंप पर हमला कर दिया। इस हमले का पीएलजीए के वीर योद्धाओं द्वारा 30 घंटे तक साहस के साथ लगातार लड़ते हुए मुकाबला किया गया। प्रतिरोध के इतिहास में यह एक शानदार मिसाल कायम किया। इस प्रतिरोध में हमारे पीएलजीए के लाल योद्धाओं द्वारा 5 कोबरा पुलिस का सफाया किया गया और 11 को घायल किया गया। इस संघर्ष में हमारे जोनल कमेटी सदस्य कामरेड डेविड शहीद हो गये।

अपनी योजना को प्रभावशाली ढंग से अमल करने के लिए झारखण्ड के यूनिफाइड कमान के कमांडर इन चीफ विजय रमण खुद पश्चिमी सिंहभूम जिला मुख्यालय केन्द्र चाईबासा में और आईजी और डीजीपी बंदगांव में डेरा डालकर समन्वय किया। इस ऑपरेशन में कुल 12 सीआरपीएफ बटालियन, झारखण्ड जागुआर बल भाग लिया। उसमें से कुल 7 हजार बल प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। इसके साथ-साथ राज्य के सीमा पर 4-5 सौ पुलिस को तैनात किया गया। जीपीएस जैसे अत्याधुनिक उपकरणों और तीन हेलीकॉप्टरों को इस हमले में इस्तेमाल किया गया।

नजदीक वाला एक गांव में पुलिस आने की सूचना 12 जून को सुबह लगभग 10:30 बजे पीएलजीए बलों को मिली। कमान की तरफ से तुरंत सभी साथियों को कवर में जाने का आदेश जारी किया गया। इधर सभी कामरेड कवर में जा ही रहा था, ठीक उसी समय उधर पूर्वी दिशा में संतरी चौकी तरफ दुश्मन के बल पहुंचकर गोलीबारी शुरू कर दिया। तुरंत पीएलजीए के बलों की ओर से भी प्रतिरोध शुरू हो गया। पहली बार हुए प्रतिरोध में ही 3 कोबरा पुलिस को मार गिराया गया। उसके बाद और दो बार हुई गोलीबारी में 11 पुलिस घायल हो गए। इसमें दो-तीन गम्भीर रूप से घायल होकर बाद में दो पुलिस मारे गए। पीएलजीए बल दो संतरी चौकियों से दुश्मन को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। और एक संतरी चौकी को कब्जा करने की दुश्मन की कोशिश को तीन बार हमारे लाल योद्धाओं द्वारा विफल कर दिया गया।

कामरेड डेविड ने उस समय मोर्टार से सेल दाग (फायरिंग) रहा था। लेकिन, सेल दुश्मन पर न गिरकर निशाना चुक रहा था। इसलिए दुश्मन को देखने के लिए कवर से थोड़ा सा ऊपर उठा। तभी दुश्मन की एक गोली उनको लगा

और गम्भीर रूप से घायल हो गया। घायल होने के बाद अपना गार्ड को लेकर आरवी जगह को पहुंच गया। लेकिन, उस समय में हमारा डॉक्टर दुश्मन पर फ्लैंक अटैक करने का एक ग्रुप के साथ चला गया था। इससे सही समय पर उन्हें इलाज नहीं कर पाए। दो घंटे के अंदर ही कामरेड डेविड शहीद हो गये।

दुश्मन द्वारा चौथी बार किये गये हमले में एक संतरी चौकी को कब्जा करने में सफल हुआ। लेकिन बाद में कुछ कामरेड फ्लैंक में जाकर पुलिस बलों को भगा कर फिर से संतरी चौकी को अपने कब्जे में ले लिये। गोलीबारी के बीच में ही हमारे लाल योद्धा सभी सामान को कैंप से निकाल दिया। दुश्मन को कैंप पर कदम रखने का मौका नहीं दिया। दूसरी तरफ एक गुरिल्ला बैच द्वारा गांव में एक गली में रह कर हमले को समन्वय करने वाला एसपी के आस-पास तक पहुंच कर हमला किया। इस तरह रात 11:30 बजे तक हमारा प्रतिरोध जारी रहा।

मारे गए पुलिस वाले लाश और घायल पुलिस वालों को ले जाने के लिए तीन हेलीकॉप्टरों को दुश्मन द्वारा भेजा गया। हमारे कामरेड इन तीनों पर फायरिंग किये। इनमें से एक हेलीकॉप्टर को तीन गोली लग गयी। इसी वजह से वह वापस चली गई। फिर वे ही तीन हेलीकॉप्टर दूसरा दिन सुबह 10:00 बजे अधिक संख्या में पुलिस बलों की मदद से आए। तभी लाशों को ले जा सकी।

दूसरा दिन भी दो गुरिल्ला बैच दिनभर दुश्मन का पीछा करते हुए उसे पीछे हटने तक परेशान किया। बाद में आधी रात हमारे लाल योद्धा भी रिट्रीट हो गए।

इस तरह पीएलजीए बल दुश्मन द्वारा बनाई गयी भारी योजना को चकनाचूर कर दिया। इस संघर्ष का महत्ववूर्ण बात यह है कि दुश्मन जिस बुरे मनसूबे से पूरी सुनियोजित योजना के साथ हमला किया, उसके ठीक विपरीत उस पर ही हमारे पीएलजीए द्वारा जवाबी हमले करके उसको नकाम कर देना। बहुत ही साहस के साथ लड़कर आधुनिक हथियार, जीपीएस जैसे आधुनिक तकनीकी उपकरणों और हेलीकॉप्टरों से लैस हजारों दुश्मन के बलों को हराकर पीएलजीए वीर योद्धाओं ने इसे फिर एक बार साबित किया कि दुश्मन जितना भी ताकतवर हो उसे कमजोर कर सकते हैं। यह जीत देशभर में हमारा पीएलजीए को प्रेरणा देती है।

दुश्मन के 'ऑपरेशन सारंडा' को विफल करने वाला सारंडा का जवाबी हमला

सितम्बर 2010 में झारखण्ड के सारंडा जंगल इलाके में दुश्मन द्वारा 'ऑपरेशन सारंडा' चलाने की सूचना एक सप्ताह पहले ही हमारे पीएलजीए को मिली तो दुश्मन के इस अभियान का प्रतिरोध करने के लिए अंदर और बाहर भी तैयारियां कर ली गयी। बाहर की तैयारियों में जनमिलिशिया कामरेडों द्वारा रेल लाइन को जाम किया गया और रोड में गढ्ढे खोदे गए। इस प्रतिरोध कार्यक्रम में कम-से-कम 2000 जनमिलिशिया और 1000 क्रांतिकारी जनता को इकट्ठा किया गया।

इस ऑपरेशन में दुश्मन लगभग 12-13 हजार की संख्या में आने की सूचना पहले ही मिली थी। ऑपरेशन शुरू होने के बाद अंदरूनी इलाके में 5 हजार पुलिस घुस गए। दुश्मन के बल मनोहरपुर को मुख्यालय (हेडक्वार्टर्स) बनाकर पूरे ऑपरेशन का संचालन किया। पुलिस दो दिशाओं से अंदर घुसे। दुश्मन का अंदर घुसना शुरू होते ही बाहर हमारा भी ऑपरेशन चालू हो गया। हमारे कामरेड रोड के संपर्क को काट दिया। रोड पर खम्बे डाल दिये। रेल लाइन को विस्फोट कर उड़ा दिया। रेल इंजन को आग के हवाले कर दिया। माल ले जाने वाले ट्रकों को जला दिये। बाकी रोडों को भी काटने के लिए कोशिश की गयी। जब तक यह प्रतिरोध ऑपरेशन जारी रहा तब तक बाहरर से पुलिस कोई भी अन्दर नहीं घुस पाए।

अन्दरूनी इलाके में 20 से 27 सितम्बर तक दुश्मन पर लगातार हैरान-परेशान करने की कार्रवाइयों को पीएलजीए द्वारा अंजाम दिया गया। दिघा गांव के पास, बरवाडीह के पास, तिरिलपोसी के पास हमारे पीएलजीए लाल योद्धाओं द्वारा दुश्मन के बलों पर तीन एम्बुश किये गये। इसमें 4-5 पुलिस मारे गए। 10-12 घायल हो गए। एक इनसास रायफल और 200 कारतूस जब्त किये गये। पुलिस को भगा दिया गया। एक सप्ताहभर पुलिस वालों को कम-से-कम खाना भी नहीं मिला। पीएलजीए की कार्रवाइयों के जरिए पुलिस वालों को परेशान करने की वजह से घटना होने के तीन दिन तक पुलिस की लाशों को उठाना भी दुश्मन के लिए सम्भव नहीं हो सका। उसके बाद ही कुछ लाशों को लेकर कुछ पुलिस पैदल निकला और कुछ लाशों और घायल पुलिस वालों को हेलीकॉप्टर द्वारा ले जाया गया।

पीएलजीए के इस जवाबी हमले में ऑपरेशन व्यापक इलाके में होने के बावजूद सभी बलों के बीच कंट्रोल-कमान-कोऑर्डिनेशन बेहतर ढंग से अमल हुआ। इस हमले में हमारा कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। दुश्मन बौखलाकर एक महिला, एक पुरुष और एक जनमिलिशिया कामरेड को पकड़कर गोली मार दिया।

बोरहा जवाबी कार्रवाई

18 नवम्बर, 2010 को झारखण्ड के गुमला, लोहरदगा और लातेहार जिला सीमांत इलाके में बोरहा के जंगल में

कैम्प लगाकर कोयल-शंख जोनल कमिटी की बैठक चल रही थी। जिसकी रिपोर्ट हमारे प्लाटून-43 में घुसे एक कोवर्ट अनिल उरांव और गद्दार बने कोयल-शंख जोनल कमिटी के सदस्य राजेन्द्र उरांव के जरिए दुश्मन को दी गयी थी। पक्की सूचना के आधार पर पुलिस पूरे कोयल-शंख जोनल कमिटी सहित वहां पर मौजूद रहे नेतृत्व को घेरकर मारकर ध्वस्त करने की योजना से एक बटालियन से ज्यादा संख्या में बहुत गुप्त रूप से रात को ही उक्त तीन जिलों से आकर जंगल में घुस गई। सुबह हमारे कैम्प इंचार्ज को गुमला, लोहरदगा से आ रही पुलिस के बारे में सूचना मिल गयी थी। लेकिन लातेहार से आ रही पुलिस के बारे में सूचना नहीं मिल पायी। उक्त रिपोर्ट के आधार पर गुमला से आ रही पुलिस पर कुछ ही दूरी पर हमला करने के लिए एक कंपनी की संख्या में एक एम्बुश पार्टी को भेजी गयी। पर हमलावर ग्रुप के पास पुलिस को पहुंचने से पहले ही लातेहार से कोवर्ट अनिल के साथ आई हुई पुलिस कैम्प पर दो तरफ से घेरकर हमला कर दी और अंधाधुंध फायरिंग करने लगी। मोर्टार, रॉकेट लांचर भी मारी। हमारे साथी समन्वय के साथ आत्मरक्षार्थ जवाबी फायर करते हुए सुरक्षित निकल गए।

जब हमारी एम्बुश पार्टी फायरिंग सुनी तो पीछे घुमने के बजाय सामने आ रही पुलिस पर तुरंत हमला करना उचित समझा और शेर के जैसा लपक के आगे बढ़कर हमला कर दिया। दोनों तरफ से आमने-सामने से गोली चलने लगी। इसी बीच कामरेड दिवाकर दुश्मन की गोली लगने से शहीद हो गए। लाश दुश्मन के कब्जे में चली गयी। लेकिन साथी लोग जरा भी पीछे नहीं हटे, बल्कि गुस्से और जिद्दीबाजी के साथ और हमला तेज किये, जो तीन बजे दिन से शाम सात बजे तक जारी रहा। जोरदार हमला होने के बाद पुलिस पीछे हट रही थी और साथी लोग पिछा करने लगे इसी बीच कुछ पुलिस जनता के घर में घुस गयी। तब कामरेडों ने सोचे कि ये लोग अब घिर गए हैं इसलिए अब इनलोगों को सरेंडर करवाया जाय। इसी उद्देश्य से कामरेड कंचन उर्फ करमचंद पांच साथी के साथ फायर एंड मुवमेंट में शेर की तरह दहाड़ते हुए आगे बढ़ रहे थे। इसी बीच उसकी एलएमजी के मैगजीन में कारतुस खत्म हो गया और जब कामरेड कंचन मैगजीन में गोली भरने का प्रयास किया, उसी मौका का फायदा उठाते हुए दुश्मन उन्हें गोली मार दिया। जिससे कामरेड कंचन वहीं पर शहीद हो गए। बाद में कामरेड कंचन का हथियार और शव को निकालकर अपने अनुकूल जगह में ले जाकर कम्युनिस्ट परम्परा के साथ दाह-संस्कार कर दिया। इस तरह दुश्मन की योजना को विफल करते हुए हमने अपनी पूरी शक्ति को बचाने में सफल रहा।

पिरी मकनपुर जवाबी कार्रवाई

झारखण्ड में जब 'ऑपरेशन मानसून' शुरू हुआ, लातेहार जिला के गारू थाना क्षेत्र में पिरी मकनपुर में आक्रामक सुरक्षा तैयारियों के साथ कोयल-शंख की जोनल कमेटी बैठक चल रही थी। जिसकी जानकारी किसी मुखबिर के द्वारा पुलिस-प्रशासन को मिल गया और 31 जुलाई को दुश्मन तीन तरफ से इलाका को घेर लिया। दो तरफ की पुलिस तो कुछ दूर में रूक गई और एक तरफ से कोबरा, सीआरपीएफ, झारखंड जगुआर के तीन कंपनी मीटिंग स्थल की ओर बढ़ने लगी। इसकी सूचना हमें भी मिली और दुश्मन का मुकाबला करने के लिए तुरंत हमारे बलों को वहां (हमारे कैंप में ही) तैनात कर बाकी कामरेड उसी रात को ही नजदीक के पहाड़ों पर चले गए और दुश्मन के आगमन के लिए इंतजार करते रहे। शाम ढलने के कारण दुश्मन रात को नहीं बल्कि अगले दिन 1 अगस्त 2011 को सुबह 8 बजे दुश्मन उस रास्ता जहां बारूदी सुरंगें लगाये गये थे को छोड़कर एक नाला को पकड़कर सीधा कैंप में घुसकर हमला किया। हमारे कामरेडों ने उसका मुहतोड़ जवाब दिया। लड़ाई बहुत ही नजदीक से लगभग 5 घंटे भीषण रूप से चली। हमारे लाल योद्धा 4 या 5 बार पीछे हटते हुए जवाबी हमला को जारी रखा। दुश्मन भी लगातार मोर्टार सेल दागता रहा। वह इस ऑपरेशन में सिर्फ लातेहार में ही लगभग 5 हजार पुलिस बलों को तैनात किया था। इसमें लगभग 350 से ज्यादा कोबरा, सीआरपीएफ, जगुआर और जेएपी के जवान शामिल थे।

आखिर हमारे योद्धा ने दुश्मन को आतंकित करने के लिए पहले माइनों को विस्फोट किया, उसके बाद, ऐसा आदेश देते हुए दुश्मन को दिगभ्रमित कर दिया कि 'प्लाटून नंबर 87 दाएं से, प्लाटून नंबर 43 बाएं से घेराव करो!' इससे डरपोक दुश्मन के बल अचानक एक जगह में जमा होकर, जान बचाने के लिए भागना शुरू किया। इस तरह भागने वाले बलों पर 4-5 कि.मी. तक हमारे योद्धाओं द्वारा भगा दिया गया। इस लड़ाई में एक तरफ हमारे कामरेड बहुत ही साहस और वीरतापूर्ण ढंग से लड़ते हुए, सही समझ और कार्यनीतियों को दर्शाया और सी3 को अमल किया। इस लड़ाई में गढ़वा के एक एलजीएस कमांडर कामरेड राजकुमार उर्फ नरेश सिंह खरवार को हमने सदा के लिए खो दिया।

झुमरा पहाड़ की जवाबी कार्रवाई

झारखण्ड के बोकारो जिला के गोमियां महुआटांड़ थाना अंतर्गत झुमरा पहाड़ में चलाए जाने वाला हमारे सैनिक प्रशिक्षण कैम्प की सूचना दुश्मन को मिल गया था। हमारे कैम्प को ध्वस्त करने हेतु, बोकारो जिला मुख्यालय से 95 वाहन में पुलिस सवार होकर करीब तीन हजार की संख्या में पहुंची और झुमारा पहाड़ के चारों ओर 9 जगहों में कैम्प डाल दी। ऑपरेशन 'शिखर' नाम से हमारे कैम्प पर हमला करने के लिए आने की सूचना क्रांतिकारी जनता द्वारा हमें

मिल गई थी। तुरंत कमांडर के आदेश अनुसार सभी साथी अपने-अपने आर्क-कभर में जाकर सभी रास्तों में माइन लगा दिये। माइन विस्फोट करने और रायफल फायरिंग से पुलिस में काफी अफरा-तफरी मच गयी। यह संघर्ष लगातार 27 सितम्बर से शुरू कर 30 सितम्बर, सूबीह 7 बजे 2011 तक चलता रहा। इस संघर्ष में कोबारा के तीन पुलिस मारे गए और 8 गम्भीर रूप से घायल हो गए। इस तरह जबरदस्त ढंग से दुश्मन का मुकाबला करते हुए मुंहतोड़ जवाब दिया गया। इसके बाद दुश्मन ने कायराना तरीके से अमन गांव के ग्रामीण अखिलेश्वर महतो की हत्या कर दी, गांव में घुसकर तोड़फोड़ और लूटपाट की खाने की सामान में मिट्टी तेल मिलाया और मुर्गा-बकरा खा लिया और घरों का जला दिया। इसके खिलाफ जनता द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया।

बान्दु-पण्डुवा जवाबी कार्रवाई

21 दिसम्बर, 2011 को झारखण्ड के पश्चिम सिंहभूम जिलान्तर्गत गोयलकेरा थाना क्षेत्र के बान्दु-पण्डुवा जंगल में हमारी दक्षिणी छोटानागपुर जोनल कमेटी के द्वितीय प्लेनम कैम्प पर योजनाबद्ध ढंग से दुश्मन द्वारा किए गए हमले का मुहतोड़ जवाब दिया गया। पीएलजीए एक गुरिल्ला बटालियन की संख्या में थी। उक्त कैम्प पर हमला करने के लिए दो तरफ से दुश्मन की आने की सूचना जनता के द्वारा मिल गई थी। कमान की तरफ से तुरंत इसकी सूचना सभी साथियों को पहुंचायी गयी और अपने-अपने आर्क व कवर में जाने का निर्देश दिया गया। ठीक वैसे ही सभी साथी आर्क व कवर में जाकर एम्बुश के लिए बैठ गये। दोपहर 12:45 बजे सीआरपीएफ के कोबरा बटालियन के तीन कम्पनी जैसे ही कैम्प में घुसी, हमारे योद्धा उस पर टूट पड़ा और पहली दफा के फायरिंग में ही कई कोबरा मारे गए, बाकी पुलिस को पीएलजीए द्वारा चारों तरफ से घेर लिया गया। तब पुलिस किंकर्तव्य विमूढ़ होकर ऊपर के अधिकारियों से अतिरिक्त मदद की मांग की। शाम 6:45 बजे तक दोनों के बीच जबरदस्त संघर्ष हुआ। इस दरम्यान कोबरा के 11 पुलिस मारे गए और तीन गम्भीर रूप से घायल हो गए। बाकी पुलिस जंगल में तितर-बितर होकर वहीं रात भर लेटी रही, भूख-प्यास, ठंढ से एक तो ठूकूर-ठूकूर, दूसरी तरफ पीएलजीए के डर के मारे रातभर पुलिस कंपती रही। दूसरे दिन दोपहर 12 बजे जब तीन हेलीकॉप्टर आई तब लाश और घायल वालों को उठा ले गया। इस तरह दुश्मन के हमले को पीएलजीए ने करारा चोट देकर उनके अभियान को नकाम कर उनके बुरे मनसूबों पर पानी फेर दिया। फ्लैंक में साथियों को सही समय पर भेजने, सी4 को सही तरीके से लागू करना इस संघर्ष का अच्छा-खासा अनुभव है।

'ऑपरेशन आक्टोपस ब्रेक'

2012 में झारखण्ड के पलामू जिले में दुश्मन द्वारा चलाया गया 'ऑपरेशन आक्टोपस' को प्रतिरोध करने के लिए हमारी पार्टी और पीएलजीए बलों द्वारा 'ऑपरेशन आक्टोपस ब्रेक' अभियान को शुरू किया गया। इसके दौरान पहली मुठभेड़ 5 अप्रैल को करमडीह गांव के पास हुई।

करमडीह मुठभेड़- इस ऑपरेशन में शामिल बीमार जवानों को ले जाने के लिए, खाने, स्वास्थ्य सामग्री पहुंचाने के लिए दुश्मन का एक हेलीकॉप्टर जब नीचे उतर रहा था, तब हमारे लाल योद्धाओं ने पहले योजनाबद्ध तरीके से उस हेलीकॉप्टर पर निशाना साध कर गोलीबारी की। गोली लगने की वजह से पहले वह थोड़ा अकबाका गई। बाद में किसी तरह सम्भालकर सिर्फ सामान को ही नीचे उतार कर, बीमार जवानों को छोड़कर चली गयी। उसे ठीक करने के लिए कोलकता भेजना पड़ा।

हेलीकॉप्टर वापस जाने के बाद दुश्मन के सशस्त्र बल और पीएलजीए के बीच मुठभेड़ हुई। इसमें एक कोबरा जवान मारा गया और दो जवान घायल हो गए। इस संघर्ष में हमारे पीएलजीए की तरफ से एक कंपनी और दुश्मन की तरफ से कई कंपनी भिड़ गई। सुबह 10 बजे यह लड़ाई शुरू होते ही दुश्मन के बलों की भागने की पारी हो गई। एक तरफ हमारे योद्धा लड़ाई लड़ रहे थे, नजदीक के गांव के लोग हेलीकॉप्टर से गिराए गए खाने और स्वास्थ्य सामग्री को जब्त कर रहे थे। दुश्मन के भागने के बाद जनता उसे पीएलजीए को सौंप दी। लेकिन दुश्मन द्वारा 6 नक्सलवादियों को मार गिराने का दावा मीडिया में दुष्प्रचारित-प्रसारित किया गया। सच्चाई यह है कि इस लड़ाई में हमारे किसी भी कामरेडों को एक खरोंच भी नहीं लगा।

हमारे लाल योद्धाओं ने चलायमान युद्धकला का प्रयोग करते हुए सापेक्षिक तौर पर छोटा बैच अधिक संख्या वाले दुश्मन का पीछा करते हुए नजदीक जाकर सरप्राइज का इस्तेमाल कर बिजली की गति से हमला किया। सूझबूझ, साहस और धीरता को दर्शाया। सी4 का सही ढंग से इस्तेमाल हुआ। अतएव छोटी शक्ति बड़ी शक्ति को हराने में सफल हुई। लड़ाई में जीत हासिल की।

चेमो-सानैया मुठभेड़- दुश्मन के साथ दूसरी मुठभेड़ 9 अप्रैल, 2012 को गढ़वा जिला चेमो-सानैया गांव (अमर शहीद नीलाम्बर-पीताम्बर के गांव) के पास हुई। पीएलजीए के लाल योद्धाओं द्वारा वीरतापूर्ण ढंग से किए गए हमले में कोबरा, सीआरपीएफ और जगुआर के संयुक्त दल के एक अधिकारी सहित 8 पुलिस घायल हो गए। पुलिस बल

सानैया गांव के जनता पर हमला करने के लिए नजदीक पहाड़ों की तरफ जाने की सूचना पीएलजीए को मिली। तुरंत जनता को बचाने के लिए हमारे लाल योद्धा खाना-पीना भी छोड़कर सानैया गांव की तरफ दौड़ पड़े। सुबह लगभग 10 बजे उस गांव के आसपास पहुंच गए। सरकारी बल सुबह 8:30 बजे से ही रॉकेट और मोर्टार दागते हुए गांव की तरफ आ रहे थे। लेकिन इसे थोड़ा सा भी परवाह न करते हुए सुबह लगभग 11:15 बजे पीएलजीए द्वारा सरकारी बलों पर हमला किया गया। दोनों के बीच शाम 4 बजे तक गोलीबारी जारी रही। सैकड़ों रॉकेट और मोर्टार पुलिस द्वारा दागने के बावजूद उसे वीरतापूर्वक प्रतिरोध करते हुए पीएलजीए के कंपनी के प्लाटून कमांडर कामरेड रामपुकार कोरवा उर्फ शेखर (जोनल स्तर) शहीद हो गये। इसके बावजूद हजारों की संख्या में भारी हथियारों से लैस सरकारी बलों को मार भगाने में पीएलजीए कामयाब हुई। घायल पुलिस वालों को चिकित्सा सुविधा के लिए अपने मुख्यालय से जितने बार पूछने से भी जवाब न मिलने की वजह से ऐसा रोना रोया कि 'अगर दवाई मुहैया नहीं कर सकते हैं तो हमें जहर दो'। गांव वाले ही इस बात को सुनी। इस सच्चाई को छुपाने के लिए आईजी दीपक शर्मा ने अपने बलों में उत्साह बढ़ाने के लिए पीएलजीए की तरफ हुए नुकसान को बढ़ाचढ़ा कर प्रचारित किया। लेकिन इस लड़ाई में पीएलजीए की एक ही इकाई भाग ली, जबकि पुलिस वालों की संख्या 700 थी। इस तरह कामरेड नीलाम्बर और पीताम्बर की ऐतिहासिक विरासत को उन्हीं के गांव में ही हमारे पीएलजीए बलों ने ऊंचा उठाए रखा।

झारखण्ड के पलामू जिले में 8 मई, 2012 को बूढ़ा पहाड़ पर हमारे पीएलजीए कंपनी मुख्यालय (हेडक्वार्टर्स) के डेरा पर हमला करने के लिए जब दुश्मन आ रहा था, वहां से 3-4 किमी. की दूरी में पहले ही घात लगाकर बैठे हमारी स्पेशल अफेन्सिव (आक्रामक) टीम द्वारा उस पर हमला किया गया। सुबह 9 बजे यह लड़ाई शुरू हुई। लड़ाई रूक-रूक कर शाम तक चली थी। दुश्मन रायफलों से ही नहीं बल्कि रॉकेट, ग्रेनेड, मोर्टार सेल अंधाधूंध दागता रहा। शाम ढलते ही दुश्मन वहां से भाग खड़े हुआ और नजदीक में रहे करमडीह गांव के स्कूल में रहकर रात 12:30 बजे तक फायरिंग के साथ 125 से ज्यादा ग्रेनेड, रॉकेट और पारा बम बरसाता रहा।

बिहार के औरंगाबाद जिला के मदनपुर थानान्तर्गत बनरवा जंगल में 10 अगस्त, 2012 को सुबह 5:45 बजे दुश्मन का हमला शुरू हो गया था। हमारी युद्ध सामग्री तैयार करने के लिए लगाया गया 'बम चक्र परियोजना' कैंप पर यह हमला हुआ था। लगभग 3 घंटे तक लड़ाई हुई। इसमें एक कोबरा पुलिस मारा गया और तीन जवान घायल हो गए। हमारा कोई भी नुकसान नहीं हुआ था।

हमारे पीएलजीए बल बिहार रीजियन के कोयल-शंख जोन में पांकी (पलामू जिला) इलाके में अंबाही घाटी के पास तेलीपति जंगल में दुश्मन को भुलावा देकर फंसाने की योजना के तहत बारूदी सुरंग बिछाया गया था। लेकिन माइन बिछाने की सूचना दुश्मन तक पहुंच गई थी। दुश्मन उसे ढूंढ़ निकालने के लिए 3 अगस्त, 2012 को कई दिशाओं से माइनप्रूफ गाड़ियों में आकर सुबह 10 बजे हमला बोल दिया और माइन निकालना शुरू किया। एक जगह से तीन लैंड माइन और 4 क्लेमोर माइन निकाला। इसी दौरान झाड़ियों में छुपे हमारे लाल योद्धाओं ने दुश्मन पर अचानक हमला बोल दिया। लड़ाई शाम 3 बजे तक चली। पुलिस माइनप्रूफ गाड़ियों में भाग गए। इस लड़ाई में सीआरपीएफ के एक हवलदार और एक जवान घायल हो गए। हमारी तरफ का कोई नुकसान नहीं हुआ। पुलिस भागने के तुरंत बाद हमारे कामरेडों ने फिर सभी माइन को अपने कब्जे में करके सुरक्षित रिट्रीट हो गए।

युद्ध सामग्री तैयार करने के लिए बिहार रीजियन के मध्य जोन में सितम्बर 2012 में 'अमर शहीद कामरेड नितान्त, सुशील और शेखर बम चक्र परियोजना' कैंप लगाया गया था। औरंगाबाद जिला के मदनपुर थाना क्षेत्र में गया जिला के सीमावर्ती क्षेत्र में अवस्थित अवस्पित पहाड़ों पर इसे लगाया गया था। 8 सितम्बर को इस कैंप को चारों ओर से घेराव करके दुश्मन द्वारा हमला किया गया। भीषण लड़ाई हुई। यह लड़ाई सुबह 10 बजे से शुरू कर शाम तक बहुत नजदीकी आमने-सामने की लड़ाई हुई। इसमें दो कोबरा जवान मारे गए और कम-से-कम 6-7 कोबरा जवान घायल हो गए।

2013 में बिहार रीजियन के मध्य जोन में तलहाटी गांव के पास 22 फरवरी को पुलिस और पीएलजीए के बीच 24 घंटों तक एक मुठभेड़ हुई। इससे बाहर निकलने के लिए शाम 8 बजे आमस पुलिस थाना पर पीएलजीए के और एक बैच द्वारा हमला किया गया।

सिविल-लुरू केराकोना जंगल में मुठभेड़

झारखण्ड में गुमला जिला के चैनुपर थानान्तर्गत सिविल-लुरू गांव के केराकोना जंगल में अर्द्धसैन्य बल के तीन कंपनी को 30 घंटे तक अपने कब्जे में (उलझाये) रखकर पीएलजीए के योद्धाओं ने दुश्मन के 'घेरा डालो विनाश करो' की बड़ी योजना को विफल कर दिया। 13 मार्च, 2013 को डेढ़ बजे दिन में पीएलजीए की एक छोटी टूकड़ी भारी संख्या में आगे बढ़ रहे अत्याधुनिक हथियारों व उपकरणों से लैस अर्द्धसैन्य बलों को रोकने के लिए जा रही थी, जिस पर सीआरपीएफ, कोबरा, जगुआर आदि सैन्य बलों ने मोर्टार, रॉकेट, ग्रेनेड जैसे भारी हथियारों से हमला कर दिया।

जनमुक्ति छापामार बलों की उस छोटी टूकड़ी ने तुरत मोर्चा संभालते हुए, झारखण्ड जगुआर के एक बड़े हिस्से को अपने घेरे में लेकर बाकी बलों को पीछे खदेड़ दिया। यह लड़ाई रात 10 बजे तक चली। उसके बाद आतंकित होकर रातभर सरकारी बलों ने फायरिंग करते रहा व मोर्टार का गोला दागते रहा। पीएलजीए के साथ इस लड़ाई में झारखण्ड जगुआर का एक जवान मारा गया और दर्जनों घायल हो गये। दो दिन चला इस संघर्ष में जनमुक्ति छापामार सेना का एक वीर योद्धा लड़ते हुए शहीद हो गए।

पीएलजीए के घेरे में फंसे पुलिस को निकालने के लिए 14 मार्च को कोबरा, सीआरपीएफ के एक हजार से अधिक बलों को लगाया गया था, जिसका नेतृत्व पुलिस के आठ बड़े अधिकारी कर रहे थे। इनकी मदद में हजारों पुलिस को आस-पास में लगाया गया था। इस हमले का संचालन सम्पूर्ण रूप से राज्य के पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार कर रहा था। इसके बावजूद पीएलजीए की इस टूकड़ी ने इन बलों के ऊपर भी हमला कर इनका हौसला को पस्त कर दिया। हमारे पीएलजीए ने न सिर्फ दुश्मन के बड़े हिस्से को 30 घंटे तक अपने घेरे में उलझाये रखा बल्कि भारी संख्या में आए सैन्य बलों को भागने पर मजबूर कर दिया। जब वे हमारे छापामार टूकड़ी को नष्ट करने में असफल रहे तब डीजीपी अपने बलों का गिरते मनोबल को बढ़ाने के लिए झूठ का सहारा लेकर यह दुष्प्रचार कर रहा है कि इस अभियान में 10 माओवादियों को मार गिराया गया और 25-30 को घायल किया गया है।

लकड़मंदा मुठभेड़

झारखण्ड में 27 मार्च, 2013 को चतरा जिला के कुंदा थानान्तर्गत लकड़मंदा गांव में सशस्त्र खुफिया गिरोह टीपीसी और कोबरा एवं सीआरपीएफ पुलिस मिलकर 1500 की संख्या में हमारे कामरेडों को पहले घेराव किया, उसके बाद सामने रखे टीपीसी गुण्डों के साथ शाम को 3 बजे मुठभेड़ शुरू हुई। 15-20 मिनट के बाद हमारे कामरेडों को समझ में आया कि टीपीसी और पुलिस मिलकर हमला कर रहा है। उस घेराव जाल से किसी भी तरफ से हो, निकलने के लिए कोशिश करने पर उस तरफ से दुश्मन द्वारा रैपिड फायरिंग किया जा रहा था। इसके बाद हमारे कमारेडों ने सोचा कि थोड़ा अंधेरा होने के बाद बाहर निकल सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जब उनलोगों ने निकलने के लिए कोशिश की, तो पहले कामरेड धनंजय शहीद हो गये। उसके बाद कामरेड प्रशान्त शहीद हो गये। बाद में एक सेक्शन स्तर में एक ब्रेकिंग फोर्स गठन कर निकलने के क्रम में 4 कामरेड घायल हो गए। घायल साथी को हमारे कामरेड वहीं पर एक तरफ चिकित्सा कर रहे थे और दूसरी तरफ टीपीसी और पुलिस के साथ लड़ाई लड़ रहे थे। इस तरह चार कामरेड दुश्मन के घेरे से निकलने में कामयाब हुए। बाकी कामरेड वहीं पर फंस गए। लड़ने के दौरान उनके पास गोली पूरा खत्म हो गयी थी। इसी वजह से अन्त में उन्हें आत्मसमर्पण करना पड़ा। इस तरह सरेंडर होने वालों में नेतृत्वकारी और घायल साथियों में से 10 को चुनकर बेहद निर्मम तरीके से दुश्मन द्वारा हत्या की गयी। इनमें कामरेड प्रशांत, वीरू, जयकुमार, प्रफ्फुल, अजय, जीतेन्द्र, धनंजय, तापस और अलबर्ट शामिल हैं। बाकी कामरेडों को छोड़ दिया गया। उनमें से रोड पर जाने वालों को फिर से पुलिस गिरफ्तार कर ली। जिनलोग जंगल रास्ते से निकले थे, सिर्फ वे ही सुरक्षित निकल पाए।

बिहार के गया जिला के डुमरिया थानान्तर्गत नवादा गांव के पास 25 मार्च, 2013 को शाम 5 बजे से दो घंटे तक मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ के बाद पुलिस भागकर नवादा स्कूल में शरण ली हुई थी। जबतक अतिरिक्त बल नहीं आया तबतक गोलीबारी करती रही। दूसरे दिन भारी संख्या में पुलिस आने के बाद ही उन्हें ले जा सकी।

बिहार के गया जिला के डुमरिया थाना क्षेत्र में 13 जून, 2013 को महजरी गांव के पास पीएलजीए और पुलिस के बीच मुठभेड़ हुई। इसमें दो पुलिस घायल हो गई। इससे पुलिस पीछे हटने को मजबूर हो गई।

भोखाखाड़ राजगढ़ पहाड़ जवाबी कार्रवाई

पीएलजीए की एक टूकड़ी झारखण्ड के लातेहार जिला के बरवाडीह थाना अंतर्गत भोखाखाड़ राजगढ़ पहाड़ में पार्टी के विभिन्न कामों और जोनल कमेटी की मिटिंग के लिए एक अस्थाई कैम्प कर रूकी हुई थी। जिसकी जानकारी पार्टी के अंदर घुसे कोवर्ट के माध्यम से दुश्मन को हो गया था। दुश्मन को यह भी जानकारी मिल गया कि पीएलजीए के लोग भारी संख्या में हैं और वे अपने कैम्प का आक्रामक सुरक्षा व्यवस्था के लिए भारी मात्रा में बम लगाये हुए हैं। इसलिए दुश्मन नजदीक न आकर आठ किलोमीटर दूर कुमण्डी रेलवे स्टेशन के पास से ही दूर तक मार करने वाला रॉकेट लांचर का इस्तेमाल करते हुए 26 जून, 2013 को अर्धरात्रि एक बजे से तीन बजे तक पीएलीजए के कैम्प को सटीक लक्ष्य कर रॉकेट लांचर से 81 एमएम का एक सौ गोला गिराया। दूसरे दिन सुबह कैम्प के नजदीक आकर हमला किया जिसमें लगातार दो दिन तक भीषण मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में पीएलजीए का एक योद्धा गंभीर रूप से जख्मी हो गया था। दुश्मन को तो नुकसान नहीं हुआ। लेकिन लगातार दो दिन तक डटकर मुकाबला करने के चलते दुश्मन आगे नहीं बढ़ पाया और उसका बुरा इरादा सफल नहीं हुआ जिससे वह वापस जाने पर मुजबूर हुआ। पीएलजीए भी उस कैम्प को छोड़कर वहां से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर जाकर रूकी हुई थी। उसी बीच पीएलजीए के

बीच रह रहे दुश्मन का कोवर्ट वहां से भाग कर दुश्मन के कैम्प में जाकर दूसरी जगह के बारे में भी सटीक जानकारी दे दिया। पुनः दुश्मन 29 जून, 2013 को सुबह 8 बजे से 10 बजे तक दूर से ही रॉकेट लांचर से भारी गोलाबारी किया। उसके दो घंटे बाद दुश्मन नजदीक आकर हमला किया। दूर से ही भारी गोलाबारी करना और फिर बाद में नजदीक आकर हमला करने की दुश्मन की इस योजना का उद्देश्य था अपना नुकसान किये बिना पीएलजीए बलों का को भारी नुकसान पहुंचाना या पूरी तरह से कुचल देना। लेकिन वह पीएलजीए की जवाबी आक्रामकता से अपने बुरे मनसूबे में सफल नहीं हो सका। बार-बार उसे वापस जाना पड़ा। इसके बाद लगातार 16 दिनों तक राजगढ़ पहाड़, मुड़हर, भोखाखाड़, रानीदह सहित पूरे जंगल-पहाड़ को केन्द्रित कर चारों तरफ कई गांवों में अस्थाई कैम्प कर हजारों की संख्या में कोबरा, झारखण्ड जगुआर, आईआरबी, सीआरपीएफ एवं राज्य पुलिस तत्कालीन डीजीपी राजकुमार के प्रत्यक्ष नेतृत्व में घेराबंदी कर पीएलजीए की सप्लाई लाइन को काटते हुए खुफिया गिरोह जेजेएमपी, एसपीओ खुफिया तंत्र, टोही विमान ड्रोन की मदद से बड़े पैमाने पर दमन अभियान चलाया। दुश्मन के इस पूरे 16 दिन के अभियान में पीएलजीए के ऊपर लक्ष्य कर लगभग पांच सौ गोला गिराया और मीडिया अखबारों के अनुसार इसका खर्च 10 करोड़ रुपए से भी ज्यादा हुआ था।

कुमाड़ी बोरहा जवाबी कार्रवाई

13 नवम्बर 2014 को झारखण्ड के गुमला जिला के विशुनपुर थानान्तर्गत कुमाड़ी बोरहा जंगल में पुलिस और राज्य पोषित सशस्त्र खुफिया गिरोह मिलकर पीएलजीए के एक अस्थाई कैम्प में हमला करने आये दुश्मन के साथ मुठभेड़ में एक कोबरा को घायल किया गया। गद्दार माठू लोहार और सुकर उरांव सहित पांच लोग पांच हथियार लेकर उसी कैम्प से पार्टी से गद्दारी कर राज्य पोषित सशस्त्र खुफिया गिरोह जेजेएमपी गिरोह में भाग कर शामिल हुए थे और उसी कैम्प में दुश्मन को साथ में लाकर हमला करवाया था। दुश्मन का यह हमला काफी घातक सिद्ध हो सकता था। क्योंकि गद्दार माठू-सुकरा और अन्य तीन लोग उसी कैम्प में रह कर भागे थे। इस लिहाज से उस कैम्प के बारे में पूरा जानता था। उसके हिसाब से दुश्मन सीधे हेडक्वार्टर्स में हमला करने की नियत से रात को ही गुप्त तरीके से पीएलीजीए के नजदीक आ चुका था। सुबह होते ही सभी संतरी पोस्ट को काटकर जिधर से संतरी नहीं थी उधर से ही सीधे कैम्प के हेडक्वार्टर्स के पास जा रहा था। लेकिन उसी समय पीएलजीए के तीन योद्धा सौच के लिए जा रहे थे तभी दुश्मन पर नजर पड़ते ही अपनी पहलकदमी के साथ हमला कर दिया और पहला चक्र के फायरिंग में ही एक कोबरा घायल हो जाने के बाद दुश्मन की पहलकदमी बधित हो जाने पर दुश्मन आगे नहीं पढ़ पाया और वहीं से अपना घायल जवान को लेकर उन्हें भागना पड़ा। लड़ाई शाम 6 बजे चलता रहा।

चांपी पाट-बांस पहाड़ के दुश्मन के एम्बुश

19-20 फरवरी, 2015 को मध्य-रात्रि झारखण्ड के गुमला जिला के गुरदरी (डुमरपाट) थाना क्षेत्र अंतर्गत चांपी पाट-बांस पहाड़ के पास पुलिस और जेजेएमपी की मिलिभगत से पीएलजीए के ऊपर घात लगाकर हमला किया गया, जिसमें 60-70 पीस माइन, एक लैपटॉप सहित अन्य वस्तु छूट जाने के कारण दुश्मन का हाथ लग गया। दुश्मन के खिलाफ इस जवाबी हमला में एक जेजेएमपी का कमाण्डर छोटू खेरवार सहित दो सदस्य को मार गिराया गया। पीएलजीए के ऊपर दुश्मन का यह हमला काफी घातक था। पीएलजीए को भारी नुकसान हो सकता था। क्योंकि दुश्मन पीएलजीए की गतिविधि के बारे में दस-पन्द्रह दिन पहले से ही जानता था। दुश्मन की इस हरकत को पीएलजीए के योद्धा भी जानते थे। दुश्मन की दुष्ट चाल को गहराई से नहीं समझ पाने और डेट में पहुंचने के लिए विलम्ब होने की बध्यता के चलते आगे बढ़ने की ही योजना बनाकर पीएलजीए की सर्च टीम खतरनाक जगह, जहां दुश्मन की घात लगाने की सम्भावना थी को पार करने के लिए जांच की गई। लेकिन अगल-बगल जंगल में घुस कर कुछ दूर तक जांच नहीं की थी। सम्भवतः हमारे सर्च टीम को भी दुश्मन देख लिया था। लेकिन उस टीम को किसी प्रकार का छेड़-छाड़ नहीं किया। जांच और रिपोर्ट का काम पूरा होने के बाद, पूरा फारमेशन पक्की रोड को पार करते हुए कच्चा रास्ता में जा रहा था तभी पीएलजीए के पूरे फारमेशन को दुश्मन अपने चपेट में लेकर ताबड़तोड़ फायरिंग करने लगा। कुछ देर के लिए तो पीएलजीए के अन्दर काफी अफरा-तफरी मच गई थी। लेकिन कुछ कमाण्डरों व योद्धओं द्वारा कवर लेकर दुश्मन को मुहतोड़ जवाबी फायरिंग देते हुए जेजेएमपी के दो गुण्डों को मार गिराया गया और दुश्मन की पहलीकदमी को बाधित करते हुए पूरे फारमेशन सुरक्षित रिट्रीट हो गया। दूसरे दिन पुनः पीछा करते हुए, जिस जगह पीएलजीए रूकी हुई थी उसकी चारों तरफ कुछ दूर-दूर से हजारों की संख्या में दुश्मन लगातार पांच दिनों तक घेर कर रखा। दुश्मन की उस घेरेबंदी से भी सुरक्षित निकलने में पीएलजीए काबयाब हुई।

सनाई टांगर घाघरा जवाबी कार्रवाई

27 फरवरी, 2015 को लगातार पीछा कर रहे दुश्मन के ऊपर ग्राम सनाई टांगर घाघरा (झारखण्ड के गुमला जिला) के पास पीएलजीए द्वारा हमला किया गया, जिसमें एक कोबरा मारा गया और एक को घायल किया गया। उसके बाद

20 से 30 हजार की संख्या में (अंदर-बाहर) सीआरपीएफ, कोबरा, जगुआर, आईआरबी व जिला पुलिस और इनके सहयोगी गिरोह जेजेएमपी द्वारा लगातार 36 दिनों तक पीएलजीए का पीछा करते हुए घात लगाने एवं घेर कर कुचल देने के बुरे मनसूबे से भारी दमन अभियान चलाया। इसी बीच 9 मार्च, 2015 को गुमला जिला के सदर थानान्तर्गत जोरी गांव के पास दुश्मन अपना षड्यंत्रात्मक जाल में बूरी तरह पीएलजीए को फंसाया था। पर किसी कारणवश दुश्मन फायरिंग नहीं किया और पीएलजीए के नेतृत्व व कमाण्डरों की सूझबूझ के कारण घातक जाल से वह बच निकली। 13 मार्च, 2015 को उक्त जिला के चैनपुर थाना अंतर्गत सरगांव जंगल में मानव खुफिया तंत्र एवं टोही विमान (ड्रोन) व हेलिकॉप्टर से टोह लेते हुए दुश्मन ने पीएलजीए के अस्थाई कैम्प को रात से ही घेरे रखा और सुबह को हमला किया। जिससे भीषण मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में पीएलजीए का एक योद्धा व पीएल के सबजोनल स्तर के सदस्य और सेक्शन कमाण्डर का. भूपेश उर्फ संतोष दुश्मन से लड़ते हुए शहीद हो गये। इसी धारावाहिकता में दुश्मन लगातार पीछा कर ही रहा था कि 26 मार्च, 2015 को लातेहार जिला के नेतरहाट थानान्तर्गत आधे गांव में पीछा कर रहे दुश्मन के साथ मुठभेड़ हुई। 36 दिन का दुश्मन का इस भारी दमन अभियान के दौरान गुमला जिला के चैनपुर, विशुनपुर, गुरवरी, घघरा आदि थानान्तर्गत जंगल क्षेत्र के ग्रामीण इलाका को पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया था। इस बार भारी सफलता मिलेगी दुश्मन का खेमा ऐसी उम्मीद जताया था, उस पर पानी फेर दिया गया।

दुबचाही खैरा के दुश्मन के एम्बुश

28 मार्च, 2015 को झारखण्ड के लातेहार जिला के सदर थाना अंतर्गत दुबचाही खैरा गांव के पास जंगल में दुश्मन ने हमारे पीएलजीए के एक दस्ता पर घात लगाकर हमला किया। जिसमें पीएलजीए के दो कामरेड का. तूफान उर्फ साकेंद्र यादव एसी सदस्य और का. कमलेश उर्फ बाल किशोर उरांव शहीद हुए एवं एक महिला कामरेड घायल हुई। दुश्मन का यह हमला काफी घातक था। क्योंकि उत्तरी लातेहार प्वांइट से एक पीएल फारमेशन की संख्या में पीएलजीए दक्षिणी लातेहार प्वांइट होते हुए लोहरदगा प्वांइट तक जाने के लिए निकली। जिसमें लगभग 8-9 घंटा लम्बा रास्ता चलना और उसी बीच कई खतरनाक जगहों को पार करते हुए जाना था। कोवर्ट रोशन उरांव (पार्टी में सबजोनल स्तर) दुश्मन को फारमेशन की गतिविधि के बारे में पक्की सूचना दे दिया था। इसी बीच दुश्मन ने इस दस्ते पर हमला करने के लिए अपना सहयोगी सशस्त्र खुफिया गिरोह जेजेएमपी के गुण्डों के साथ कईएक बैच में घात लगाकर बैठ गया। तभी अर्धरात्रि 1:30 बजे पूरे फारमेशन दुश्मन के जाल में फंस गया। लेकिन ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी पीएलजीए के योद्धओं ने दुश्मन का ताबडतोड़ फायरिंग का जवाबी फायरिंग से ही घातक जाल से अधिकतर कामरेड निकल पाये। अन्य दो बहादूर का. तूफान और का. कमलेश अपनी जान देकर बाकी कामरेडों को निकालने की जगह बनाया और खुद दुश्मन से लड़ते हुए अपने अमूल्य प्राणों की आहुति दिये।

मई 2015 में झारखण्ड के खुंटी जिला के झरझरा गांव के पास किया गया जवाबी हमला हमारी पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व का सफाया करने की बुरी मंशा से तैनात किए गए दुश्मन के पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों पर हमारे पीएलजीए बलों द्वारा क्रांतिकारी जनता की मदद से की गयी एक साहसिक कार्रवाई थी। इसमें दुश्मन अपनी विफलता को छुपाने के लिए इस कार्रवाई में एक ही पुलिस घायल होने की पुष्टि किया। लेकिन सच्चाई यह है कि इस वीरतापूर्ण जवाबी हमले में कम-से-कम तीन कोबरा कमांडो मारे गए और दो घायल हुए। हमारे पीएलजीए के बल हमारे नेतृत्व के साथ बिना कोई नुकसान का सुरक्षित रिट्रीट होना दुश्मन को आचर्यचकित कर दिया।

बूढ़ा पहाड़ जवाबी कार्रवाई

4 सितंबर, 2015 को झारखण्ड के लातेहार जिला के गारू थानान्तर्गत झारखण्ड-छत्तीसगढ़ सीमा पर बूढ़ा पहाड़ के जंगल में पीएलजीए के अस्थाई कैम्प की सूचना पाकर दुश्मन गुप्त रूप से रात में ही काफी दूर से घेरते हुए हमारे कैम्प के नजदीक आकर सट गया था और सुबह काफी नजदीक से हमला किया। पीएलजीए के जवाबी हमला में दो कोबरा गंभीर रूप से घायल हुए जिसे टांग कर ले गया। जनता की रिपोर्ट के अनुसार बाद में दोनों घायल जवान मर गया। पीएलजीए के योद्धा द्वारा दुश्मन से कारगर ढंग से कड़ा संघर्ष करते हुए ही सभी सुरक्षित निकल पाये थे।

उत्तर बिहार-उत्तर प्रदेश-उत्तराखण्ड स्पेशल एरिया के अन्तर्गत हुई मुठभेड़

उत्तर बिहार-उत्तर प्रदेश-उत्तराखण्ड (3यू) स्पेशल एरिया में दुश्मन और पीएलजीए के बीच कई मुठभेड़ें हुई हैं। इसमें उल्लेखनीय है दिसम्बर 2005 में 3यू के सैक सचिव कामरेड मैमुद्दीन (रवि) शहीद हुए बेतोना (पूर्वी चंपारण), 2007 में कदमा (शिवहर), 2008 में अमडामा (मुजफ्फरपुर), 2009 में भोजपट्टी (मुजफ्फरपुर), मार्च 2011 में 6 कामरेड शहीद हुए धरमाहा (पूर्वी चंपारण) मुठभेड़। इसमें से बेतोना और धरमाहा मुठभेड़ में हमें नुकसान झेलना पड़ा। कदमा, अमढामा, तरावा और भोजपट्टी मुठभेड़ों में हम दुश्मन को नुकसान पहुंचाए।

कदमा मुठभेड़

दिसम्बर 2007 में उत्तर बिहार के शिवहर जिले लक्ष्मीनिया गांव में हमारा प्लाटून का डेरा डालने की सूचना दुश्मन को मिला और वह मधुबन और शिवहर से सीआरपीएफ की कंपनी और पताही थाना के सिविल, सैप (एसएपी), बीएमपी बलों को शामिल कर दिन में 2 बजे गांव को चारों ओर से घेराव करना शुरू किया। इसकी सूचना पाकर हमारा प्लाटून डेरा से बाहर आ गया और नजदीक में स्थित एक नदी का कवर लेकर लगभग 5-7 किमी. दूर रिट्रीट हो गया। दुश्मन हमारा पीछा करते हुए कदमा गांव आया। हमारा प्लाटून के तीन सेक्शन तीन दिशाओं में मजबूत कवर देखकर पोजिशन लिया और दुश्मन के लिए घात लगाकर बैठा। दुश्मन को नदी पार करने का मौका नहीं देने के उद्देश्य से नदी पर बनाया गया पुल के पास 'ए' सेक्शन पोजिशन लिया। बांस से बनाया गया दूसरा पुल से दुश्मन आने पर चोट पहुंचाने के लिए वहां 'बी' सेक्शन पोजिशन लिया। हमारे द्वारा पुल के चारों ओर पोजिशन लिये जाने की सूचना पाकर दुश्मन नदी को पार करने की कोशिश नहीं किया। लेकिन मोटर साइकिल से हमें पीछा करते हुए सीआरपीएफ के कमांडेंट और तीन पुलिस जवान बांस से बनाया गया पुल से पार कर हमारे ए और बी सेक्शनों के बीच घुस कर फायरिंग शुरू किया। दोनों के बीच भारी गोलीबारी हुई। इस क्रम में उस कमांडेंट और तीन पुलिस जवानों का एक के बाद एक ए सेक्शन द्वारा सफाया किया गया। तबतक अंधेरा छाने लगा, इससे दुश्मन पीछे हट गया। हमारा प्लाटून सुरक्षित रिट्रीट हो गया। इस मुठभेड़ से ऐसा विश्वास व साहस पीएलजीए में बढ़ा दिया कि बेहतर आधुनिक हथियार, भारी संख्या में आनेवाले दुश्मन से हम लोहा ले सकते हैं।

अमढामा मुठभेड़

उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर जिला में पातेपुर थाना क्षेत्र के अमढामा गांव में एक बड़ा पक्का घर में हमारा एलजीएस डेरा लिया था। इसकी सूचना पाकर दुश्मन पातेपुर और जनदाहा थानों से पुलिस बलों को रवाना किया। पुलिस बल उस गांव को उत्तर, दक्षिण और पूर्व दिशा में घेराव करना शुरू किया। इस तरह का दो घेरा बना लिया था। पहला घेरा दूर में और जिस रास्ते से हमें भागने की सम्भावना है उस रास्ता में बनाया। दूसरा घेरा गांव के चारों ओर बनाया गया। उसके बाद पुलिस घर-घर में तलाशी शुरू की। शाम 5 बज रहा था। अंत में पुलिस जहां हमारा डेरा था उस घर तक पहुंचने के साथ ही असाल्ट सेक्शन फायरिंग किया। इसमें जनदाहां थाना के इंस्पेक्टर घटना स्थल पर ही दम तोड़ दिया। बाद में दोनों के बीच गोलीबारी हुई। इसमें और एक जवान घायल हो गया। इससे दक्षिण दिशा में घेराव पूरा खाली हो गया। तुरंत दो सेक्शन क्रॉलिंग करके घर से बाहर निकला। पहले एक सेक्शन द्वारा कवर फायरिंग देते हुए असाल्ट सेक्शन क्रॉलिंग करते हुए कुछ दूर रिट्रीट हुआ और पोजिशन लेकर फायरिंग करते हुए दुश्मन की उपस्थिति की जांच किया। फिर 50 गज दूर क्रॉलिंग कर रोड को पार किया और रोड के बगल में कवर लिया। इस तरह कवर फायरिंग में पूरा एलजीएस कछ ही देर में सुरक्षित दिशा में रिट्रीट हो गया। यह मुठभेड़ इस एलजीएस के लिए पहला अनुभव है, इसके बावजूद यह प्राथमिक नियम को पालन किया कि आक्रामक रूख अपनाने के द्वारा ही सुरक्षा होगी और सक्रिय प्रतिरोध के बिना सुरक्षित रिट्रीट नहीं कर सकते हैं। इसके साथ-साथ कमान-कण्ट्रोल सही ढंग से लागू होने के कारण साहसिक ढंग से लड़ते हुए वह सफलता हासिल किया और रिट्रीट की पद्धतियों को सही ढंग से व्यवहार में लागू कर पाया।

तरावा मुठभेड़

उत्तर बिहार में 4 अक्टूबर, 2008 को मुजफ्फरपुर जिला के साहेबगंज थानान्तर्गत तरावा गांव में डेरा डाले हुए हमारा प्लाटून और पुलिस के बीच मुठभेड़ हुई। दो दिन पहले ही इस प्लाटून की गतिविधि के बारे में दुश्मन को सूचना मिल गया था। हमारा प्लाटून को भी इस विषय पर जानकारी है, इसके बावजूद दुश्मन को कम आंकते हुए इस गांव के एक टोला में एक सक्रिय कार्यकर्ता के घर में डेरा डाला। पुलिस प्लाटून को घेर लिया। पहले ही हमारे कामरेडों द्वारा किया गया फायरिंग में एक बीएमपी जवान मारा गया। इससे पुलिस पीछे हट कर भाग गई।

भोजपट्टी मुठभेड़

उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर जिला पारू थाना क्षेत्र में भोजपट्टी गांव में एक भूमिहीन गरीब किसानों के गली में 21 जनवरी, 2009 को हमारा एलजीएस डेरा लिया हुआ था। अपने लिए जरूरी सामान को घर की महिला द्वारा उसी गांव के दुकान से मंगवाने के कारण एलजीएस किस घर में डेरा लिया है इसकी सूचना उस दुकानदार द्वारा पुलिस को मिली। इस पर विश्लेषण करते हुए एलजीएस इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि डेरा पर जरूर दुश्मन द्वारा हमला हो सकता है। पुलिस अगर डेरा पर हमला करती है तो उसका कैसे मुकाबला करेंगे इस पर भी वह एक योजना बना लिया। ऐसा सोचा गया कि पुलिस का घेरा को तोड़कर पुलिस का सफाया करके ही दस्ता बाहर निकल सकता है। दस्ता की सूचना मिलते ही शाम 4:30 बजे पारू, देवरिया और सरैया थानों से पुलिस 4 प्लाटून तीन दिशा में एलजीएस का डेरा को

घेराव किया। चौथी दिशा में पैन नदी है। इसलिए उस दिशा में दुश्मन घेराव का विस्तार नहीं कर पाया। बराबर इसी नदी के कवर में रिट्रीट होने के लिए एलजीएस अपनी योजना बना लिया।

पुलिस हमारा डेरा (घर) को घेराव कर नजदीक पहुंचते ही हमारा एलजीएस सदस्य फायरिंग शुरू किया। इसमें एक सैप जवान घटना स्थल पर ही मारा गया। एलजीएस के दो सेक्शन रैपिड फायरिंग करते हुए पुलिस को पीछे भागने को मजबूर कर दिया। इस मौके को इस्तेमाल करते हुए नदी के कवर में गोलीबारी करते हुए धीरे-धीरे शाम 5:30 बजे सुरक्षित एलजीएस रिट्रीट हो गया।

उत्तर बिहार का सबसे बड़ा पुलिसिया घेराव अभियान

सारण जिला के पानापुर थाना के चौअनिया दियर व मुजफ्फपुर जिला के देवरिया थाना के सोहसी दियर में जून 2013 में पार्टी के नेतृत्वकारियों की हत्या करने के लिए सारण रेंज के डीआईजी विनोद सिंह के नेतृत्व में सारण के एसपी, गोपालगंज, मुज्जफ्फरपुर के एसपी और मोतिहारी के एसपी के संयुक्त अभियान में 2000 की संख्या में सीआरपीएफ, एसटीएफ, बीएसएफ, कोबरा, एसएसबी, बीएमपी और जिला पुलिस बल ने मिलकर 3 बजे भोर से ही चार बजे दिन तक घेरा डालकर रखा। ऊपर से हेलीकॉप्टर भी घुमा रहा था। जिस जगह पर कामरेड लोग थे उस जगह से 25 किमी. उत्तर व दक्षिण दोनों दिशा में भी पुलिस बल था। उस दिन नदी में नाव चलाना, मछली मारना व किसान के खेती कार्य को भी बंद रखा था। पुलिस को पक्की रिपोर्ट थी कि माओवादी यहां ठहरे हुए हैं। इसके बावजूद, पुलिस के घेरने के एक घंटा पहले ही पुलिस आने की सूचना मिलने; साथी लोग गुरिल्ला युद्ध नियमों में पहला नियम गुप्तता को सख्ती से पालन करने के कारण दुश्मन के घेरा से सुरक्षित बच पाने में कामयाब हुए।

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल के अन्तर्गत मुठभेड़ व जवाबी प्रतिरोधात्मक संघर्ष

दण्डकारण्य में इस दस साल की अवधि में दुश्मन द्वारा एक के बाद एक दमन अभियानों के दौरान बड़े पैमाने पर किए गए हमलों और नरसंहारों में सैकड़ों कामरेड और जनता अपनी जान गवांए। खासकर, सलवा जुडूम, उसके बाद ऑपरेशन ग्रीन हण्ट में ये नुकसान हुए। दुश्मन के बलों की बढ़ती संख्या के साथ-साथ मुठभेड़ की घटनाओं में बढ़ोत्तरी हुई और कुछ नुकसान हुए। खासकर ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के तहत गढ़चिरौली डिविजन में दुश्मन के षड्यंत्रपूर्ण हमलों में तेजी आयी और इसमें हमें नुकसान उठाना पड़ा। बड़े पैमाने पर दुश्मन के बलों द्वारा किए गए हमलों का प्रतिरोध करते हुए की गई घमासान लड़ाई की कुछ घटनाओं को यहां देखेंगे :

2006 में दण्डकारण्य के गढ़चिरौली डिविजन में जनवरी में हुई पेंड्री मुठभेड़ में पुलिस और पीएलजीए के बीच हुई घमासान लड़ाई में महाराष्ट्र के क्रैक-60 कमांडो के दो जवान मारे गए।

2007 में दण्डकारण्य के माड़ डिविजन अन्तर्गत कोहकामेट्टा एरिया में आकाबेड़ा गांव के पास मई महीना में एक पीएलजीए यूनिट होने की सूचना दुश्मन को मिली थी। लगभग 80 की संख्या में पुलिस अलग-अलग बैच बनाकर डेरा का घेराव किया। हमारे कामरेडों द्वारा पुलिस के एक बैच को पहले ही देख लेने से डेरा को खाली करके रिट्रीट हो गए। इसी क्रम में एक खेत में पुलिस का और एक बैच के साथ आमना-सामना हुआ और दोनों पक्ष के बीच कुछ देर तक गोलीबारी हुई। उसके बाद पीएलजीए के लाल योद्धा रिट्रीट होने के दौरान तितर-बितर हो गए। कामरेड जग्गू (एसीएम और एलजीएस कमांडर थे जो नवम्बर 2008 में पुलिस द्वारा दागे गये मोर्टार के गोला से शहीद हो गया) अपना दस्ते से अलग हो गया। वह किसी भी दिशा में जाने से पुलिस बैच मिलने लगा। इसके चलते उनका वहां से निकलना मुश्किल हो गया। पुलिस सर्चिंग कर रही थी। कामरेड जग्गू जहां थे उस तरफ दो पुलिस आने लगी। इसे देखकर वे छोटी-सी झाड़ी में चुपचाप छिप गये। झाड़ी को जांच करने के लिए पुलिस को आगे आते देख कामरेड जग्गू अपना हथियार से निशाना साधकर एक पुलिस को मार गिराया। अचानक हुआ इस हमलाा से आतंकित होकर दूसरा पुलिस पीछे तरफ भाग गयी। गोली किस तरफ से आयी बाकी पुलिस को पता नहीं चला। मौका को देखकर मारा गया पुलिस के एके-47 को जप्त कर खेतों की चारों तरफ लगाई गई कई बाड़ों को पार करते हुए वे रिट्रीट होकर आये। उनको देखकर पुलिस अंधाधूंध फायरिंग की लेकिन फायदा नहीं मिला। कामरेड जग्गू एके के साथ प्रतिरोध करते हुए सुरक्षित रिट्रीट हो गये।

तिमपुरम लड़ाई

दण्डकारण्य के दंतेवाड़ा जिला के चिंतलनार इलाके में तिमपुरम, मोरपल्ली, ताड़मेट्ला गांवों में जब दुश्मन के फासीवादी बल 300 घरों में आग लगाकर, हत्या-महिलाओं पर अत्याचार करते हुए पूरी तरह नाश करने लगे, तब इन बलों को पीछा करते हुए 14 मार्च को तिमपुरम गांव के पास पीएलजीए द्वारा घंटोंभर उसके साथ लड़ाई लड़ी गयी। तीन कोबरा कमांडों को मार गिराकर 9 को घायल कर बाकी पुलिस को मार भगाया। इस लड़ाई में पीएलजीए के साथ बड़ी संख्या में जनता भी भाग ली। इसमें भी सी4 को बेहतर तरीके से अमल किया गया।

माकड़चुव्वा का महत्वपूर्ण संघर्ष

उस दिन दैनिक क्रांतिकारी गतिविधियों के अन्तर्गत कामरेड रणिता एक गुरिल्ला दस्ता के साथ चादगांव एरिया के माकड़चुव्वा गांव में गयी थीं। पांच घरों वाला उस छोटा-सा गांव में उस दिन दस्ता आने की सूचना दुश्मन को पहले ही मिल गया था। इसी सूचना के आधार पर कोबरा कमांडो और सी-60 क्रैक कमांडो बल के जवान लगभग 200 की संख्या में सुबह उजाला होने के पहले ही चारों ओर से उस गांव को घेर लिया था। का. रणिता जब अपने साथियों के साथ गांव में प्रवेश की तो जनता से दुश्मन के बारे में सूचना मिली। इसे सुनकर उनका दस्ता पीछे मूड़कर जाने का प्रयास किया। इसी बीच पुलिस कमांडो के एक दल के साथ उसका आमना-सामना हो गया। दोनों पक्ष के बीच गोलीबारी शुरू हो गयी। बाकी दो सदस्य दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए एक तरफ भागते हुए जंगल का फायदा उठाकर निकलने में कामयाब हुए। लेकिन कामरेड रणिता दूसरी तरफ भागने के कारण गांव के बीचोंबीच फंस गई। गोलीबारी की आवाज सुनकर घेराव में लगे हुए बाकी सभी बल गांव में प्रवेश किया। बाहर निकलने का कोई चारा नहीं होने की वजह से का. रणिता घरों के बगल में एक छोटा मकई के खेत में जा घुसी।

भागने वाले दो कामरेडों को कुछ दूर तक पीछा करने वाले कमांडो फिर से गांव में आये। और एक कामरेड के लिए छानबीन करना शुरू कर दिये। इस तरह पुलिस झुंड में इधर-उधर घूम रही थी। का. रणिता इन्हें देख रही है। उन्हें एहसास हुआ कि कोई भी उनको समझ नहीं पाया है। उनके पास सिर्फ एक थ्रीनॉटथ्री रायफल और उसके साथ 33 गोलियां ही होने के बावजूद, थोड़ी-सी भी हिचकिचाहट और घबराहट का शिकार न होकर निशाना साधकर एक कमांडो को मार गिराया। गोली कहां से आयी, कौन फायर किया पता नहीं चलने के कारण पुलिस वालों में घबराहट पैदा हो गयी। ऐसी स्थिति में वे और एक बार निशाना साधकर ट्रिगर दबायी। और एक कमांडो का सफाया हो गया। का. रणिता ने दृढ़ता के साथ ऐसा संकल्प लिया कि दुश्मन द्वारा दिया गया कोई भी छोटा-सा मौका को नहीं छोड़ूंगी, और उन्होंने एक के बाद एक गोली फायर करने लगी। इससे और दो कमांडो घायल हो गये। तबतक पुलिस को पता चल गया कि गोलीबारी बगल में स्थित मकई के खेत से हो रही है। इसलिए उन्होंने एलएमजी, एक-47, एसएलआर, इनसास, मोर्टार आदि सभी अत्याधुनिक हथियारों का इस्तेमाल कर हजारों गोलियां बरसायी। का. रणिता मकई खेत के बीच एक छोटा-सा गढ्ढा की आड़ लेने के कारण गोलीबारी से उन्हें कुछ भी नहीं हुआ। एक ही अकेली लाल योद्धा द्वारा किया जाने वाला प्रतिरोध से गम्भीर नुकसान झेलने की वजह से आतंकित होने वाला कमांडो बल गांव वालों को एक जगह पर जमा करके उस पर उनकी 'वीरता' का बखान किया।

तबतक लगभग शाम के तीन बज रहे थे। तब तक पुलिस वालों की सभी वाकी-टाकी अतिरिक्त सहायता की मांग से गूंज रहे थे। यहां एक बड़ा नक्सली दल से लड़ाई चलने का संदेश गढ़चिरौली जिला मुख्यालय से नागपुर और मुम्बई तक भी प्रसार किया गया। गढ़चिरौली में एक भारी मुठभेड़ कहकर टीवी पर स्क्रॉलिंग चालू हो गया। इधर हेलीकॉप्टर उतरने लगा। घायल वालों और मारे गए पुलिस वालों की लाश ले गए। लगभग एक दर्जन माइनप्रूफ गाड़ियों में अतिरिक्त बल वहां पहुंच गए। कामरेड रणिता दृढ़ निश्चय के साथ ऐसा निष्कर्ष तक पहुंची कि मुझे इस घेराव से बहार निकलना नामुमकिन है, इसलिए आखरी दमतक मैं प्रतिरोध को जारी रखूंगी।

संख्या बल और हथियार के साथ ही जीत हासिल करने का दावा करने वाले कमांडो बलों द्वारा गोलियां बरसाने के साथ-साथ लगभग 25 ग्रेनेड उस मकई के खेत में फेंके गये। मकई की फसल पूरी तरह नीचे गिरने लगी। कामरेड रणिता आस-पास में उड़ने वाली धुवां से सांस नहीं ले पर रही थी, आंख जलने लगी, विस्फोट की आवाजों से कान भी फटने लगी। कमांडो बलों की ललकार, गालियां, बीच-बीच में 'सरेंडर हो जाओ' की धमकियों के बीच पीने के लिए एक बूंद भी पानी नहीं मिलने की दूभर स्थिति में भी थोड़ा-सा भी डरे बिना उस मकई के खेत को ही मजबूत आधार बनाकर उस टेढ़ी जमीन पर अपना पोजिशन सम्भालती रही। कई अमर शहीदों द्वारा मिली संघर्षशीलता की प्रेरणा और उनकी विरासत को उन्होंने ऊंचा उठाई। बहुत देर तक का. रणिता की ओर से कोई भी प्रतिक्रिया नहीं आने के कारण एक कमाडो टीम ऐसी सोची कि वह दम तोड़ दिया होगा और बुलेट प्रूफ जैकट पहनकर अंधाधूंध ऑटो फायरिंग करते हुए मकई खेत में घुसने का 'साहस' किया। लेकिन कामरेड रणिता थोड़ा भी नहीं हिचकते हुए उन्हें नजदीक तक आने दिया और निशाना साधकर पहली गोली से ही एक कमांडो को मार गिराया। उसके बाद एक के बाद एक और कुछ गोली फायर की, उससे और दो को घायल कर दिया। इस धक्के के बाद कमांडो बल का 'साहस' में ढीलापन आया।

तब तक अतिरिक्त बल वहां पहुंच गया और घटना स्थल में पुलिस बलों की संख्या लगभग 500-600 तक बढ़ गयी। आस-पास घेराव किए गए बलों के साथ यह संख्या लगभग एक बटालियन तक हो गयी। इतने कमांडो और पुलिस बल होने के बावजूद एक ही, और अकेली आदिवासी युवती का मुकाबला करने के लिए एड़ी-चोटी एक करने की स्थिति बन गयी। आज की तारीख में बुर्जुआ मीडिया में 'मुठभेड़' का मतलब यह हो गया है कि कोई एक बड़ा

नक्सलवादी नेता या कुछ नक्सलवादी मर जाना और पुलिस को कुछ भी नहीं होना। ऐसे संदर्भ में यह घटना असली मुठभेड़ कैसी होती है सभी लोगों को समझा दिया।

कोई चारा नहीं होने की वजह से पुलिस कमांडो ऐसा सोचा कि मकई की खेती को काटे बिना 'नक्सली' की पहचान नहीं कर सकते। दूसरी तरफ अंधेरा होने लगा। रात होने से 'नक्सली' किसी तरह भाग निकल सकते हैं। इतना करने के बावजूद उसे नुकसान पहुंचाने वाली 'उस एक ही नक्सली' का सफाया नहीं करने से वे जानते हैं कि वह पराजय उसे बहुत समय तक पीछा करता रहेगा। ऐसा सोच कर, जनता को जो एक जगह पर जबर्दस्ती जमा करके रखी गयी थी, उन्हें पिटाई कर और गोली मारने की धमकी देकर, उनसे मकई की खेती कटवाने के लिए अंदर भेज दी गयी। इसी बीच कुछ कमांडो नजदीक में स्थित एक पेड़ पर चढ़ गये। मकई की खेती लगभग पूरी तरह काटे जाने तक ऊपर से का. रणिता को पहचान लिया। तुरंत उस पेड़ के ऊपर पोजिशन लेकर गोलियां बरसाने के बाद ही कामरेड रणिता वहीं पर आखरी सांस ली।

सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे तक, लगभग 10 घंटे उस अकेली महिला कामरेड द्वारा किया गया प्रतिरोध संघर्ष की वजह से 3 पुलिस कमांडो (इनमें से दो कोबरा शामिल है) मारे गए और 4 कमांडो गम्भीर रूप से घायल हो गए। पुलिस गोलियां बरसाते हुए कामरेड रणिता की लाश तक पहुंची। कामरेड रणिता के पास और 19 जिन्दा कारतूस बचा था। यानी उन्होंने सिर्फ 14 गोलियां ही फायर की। गढ़चिरौली जिला के एसपी वीरेश प्रभु ऐसी घोषणा कर अपनी प्रतिष्ठा को बचाने के लिए व्यर्थ कोशिश किया कि 30-35 नक्सलियों के साथ हुई गोलीबारी में उक्त नुकसान पुलिस की तरफ से उठाना पड़ा। लेकिन तीन दर्जन से कम आबादी वाला माकड़चुव्वा के ग्रामीण ही कामरेड रणिता के साहस और आत्मबलिदान का सजीव सबूत है।

दण्डकारण्य के बीजापुर जिले में 29 अक्टूबर 2011 को मनकेली और गोरनम गांवों पर पुलिस बल द्वारा हमला किया गया। पुलिस बल और पीएलजीए के बीच मनकेली, ईसुलनार और कोकरा गांवों में सुबह 7:30, 9:30, 11 बजे तीन मुठभेड़ हुई। मनकेली के पास हुई मुठभेड़ में दो सीआरपीएफ जवान घायल हो गए।

गंगालूर एरिया में हमारे पीएलजीए के प्रधान बलों की सूचना पाकर 300 से अधिक पुलिस हमारे ऊपर अभियान चलाया। रात 10, 11 बजे समन्वय के साथ जंगल में प्रवेश किया। मनकेली और गोरनम गांवों को चारों तरफ से घेराव किया। मुरकीनार, मोदुगपाल और चेरामंगी कैंप के पुलिस पंगोड़ी जंगल में घुसकर पीएलजीए के बलों की पीछे तरफ घात लगाकर बैठी। इसके साथ-साथ पुलिस और एक घेरा को भी बनाया। रोडों पर भी और घेरा था। इस तरह 15 किमी. चौड़ाई और 20 किमी. लम्बाई वाला इलाके को पुलिस बलों द्वारा घेराव किया गया। इस तरह 7, 8 पुलिस बैच गुरिल्ला तरीके में ही बहुत ही गुप्त रूप से, जूतों का निशान न लगाते हुए, रातों-रात सतर्कता बरतते हुए इलाका के अंदर घुसी। लेकिन, वह जनता की आंखों से बचा नहीं पाई। जनता दुश्मन के बलों को पहचान लिया और पीएलजीए को सूचना दी। दो दिशाओं से पुलिस की आने की सूचना पाकर एक तरफ पीएलजीए द्वारा घात लगाकर एम्बुश लगायी गयी। लेकिन हमारे लोग यह नहीं जानते थे कि पुलिस फ्लैंक में भी आ रही है।

दुश्मन के बल एम्बुश साइट तक पहुंचते ही हमारे लाल योद्धा द्वारा फायरिंग शुरू किया गया। पुलिस भी गोलीबारी शुरू की। दोनों के बीच घमासान लड़ाई चलने लगी। आधा घंटा तक यह संघर्ष चला। इसी बीच पुलिस के फ्लैंक बैच हमारे योद्धाओं के नजदीक तक पहुंचकर उसको घेर लिया। और कुछ देर तक वहां रहने से हमें नुकसान उठाने की स्थिति पैदा हो गयी। तब तक हमारे फायरिंग से दो पुलिस घायल हो गई। लेकिन पुलिस को पहले ही सूचना थी कि उसके और एक बैच आकर फ्लैंक अटैक करती है, इसलिए वे वहां पर ही प्रोन पोजिशन लेकर फायरिंग करता रहा। आगे नहीं बढ़ा और पीछे भी नहीं हटा। हमारे योद्धा की पूरी नजर उस पुलिस पर ही थी। हमारे कामरेड तब रिट्रीट किये जब अतिरिक्त पुलिस बल आकर हमारे पीएलजीए का घेराव करने लगा।

बड़ा केडवाल और छोटा केडवाल पर हवाई अभियान का पीएलजीए द्वारा प्रतिरोध

दण्डकारण्य के सुकमा जिले में 19 दिसम्बर, 2011 को बड़ा केडवाल और छोटा केडवाल गांवों पर 900 की संख्या में संयुक्त पुलिस बल हवाई अभियान चलाया। दुश्मन प्रयोगात्मक तौर पर यह हमला किया। अभी पुलिस पैदल नहीं आएंगे, नक्सलवादियों के लिए मजबूत गढ़ वाले गांवों पर सैनिक हेलीकॉप्टरों से हमला कर वहां के क्रांतिकारी जनताना सरकारों को उखाड़ देंगे- इस तरह धमकी देना इस हमला का लक्ष्य था। हेलीकॉप्टरों में आने वाले बलों की मदद के तौर पर ग्राउण्ड बल भी नजदीक तक आए थे। इसमें कोया कमांडो कमांडर करटम सूर्या, किच्चे नन्दाल, मुदिराज और गद्दार सिंगन्ना आदि शामिल है।

17 और 18 दिसम्बर को किष्टारम, भेज्जी, पोलमपल्ली और कांकेर लंका गांवों में ग्राउण्ड बलों को तैनात किया गया था। वायुसेना 19 दिसम्बर सुबह 7-8 बजे हेलीकॉप्टरों में आकर लोग देखते ही रस्सी से बड़ा केडवाल और छोटा केडवाल गांवों में उतरा था। जनसंगठन के नेताओं के घरों पर हमला किया और लूटपाट की। 15 ग्रामीणों को गिरफ्तार

किया। एक नाबालिग लड़की पर अत्याचार करने की कोशिश किया। इसे देखकर न सहपाने वाले एक आदिवासी किसान अपना भरमार (भराठी बन्दूक) से उस पर एक बार फायर किया। लेकिन, वह निशाना चूक गया। पुलिस लड़की को छोड़कर उस किसान का पीछा पड़ा। इससे लड़की वहां से भाग गयी। लेकिन, उस किसान को पुलिस ने पकड़ ली। गिरफ्तार किए गए लोगों को हेलीकॉप्टर में भरकर ले जाया गया। पुलिस का डर है कि बहुत समय वहां रुकने से हमारे पीएलजीए बल वहां पहुंच कर हमला कर सकता है। इसलिए पुलिस वहां डेढ़ घंटे से ज्यादा नहीं रही। लेकिन, इसी बीच में ही जन मिलिशिया बल वहां जमा हो गया। हेलीकॉप्टरों से फायरिंग शुरू किया। इस डेढ़ घंटे के अंदर ही 5 बार पुलिस पर हमला किया। और एक जगह पीएलजीए के द्वितीय बल एक हेलीकॉप्टर पर हमला किया, इससे उसे 9 गोली लगी। वह गिरने जैसा गोल घुमते हुए किसी तरह फिर से उड़ान भरा। अचानक पीएलजीए के बलों द्वारा किया गया यह हमला पुलिस बलों को परेशानी में डाला और डर के मारे नीचे उतरे बिना तेजी से दोरनापाल की तरफ हेलीकॉप्टर को घुमाकर भाग गया।

पश्चिम बंग

पश्चिम बंग में क्रांतिकारी आन्दोलन पर सरकार के सशस्त्र बलों के हमले के साथ प्रतिक्रांतिकारी माकपा के सामाजिक फासीवादियों के हमले, उसके बाद फासीवादी तृणमूल कांग्रेस सरकार और सरकार पोषित प्रतिक्रांतिकारी गुटों के हमले, उसके खिलाफ हमारी पार्टी के नेतृत्व में क्रांतिकारी जनता और पीएलजीए बलों के प्रतिरोध के कारण, खासकर सिंगूर, नन्दिग्राम, इसके बाद महान लालगढ़ जन बगावत के कारण कई भीषण लड़ाई लड़ी गयी थी। सरकारी बल और निजी गुटों के नरसंहारों में कई ग्रामीण जनता और जन कार्यकर्ता अपने प्राणों को बलिदान किए। इस तरह के बल संयुक्त रूप से पीएलजीए पर किए गए कुछ हमलों का पीएलजीए के प्रतिरोध के द्वारा मुहतोड़ जवाब दिया गया। लेकिन दिन-ब-दिन तेज होते जा रहे दुश्मन के षड्यंत्रपूर्ण हमले से पार्टी, पीएलजीए और जनसंगठन कमजोर होने के कारण 2010 से धीरे-धीरे हमारा नुकसान बढ़ता गया। हमारी पार्टी के पीबीएम कामरेड किशनजी (रामजी) और कई राज्य कमेटी से लेकर पार्टी और पीएलजीए के सदस्य तक, जन संगठनों के नेताओं और कार्यकर्ताओं के शहीद होने और उससे कई गुना गिरफ्तार होकर जेल की काली कोठरियों में ठूंसे जाने के कारण वहां का आन्दोलन अस्थाई तौर पर पीछे हटा।

असम

भारत देश के कई रणनीतिक इलाकों में से एक है असम राज्य। इस राज्य में भारतीय सेना के पहारा के बीच ही क्रांतिकारी आन्दोलन को विकास करने के लक्ष्य से, वहां जारी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों की मदद के रूप में हमारी पार्टी और पीएलजीए द्वारा कुछ सीमित इलाकों में ही हो, आन्दोलनों का निर्माण किया गया। वर्तमान भारत के पूर्वोत्तर इलाकों में हमारी पार्टी की एक पहचान बनाने में हमने सफलता हासिल की है। इसी क्रम में दुश्मन के हमलों में मई 2012 में तिनसुकिया जिले में कामरेड सिद्धार्थ बोरागोहाइ सहित चार कामरेड, इससे कुछ पहले दस्ता के कमांडर का. पावेल की शहादत, केन्द्रीय कमेटी से लेकर निचले स्तर तक हुई गिरफ्तारियों की वजह से कुछ गम्भीर नुकसान ही वहां झेलना पड़ा था।

आंध्र प्रदेश

हमारी एकताबद्ध पार्टी का गठन के साथ ही आंध्र प्रदेश में कांग्रेस के राजशेखर रेड्डी सरकार को जनवादी आन्दोलन के सामने झुकाकर एक कार्यनीति के तहत ही हमारी पार्टी के साथ शांति वर्ता करने के लिए तैयार हुई थी। हमारी पार्टी की राज्य कमेटी भी जनवादी आन्दोलन की आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर राज्य सरकार की धोखेबाजीपूर्ण कार्यनीतियों का पर्दाफाश करने के लक्ष्य से शांति वार्ता में भाग लेने के लिए तैयार हुई थी। (हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस का निर्णय था कि शांति वार्ता में भाग लेना सही नहीं था।) वार्ता में सरकार का असली चेहरा का भण्डाफोड़ हो गया और वह वार्ता से हटने की एकतरफा घोषणा कर अलग हो गयी एवं एलआईसी रणनीति-कार्यनीति के तहत बड़े पैमाने पर दमनकारी अभियानों और फर्जी मुठभेड़ों पर उतारू हो गयी थी। भारत के शोषक-शासक वर्गो के लिए आंध्र प्रदेश एक प्रयोगशाला के रूप में तब्दील हो गया। इस दमनकारी हमले का प्रतिरोध करने के लिए कुछ कोशिश किए गए। इसके बावजूद दुश्मन के भीषण हमले के कारण हमारी पार्टी और पीएलजीए को भारी नुकासान उठाना पड़ा। राज्य कमेटी से लेकर निचले स्तर के पार्टी सदस्य, जनसंगठन और जनता को भी गम्भीर नुकसान, दु:ख-तकलीफों का सामना करना पड़ा। हमारी पार्टी को उस राज्य में अस्थायी तौर पर पीछे हटना पड़ा। तेलंगाना में भी कुछ अपवाद रहने के बावजूद यही स्थिति जारी रही।

आंध्रा-ओड़िशा सीमांत इलाके का स्पेशल जोन

आंध्रा-ओड़िशा सीमांत (एओबी) इलाके में इस दस साल के समय काल में केन्द्र और राज्य सरकार के सशस्त्र बल बीएसएफ और डीवीएफ, खासकर आंध्रा के ग्रेहाण्ड्स, ओड़िशा के एसओजी बलों के हमलों की वजह से हमारे पार्टी, पीएलजीए और जनमिलिशिया को गम्भीर नुकसान उठाना पड़ा है। कई मामलों में दुश्मन के बलों का प्रतिरोध करते हुए उसके हमले का मुकाबला कर पार्टी और पीएलजीए अपने स्थिति को सम्भाल ली। नारायणपटना के भूमि आन्दोलन, विशाखा बॉक्साइट, माली-देवमाली विस्थापन विरोधी आन्दोलनों पर दुश्मन के हमले का प्रतिरोध करते हुए उसे बचाने के लिए कोशश कर रहे हैं।

ओड़िशा

हमारी एकताबद्ध पार्टी गठन के साथ ओड़िशा में क्रांतिकारी आन्दोलन कई इलाकों में विस्तार और संगठित करने की कोशिश के साथ, 'नयागढ़-ऑपरेशन रोप वे' के बाद खासकर 2011 में सरकारी बलों का हमला दिन-ब-दिन तेज होने, 2011-12 में प्रतिक्रांतिकारी पंडा की विघटनकारी गतिविधियों की वजह से हमारी पार्टी और पीएलजीए के बल को गम्भीर नुकसान उठाना पड़ा। इसके बावजूद दुश्मन के बलों के हमले की कुछ घटनाओं में पीएलजीए बल दृढ़ता के साथ प्रतिरोध करते हुए, नुकसानों के बीच ही नये इलाकों में आन्दोलन को विस्तार करना जारी रखा।

ओड़िशा में अक्टूबर 2010 में दुश्मन द्वारा किया गया पड़कीपाली एम्बुश (महासमुंद, छत्तीसगढ़), जनवरी 2011 की बंदंगबाली (रायगढ़ा, ओड़िशा) मुठभेड़ जिसमें डिविजनल कमेटी सदस्य कामरेड रवि सहित 8 कामरेड शहीद हुए, जजपुर मुठभेड़ (कलिंग नगर, ओड़िशा), जनवरी 2012 में डीवीसीएम कामरेड मोहन शहीद हुए करेंमरका (रायगढ़, छत्तीसगढ़) मुठभेड़, मई में जोलाराव (धमतरी, छत्तीसगढ़), सितम्बर में कामरेड धनाजी शहीद हुए कुन्द्रभट्ठा (बलंगीर, ओड़िशा) मुठभेड़, कामरेड सुक्काय शहीद हुए कड्रावली (रायगढ़ा, ओड़िशा) मुठभेड़। इन मुठभेड़ों में हमारी पार्टी और पीएलजीए का गम्भीर नुकसान झेलते हुए भी आन्दोलन को बनाए रखने के लिए नए इलाकों में संगठन का विस्तार करने के लिए प्रयास कर रहे हैं। दुश्मन के हमले को एक सबक के तौर पर दुश्मन के पड़कीपाली एम्बुश के बारे यहां हम देखेंगे :

दुश्मन के पड़कीपाली एम्बुश

हमारी पार्टी द्वारा नया विस्तारित छत्तीसगढ़-ओड़िशा सीमांत इलाके में महासमुंद जिला के पितौरा तहसील, सांकरा थानान्तर्गत पड़कीपाली गांव के जंगलों में हमारी पीएलजीए के एक कंपनी पर 9 अक्टूबर, 2010 को दोपहर 12:30 बजे 400 की संख्या में दुश्मन के बल का एक योजनाबद्ध एम्बुश में हमें गम्भीर नुकसान उठाना पड़ा।

8 अक्टूबर को बरनायी दादर गांव में दिन में लगभग 3 बजे हमारी कंपनी पर हमला करने के लिए दुश्मन के आने की सूचना हमें मिली थी। लेकिन, हमने पहले तय की गई योजना को ही यांत्रिक रूप से जारी रखा। पुलिस हमारे पीछे पड़ गई। लेकिन यह एक नया विस्तार इलाका होने की वजह से हमें आह्वान करने के लिए लोग बड़े पैमाने पर हमें मिलने के लिए जमा हो जाने, उस धरातल पर हमें पकड़ नहीं होने की वहज से हमारे बलों की सूचना दुश्मन तक पहुंचने का खतरा मंडराता रहा। जनता समय-समय पर दुश्मन का समाचार पहुंचाने के कारण कई बार उसके हमले को हमने टाल दिया। इसके बावजूद हमारे समाचार को कई तरीकों से दुश्मन इकट्ठा करते हुए हमारे पीछे पड़ने की वजह से हमने ऐसा निर्णय लिया कि हम एक सुरक्षित इलाके में जाएंगे। मैदानी इलाका होने, कई रोड होने के कारण घंटोंभर पैदल चलते-चलते पीएलजीए के बलों को बहुत थकावट महसूस हो रहा था। ऐसी स्थिति में हमने रोड और खेत पार करते हुए रिखादादर गांव पहुंचकर कुछ ग्रामीणों से संपर्क कर खाना और पानी उपलब्ध करवाने के लिए कहा और हमें सुरक्षित इलाके में पहुंचाने के लिए अनुरोध किया। लेकिन, हमें देखते ही पूरा गांव के लोग हमारे पास पहुंचने शुरू कर दिये। सीएनएम के कामरेडों ने अपना कार्यक्रम शुरू कर दिये। उसी समय लोगों ने बताया कि 'आपको दुश्मन पीछा कर रहा है। आप तुरंत यहां से निकल जाइए।'

यह सूचना पाते ही तुरंत कमांडर द्वारा जाने की सिटी बजायी गई। सुरक्षित जंगल की तरफ ग्रामीणों के सहयोग से हम जाने लगे। हमलोग लेडहिडिप्पा गांव की तरफ जा रहे थे। एक पक्की रोड जब हम पार किए तो तीन पत्रकार जिप्सी में आकर मुलाकात के लिए समय मांगने लगे। एक दिन पहले ही एक पत्रकार से मुलाकात हुई थी। वही पत्रकार दूसरा दिन और दो पत्रकारों को लेकर आया। सच्चाई यह है कि मुलाकात के बहाने हमें धोखा देकर वहां रोकने के लिए पुलिस ही पत्रकारों के भेष में आई थी। क्योंकि पोजिशन लेने के लिए पुलिस को कुछ समय की जरूरत थी। कमांडर ने पहले मुलाकात करने से इंकार किया। लेकिन 'पत्रकार' पीछे पड़ने और जबर्दस्ती करने के कारण मुलाकात के लिए मजबुर हुए। उसके बाद झाड़ीदार पहाड़ों की तरफ हमें कूच कर दिए। ठीक उसी तरफ दुश्मन झाड़ीदार पहाड़ों में ही पोजिशन लिया हुआ था। उसी समय जिस दिशा में हम जा रहे थे, उस दिशा से दो खाली बस वापस जाने की

सूचना हमें मिली। तुरंत हमारे बलों को रोकने की कोशिश में कमांडर द्वारा विजील काशन दिया गया। लेकिन, समन्वय करने में चुक हुई। दुश्मन अपनी योजना के तहत हमारे बल को अपने किलिंग ग्राउण्ड में घुसने के बाद पहला प्लाटून के 'बी' सेक्शन और 'सी' सेक्शन और कंपनी मुख्यालय (हेडक्वार्टर्स) एक जगह में जमा होने के समय ही हमला शुरू किया। प्लाटून-1 और 2 में कुछ कामरेड कंपनी मुख्यालय के साथ मिल कर पीछे की तरफ रिट्रीट हो गए। लेकिन, उस तरफ से भी दुश्मन का फायरिंग आने लगा। उस समय में एक कामरेड दुश्मन को देखकर फायरिंग किया। लेकिन, गोली फायर नहीं हुई। दुश्मन को मौका मिला। दुश्मन की तरफ से फायरिंग बढ़ गया। तब तक कुछ कामरेड पोजिशन लेकर काउण्टर फायरिंग शुरू किये। लेकिन कमांडर की तरफ से कमांडिंग-कंट्रोल नहीं होने की वजह से हमारे कामरेड अलग-अलग हो गए और बैच, टीम के रूप में और अकेले भी रिट्रीट हो गए।

कामरेड आयतू, कामरेड नताशा (चांदनी), कामरेड पारो, कामरेड राजबती (शामबाई), कामरेड बिरसा (लच्चू) आखरी दम तक दुश्मन के साथ लड़ते हुए आपना प्राण न्योछावर कर दिये। कामरेड चंदू (अर्जुन) पहली दफा के फायरिंग में ही शहीद हो गया और एक कामरेड को दुश्मन पकड़ लिया। इनकी कुरबानियों के कारण ही बाकी हमारे पीएलजीए के बलों को रिट्रीट के लिए मौका मिला। फायरिंग करते हुए रिट्रीट होने में कामयाब हुए।

फायरिंग के दिन ही पुलिस लेडहिडिप्पा गांव के दो किसान गौतम पटेल और उसका नौकर को घर से बाहर निकाल कर उसकी पत्नी के सामने ही गोली मार दी। शहीद हुए कामरेडों का हथियार और अन्य सामग्री दुश्मन द्वारा जब्त किया गया। मुठभेड़ में हमारा फायरिंग से गम्भीर रूप से घायल होकर एक पुलिस जवान बाद में अस्पताल में दम तोड़ दिया।

हमारी कंपनी मुख्यालय की टीम कुछ दूर जाने के बाद प्लाटून-1 के कुछ सदस्य और कमांडर, प्लाटून-2 के कमांडर और कुछ सदस्यों से जा मिली। बाद में जनता की मदद से उसी रोज रात को प्लाटून-1 के 'ए' सेक्शन के कामरेड आकर मिले। और एक टीम जनता की मदद से एक सप्ताह के अंदर आकर मिली। एक महिला कामरेड फायरिंग के समय अलग होकर 22 दिन के बाद जनता की मदद से आकर मिली।

2014 में ओड़िशा के बरगढ़ जिला के झारबांध थानान्तर्गत मोहनपल्ली जंगल इलाके में 5 मई को एसओजी बलों और पीएलजीए के बीच हुई मुठभेड़ में एसआई गाइसीलट किसको गम्भीर रूप से घायल हो गया।

ओड़िशा के गंजाम, गजपति, कंधमाल जिला के सीमावर्ती क्षेत्र के बारीमुण्डा एरिया में 10 सितम्बर, 2014 को हुई मुठभेड़ में एक पुलिस अधिकारी घायल हो गए। तीन जिला के पुलिस बलों द्वारा चलाया गया संयुक्त अभियान के खिलाफ यह घटना घटी हुई थी।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र में गुरिल्ला जोन के स्तर के आन्दोलन के रूप में रहा गढ़चिरौली-गोंदिया इलाका, मध्य प्रदेश में बालाघाट-भंडारा डिविजन का आन्दोलन इन दस सालों में दुश्मन द्वारा चलाये गये गम्भीर दमन का सामना करते हुए जारी है। वहां हमारी पार्टी के नेतृत्व और आन्दोलन को पूरी तरह सफाया करने के लक्ष्य से दिन ब दिन दुश्मन द्वारा तेज होता जा रहा काउण्टर गुरिल्ला युद्ध को प्रतिरोध करते हुए आन्दोलन को बनाए रखने के लिए पार्टी और पीएलजीए को अधिक ही मूल्य चुकाना पड़ा। शहरी आन्दोलन पीछे हट गया। इसके तहत नवम्बर 2007 में कोरची मुठभेड़ में दस्ता कमांडर कामरेड जेनिया, 2008 में हुए दो मुठभेड़ों में कामरेड सुनन्दा और शोभा, और एक मुठभेड़ में कामरेड कौशल्या, अप्रैल 2011 में खेब्रामेंडा में दुश्मन के काउण्टर एम्बुश में कामरेड नागेश (डिविजनल कमांडर इन चीफ), का. मंजु और का. मंगल; मई में बालाघाट जिला के बमनी मुठभेड़ में कामरेड सुगुणा, तिजू, अक्टूबर 2012 में प्लाटून के सेक्शन कमांडर कामरेड मोहन अपने अनमोल प्राणों को न्योछावर किया है। कई कामरेड गिरफ्तार हो गए। और कुछ गद्दार बन गए। इन नुकसानों से वहां का आन्दोलन पीछे हटा।

कर्नाटक

कर्नाटक में रणनीतिक महत्व रखने वाले पश्चिमी घाटियों के मलनाड़ इलाका में एक आधार बनाकर आन्दोलन को विस्तार करने के लिए इन दस सालों में की गई कोशिशों पर शुरुआत से ही दुश्मन का हमला बढ़ते जाने की वजह से कई मुठभेड़ें हुई हैं। इसमें कुछ गम्भीर नुकसान भी उठाना पड़ा। अक्टूबर 2004 में एरिया कमेटी सचिव कामरेड पर्वती, का. राजेश्वरी शहीद हुए बोल्लोट्टू (उड़िपी) मुठभेड़ में, फरवरी 2005 में राज्य कमेटी सचिव कामरेड साकेत राजन, कामरेड शिवलिंगू शहीद हुए मेनसिनहदया (कोप्पा इलाके) मुठभेड़ में, जून 2007 की मुठभेड़ में एक राज्य कमेटी सदस्य सहित पांच कामरेड शहीद हुए, नवम्बर 2008 की मुठभेड़ में राज्य कमेटी सदस्य कामरेड रवीन्द्रन (अभिषेक), डीसीएम कामरेड मनोहर, पीएम कामरेड नवीन शहीद हुए, जो कर्नाटक एसटीएफ द्वारा कार्रवाई की गयी

(शेष भाग पृष्ठ-76 में...)

झूठी 'आत्मसमर्पण नीति' – उसका असली चेहरा

दुश्मन द्वारा अपनाई गयी एलआईसी रणनीति के तहत क्रांतिकारी आन्दोलन पर जारी चौतरफा हमले में आत्मसमर्पण नीति एक मुख्य पहलू है। यह दिवालिया शोषक-शासक वर्गों की नीति के सिवा और कुछ नहीं है। वे सरेंडरों को बढ़ाने और पुलिस मुखबिरों को तैयार करने के लिए आन्दोलन के इलाकों में तैनात सरकारी सशस्त्र बलों के लिए दसियों करोड़ रुपए मंजूर करते हुए बलों में अपराधी प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहे हैं। इनाम, पदोन्नति के प्रलोभन से क्रूर पुलिस अधिकारी लोग लगातार गांवों पर हमला करते हुए युवाओं व आम आदिवासी और गैर-आदिवासी किसानों को गिरफ्तार कर रहे हैं और विभिन्न कारणों से पार्टी छोड़कर शादी-शुदा कर पत्नी एवं बाल-बच्चों के साथ आम जिन्दगी बिताने वालों को गिरफ्तार कर इन्हें 'इनामी माओवादी' कहकर दिखा रहे हैं। कई लोगों को डरा-धमकाकर, दबाव डालकर आत्मसमर्पणों के नाटक रच रहे हैं। इसका कई जनवादी संगठनों, जनवादियों और विपक्षी पार्टियों सहित विरोध कर रहे हैं।

लगातार प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में माओवादियों के आत्मसमर्पण और गिरफ्तारियों से संबंधित पुलिस के ये दुष्प्रचार हमारी पार्टी को बदनाम कर, जनता, हमारी पार्टी और पीएलजीए पर मनोवैज्ञानिक युद्ध को तेज करने के लिए ही किये जा रहे हैं। इसके तहत पुलिस 'खुशहाल जिंदगी', 'नवजीवन' आदि नाम से अभियान चला रही है। क्रांतिकारी आन्दोलन को निरस्त्र करने के लिए डरा-धमकाकर (चिट्ठी भेजना, प्रेस विज्ञप्ति देना, क्रांतिकारियों के परिवारों के साथ भेंट-वार्ता (counciling) करना, पैसे देकर उन परिवारों के सामने ऐसे ड्रामेबाजी करना जैसाकि मुश्किलों में उन्हें सहयोग दे रही हो) पार्टी के नेतृत्वकारी और कतारों, पीएलजीए कमांडरों और योद्धाओं पर, क्रांतिकारी जन कमेटियों, जन संगठनों, जन मिलिशिया पर तीव्र दबाव डालकर 'आत्मसमर्पण' करने को मजबूर कर रहा है। यह हमारी पार्टी और क्रांतिकारी आन्दोलन को पूरी तरह सफाया करने के लिए लुटेरी सरकारों द्वारा लागू करने वाली प्रतिक्रांतिकारी 'कमतीव्रता वाला युद्ध' (एलआईसी) रणनीति का एक हिस्सा है। लेकिन सच्चाई यह है कि, हमारे कुछ कैडर सैद्धांतिक और राजनीतिक तौर पर कमजोर होकर बलिदान करने में डर और स्वार्थ के कारण लुटेरी सरकार की आत्मसमर्पण नीति से आकर्षित होकर पुलिस का शरण ले रहा है। इनसे जनता नफरत कर रही है। जनता और पार्टी के साथ गद्दारी कर पुलिस के साथ मिल कर गांवों में घूमनेवालों को पकड़कर जनता पिटाई कर रही है। उनके मुंह पर थूक रहे हैं और तीखा सबक सिखा रहे हैं। इस तरह के कई उदाहरण हैं। असल में आत्मसमर्पण करने वालों को जो 'इनाम' और पुनर्वास योजना के पैसे देने का वादा कर रहे हैं, वे भ्रष्ट बड़ा पुलिस अधिकारियों के जेब में ही जाता है। उदाहरण के लिए जून 2014 में दण्डकारण्य में सरेंडर हुई एक 8 लाख 'इनामी महिला नक्सलवादी' को सिर्फ 5 हजार रुपए देकर हाथ झाड़ लिया। इस तरह सैकड़ों उदाहरण हैं। 15 से 45 साल उम्र वाले युवाओं, आम आदिवासी, गैर-आदिवासी किसानों को पकड़ना, उन्हें पुलिस मुखबिर और एसपीओ के रूप में बलदने के लिए उनपर दबाव डालना, आत्मसमर्पण का नाटक रचना, मुखबिर बनने के लिए तैयार न होने पर उनका गिरफ्तारी दिखा कर झूठे मुकदमों में फंसाकर जेलों में ठूंसना या फर्जी मुठभेड़ों में गोली मार देना– यह 'नक्सल प्रभावित राज्यों में' केन्द्र और राज्य सरकारों के दिशा-निर्देशन में पुलिस द्वारा लागू की जाने वाली जन दमनकारी नीति का एक हिस्सा है। इस तरह का ताजातरीन एक आत्मसमर्पण का घोटाला झारखण्ड में प्रकाश में आया था।

''नौकरी के लिए आत्मसमर्पण'' (Surrender-for-job) का घोटाला

नौकरी के लिए आत्मसमर्पण का घोटाला झारखण्ड में 2011-2012 के बीच हुआ था। इसमें पश्चिम सिंहभूम जिले के सैनिक खुफिया विभाग के मुखबिर रवि बोदरा मुख्य भूमिका निभाया। इस घोटाला में 514 आम आदिवासी युवकों पर माओवादी का लेबल लगाकर रायफल, पिस्तौल या बम वगैरह देकर उसे ऐसा लालच दिखया कि ''उन्हें अपने आपको 'माओवादी बताकर आत्मसमर्पण करना है' इसके एवज में 'आत्मसमर्पण नीति' के तहत उसे सीआरपीएफ में कांस्टेबल की नौकरी मिलेगी।'' झारखण्ड के उच्च पुलिस अधिकारियों और सीआरपीएफ के उच्च अधिकारियों ने ऐसी बुरी मंशा से रवि बोदरा को इस्तेमाल कर इस घोटाले का नाटक रचाया कि बड़े पैमाने पर ''माओवादियों'' के नाम पर आत्मसमर्पण करवा कर इनाम-पुरस्कार हासिल कर सकते हैं। रवि बोदरा रांची, खुंटी, गुमला जिलों में आदिवासी युवकों के सामने सेवानिवृत आर्मी कर्नल के रूप में परिचय देकर उन्हें इस घोटाले में फंसा दिया। जो इस आत्मसमर्पण योजना के तहत नौकरी चाहता है, उसमें से एक-एक को लगभग ढाई लाख रुपए उन्हें घूस के रूप में देने के लिए मजबूर किया। गरीबी झेल रहे आदिवासी परिवार इसलिए पैसा दिया है कि स्थाई नौकरी के लिए यह अनिवार्य है। लेकिन यह घोटाला मानवाधिकार संगठनों के प्रयास से प्रकाश में आने और न्यायालय में जनहित याचिका दायर करने से पर्दाफाश हो गया। इसके बाद एक तरफ ''आत्मसमर्पण करने वाला नक्सलवादी'' का लेबल, दूसरा तरफ सूदखोरों के पास अपनी संपत्ति और जमीन को गिरवी रखकर उधार लाए हुए पैसा फिर वापस न चुका पाने, और एक तरफ ''नक्सलवादी'' का लेबल मिलने और घूस देने के बावजूद नौकरी न मिलने की दुख:दायी स्थिति एवं इससे ज्यादा

इस 'लेबल' की वजह से और कहीं भी नौकरी न मिलने की संकट की स्थिति बनने के कारण उन आदिवासी परिवारों को परेशानी में डाल दिया।

इस 11 साल में भारत के शोषक-शासक वर्गों की एलआईसी के लिए प्रयोगशालाओं के तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में इस 'आत्मसमर्पण' नीति को दुश्मन पंचायत अध्यक्ष और पंचायत समिति अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष और विधायकों द्वारा बड़े पैमाने पर प्रचार करवाते हुए लागू कर रहा है। इसी नीति को एओबी, बिहार-झारखण्ड, पश्चिम बंग और ओड़िशा में बहुत ही ध्यान देकर अमल कर रहा है। सच में दुश्मन द्वारा लागू इस 'आत्मसमर्पण नीति' का लक्ष्य है - क्रांतिकारियों और क्रांतिकारी जनता को आम जीवन धारा में मिलाने के नाम पर उस पर मनोवैज्ञानिक दबाव डालना, बड़े पैमाने पर आत्मसमर्पण करने वालों को दिखाकर उनके मनोबल को तोड़ना, माओवादी हिंसा की वजह से ही समस्याएं पैदा हो रही हैं, उसी कारण से 'विकास' अवरूद्ध हो रहा है- ऐसा वातावरण पैदा करना, माओवादी हिंसा छोड़ने पर पुलिस भी हमले नहीं करते- ऐसे अवास्तविक भ्रम पैदा करना, कुल मिलाकर हमारी पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा का खात्मा करना।

उक्त कई झूठे अत्मसमर्पण के मामलों को देखकर, सरेंडरों में लगभग 70 प्रतिशत झूठा है कहकर सरकारी संगठन ही खुले तौर पर घोषणा कर रहा है, इससे समझ सकते हैं कि इसका असली चेहरा क्या है, अलग उल्लेख करने की कोई जरूरत ही नहीं है। आन्दोलन के इलाकों में हमारे पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा के नेतृत्व में क्रांतिकारी जनता दिवालिया शोषक-शासक वर्गों की नीति का भण्डाफोड़ करते हुए संविधान विरोधी, अपराधीपूर्ण और साजिशपूर्ण इन पद्धतियों के खिलाफ आन्दोलन कर रहे हैं। ★

(पृष्ठ-74 के शेष भाग...)
है- इनमें उल्लेखनीय है। कामरेड साकेत राजन और शिवलिंग की हत्या के खिलाफ कर्नाटक सशस्त्र पुलिस चौकी पर पीएलजीए द्वारा किये गये हमले में 8 पुलिस का सफाया कर 5 को घायल किया गया। कर्नाटक, तमिलनाडु, केरलम राज्यों के आन्दोलनों द्वारा हासिल कई मूल्यवान अनुभवों का संश्लेषण कर लिये गये सबक पर आधारित होकर 2011 से लगातार की गई कोशिशों के जरिए 2012 में एक रूप लेकर पश्चिमी घाटियों के ट्राई-जंक्शन इलाके में एक नया स्पेशल जोन गठन करने के लिए आधार रखा गया है।

ट्राई-जंक्शन स्पेशल जोन

हमारी केन्द्रीय कमेटी द्वारा एक योजना के तहत किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप 2012-13 में ट्राईजंक्शन (पश्चिमी घाटियों से लगे हुए कर्नाटक, तमिलनाडु, केरलम के सीमांत इलाका) इलाके में एक नया स्पेशल जोन का गठन हुआ। लेकिन इस इलाके में हमारे पीएलजीए के दस्ते पैर रखने के पहले से ही हमारी पार्टी को उस इलाके में प्रवेश करने से रोकने के लिए कई प्रतिक्रांतिकारी उपायों को इस्तेमाल करने वाला दुश्मन द्वारा हमारे दस्ते प्रवेश करते या न करते ही उस पर तीव्र दमन लागू करते हुए उसे वहां पैर जमाने से रोकने के लिए कई साजिशें कर रहा है। इन सभी साजिशों को हराते हुए हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए दस्ते अपनी गतिविधियों को शुरू किए हैं। कई मुश्किलों, कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए, पहलकदमी को हाथ में रखने के लिए कोशिश करने, गुरिल्ला युद्ध का सूत्र- सक्रिय प्रतिरोध में ही सुरक्षा होगी को लागू करने और जनता पर निर्भर होकर युद्ध चलाने के जरिए ही युद्ध को सीखते हुए आगे बढ़ रहे हैं। उदाहरण के लिए, अप्रैल 2012 में कतलूर गांव के पास पीएलजीए के एक छोटी टीम पहलकदमी के साथ पहले ही गोलीबारी करने की वजह से एक प्लाटून की संख्या में आई पुलिस को दुम दबाकर भागना पड़ा। सितम्बर में पल्लेगद्दे गांव के पास दुश्मन के एम्बुश में फंसने के बावजूद हमारी पीएलजीए की एक छोटी टीम पहलकदमी के साथ पहले ही गोलीबारी कर एम्बुश साइट से बाहर निकलने में कामयाब हुई।

समापन

एक कमजोर शक्ति पर मजबूत शक्ति (दुश्मन) द्वारा हमले होने से भारी नुकसान का सामना करना अत्यंत सहज है। इसलिए कमजोर शक्ति जरूर गुरिल्ला युद्ध तंत्र को प्रभावशाली ढंग से लागू करने में माहिर होने, उसमें गुप्तता, तेजगति, स्थानांतर करने जैसा प्रधान नियम को पालन करने के लिए कोशिश करनी होगी। इसके जरिए मजबूत शक्ति से उभरने वाले खतरे से सम्भवतः बचना होगा। एलआईसी के परिप्रेक्ष्य में मजबूत दुश्मन के द्वारा लगातार जारी चौतरफा हमले को मुकाबला करने के लिए हम जो कमजोर हैं बहुत ही सतर्कता बरतनी जरूरी है। हमारे राजनीतिक लक्ष्य पर हमारे बलों को गहराई से समझ बढ़ाते हुए, जब मौका मिले तब सैनिक प्रशिक्षण देते हुए, 24 घंटे युद्ध के लिए तैयार रहने की समझ बढ़ाते हुए पीएलजीए को सच्ची क्रांतिकारी जनसेना के रूप में ढालना होगा। अचानक दुश्मन आमने-सामने होने से वीरतापूर्ण ढंग से प्रतिरोध करते हुए कम नुकसान उठाकर बाहर निकलने लायक कोशिश करनी होगी। इसके लिए आत्मरक्षात्मक युद्ध की कार्यनीतियों को सक्रिय प्रतिरोध के साथ प्रभावशाली ढंग से समन्वय करना होगा। सम्भवतः अपने आपको बचाते हुए, दुश्मन का सफाया करने के जरिए जीत की ओर हम आगे बढ़ सकते हैं।★

जन आन्दोलन और जन प्रतिवाद-प्रतिरोध आन्दोलन

विश्वव्यापी साम्राज्यवादी आर्थिक संकट तेज हो जाने की वजह से अपनी मुनाफा दर को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए साम्राज्यवादियों द्वारा लूट-खसोट विभिन्न पिछड़े देशों में और तेज हो गया है। वहां उन्हें सेवा करने वाली दलाल शोषक सरकारों द्वारा उदारीकरण-निजीकरण-भूमण्डलीकरण (एलपीजी) की राजनीति और आर्थिक नीतियों को लागू करवाते हुए उत्पीड़ित जनता की जिन्दगी को और दूभर कर रहे हैं। अपनी कोई भी समस्याओं को न निपटने वाली शोषक सरकारों के प्रति दिन-प्रतिदिन लोगों की असंतुष्टि प्रबल होती जा रही है। देशभर में लोगों से सामना करने वाली दैनंदिन की समस्याओं और राजनीतिक समस्याओं पर आन्दोलन तेज होते जा रहा है।

इन दस सालों में बिहार, झारखण्ड, दण्डकारण्य (छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र), पश्चिम बंग, आंध्रा-ओड़िशा बॉर्डर (एओबी), ओड़िशा, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरलम, असम आदि राज्यों में गुरिल्ला युद्ध-जनयुद्ध को विकसित करने में जन आन्दोलन और जन प्रतिवाद व प्रतिरोध आन्दोलनों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है।

आन्दोलन प्रभावित व्यापक ग्रामीण इलाकों में जल-जंगल-जमीन-इज्जत सहित सभी अधिकारों के लिए संघर्ष, मुक्ति के लिए संघर्ष, सामंतवाद विरोधी-साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष, भारत के शोषक-शासक वर्गों द्वारा लागू साम्राज्यवादी उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण की नीतियों के खिलाफ, पुराना भू-अधिग्रहण कानून, 2013 में कांग्रेस द्वारा लायी गयी और 2014 में भाजपानीत मोदी सरकार द्वारा प्रस्तावित भू-अधिग्रहण कानून एवं लायी गयी अध्यादेश के खिलाफ, विस्थापन, कई सेज, बांध, गैर-कानूनी खनन के खिलाफ, जलवायु परिवर्तन के खिलाफ, जनवादी अधिकारों को कुचलने वाले काले कानूनों के खिलाफ, 2014-15 में मोदी सरकार द्वारा लायी गयी मजदूर कानूनों में सुधारों जैसे मजदूर-किसान, मध्यम वर्ग आदि उत्पीड़ित जन विरोधी कानूनों के खिलाफ, विभिन्न मौलिक-सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समस्याओं पर, अकाल, बाढ़ आदि समस्याओं पर, विभिन्न सार्वजनिक और निजी उद्योगों एवं परियोजनाओं में विभिन्न सरकारों और निरंकुश मालिकाना द्वारा मजदूर अधिकारों को कुचलते हुए लागू करने वाले लॉक आउट, ले-ऑफ, छंटनी नीतियों के खिलाफ, शोषक-शासक सरकारों के जन विरोधी, देश विरोधी लुटेरी नीतियों के खिलाफ, भ्रष्टाचार के खिलाफ, फारेस्ट अधिकारियों, ठेकेदारों, सूदखोरों के लूट के खिलाफ, किसान, दलित, महिला और धार्मिक अल्पसंख्यकों की समस्याओं सहित कई समस्याओं पर लोग संघर्ष कर रहे हैं। मजदूर, शिक्षक-पारा शिक्षक, जनता के विभिन्न तबकों आदि के वेतन बढ़ाने और अन्य अधिकारों के लिए कई संघर्ष किए हैं। नशा खासकर दारू पर प्रतिबंध लागू करने की मांग को लेकर लोग खासकर महिलाएं कई जुझारूपूर्ण संघर्ष किए हैं। पार्टी के आह्वान पर झूठी संसदीय नीति का विरोध करते हुए, शोषक-शासक वर्गों द्वारा जनता पर थोपे गए लोकसभा, विधानसभा और पंचायत चुनावों के खिलाफ कई इलाकों में जनता 'झूठा चुनावों का बहिष्कार करो, जनता के वैकल्पिक जनवादी व्यवस्था का निर्माण करो' के नारे के साथ जनता आन्दोलन की हैं। वास्तव में चुनाव बहिष्कार एक जनवादी अधिकार है। इसके बावजूद झूठा जनवाद में जनता के सभी अधिकारों का हरण करने वाला फासीवादी राज्य में आन्दोलन के इलाकों में चुनाव बहिष्कार का मतलब सशस्त्र बलों के साथ करने वाला युद्ध के समान है। इसलिए जनयुद्ध में सक्रिय भागीदारी करते हुए जनता विभिन्न चुनावों का बहिष्कार करते आई है।

सामंतवादी-साम्राज्यवादी जहरीली संस्कृति की वजह से दिन-प्रतिदिन महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों के विरोध में चलाए गए आन्दोलनों में व्यापक जनता, जन मिलिशिया बड़े पैमाने पर एकत्र हुए हैं। विभिन्न तबकों की जनता, जन समुदाय अपने सामाजिक व राजनीतिक अधिकारों के लिए सघर्ष किए हैं। अलग तेलंगाना राज्य के लिए आन्दोलन बड़े पैमाने पर संचालन किया गया। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप जुलाई 2013 के अंत में अलग तेलंगाना राज्य का गठन हुआ।

इन सभी अन्दोलनों में जनता उन्नत संघर्षरत चेतना को दर्शायी और शोषणकारी संविधान की कानूनी सीमाओं को लांघकर हथियारबंद होने, सरकारी सशस्त्र बलों को मार भगाने, दुश्मन के बलों की गोलीबारी के बीच ही अपनी जान का परवाह किये बिना दृढ़तापूर्वक संघर्ष की है। जनता जो भी संघर्ष में शामिल हो रही है वह जुझारू रूप ले रही है। कई संदर्भों में वह सशस्त्र रूप भी ले रही है। इसका प्रधान कारण यह है कि इन आन्दोलनों में जनता का क्रमश: 'जमीन-अधिकार-जनसेना निर्माण-स्वायत्तता' के नारे के इर्दगिर्द इकट्ठा हो जाना। इन जुझारूपूर्ण आन्दोलनों के जरिए देश के पैमाने पर पुराना और नया संशोधनवाद और सुधारवाद दिन-प्रतिदिन पर्दाफाश हो रहा है। ये सभी संघर्ष सीधे 'राज्य' से लोहा लेते हुए केन्द्र और राज्य सरकारों के वर्ग चरित्र का और पर्दाफाश करने और अपने लुटेरे हितों के प्रति खतरा पैदा करने के कारण शोषक-शासक वर्गों को परेशानी में डाल रहा है।

क्रांतिकारी आन्दोलन जहां मजबूत है, वहां इन सभी आन्दोलनों में सम्भवत: शामिल होने वाली सभी शक्तियों से एकजुट होकर संयुक्त मोर्चा का गठन कर हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए बल, क्रांतिकारी जन संगठन और क्रांतिकारी जन कमेटियों ने प्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व प्रदान किया; जहां कमजोर है वहां संयुक्त मोर्चों में भागीदारी ली और

जहां हमारा आन्दोलन नहीं है वहां परोक्ष रूप से मदद की। दण्डकारण्य, बिहार-झारखण्ड, एओबी, एपी, तेलंगाना, पश्चिम बंग ओड़िशा में लाखों जनता को विभिन्न क्रांतिकारी जन संगठनों और विभिन्न जन मिलिशिया बलों (दण्डकारण्य में 'भूमकाल मिलिशिया', बिहार-झारखण्ड में 'जन मिलिशिया दल', लालगढ़ में 'सिद्धू-कान्हू मिलिशिया', नारायणपटना (कोरापुट) में 'घेनुवा वाहिनी', मन्यम (विशाखपट्टनम-पूर्वी गोदावरी एजेन्सी-एओबर) इलाके में 'मन्यम पितूरी सेना', कलिंग नगर में 'जन रक्षा मिलिशिया', नियमगिरि में 'नियमगिरि सुरक्षा सेना' जैसे सशस्त्र जन संगठनों में संगठित की। जनयुद्ध के साथ जन आन्दोलनों को जोड़ने के जरिए जनता की सक्रिय भागीदारी बढ़ाते हुए जनयुद्ध को और आगे बढ़ाया।

भारत के व्यापक ग्रामीण इलाकों में रहने वाले बहुसंख्यक उत्पीड़ित किसान जनता के हाथों में कृषि योग्य जमीन नहीं है जोकि इस कृषि प्रधान समाज में बहुत ही महत्वपूर्ण उत्पादन का साधन है। हमारा क्रांतिकारी आन्दोलन का जहां विस्तार हुआ है उन इलाकों में लाखों भूमिहीन किसान, गरीब किसान और निम्न मध्यम किसान भूमि आन्दोलनों में संगठित हुए हैं। जड़ जमाई हुआ सामंती आर्थिक आधार को ध्वस्त करते हुए सामंतों-जमीन्दारों और सूदखोरों की हजारों एकड़ जमीन और सरकारी कॉफी प्लांटेशन, अन्य प्लांटेशन, जंगल और बंजर जमीन को जनता द्वारा कब्जा किया गया। उसकी रक्षा के लिए हथियार थाम लिये। लुटेरे सामंतवादियों के कब्जे से जमीन को मुक्त करके किसान जनता, आदिवासियों और दलितों की शक्ति, पहलकदमी, सृजनात्मकता को प्रस्फुटित किया गया। वे अपना अस्तित्व के लिए, आत्मसम्मान, इज्जत, जनता के हाथों राजसत्ता और एक नयी जनवादी समाज के लिए दृढ़तापूर्वक संघर्ष कर रहे हैं।

साम्राज्यवादियों के हितों को बचाने के लिए भारत के शोषक-शासक वर्गों द्वारा लागू किए जा रहे एलआईसी रणनीति के तहत धोखेबाजीपूर्ण योजना के तहत हमारे सभी क्रांतिकारी इलाकों में भड़काए गए प्रतिक्रांतिकारी सलवा जुडूम, सेन्द्रा समिति, हर्मद वाहिनी, नागरिक सुरक्षा समिति, शांति कमेटी जैसे कई सरकार पोषित खुफिया गिरोहों के क्रूर दमनकारी अभियानों के खिलाफ एकजुट होकर जनता जुझारूपूर्ण संघर्ष कर रहे हैं। उत्पीड़ित जनता के एक छोटे तबके को डरा-धमकाकर अलग करने के बाद, उन पर आधार होकर क्रांतिकारी आन्दोलन को पूरी तरह सफाया करने की शोषक-शासक वर्गों की साजिशों के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं।

आन्दोलन के सभी इलाकों में केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा जारी राज्यहिंसा/श्वेत आतंक के खिलाफ लड़े जा रहे आन्दोलनों और मानवाधिकारों के लिए चल रहे आन्दोलनों में जनता बड़े पैमाने पर एकजुट होकर लड़ रही है। गुरिल्ला जोनों, लाल प्रतिरोध इलाकों/प्रस्तावित गुरिल्ला जोनों, खासकर, बिहार-झारखण्ड, दण्डकारण्य को चारों तरफ घेर कर क्रूर सैनिक हमला करने के विरोध में, दण्डकारण्य में सेना तैनात करने के विरोध में, राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए, कामरेड जीतन मरांडी और उनके साथियों पर सुनाई गई फांसी की सजा को रद्द करने की मांग को लेकर, पार्टी के नेतृत्व और कार्यकर्ताओं, जन संगठन के कार्यकर्ताओं और जनता को गैर-कानूनी तरीके से गिरफ्तार करने, उन्हें गुप्त जगहों पर ले जाकर उनपर थर्ड डिग्री की यातनाएं देने के खिलाफ, कई क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं और जनता को फर्जी मुठभेड़ों में हत्या करने या गायब करने के खिलाफ, महिलाओं पर दी जाने वाली यातनाओं के खिलाफ, पुलिस कैंपों/थानों को हटाने की मांग को लेकर और स्कूलों को पुलिस छावनियों में तब्दील करने के खिलाफ क्रांतिकारी आन्दोलन के इलाकों में कई जुझारूपूर्ण संघर्ष चलाए गए। पार्टी के आह्वान पर जनता खासकर महिलाएं पुलिस थानों/कैंपों का घेराव की। 16 सितम्बर, 2015 को तेलंगाना के वरंगल जिले में हुई एक फर्जी मुठभेड़ में इंजीनियरिंग की छात्रा सृति और ऑटो ड्राइवर विद्यासागर को पुलिस द्वारा हत्या किए जाने के विरोध में लगभग 400 जन संगठनों और 11 वामपंथी पार्टियों और दर्जनों मुख्य जनवादियों ने तेलंगाना जनवादी मंच के बैनर तले हजारों जनता एकत्र होकर कार्रवाई में उतरी और जुझारू प्रदर्शन की। कई जगहों पर जनता द्वारा पुलिस जुल्म का साहसिक ढंग से प्रतिवाद और प्रतिरोध करके गैर-कानूनी गिरफ्तारियों पर रोक लगाया गया। दुश्मन को अपने कब्जे में रखे गए जनता, संगठन के सदस्यों, नेता, मिलिशिया सदस्यों को रिहा करने के लिए मजबूर कर दिया गया। मुठभेड़ों और फर्जी मुठभेड़ों एवं पुलिस नरसंहारों में शहीद हुए कामरेडों और क्रांतिकारी जनता की लाशों को उनके परिवारों को सौंपने के लिए जनता द्वारा कई संघर्ष चलाए गए। अमर शहीदों की अंतिम यात्राओं में हजारों जनता भाग ली। उनके पार्थिव शरीरों को क्रांतिकारी परंपराओं के अनुसार अंतिम संस्कार किए गए। फासीवादी राज्य जन संगठनों के नेताओं खासकर आन्ध्र प्रदेश में कामरेड कनकाचारी, मन्नेम प्रसाद, आजम आली, गंटि प्रसादम, आकुला भूमैया आदि को प्रतिक्रांतिकारी हत्यारा गिरोहों द्वारा हत्या करने के खिलाफ कई जन आन्दोलन चलाए गए। पार्टी के आह्वान पर क्रांतिकारियों की फर्जी मुठभेड़ों में हत्या के खिलाफ, दण्डकारण्य में मनकेली, हरियल, पोंजेर, पुल्लुम, सातनार, चिनारी, ओंगनार, गुमपाड़, सिंगारम, सवरगांव, सार्किनगुड़ा, एड्समेट्टा, बिहार-झारखण्ड में फुलवरिया-कोड़ासी, बढ़निया, केन्दुआ टांड़ (भलवाहा), बलुवा बाजार, पश्चिम बंग में बाइरिया, छोड़बोनी, बारीकुल, धुली सालबोनी, नेताई, एओबी में गुंजिवाड़ा, शिलाकोटा, ओड़िशा में काशीपुर, पाइकमाल, तेलंगाना और आन्ध्र प्रदेश आदि राज्यों में हुई कई घटनाओं में आम जनता और क्रांतिकारियों की निर्मम हत्याओं और यातनाओं के खिलाफ, दुश्मन के दमनकारी अभियानों के खिलाफ बंद, विरोध दिवस, आर्थिक

नाकाबंदी आयोजन किए गए, इस तरह के मौकों पर पीएलजीए के नेतृत्व में जनता, जन मिलिशिया हजारों की संख्या में इकट्ठा होकर सैकड़ों की संख्या में ध्वस्त करने की कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया। आन्दोलन के इलाकों में सरकारी सशस्त्र बलों को वापस करने और ऑपरेशन ग्रीन हंट को तत्काल रोकने की मांग रखी गयी। बहुराष्ट्रीय कंपनियों, दलाल नौकरशाह पूंजीपति और सामंती वर्गों और केन्द्र-राज्य सरकारों के सैकड़ों करोड़ रुपए की संपत्ति को ध्वस्त कर दिया गया। दुश्मन को हैरान-परेशान करने की हजारों कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया। कुछ कार्रवाइयों में दुश्मन की सप्लाई को जब्त किया गया, सड़कों पर गढ्ढा खोदने, पेड़ काट कर डालने, बड़ा-बड़ा पत्थर डाल कर सड़कों को जाम किया गया।

क्रांतिकारी आन्दोलन का सफाया करने के लिए शोषक-शासक सरकारों द्वारा लागू करने वाले झूठे सुधार कार्यक्रमों के खिलाफ भी जनता द्वारा कई विरोध प्रदर्शन और प्रतिवाद आन्दोलन चलाया गया था। खासकर, एओबी में कोरापुट, विशाखापट्टनम, मलकानगिरि जिलों में लगभग 15 गांवों में जनता द्वारा चलाए गए अलग-अलग आन्दोलनों में सरकारी सुधारों के खिलाफ जन संपर्क शिविरों और जनमैति सम्मेलनों में पुलिस द्वारा बांटी गई सामान/चीजों को जलायी गयी और पुलिस कैंपों के सामने फेंक दी गयी। इस तरह का संघर्ष करके क्रांतिकारी जनता ने एक मिसाल पेश की है। इसी तरह 'माओवादियों को विकास विरोधी' बताकर शोषक-शासक वर्गों द्वारा हमारी पार्टी और क्रांतिकारी आन्दोलन के खिलाफ विषैला दुष्प्रचार का पलटवार करते हुए मलकानगिरि और पूर्वी डिविजनों में सैकड़ों क्रांतिकारी जनता इकट्ठा होकर पत्रकारों से मुलाकातें कर दुश्मन द्वारा जारी मनोवैज्ञानिक युद्ध/दुष्प्रचार के खिलाफ में उत्पीड़ित जनता को जनयुद्ध से मिली सफलताओं के बारे में और विकास के बारे में कई विषय पर रोशनी डाल कर और एक अच्छा सृजनशील क्रांतिकारी प्रचार युद्ध के तरीका को सामने लायी।

'विकास' के नाम पर 1894 के उपनिवेशवादी भू-अधिग्रहण कानून जैसे फासीवादी कानूनों की आड़ में प्रत्यक्ष रूप से राज्य-मशीनरी का इस्तेमाल कर भारत के शासक वर्ग किसानों की लाखों एकड़ उपजाऊ और अधिक फसल देने वाली जमीन को कब्जा किया था। देश के व्यापक ग्रामीण इलाकों में हमारी पार्टी के नेतृत्व में 'जोतने वालों को जमीन' के तर्ज पर जारी सशस्त्र कृषि क्रांति के कार्यक्रम को 'विकास' के बहाने से रोके रखने के लिए बड़े-बड़े सामंतों, दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों द्वारा अपना अघोषित प्रतिक्रियावादी कार्यक्रम को किसी तरह की ढिलाई न बरतते हुए लागू कर रहे हैं। इसके लिए कांग्रेस सरकार द्वारा भू-अधिग्रहण कानून-2013 को लाया गया।

उदाहरण के लिए, 2003-2008 के बीच पश्चिम बंग में उद्योग और शहरीकरण के लिए 1,20,000 एकड़ उपजाऊ जमीन को कब्जा किया गया है और 2009-2013 के बीच विभिन्न देशी-विदेशी कंपनियों के लिए, रियल इस्टेट कंपनियों के लिए एक लाख एकड़ से ज्यादा देने की योजना बनाई गयी है। झारखण्ड में विकास के नाम पर अभी तक 65 लाख 40 हजार संख्या में जनता को विस्थापित कर दिया गया; 2001-14 के बीच झारखण्ड के राज्य सरकार द्वारा विभिन्न देशी और विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों से किए गए 110 समझौतों (MOU) के अनुसार लगभग 10 लाख जनता विस्थापित होंगी। एक आकलन के मुताबिक पिछले दस सालों में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा 4 लाख 70 हजार हेक्टेयर जंगली जमीन को कब्जा कर 15 लाख आदिवासियों को विस्थापित कर दिया गया। ओड़िशा सरकार 2006 तक विभिन्न कंपनियों को देने के लिए करार किए गए जमीन का क्षेत्रफल एक लाख हेक्टेयर पार कर गया है। इसके साथ-साथ गैर-कानूनी तौर पर हजारों कंपनियों, बिल्डरों, ठेकेदारों, भू-माफिया द्वारा कब्जा की जाने वाली जमीन कितनी है और उससे कितने लोग विस्थपित होगें इसका कोई आंकलित आंकड़ा उपलब्ध नहीं है।

शोषक-शासक वर्गों द्वारा लागू भू-अधिग्रहण नीतियों के खिलाफ, उनके द्वारा विभिन्न देशी-विदेशी कारपोरेट-बहुराष्ट्रीय कंपनियों से किए गए सैकड़ों एमओयू को रद्द करने की मांग को लेकर, खासकर 2014-15 में मोदी सरकार द्वारा प्रस्तावित भू-अधिग्रहण कानून, तीन बार लाए गए भू-अधिग्रहण अध्यादेश के खिलाफ "जान देंगे, लेकिन जमीन नहीं देंगे, झोपड़ियों से बनाए गए हमारे गांवों को उजाड़ने नहीं देंगे" जैसे नारों से विस्थापन समस्या से जूझ रहे सभी आन्दोलन के इलाकों में हजारों जनता विभिन्न संयुक्त मोर्चा संगठनों में एकजुट व संगठित होना और साधारण मिलिशिया संगठन बनाकर प्रतिवाद-प्रतिरोध करने के जरिए, भारत के लुटेरे शासक वर्गों द्वारा विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों से हाथ मिलाकर किए गए सैकड़ों एमओयू के खिलाफ सफलतापूर्वक, जुझारूपूर्ण और कुछ जगहों पर हथियारबंद होकर चलाइये गये कई आन्दोलनों की वजह से शासक वर्गों को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया गया। मोदी सरकार को भू-अधिग्रहण कानून-2014 को वापस लेना पड़ा। वैसा ही लाखों करोड़ रुपए के कई मेगा परियोजनाएं भी रूकी हुई हैं।

पश्चिम बंग के सिंगूर, नंदिग्राम, सालबोनी (लालगढ़), झारखण्ड के दलमा इको सेंसेटिव जोन, ग्रेटर रांची, सराइकेला-खरसावां-इचा डैम, चक्रधरपुर, मनोहरपुर (पश्चिम सिंहभूम), सराइकेला के स्टील प्लांट, देवघर में पावर प्लांट, कोयल-कारो, ओड़िशा के नियमगिरि, गंधमर्द्धन, एओबी के माली-देवमाली, विशाखा बाक्साइट, डीके के रावघाट, बोधघाट बांध, बुदियारीमाड़ी, सूर्जागढ़, डिलीमिली स्टील प्लांट, आंध्र प्रदेश (एपी) के पोलवरम मेगा बांध, सोमपेटा,

काकरापल्ली, उत्तर प्रदेश के भट्टा-परसोल, तमिलनाडु के कुडनकुलम, कर्नाटक के कुदरेमुखा नेशनल पार्क, महाराष्ट्र के कोरची, जैतापुर, महा मुंबाई सेज, गुजरात के मुंद्रा सेज जैसे विभिन्न मेगा परियोजनाओं के खिलाफ चलाये गये आन्दोलन जबरदस्त भू-अधिग्रहण-विस्थापन के खिलाफ संचालित किये गये जन प्रतिवाद-प्रतिरोध आन्दोलनों का सिर्फ कुछ उदाहरण है। पिछले दस सालों में इस तरह की विस्थापन समस्या, जहां तक कि भूमि समस्या और एक बार सामने आयी थी। इसके खिलाफ चलाए गए अन्दोलनों द्वारा कई मूल्यवान सबक मिला था।

दलितों पर, धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हिंदु फासीवादी उच्च जाति सामंती वर्गों द्वारा किए गए नरसंहारों और अत्याचारों के खिलाफ, उत्पीड़ित राष्ट्रों पर भारत के विस्तारवादी शासक वर्गों द्वारा जारी दमनकारी अभियानों के खिलाफ कई जन आन्दोलन चलाया गया है। खासकर, ओड़िशा के हिंदु धर्मांधता के खिलाफ कंधमाल जन आन्दोलन, बरगढ़ जिले के दलितों पर अत्याचारों के खिलाफ, महाराष्ट्र के खाइरलांजी, जवाखेड़ा (अहमद नगर), आंध्र प्रदेश के लक्षिमपेटा में सामंती तत्वों द्वारा दलितों पर किए गए हत्याकांड आदि के खिलाफ, लक्षणपुर-बाथे, बथानीटोला, त्सुंडूर दलित हत्याकांडों में शामिल उच्च जाति के सामंतों को बरी करते हुए बुर्जुआ न्यायालयों द्वारा सुनाये गये फैसलों के खिलाफ जनता द्वारा किए गए कई आन्दोलन इसमें उल्लेखनीय है। अपने अधिकारों के लिए भी दलित और आदिवासी जनता कई जुझारूपूर्ण प्रदर्शन की हैं। आदिवासियों को स्वायत्तता देने, पेसा कानून को लागू करने की मांग की हैं। शोषक-शासक सरकारों द्वारा संचालित आदिवासी विकास संगठन द्वारा किए जाने वाले लूट और भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष की है। हमारी पार्टी और विभिन्न जन संगठनों के आह्वान पर बंद और विरोध प्रदर्शनों को जनता द्वारा संपन्न किया गया है।

इन संघर्षो का प्रभाव विदेशों में मजदूर वर्ग और अन्य तबकों पर व्यापक तौर पर पड़ रहा है। भारतवर्ष में शोषक-शासक वर्गों द्वारा लागू किए जाने वाले फासीवादी ऑपरेशन ग्रीन हंट के खिलाफ फिलिपिंस, तुर्की, ब्राजिल, अमेरिका, ब्रिटेन, ग्रीस, इटली आदि देशों में मजदूर वर्ग विरोध प्रदर्शन, सम्मेलन कर रहा है। देशभर में बड़े पैमाने पर सभी क्रांतिकारी, जनवादी, प्रगतिशील, अमनपसंद बुद्धिजीवी और आदिवासी हितैषी लोगों द्वारा एकजुट होकर दिल्ली, पंजाब, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरलम, झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंग, ओड़िशा और मुंबई में रैली और सभा-सम्मेलन किया गया है। ऑपरेशन ग्रीन हंट का विरोध करते हुए 'जनता पर युद्ध विरोधी मंच' (फोरम इगनेस्ट वार आन पीपुल) के नाम से संगठन बनाकर व्यापक तौर पर आन्दोलन चलाया है।

देशभर में उभार की तरह इन जन आन्दोलनों का नेतृत्व करने के कारण हमारी पार्टी की प्रतिष्ठा, इन जन आन्दोलनों का आधार के रूप में खड़ा होने के कारण हमारी पीएलजीए की प्रतिष्ठा बढ़ी है। व्यापक जनता और उत्पीड़ित तबकें हमारी पार्टी का नेतृत्व चाह रहे हैं।

यहां इन दस सालों में चलाये गये कुछ महत्पूर्ण जन आन्दोलन और जन प्रतिवाद-प्रतिरोध इस प्रकार है :

लालगढ़ जन उभार

इन दस सालों की समयकाल में हमारी पार्टी और पीएलजीए बलों के प्रत्यक्ष नेतृत्व में पैदा किये गये जन उभारों में खास उल्लेखनीय है लालगढ़ का जन उभार। 2008 में पश्चिम बंग के पश्चिम मेदनीपुर जिला के सालबोनी के पास कलाइचांदी के निकट राज्य के मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य, केन्द्रीय इस्ताप और उर्वरक एवं रसायन मंत्री रामविलास पासवान और प्रमुख उद्योगपति सज्जन जिन्दल को निशाना बनाकर पीएलजीए द्वारा एक बारूदी सुरंग विस्फोट किया गया। मुख्यमंत्री द्वारा मेगा स्टील प्लांट- जिन्दल स्टील लिमिटेड कंपनी 4,500 एकड़ जमीन में स्थापित करने के लिए आधारशिला रखकर जब वापस जा रहे थे उस दौरान इस हमले को अंजाम दिया गया था। इसमें मुख्यमंत्री बाल-बाल बच गया और 6 पुलिस को मामूली चोटें आई।

इस विस्फोट के जिम्मेदार माओवादियों को पकड़ने के नाम पर सरकारी तंत्र हर्मद वाहिनी गुण्डों, पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों की मदद से लालगढ़ इलाके की जनता पर टूट पड़े। और उन्होंने जनता को मारपीट करने, अपमानित करने, महिलाओं का अत्याचार और गिरफ्तार करने आदि जुल्म चलाए। असल में इस इलाके में हमारी पार्टी और क्रांतिकारी आन्दोलन का सफाया करने के लक्ष्य से पिछले कुछ समय से माकपा-हर्मद वाहिनी-सरकारी सशस्त्र बल संयुक्त रूप से जनता पर, हमारे कार्यकर्ता और छापामार दस्तों पर हमले तेज किये हैं। सालबोनी की घटना को बहाना बनाकर इसे और तेज किया गया।

लेकिन, शोषक-शासक वर्गों को ऐसा अंदाजा नहीं था कि उन्हें इस दमनकारी हमलों के प्रतिरोध में जनता का जुझारू विरोध का सामना करना होगा और वह एक जन उभार के रूप में बदल सकता है। राज्य में 32 सालों से माकपा नेतृत्व वाली वामपंथी सरकार द्वारा लागू किए जाने वाले जन विरोधी लुटेरी व हत्यारी नीतियों, इन सामाजिक फासीवदी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता एवं उसका हत्यारा गिरोह हर्मद वाहिनी के खिलाफ जनता में जमा हुई तीव्र घृणा एकदम फूट पड़ा। 3-4 दिनों के अंदर ही पुलिस संत्रास विरोधी जनसाधारण की कमेटी (पीसीएपीए) और उसके नेतृत्व में

सिद्धू-कान्हु जनमिलिशिया का गठन हुआ। इस जन उभार का दिशा-निर्देशन हमारी पार्टी नेतृत्व द्वारा किया गया। पीएलजीए इसकी सभी तरह की मदद की। जन प्रतिरोध को विकसित करने के लिए अपनी भूमिका अदा की। गांव-गांव में पीसीएपीए कमेटी का गठन एक अभियान के रूप में चला। इसमें न सिर्फ पुरुषों ने बल्कि महिलाएं भी मुख्य भूमिका निभायी। सभी कार्यक्रमों को पुरुष और महिला मिलकर चर्चा करके कार्यान्वित करते थे। पीसीएपीए कमेटी में भी 50 प्रतिशत महिलाओं को लिया गया। जनता पारम्परिक हथियारों से लैस होकर थानों का घेराव करती और ध्वस्त करती। गांवों में घुसकर हमला करने वाले पुलिस और हर्मद वाहिनी गुण्डों को रोकने के लिए सड़कों को काट दिया गया। पेड़ काट कर सड़कों पर डाल दिया गया। जनता ढोल, नगाड़ा बजाती और गाना गाती। हर रोज हर गांव में प्रर्दशन का आयोजन करते। जल-जंगल-जमीन पर हक के साथ कई रोजमर्रा की समस्याओं के मुद्दे पर हजारों जनता रोड पर उतरती थी। 18 मांगों को लेकर दलीलपुर मांग (बाद में और दो मांगें इसमें जोड़ दी गयी थी) पत्र पर सरकार द्वारा वार्ता करने की मांग पर जनता आन्दोलन की थी। आन्दोलन को चारों तरफ विस्तार कर माकपा और हर्मद वाहिनी के खिलाफ जन प्रतिवाद-प्रतिरोध निर्माण किया गया। ऐसा आह्वान किया गया कि 'पुलिस का सामाजिक बहिष्कार करो।' इसके अन्तर्गत यह था कि पुलिस को किसी तरह की मदद नहीं देनी चाहिए, उसके साथ कोई भी बात नहीं करेंगे, गांवों के कुओं से उन्हें पानी नहीं देना है, गांवों में कहीं भी उन्हें बैठने का मौका नहीं देना चाहिए। पुलिस पर लगाया गया सामाजिक बहिष्कार धीरे-धीरे शहरों और साप्ताहिक बाजारों में हज्जामत दुकान और अन्य दुकानों आदि सभी जगहों तक फैल गयी थी। इसके विरोध में संगठित होने वाले प्रतिक्रियावादियों पर हजारों जनता द्वारा हमले किए गए और एक-दो का सफाया किया गया। माकपा के एक जोनल स्तरीय नेता का सफाया किया गया। माकपा सरगना अनुज पांडेय द्वारा की गयी गोलीबारी में तीन ग्रामीण मारे गए थे। हजारों जनता इसके विरोध में हमला करके उनके लाखों की कीमत वाला घर को ध्वस्त कर दी। माकपा कार्यालयों को ध्वस्त किया गया। पुलिस थाना एवं कैंप खाली हो गए। सरकारी सशस्त्र बल और हर्मद वाहिनी के गुण्डों को गांवों में आने से रोकने के लिए जनता सड़कों पर चौकी लगा दी। सरकार का प्रशासनिक कार्य रूक गया। असल में इस प्रतिरोध ने पश्चिम बंग में 32 साल से चली आ रही माकपा सरकार की नींव हिला दी। लालगढ़ को लाले-लाल कर दिया। लालगढ़ के सीमांत इलाके से लगे शालबोनी, गोवालतोड़, सारेंगा, कोतवाली इलाकों में आन्दोलन के लिए आधार बन गया। महिला और पुरुष हथियारबंद होकर दस्तों को बनाकर घुमना आम बात हो गयी।

इस आन्दोलन में संथाल आदिवासी बड़े पैमाने पर भाग लिये। इसलिए जनता में फूट डालने के लिए माल, दुले, महतो आदि निचली जातियों को इकट्ठा करने के लिए माकपा सरकार द्वारा साजिश रची गयी। नित्यानन्द हेमब्रम के साथ समझौता कर आन्दोलन को निरस्त करने की कोशिश की। लेकिन जनता उसकी बात सुनकर धोखा में नहीं पड़ी। इसी तरह प्रतिक्रियावादी मांझी-माड़ोवा नेता द्वारा भी आन्दोलन को निरस्त करने की कोशिश की गयी। आदिवासियों में धनी किसानों को इकट्ठा कर उन्हें हथियार देकर 'गण प्रतिरोध कमेटी' के नाम से संगठित किया गया। इसके बावजूद उसका परवाह नहीं करते हुए जंगल महल की जनता ने तीन सालों से ज्यादा समय तक केन्द्र और राज्य सरकार के संयुक्त बलों और माकपा के हर्मद गुण्डों के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने अपनी क्रांतिकारी स्फूर्ती, धीरता और आत्मबलिदानों के द्वारा पूरे देश को प्रेरित किया।

यह प्रतिरोध आन्दोलन दिन-प्रतिदिन तेज होते हुए, कई मोर्चों और इलाकों में विस्तार हुआ। उस इलाके में पीसीएपीए ने सत्ता को अपने हाथ में ले लिया। गांवों में स्वास्थ्य केन्द्रों को संचालित किया। जनता अपने आप सड़कों की मरम्मत की। स्कूलों को संचालित कर छात्रों की परीक्षाएं चलाने लायक मदद की। उपभोक्ता सामग्रियों की आपूर्ति, पेयजल और सिंचाई की व्यवस्था का निर्माण किया। कुछ तालाब, कुआं, चेकडैम, चापाकल जनता के सहयोग से निर्माण किया गया। कृषि क्षेत्र की समस्याओं को निपटने के लिए किसान कमेटी का गठन किया गया। कृषि उत्पादनों के लिए समर्थन मूल्य आदि की मांग को लेकर रैली और सभाओं का आयोजन किया गया। माकपा सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष किया गया। लुटेरी सरकार को चुनौती देते हुए हर एरिया में वैकल्पिक विकास योजनाओं और सभी तरह के प्रशासकीय व्यवस्थाओं को स्थापित कर विकसित किया गया। शराब आदि पर प्रतिबंध लगाया गया। जहां पहलकदमी ली गई, सक्रिय रूप से काम किया गया वहां व्यवहार में वे सब लागू कर पाए। उदाहरण के लिए, एक तालाब को 25-30 गांवों की जनता संगठित होकर बनाया। जन अदालतों में जनता अपने आप कई सामाजिक समस्याओं को- शादी व छोड़-चिट्ठी (छाड़ी-छाड़ी या तलाक) जैसी विभिन्न समस्याओं का निपटारा की। शासक वर्गों के दुष्प्रचार का पर्दाफाश करने के लिए इन सभी कार्यक्रमों में कोलकाता शहर में बुद्धिजीवी, शिक्षक, डॉक्टर, साहित्यकार, वैज्ञानिक, महिलाओं, कलाकारों का विभिन्न मौकों पर आह्वान किया गया और उन्हें शामिल किया गया। इसी वजह से इन लोगों पर भी शासक वर्गों द्वारा तीव्र दमन चलाया गया। 2009 के लोकसभा चुनाव में पीसीएपीए तटस्थ दृष्टिकोण अपनाने के बावजूद लालगढ़ एरिया में हमारी पार्टी द्वारा दिए गए चुनाव बहिष्कार आह्वान के कारण बहुसंख्यक जनता वोट नहीं दी। कुल मिलाकर गांव और एरिया स्तरों में नयी राजसत्ता के अंगों का निर्माण के लिए अनुकूल परिस्थितियां उभर

कर आया। विशाल भारत के जनता और जनवादी एवं देशभक्तों की मदद से आन्दोलन को आगे बढ़ाया गया।

जुलाई-अगस्त 2009 में ऑपरेशन ग्रीन हण्ट शुरू होने के बाद लालगढ़ आन्दोलन पर केन्द्र-राज्य सरकारों के संयुक्त बलों के हमले तेज हो गए। इस आश्वासन के साथ माकपा नेता, प्रतिक्रियावादी और हर्मद गुण्डों की घुसपैठ फिर एरिया में शुरू हो गयी। केन्द्र-राज्य संयुक्त सशस्त्र बल द्वारा संघर्षरत जनता पर लाठी-गोली चलाने और जेलों में ठूंस देने जैसे अत्याचार किये गये। कुछ गांवों को जला दिया गया। हर्मद वाहिनी के साथ मिलकर सोनामुखी (बांकुड़ा) जैसे गांवों में महिलाओं पर सामूहिक लैंगिक अत्याचार किया गया। लेकिन ऐसे जितने भी दमन करतूत करने बावजूद आन्दोलन को रोक नहीं पाया। जनता में बढ़ते आक्रोश को जन कमेटी द्वारा संगठित कर माकपा, प्रतिक्रियावादियों और हर्मद वाहिनी के सरगनाओं की कुर्की-जप्ती की गयी। उनकी जमीन को कब्जा की गयी और जनता के बीच बांट दी गयी। ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के खिलाफ प्रतिरोध के तहत हर्मद वाहिनी पर किए गए हमलों में जब्त हथियारों से सिद्धू-कान्हु मिलिशिया को और बेहतर ढंग से हथियारबंद किया गया। सरकारी सशस्त्र बलों और हर्मद वाहिनी गुण्डों के घेराव-दमन के बीच ही 60-70 हजार जनता ने झाड़ग्राम शहर का घेराव कर जुझारू प्रदर्शन किया। इस संघर्ष में इस जन उभार के नेता और द्वितीय सिद्धू के रूप में जाना-जाने वाला सिद्धू-कान्हु मिलिशिया के कमांडर कामरेड सिद्धू सोरेन और इस जन उभार के नेता और बहुविध विद्वान और वीर योद्धा कामरेड उमाकांत महतो की शहादत आन्दोलन के लिए अपूरणीय क्षति है। तीन सालों के आन्दोलन में लगभग 110 से ज्यादा लालगढ़ की जनता इस आन्दोलन में अपना खून बहाया। इनके बलिदानों की वजह से माकपा फासीवाद और उसकी हर्मद गुण्डा वाहिनी को हराने में जनता कामयाब हुई।

इसके बाद राज्य में हुए चुनावों में सत्ता में काबिज तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सरकार, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने झूठे वायदों और चालबाजीपूर्ण कार्यनीति से लालगढ़ आन्दोलन को पूरी तरह सफाया करने की योजना केन्द्रीय सरकार के साथ मिलकर बनायी गयी। एक तरफ वार्ता के बहाने लोगों को आन्दोलन से भटकाते हुए, दूसरी तरफ दमन अभियानों और झूठे सुधार कार्यक्रमों को जोड़कर उसे लागू की गयी।

इसके खिलाफ पीसीएपीए द्वारा राजनीतिक मांगों को लेकर हजारों जनता को संगठित कर कोलकाता से लेकर जंगल महल के कई जगहों पर विभिन्न आन्दोलन चलाया गया। सरकारी संयुक्त सशस्त्र बलों को वापस करने की मांग रखी गयी। जून 2011 से दो महीनों में 5 से 80 हजार तक जनता को एकजुट कर पारम्परिक हथियारों से लैस होकर रैलियां निकाली गयी। इसे रोकने के लिए पुलिस और टीएमसी नेता द्वारा नाकेबंदी लागू करना, गाड़ियों को रोकना, अपने नियंत्रण में लेना जैसे सभी तरह के प्रयास किये गये। इसके बावजूद जनता पीछे नहीं हटी। ममता द्वारा आयोजित सभा में 150-200 से ज्यादा जनता जुट नहीं पायी। पुरानी हर्मद वाहिनी के कैंपों को ध्वस्त करने और हर्मद गुण्डों को सजा देने के लिए 10 हजार जनता एकजुट हो गयी। जन प्रतिवाद-प्रतिरोध फिर से बढ़ता जा रहा था, इसी वजह से लालगढ़ इलाके में फिर से अमन के लिए खतरा बताकर ममता नेतृत्ववाली टीएमसी अयोध्या पहाड़ों से लेकर पुरुलिया, पश्चिमी मेदनीपुर तक हर्मद गुण्डों और स्थानीय खूंखार गुण्डों को संगठित कर सिर्फ नाम बदलकर 'भैरव वाहिनी' नाम से एक सशस्त्र प्रतिक्रांतिकारी संगठन को गठित किया गया। यह हर्मद वाहिनी के सिवा और कुछ भी नहीं है- यह जनता जान रही है। इसके खिलाफ प्रतिवाद-प्रतिरोध संघर्ष कर रही है। भैरव सेना और सरकारी सशस्त्र बलों की मिलीभगत के बारे में बाहरी दुनिया को अंधकार में रखने के लिए माकपा की तरह ममता भी फासीवादी तरीकों को अपनाते हुए मीडिया पर पूरी तरह प्रतिबंध लागू किया। इस तरह की कारतूतों द्वारा ममता के असली चेहरा को उसकी सत्ता में आने के कुछ ही दिनों के अंदर संघर्षरत इलाकों के बाहर बुद्धिजीवी, कलाकार, वैज्ञानिक, छात्र-युवा, साहित्यकार भी जान गये। लेकिन गम्भीर नुकसान झेलने की वजह से हमारी पार्टी प्रतिरोध आन्दोलन को पहले जैसे आगे ले जाने में समस्या का सामना कर रही है।

इस परिस्थिति में केन्द्र-राज्य सरकार द्वारा एक साजिश के तहत लालगढ़ आन्दोलन के विकास में प्रमुख भूमिका अदा करने वाले, हमारी पार्टी का पीबीएम कामरेड किशनजी (रामजी) की हत्या की गयी। विभिन्न झूठी मुठभेड़ों में कई कामरेड शहीद हो गए। राज्य स्तर से लेकर साधारण जनता तक कई लोग गिरफ्तार हो गए। अतः ऐसा नहीं समझना चाहिए कि लालगढ़ आन्दोलन पूरी तरह पीछे हट गया। आन्दोलन अस्थायी तौर पर धक्का खाने के बावजूद वह फिर नया रूप लेकर जरूर उभर कर आएगा, यह एक तथ्य है।

जमीन के लिए आन्दोलन

सभी क्रांतिकारी इलाकों में 'जोतने वालों को जमीन', 'क्रांतिकारी किसान कमेटी (क्रांकिक) के हाथ में सत्ता' जैसे नारों से सामंतवाद के खिलाफ चलाई गई सशस्त्र कृषि क्रांति के तहत पार्टी के नेतृत्व में जनता कई क्रांतिकारी भू-सुधारों को लागू किया गया। जमीन्दारों और सूदखोरों से जमीन जब्त कर खेतीहर, गरीब किसानों में बांट दी गयी। आदिवासी किसानों द्वारा जंगल विभाग के खिलाफ लड़कर कई इलाकों में जंगल की जमीन कब्जा कर खेतीबाड़ी कर रहे हैं।

इसके तहत बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंग और उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में क्रांकिक के नेतृत्व में हजारों किसान संगठित होकर बड़े जमीन्दारों, सूदखोर-महाजनों की हजारों एकड़ जमीन को जब्त की गयी।

उदाहरण के लिए, 18 दिसम्बर, 2009 को बिहार के केकेसी, मुंगेर जिला के नेतृत्व में हमारे पीएलजीए का एक प्लाटून और स्थानीय केकेसी, पीएमएस, एसडीएस एवं क्रान्तिकारी जनता की मदद से मुंगेर जिला के धरहरा थाना अन्तर्गत जमालपुर एरिया में गरीब आदिवासी जनता के उपर मध्ययुगीन शोषण-शासन चलाने वाले दरियापुर के जमीन्दार अक्षय सिंह (बेटा अरूण सिंह) की 300 एकड़ जमीन जो आदिवासी गांव बारहमसिया, काली स्थान गांव में है, एवं 2000 (दो हजार) मन धान, एक एस्सार ट्रेक्टर, 25 एच. का मशीन, कुटी काटने वाला मशीन, 5 क्विंटल गेंहू, 2 मन सरसों एवं गाय के साथ-साथ गोदाम से ढेर सारे लोहा-लक्कड़ को जब्त कर लिया गया। इस कार्रवाई में जनता की संख्या लगभग एक हजार थी।

चूंकि 3यू यानी उत्तरी बिहार, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड (अब 2यू यानी उत्तरी बिहार और उत्तर प्रदेश) के स्पेशल एरिया गठन 2003 में किया गया, उत्तरी बिहार और उत्तर प्रदेश में जमीन्दार, सूदखोर, महाजन के शोषण तथा सामंती उत्पीड़न के खिलाफ एवं मजदूरी वृद्धि आदि को केन्द्रित कर जमीन्दारों की जमीन दखल के लिए कई आन्दोलन चलाये गये हैं। सामंत विरोधी आन्दोलन के खिलाफ आक्रामक रूख रखने वाले हाजिपुर के प्रतिक्रियावादी बिगुल सिंह, छपरा के निड्डु गुड्डुशर्मा, मुन्ना सिंह, नारायणपुर स्टेट का बड़ा जमीन्दार प्रेमचंद और तरियानी थाना के छपरा गांव का जमीन्दार नवल सिंह का सफाया किया गया। हजारों एकड़ जमीन जब्त की गई। उदाहरण के लिए, बथौली में बाहरी जमीन्दार तुलसी शाह, किरतैल व आलापुर में बाहरी बड़ा जमीन्दार लखनचन्द की कोठी की जमीन को जब्त कर क्रांतिकारी किसान कमिटी के नेतृत्व में वासगीत एवं भूमिहीन किसानों के बीच जमीन का वितरण किया गया। कोला क्षेत्र में हजारों पर्चाधारी दलितों को जमीन पर दखल के मुद्दे पर आन्दोलन चलाया गया और पर्चाधारियों को एक हद तक जमीन पर कब्जा दिलाया गया। शेष पर संघर्ष जारी है। बाहरी जमीन्दार व सवर्ण सामंती गुण्डों के संरक्षक नंदा सिंह के सैकड़ों एकड़ जमीन पर दखल किया गया। नदी-घाटी इलाका के दियर की परती जमीन पर उत्पादन कर पाया, साथ-साथ खीरा, तरबूजा की खेती करने में सफल हुए और खम्ही काटने की आजादी मिली। उत्तरी बिहार में सामंतवाद विरोधी संघर्षो में 2013-2015 में एक पुलिस मुठभेड़ एवं स्वर्ण सामंती जमीन्दार गिरोह के गठजोड़ एवं संशोधनवादियों, प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ तकरीबन दस मुठभेड़ें हुई है। इन मुठभेड़ों और पीएलजीए द्वारा की गई कार्रवाइयों में स्वर्ण सामंतियों के एक दर्जन गद्दार, प्रतिक्रियावादियों व पुलिस मुखबिरों को मार गिराया गया एवं आधा दर्जन से अधिक को घायल किया गया। सीपीएम के दिनेश सिंह के खिलाफ व डकैत गिरोहों से लड़कर जनता पर छाये उनके आतंक को कम किया गया।

एओबी के विशाखापट्टनम जिला मन्नेम एजेन्सी में आदिवासी जनता संगठित होकर सरकारी जंगल विभाग के कॉफी बगान को कब्जा करने के लिए कई आन्दोलन चलाए गए। पार्टी के नेतृत्व में सितम्बर 2008 को कुमकुमपूडी कॉफी एस्टेट के 264 हेक्टेयर जमीन को 200 से ज्यादा आदिवासी जनता द्वारा लाल झण्डा गाड़कर जब्त की गयी। 6 दिसम्बर, 2010 को चिंतापल्ली मंडल में आदिवासी किसान द्वारा एपीएफडीसी के बलापम-कोरुकोण्डा कॉफी एस्टेट में 110 हेक्टेयर (275 एकड़) कॉफी बगान को जब्त किया गया। इस संघर्ष के दौरान ही विशाखा एजेन्सी में 'मन्नेम पितूरी सेना' का गठन हुआ था। इसके साथ-साथ मर्रिपाकला और लंकापकला एस्टेट में भी इस लड़ाई का विस्तार किया गया और कुल 500 हेक्टेयर कॉफी बगान जनता के कब्जे में आया।

2009 में ओड़िशा के मलकानगिरि-कोरापुट सीमा पर कोटागिरि इलाके के रामगिरि गांव में हजारों जनता एकजुट होकर 2 हजार एकड़ सरकारी प्लांटैशन को जब्त किया था।

जमीन के लिए नारायणपटना जन आन्दोलन

जून-जुलाई, 2004 में ओड़िशा के कोरापुट जिले में गैर-आदिवासी जमीन्दार द्वारा कब्जे की गई जमीन को फिर से जब्त करने के लक्ष्य से नारायणपटना पंचायत के 4 गांवों में संशोधनवादी भाकपा (मा-ले) कानु सन्याल ग्रुप के नेतृत्व में चासी मुलिया संघ के नेतृत्व में आदिवासी जनता एकजुट होकर गैर-आदिवासी द्वारा जमीन्दारों की 118 एकड़ जमीन को जब्त की गयी। इसी लड़ाई से जमीन के लिए संघर्ष की शुरुआत हुई। इस लड़ाई पर सीमा-रेखा खींचने वाला संशोधनवादी कानु सन्याल ग्रुप का पर्दाफाश करते हुए हमारी पार्टी के नेतृत्व में संघर्ष को आगे बढ़ाते हुए पूरे नारायणपटना ब्लॉक और उससे सटा हुआ बंधुगांव ब्लॉक तक विस्तार किया गया।

जमीन की मूल समस्या पर चलाया जाने वाला इस संघर्ष को किसी तरह कुचलने के लिए जमीन्दार, विभिन्न शोषक-शासक वर्गों के पार्टी के नेतागण पुलिस की मदद से 'शांति सेना' का गठन कर आन्दोलन पर पाशविक हमले किए गए। इसका मुकाबला करने के लिए हजारों जनता संगठित होकर कामरेड सिंगन्ना को कमांडर इन चीफ बनाकर 'घेनुआ वाहिनी' के नाम पर एक जन मिलिशिया संगठन का गठन किया गया। पार्टी, पीएलजीए, चासी मुलिया संघ

और घेनुआ वाहिनी के नेतृत्व में जनता ने उस हमले का प्रतिवाद-प्रतिरोध किया। बड़े व्यापारियों के शराब की दुकानों और भट्ठियों पर हमले किये। आन्दोलन का बाधक बने जमीन्दारों, जन विरोधियों (नौकरशाहियों), शराब के ठेकेदार, अन्य जालिम तत्वों को गांवों से भगा दिया गया। कुछ शांति कमेटी के नेता और केंडुका अर्जुन जैसे कुछ संशोधनवादी गद्दारों और गुण्डों का सफाया करके संघर्ष को आगे बढ़ाया। नारायणपटना ब्लॉक के 9 पंचायतों के 250 गांवों में संघर्ष का विस्तार हुआ। लगभग 3,500 एकड़ जमीन जब्त कर खेतीहर, गरीब किसानों को बांटी गयी। यह जमीन दखल संघर्ष चासी मुलिया आदिवासी संघ के नेतृत्व में चलाया जा रहा सामंत विरोधी संघर्ष के मोड़ के रूप में साबित हुआ।

इस आन्दोलन को कुचलने के लक्ष्य से 20 नवम्बर, 2009 को नारायणपटना थाना का घेराव करने वाले जनता पर पुलिस की अंधाधुंध फायरिंग में कामरेड आन्द्रु शहीद हो गये और कामरेड सिंगन्ना घायल होकर गिर गए, घायल अवस्था में उन्हें कुल्हाड़ी से मारकर हत्या की गयी। इससे तात्कालिक तौर पर आन्दोलन धक्का खाया, इसके बावजूद कई दमन और रुकावटों को पार करते हुए आन्दोलन को आगे बढ़ाया गया और बंधुगांव ब्लॉक में भी उसे विस्तार किया गया। वहां जनता 6 पंचायतों में सामंतों के हाथों से लगभग 1000 एकड़ जमीन जब्त की। लेकिन इस आन्दोलन को सफाया करने के लक्ष्य से शोषक-शासक वर्गों द्वारा ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के तहत दिन-प्रतिदिन दमनकारी अभियान तेज होते जाने के क्रम में इससे डर कर इस आन्दोलन का पहले से नेतृत्व देनेवाला नाचिका लिंगा गद्दार बन कर दुश्मन के सामने घुटने टेक दिया। इस गद्दारी का विरोध करते हुए जनता वर्ग संघर्ष की राह पर आगे बढ़ रही है।

2012 में ओड़िशा के कोरापुट जिला पोट्टंगि थाना क्षेत्र के मारिपुट गांव में जमीन्दारों की 400 एकड़ जमीन 15 गांवों के खेतीहर मजदूर और गरीब किसान द्वारा जब्त की गयी।

विस्थापन समस्या के खिलाफ संघर्ष

पश्चिम बंग में संघर्ष

सिंगूर आन्दोलन : वर्ष 2006 में पश्चिम बंग के हुगली जिले में टाटा की नैनो कार कंपनी के लिए संशोधनवादी माकपा सरकार द्वारा एक हजार एकड़ उपजाऊ जमीन का अधिग्रहण किये जाने के खिलाफ सिंगूर आन्दोलन की शुरुआत हुई। इस जमीन पर निर्भर होकर जीने वाले 11 हजार किसान परिवारों, हजारों काश्तकारों को सरकार द्वारा विस्थापित करवाया गया, इसे जनता ने जमकर विरोध किया। 'कृषिगामी बचाओ कमेटी' के नेतृत्व में जुझारूपूर्ण संघर्ष किया। इस आन्दोलन को शहरी इलाका, खासकर कोलकाता पर आधारित होकर संचालन किया गया। विभिन्न राजनीतिक पार्टियों, छात्र-युवा, महिला, विभिन्न सांस्कृतिक संगठन, बुद्धिजीवी, कलाकार, वैज्ञानिक, साहित्यकार, विभिन्न सामाजिक संगठन, गैर-राजनीतिक और गैर-सरकारी संगठन आदि इस आन्दोलन में भाग लिये। हमारी पार्टी और अन्य संगठन भी इसमें शामिल हुए। इस आन्दोलन पर माकपा सरकार ने क्रूर दमन लागू किया। जनता अपने गांव और जमीन की रक्षा करने के लिए पारम्परिक हथियार लेकर संतरी-गश्ती करती थी। बड़े-बड़े पत्थरों से रोडों को जाम कर दिये गये। भूख हड़ताल, रैली, सभा-बैठक आदि रूपों में लम्बे समय तक आन्दोलन को चलाया गया। बड़े पैमाने पर जुझारूपूर्ण संघर्ष के परिणामस्वरूप टाटा कंपनी को फासीवादी मोदी के गुजरात राज्य में भागना पड़ा। यह जनता द्वारा हासिल एक बड़ी जीत है, एक महान शिक्षा और अनुभव भी है।

नंदीग्राम आन्दोलन : पिछले दस सालों में बहुचर्चित विषयों में एक है नंदीग्राम सेज। पश्चिमी मेदिनीपुर जिले में बंगाल की खाड़ी के तट पर बसा नंदीग्राम एक ब्लॉक मुख्यालय है। संशोधनवादी माकपा सरकार द्वारा वहां इंडोनेशिया के सलेम ग्रुप से प्रस्तावित मेगा केमिकल हब, नौका निर्माण कंपनी और कई अन्य उद्योगों के लिए 27,000 एकड़ जमीन को जबरदस्त कब्जा कर 95 हजार जनता को विस्थापित करने की साजिश रची गई थी। इसके खिलाफ पहले जनता ही स्वत:स्फूर्तता से आन्दोलन को संगठित की। 'भूमि उच्छेद प्रतिरोध कमेटी' के नेतृत्व में खेतिहर, गरीब, मध्यम और धनी किसान एवं अन्य तबकों के बड़े-छोटे, महिला-पुरुष पारम्परिक हथियारों के साथ हथियारबंद हो गए। यह धीरे-धीरे सशस्त्र संघर्ष का रूप ले लिया। हमारी पार्टी इस संघर्ष का नेतृत्व प्रदान की। माकपा सरकार इस आन्दोलन पर क्रूर दमन लागू की। अपनी हर्मद वाहिनी गुण्डों को उकसाया। उनके द्वारा पुलिस वर्दी पहनकर, पुलिस का हथियार पकड़कर गोलीबारी और घरों को जलाना आम बात हो गयी। इस दमन के खिलाफ जनता दिन-रात यानी 24 घंटे जुझारूपूर्ण तरीके से प्रतिवाद व प्रतिरोध किया। यह सालभर चला। नंदीग्राम और खेजुरी दोनों ब्लॉकों से सरकारी प्रशासन, पुलिस, माकपा के गुण्डों को मार भगाया गया। जन प्रतिवाद-प्रतिरोध को कुचलने के लिए 14 मार्च, 2007 को प्रदर्शनकारियों पर पुलिस द्वारा की गई अंधाधुंध गोलीबारी में 17 ग्रामीण मारे गए। आन्दोलन की शुरुआत से ही जनता के नियंत्रण में रहे उस इलाके को 'फिर से कब्जा करने' के लक्ष्य से 11 नवम्बर, 2007 को 5 हजार से ज्यादा माकपा के सशस्त्र गुण्डों और पुलिस-अर्द्धसैनिक बलों की मदद से नंदीग्राम पर हमला किया। बड़े पैमाने पर हत्या, नाबालिक लड़कियों और महिलाओं पर अत्याचार, घरों को जलाना आदि कुकर्म चलाया। जनता द्वारा इसका जवाब सशस्त्र प्रतिरोध से दिया गया। तीन दिन के बाद माकपा सरकार के खिलाफ कोलकाता में बड़े पैमाने पर किया गया

विरोध प्रदर्शन में लाखों जनता भाग ली। नंदीग्राम में नरसंहार को रोकने की मांग की गई। बुद्धिजीवी, कलाकार, साहित्यकार, वैज्ञानिक से लेकर आखिरकार माकपा समर्थक सहित इस आन्दोलन का साथ दिया। जन प्रविवाद-प्रतिरोध के सामने झुककर राज्य सरकार को उस परियोजना को वापस लेना पड़ा। देश की जनता के सामने यह आन्दोलन नंदीग्राम सशस्त्र प्रतिरोध आन्दोलन के रूप में, विस्थापन विरोधी संघर्ष के रूप में, सेज विरोधी लड़ाई के रूप में एक मिसाल पेश किया।

झारखण्ड में आन्दोलन

झारखण्ड में जल-जंगल-जमीन को बचाने के लिए जनता कई सालों से आन्दोलन कर रही है। 2007 में गठित ''विस्थापन विरोधी जन विकास आन्दोलन'' के नेतृत्व में कई आन्दोलन हुए हैं। छोटानागपुर काश्तकारी कानून को कमजोर करने के लिए शासक वर्गों द्वारा किए गए साजिशों के खिलाफ आदिवासी किसान जुझारूपूर्ण लड़ाई लड़ रहे हैं। दिसम्बर 2014 में मोदी सरकार द्वारा लायी गयी भू-अधिग्रहण आध्यादेश की वजह से यह लड़ाई और उग्र हो गई। 30 मार्च, 2015 को रांची में हजारों जनता के विरोध प्रदर्शन, गांव स्तर पर बड़े पैमाने पर सभाएं, 7 मई को गुमला के पालकोट में 5 हजार जनता के साथ प्रदर्शन-सभा हुई। पालकोट में ''वन प्राणी आश्रयणी'' के नाम पर सरकार 83 मौजा की जमीन को अधिग्रहण करना चाहती है। लेकिन गोलबंद होकर जनता के विरोध करने की वजह से सरकार पीछे हटने को मजबूर है। हमारी पार्टी की तरफ 10-12 फरवरी को तीन दिनों के विरोध प्रदर्शन और अन्तिम दिन बिहार-झारखण्ड बंद के आह्वान पर जनता से बड़े पैमाने पर प्रतिक्रिया मिली थी।

''ग्रेटर रांची'' के नाम से भू-अधिग्रहण के खिलाफ आन्दोलन : 11 मई, 2015 को जनता स्वत:स्फूतर्ता से इस भू-अधिग्रहण के खिलाफ रांची में 7-8 हजार की संख्या में विरोध प्रदर्शन का आयोजन की। दलाल राजनेता द्वारा मंच पर जाकर भाषण देने के लिए किए गए प्रयास से उग्र जनता द्वारा उन्हें वहां से भगा दिया गया।

इको सेंसेटिव जोन के खिलाफ आन्दोलन : झारखण्ड में विभिन्न खदानों का खनन के विरोध में जुझारूपूर्ण संघर्ष हुए हैं। पूर्वी सिंहभूम, सराइकेला-खरसावां जिलों की सीमा पर 5 ब्लॉकों में 522 वर्ग कि.मी. दायरा में ''विकसित करने वाला'' इको सेंसेटिव जोन और हाथी अभयारण्य की वजह से 136 गांव से विस्थापित होने वाले हजारों जनता इसके खिलाफ 'दलमा ग्राम सुरक्षा मंच' के बैनर तले संगठित होकर ग्राम सभाएं आयोजन की। फरवरी 2015 में पूर्वीसिंहभूम, सराइकेला-खरसावां जिलों के उपायुक्त कार्यालयों को जनता द्वारा घेराव किया गया और इको सेंसेटिव जोन को तुरंत रद्द करने की मांग की गयी।

हुसैनाबाद पावर प्लांट के खिलाफ आन्दोलन : झारखण्ड के देवघर जिलान्तर्गत देवीपुर ब्लॉक के हुसैनाबाद गांव में प्रस्तावित अल्ट्रा पावर प्लांट के लिए भू-अधिग्रहण के खिलाफ 23 जून, 2015 को जनता द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से विरोध प्रदर्शन करते समय पुलिस उन पर टूट पड़ी। इससे आक्रोशित जनता द्वारा पुलिस और सरकारी अधिकारियों का पत्थराव किया गया और झड़प हुई। इसमें जसीडीह थाना का दरोगा सहित 8 पुलिस और 20 ग्रामीण घायल हुए। पुलिस द्वारा हवा में गोलियां चलायी गयी।

मेकॉन स्टील प्लांट के खिलाफ आन्दोलन : सराइकेला जिले में मेकॉन स्टील प्लांट के खिलाफ सराइकेला, राजनगर ब्लॉकों के 4 पंचायतों- नुवागांव, मुडमुम, छोटादावना और कटांगा के गांवों के ग्राम प्रधान, वार्ड सदस्य सहित उस इलाके के बुद्धिजीवी, मुखिया और जनता एकजुट होकर लड़ रहे हैं। आदिवासी जनता स्पष्ट रूप से यह कह दी है कि आदिवासी इलाकों में पेसा कानून, सीएनटी एक्ट (छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम) को लागू करने के बजाय सरकार यहां की जमीन को आदिवासी जनता की अनुमति के बिना अधिग्रहण कर रही है, लेकिन हम अपने पैतृक देव-स्थल, अपनी संस्कृति और आत्मसम्मान को बचाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं, जान देंगे पर जमीन नहीं देंगे।

मुसाबनी में सीआरपीएफ बटालियन मुख्यालय (हेडक्वार्टर्स) के खिलाफ आन्दोलन : पूर्वी सिंहभूम जिले के मुसाबनी में सीआरपीएफ बटालियन मुख्यालय, काउण्टर इंसर्जेन्सी ट्रेनिंग सेंटर, पुलिस लाइन और आधुनिक बाजार निर्माण के लिए 165 एकड़ जमीन को कब्जा करने के खिलाफ जनता लड़ रही है।

दण्डकारण्य में विस्थापन के खिलाफ आन्दोलन

लोहंडी गुड़ा आन्दोलन : लोहंडी गुड़ा गांव और आस-पास के 10 गांवों की जनता विस्थपित करने वाली टाटा स्टील कंपनी के खिलाफ जनता लम्बे समय से आन्दोलन कर रही है।

भांसी के पास 4 गांवों को उजाड़ने वाला एस्सार स्टील प्लांट के खिलाफ आन्देलन के जरिए जनता उसे रोक दी है।

बोधघाट आन्दोलन : दण्डकारण्य के इंद्रावती नदी पर सरकार द्वारा 1970 के दशक से ही प्रस्तावित बोधघाट जलविद्युत परियोजना से विस्थपित होने वाली जनता द्वारा बोधघाट संघर्ष समिति के नाम से जन आन्दोलन को चलाया

जा रहा है। सरकार पुलिस बलों को उकसाकर दमन चालू की। इस आन्दोलन में आगे बढ़ कर नेतृत्व करने वाले हर्राकोड़ेर निवासी रामसिंह कश्यप को पुलिस द्वारा बेरहमी से पिटाई किये जाने के कारण घायल होकर उन्होंने कुछ दिनों के बाद ही आखरी सांस त्याग दी। इसके बावजूद जनता निडर होकर इस बांध को रोकने के लिए कई जगहों पर रैली निकाली। अविभक्त मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल सहित कई जगह घूमकर उन्होंने अनगिनत अधिकारियों को अर्जी दी। सामाजिक वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों और जनवादियों ने इस आन्दोलन का दृढ़ समर्थन किया। इसी वजह से 1994 में सरकार इस परियोजना से पीछे हटने को मजबूर हुई।

इस परियोजना से बस्तर, बीजापुर, दंतेवाड़ा और नारायणपुर जिलों के सीमा इलाके में लोहंडी गुड़ा, बीजापुर और नारायणपुर ब्लॉकों के कम-से-कम 100 गांव प्रभावित होंगे। लगभग 70 हजार जनसंख्या इस परियोजना से प्रभावित होती है। 13,750 हेक्टेयर कृषि प्रधान जमीन डूब जाती है। 9,309 हेक्टेयर क्षेत्रफल में जंगल भी डूब जाएगा- यह बात सरकार ही बता रही है। बस्तर के नयागरा के रूप में प्रसिद्ध 'चित्रकोट जलप्रपात' भी क्रमशः डूबकर गायब हो जाएगा।

दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्गों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कई हितों को पूरा करने वाली इस परियोजना को फिर से शुरू करने के लिए सरकार तैयार हो गयी है- इसके खिलाफ जनता भी फिर से संघर्ष शुरू की है और उसे रोक रही है। हमारी पार्टी की मदद से जनता और जनवादियों के प्रयासों से गठित 'बोधघाट बचाओ जन विकास मंच' के नेतृत्व में जनता संघर्ष कर रही है। इस संघर्ष को कुचलने के लिए पुलिस अधिकारी लोग संघर्षरत जनता को गांवों से थाना बुलाकर या गिरफ्तार कर खुले तौर पर ऐसा डरा-धमका रहे हैं कि सरकार द्वारा दिया जाने वाला मुआवजा लेकर गांव और जमीन को छोड़ने के लिए राजी होना होगा और बात नहीं सुनने वालों को जबरदस्त भगाया जाएगा। लेकिन इस इलाके की जनता 'जान देंगे पर बोधघाट बांध बनाने नहीं देंगे' नारा बुलन्द करते हुए संघर्ष जारी रखी है।

रावघाट आन्दोलन- राज्य सरकार द्वारा नारायणपुर से 25 कि.मी. दूर में स्थित अधिक गुणवत्ता वाला रावघाट लोहा खदानों को निजीकरण करते हुए स्टील ऑथोरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सैल) द्वारा घोषणा की गयी है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हवाले किया जा रहा है। इसके कारण 3,278 हेक्टेयर जंगल पूरी तरह नष्ट हो जाएगा। नदियां और फसल भी बरबाद हो जाएगी। 23 गांवों की जनता विस्थापित हो जाएगी। इसके खिलाफ जनता लड़ रही है।

चारगांव आन्दोलन- रावघाट इलाके में ही चारगांव के नजदीक निजी कंपनी नेके जयस्वाल द्वारा खोले जाने वाले खदानों की वजह से चारगांव के साथ और 13 गांवों की आदिवासी जनता पर विस्थपना का खतरा मंडरा रहा है। इसके खिलाफ जनता लड़ रही है।

माड़ में भारतीय सेना के ट्रेनिंग स्कूल के खिलाफ आन्दोलन- छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा नारायणपुर जिला (माड़ क्षेत्र) में भारतीय सेना के ट्रेनिंग स्कूल निर्माण करने के नाम पर 750 वर्ग कि.मी. (1,85,250 एकड़) क्षेत्र को भारतीय सेना के हवाले कर दिया गया। इसके खिलाफ माड़ इलाके के आदिवासी 2011 से संघर्ष कर रहे हैं।

ऐसे ही कुव्वेमारी, बुधियारीमाड़, पल्लामाड़, आमदायमेट्टा, सूर्जागढ़ आदि जगहों में जनता को बड़े पैमाने पर विस्थापन कर पर्यावरण को भारी नुकसान करने वाली परियोजनाओं को जनता अपने जुझारूपूर्ण आन्दोलनों के जरिए रोक रही है।

एओबी में आन्दोलन

गंगावरम बंदरगाह के खिलाफ आन्दोलन- 2005 में आन्ध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम जिले में एक निजी कंपनी द्वारा प्रस्तावित गंगावरम बंदरगाह के खिलाफ जनता द्वारा जुझारूपूर्ण संघर्ष चलाया गया।

विशाखा बॉकसाइट के खिलाफ आन्दोलन- वर्ष 2006 में आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम जिले में 250 गांवों के आदिवासी जनता को विस्थापित करने वाला जिंदल कंपनी के प्रस्तावित खदान के खिलाफ हजारों जनता संगठित होकर खदान विरोधी संघर्ष कमेटी का गठन कर आन्दोलन शुरू की है। परम्परागत हथियारों से लैस विरोध प्रदर्शन, धरना, चक्का जाम, बंद आदि कार्यक्रम चलाया गया। सड़क बनाने आए पोक्लाइन को ध्वस्त किया गया। बॉक्साइट खदान को मदद देनेवाली विभिन्न राजनीतिक पार्टियों और जनप्रतिनिधियों को चुनौती दे रही है। लोकसभा, विधानसभा, मंडल (ब्लॉक स्तर) और पंचायत चुनावों का बहिष्कार किया जा रहा है। इस आन्दोलन के तहत सरकारी बलों के खिलाफ लड़ने और जनता को रक्षा करने के लिए एक नया जन मिलिशिया संगठन का गठन किया गया है। जमीन और जंगल पर आदिवासियों को अधिकार प्रदान करने वाला 1/70 कानून लागू करने की मांग को लेकर वह लम्बे समय से आन्दोलन कर रहा है।

सोमपेटा आन्दोलन- 2010 में आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिलान्तर्गत सोमपेटा के पास 1,100 एकड़ धान की फसल वाली जमीन में प्रस्तावित थार्मल पावर प्लांट के लिए आधार शिला रखने का पर्यावरण सुरक्षा संगठन के नेतृत्व

में जनता द्वारा जुझारू रूप से प्रतिरोध किया गया। इस प्लांट के कारण 30 गांवों के दसियों हजार किसान और मछुवारे प्रभावित होंगे। जनप्रतिरोध के दौरान पुलिस द्वारा अंधाधुंध गोलीबारी में दो किसान मारे गए और 5 घायल हो गए। जनता के प्रतिरोध के कारण पावर प्लांट अस्थायी तौर पर रोक दिया गया।

देवमाली बॉक्साइट खदान के खिलाफ आन्दोलन- 2009 में ओड़िशा के कोरापुट जिला के पोट्टंगि ब्लॉक में स्थित देवमाली पहाड़ों पर इंडाल्को बॉक्साइट खदान के खिलाफ 'देवमाली सुरक्षा समिति' के नेतृत्व में जनता द्वारा आन्दोलन तेज किया गया है। खदान की वजह से इन पहाड़ों और उसके आस-पास 22 गांवों के 12 हजार जनता विस्थापित होगी।

माली बॉक्साइट खदान के खिलाफ आन्दोलन- कोरापुट जिला नन्दपुर क्षेत्र में स्थित माली पहाड़ों पर बॉक्साइट खुदाई के लिए सरकार और बहुराष्ट्रीय कंपनियां मिलकर प्रयास कर रही है, इसके खिलाफ जन आन्दोलन चरम पर है। इस आन्दोलन में सैकड़ों जनता एकजुट होकर परम्परागत हथियारों से लैस होकर प्रदर्शन कर रही है। वहां आने वाले खदान संबंधित गाड़ियों को आग के हवाले कर रही है। उसके दलालों की पिटाई कर रही है। सरकार और खदान के मालिक मिलकर कुछ गांवों की जनता को लालच देकर जनता में दरार पैदा करने के लिए की जाने वाली साजिशों का पलटवार करते हुए पुलिस बलों के साथ बहुसंख्यक जनता आमने-सामने लड़ाई में उतर रही है। आन्दोलन के लिए जनता की मदद को एवं युवाओं और महिलाओं को संगठनों में संगठित करते हुए पुलिस के हमलों का मुकाबला करने के लिए तैयार हो रही है।

चीनी मिट्टी के खदान के प्रस्तावों के खिलाफ मन्यम जनता की बगावत- पिछले 5-6 सालों से आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम जिला डुम्बरीगुड़ा मंडल कंड्रम पंचायत में स्थित चीनी मिट्टी की खुदाई की इजाजत के लिए 'ट्रांस वर्ल्ड सर्विसेस' नामक एक माइनिंग कंपनी गम्भीर प्रयास की। उसने कानूनी बाधा से पार पाने के लिए एक आदिवासी महिला का नाम इस्तेमाल किया। यह विषय 2011 में प्रकाश में आया और 10 मई को सरकारी अधिकारी द्वारा सराई गांव में प्रस्तावित 'झूठा जनमत संग्रह' के खिलाफ सैकड़ों आदिवासी महिला-पुरुष पार्टी और पीएलजीए के नेतृत्व में संगठित हो तीर-धनुष, तलवार, कुल्हाड़ी से लैस होकर उस गांव का घेराव किया। सड़कों की नाकेबंदी की गयी। उनके आक्रोश को देखकर अधिकारियों को अंतिम समय में वहां की प्रस्तावित बैठक को रद्द करना पड़ा। वहां पहुंचे स्थानीय विधायक सिवेरी सोमा, एमपी दन्नेराव को जनता ने घेरा। उनपर गोबर और पत्थर फेंका गया। एमपी किसी तरह जान बचाकर भागने में सफल हुआ। उसको एक कि.मी. तक महिलाओं ने खदेड़ा। इसके बाद सोमा की गाड़ी को जनता ने ध्वस्त कर दिया। जनता की मांग है कि एक निजी कंपनी को चीनी मिट्टी खुदाई के लिए दिए गए पट्टा (lease) को रद्द किया जाए। जनता पर पुलिस द्वारा मुकद्दमें दायर किये गये। इसके खिलाफ जनता भी घोषणा की कि चीनी मिट्टी के लिए किसी भी अधिकारी को या गिरफ्तारी के लिए किसी पुलिस को गांवों में घुसने नहीं दिया जाए। पुलिस मुकद्दमों के खिलाफ मन्यम बंद आयोजन किया गया। महिला, पुरुष और बाल-बच्चे भी अपने परम्परागत हथियारों से लैस होकर सड़कों की नाकेबंदी किये और अपने गांवों में कोई भी अपरिचित नये आदमी को घुसने से रोकने के लिए निगरानी लगा दिये। विशाखापट्टनम में परम्परागत हथियारों से लैस होकर एक बड़ी रैली का आयोजन किया गया।

काकरापल्ली आन्दोलन- 2011 में आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले काकरापल्ली गांव में थार्मल प्लांट लगाने के खिलाफ जनता द्वारा जुझारू संघर्ष शुरू किया गया। फरवरी में जन प्रदर्शन पर पुलिस द्वारा की गयी गोलीबारी में दो प्रदर्शनकारी मारे गए थे और 34 लोग घायल हुए थे। पुलिस के अत्याचारों की वजह से 34 झोपड़ियां और 14 एकड़ में लगी धान की फसल जल गई। पुलिस अत्याचारों के खिलाफ 1 मार्च को जिला बंद का आयोजन किया गया।

काकिनाड़ा सेज के खिलाफ आन्दोलन- आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिला मुख्यालय काकिनाड़ा के पास सेज के लिए 2006 में डरा-धमकाकर लगभग 8 हजार एकड़ जमीन को जबरदस्त अधिग्रहण करने के लिए सरकार उतर पड़ी। लेकिन विस्थापित जनता इसके खिलाफ जुझारू बगावत की। इसकी वजह से कुछ जमीन को छोड़कर लगभग अधिक जमीन जनता के अधिकार में ही रह गई। सेज मालिकाना के धमकियों से निडर होकर जनता आन्दोलन कर रही हैं। पुलिस द्वारा जनता के घरों पर हमला किये जाने पर जनता ने उसे जबरदस्त विरोध किया। मार्च 2007 में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं के नेतृत्व में प्रशासन द्वारा राहत के तहत निर्माण किये जा रहे कॉलोनियों को ध्वस्त कर, चारों ओर खड़ा किये गए खम्भों को गिरा दिया गया। 24 दिसम्बर 2008 में सैकड़ों पुलिस जमीन को कब्जा करने की कोशिश की, तो जनता द्वारा सामूहिक रूप से सेज के खिलाफ नारे लगाते हुए उसका विरोध किया गया। इसके बाद सरकार ऐसा सोच कर पीछे हटी कि 2009 की गर्मियों में चुनाव होगा, अगर काकिनाड़ा और एक नंदीग्राम हो जाने से मुश्किलें बढ़ जाएगी।

कोस्तल (costal) गलियारा के खिलाफ आन्दोलन- आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम से नेल्लूर तक समुद्रवर्ती इलाके में सरकार द्वारा 2006 से भारी उद्योगों का गलियारा बनाने के लिए प्रयास शुरू किया गया। नेल्लूर जिले में कृष्णापट्टनम बन्दरगाह, अल्ट्रा मेगा थार्मल विद्युत प्लांट, श्रीलंका के कपड़ा तैयार करने वाली कंपनी इफको किसान सेज,

प्रकाशम-गुंटूर जिले में युनाइटेड अरब एमिरेट्स के रस अल खैमा कंपनी द्वारा वाड़ारेवु-निजामपट्टनम बन्दरगाह संबंधित औद्योगिक गलियारा (वानपिक), प्रकाशम जिले में विमाश्रय, गुंटूर जिले में रसायनिक हब, कृष्णा जिले में थार्मल पावर प्लांट, माइटास के बन्दरगाह, पावर टेक कंपनी को स्थापित करने के लिए जबरदस्त जमीन अधिग्रहण हो रहा है। सरकार द्वारा श्रीकाकुलम, विजयनगरम, विशाखा जिलों में पावर गलियारा का 'विकास' करने के लिए श्रीकाकुलम में 6 पावर प्लांट, विजयनगरम में एक, विशाखा में 5 पावर प्लांट स्थापित किया जा रहा है। विशाखा जिले भीमुनिपट्टनम से पूर्वी गोदावरी जिले के काकिनाड़ा तक 10 गांवों के 604 वर्ग कि.मी. दायरे में एक लाख 50 हजार एकड़ में कोस्तल गलियारा चरण-1 के अंदर पेट्रोलियम, रसायन और पेट्रो रसायन के निवेश रीजियन को स्थापित कर रहे हैं। इसमें बन्दरगाह, रेल मार्ग, अंतरराष्ट्रीय विमाश्रय, हेलिपेड, एक्सप्रेस मार्ग, वैकल्पिक नौसैनिक बेस, औषधीय गलियारा, भारी औद्योगिक पार्क, आईटी पार्क, पेट्रो रसायन कॉमप्लेक्स, पेट्रोलियम शोधशाला (refinary), गैस सिरा (terminal) आदि को स्थापित करने की घोषणा की गयी है। इसके कारण अन्य कई नुकसानों के साथ प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जनता बड़े पैमाने पर विस्थापित हो जाती है और आजीविका को खो देती है। श्रीकाकुलम जिले में नागार्जुन एग्रीकेम के कीटनाशक दवाई उद्योग, स्मार्टकेम के रसायन औषधीय उद्योग, अरबिन्दो फार्मा, रेड्डीस लैब, आंध्रा ऑर्गेनिक्स, नागार्जुन और पूर्वी समुद्रवर्ती औद्योगिक गलियारा, विजयनगरम जिले में वीरा लैब, बीचकांड खदान के लिए जमीन अधिग्रहण शुरू होकर कई उद्योग भी स्थापित किया गया। कुल मिलाकर 49.50 लाख एकड़ जमीन को जबरदस्त अधिग्रहण किया गया। इन भारी परियोजनाओं के खिलाफ जनता जोरदार आन्दोलन कर रही है। दलाल शासक वर्ग जनता के हितों को परवाह न कर, इस जबरदस्त विनाशकारी विकास को जनता पर थोपने के खिलाफ कई जगहों पर अभी भी जनता द्वारा आन्दोलन चलाया जा रहा है।

ओड़िशा में विस्थापित जनता के आन्दोलन

कलिंग नगर आन्दोलन- वर्ष 2006 में ओड़िशा के जाजपुर जिलान्तर्गत कलिंग नगर के पास टाटा स्टील द्वारा एक बड़ा स्टील प्लांट 2,500 एकड़ में निर्माण करने का प्रस्ताव रखा गया। 15 हजार जनता को विस्थापित करने वाला इस प्लांट के खिलाफ जनता जुझारू संघर्ष किया था। आंदोलनकारियों पर 1 जनवरी को पुलिस द्वारा अंधाधूंध गोलीबारी करने से एक नाबालिग लड़का, तीन महिला सहित 14 आदिवासी जनता मारे गए। इनमें से कइयों को पुलिस द्वारा पकड़कर यातनाएं देकर हत्या की गयी। हथेलियों को काट कर लाशों के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया।

नियमगिरि में वेदांता कंपनी द्वारा प्रस्तावित बॉक्साइट खदान के खिलाफ आन्दोलन- नियमगिरि पहाड़ों में बॉक्साइट खदान खोलने के खिलाफ वहां के आदिवासी जनता नियमगिरि सुरक्षा समिति और लोक संग्राम मंच के नेतृत्व में दस साल से ज्यादा समय से ही लड़ रही है। देश-दुनिया में कई जनवादियों, आदिवासी हितैषी इसकी मदद में आन्दोलन चलाए थे। जबरदस्त जनप्रतिवाद-प्रतिरोध के कारण अभी तक इस खदान को वेदांता कंपनी ने खोल नहीं पाया। जनमत संग्रह कर जनता की मत को लागू करने का उच्चतम न्यायालय का फैसला आने के बाद भी केन्द्र और राज्य सरकार केवल दिखावे के तौर पर उस फैसला को लागू किया। इसलिए जनता अपना संघर्ष को और तेज करने के लिए संगठित हो रही है।

ओड़िशा के दक्षिणी और पश्चिमी इलाकों में लौह अयस्क, अल्युमिनियम, बिजली, सड़क और रेल मार्ग, खदान जैसे कई परियोजनाओं को लागू करने के लिए उतरने वाले पोस्को, आरसेल्लर, मित्तल, टिस्को, वेदांता, आदित्य बिड़ला जैसे निजी संस्थानों के खिलाफ, उससे समझौता (MoU) करने वाली नवीन पट्नायक सरकार के खिलाफ विस्थापित होने वाली जनता विभिन्न संगठनों के नेतृत्व में लड़ रही है। ये संघर्ष दिन-ब-दिन जुझारू रूप लेता जा रहा है। इसके कारण कई एमओयू रुके हुए हैं। बलियोपाल में प्रक्षेपास्त्र प्रयोगशाला का निर्माण रुक गया है। गंधमार्दन में बॉक्साइट खुदाई के खिलाफ लड़कर जनता उसे रोकवा दी है। चिलका सरोवर में झींगा मछली कंपनी के निर्माण कार्य को रोक दिया गया। गोपालपुर में टाटा स्टील उद्योग के निर्माण कार्य को रोक दिया गया। लांजीगढ़, लोयर सुकतेल, तालचेर, कोंजेर, हीराकुद, कटक, भुवनेश्वर, पूरी में भी जनता विस्थापन के खिलाफ संघर्ष कर रही है। सैकड़ों अर्द्धसैनिक बलों के पहरा के बीच ही जनता आन्दोलन चला रही है। ये विभिन्न रूपों में जारी है। संभावित जगहों पर कानूनी रूपों और जहां कानून धनी लोगों का पक्ष लिया हो, विस्थापित जनता के खिलाफ पाबंदियां लगा दी हो वहां गैर-कानूनी ढंग से जनता लड़ रही है। लौह अयस्क और बॉकसाइट की खुदाई रोकने के लिए उच्चतम न्यायालय द्वारा रोक लगा दिया गया। दीवार बनाकर हीराकुद से पानी ले जाना रोक दिया गया। अस्पताल निर्माण के नाम पर टाटा कंपनी की घुसपैठ के प्रयास को रोक दिया गया है। सड़कों को जाम कर दिया गया, धरना और बंद आयोजन किया गया। ग्रामसभा का आयोजन कर जनता को एकजुट किया गया। सशस्त्र प्रतिरोध के लिए जनता का प्रशिक्षण शिविर चलाया गया। जंगल और मैदानों में जनता गोलबंद होकर राज्य सरकार के खिलाफ लड़ रही है। जन संगठन, जनवादी और पर्यावरण की रक्षा हेतु लड़ने वाली शक्तियां जनता को संगठित करने में अपनी भूमिका निभा रही है। इन्हें सभी तबकों की जनता

से मदद मिल रही है। इन्हें और उन्नत स्तर तक ले जाने का कर्तव्य हमारे सामने है।

तेलंगाना में आन्दोलन

पोलावरम मेगा बांध या परियोजना के खिलाफ ओन्दोलन- आंध्र प्रदेश और तेलंगाना सीमा से लगे गोदावरी नदी पर प्रस्तावित पोलवावरम मेगा बांध के कारण इस इलाके में 400 गांव डूब जाएंगे, जिनमें छत्तीसगढ़ के 50 गांव और ओड़िशा के 50 गांव भी शामिल हैं। इस भारी परियोजना के खिलाफ पिछले दस सालों से जनता, खासकर तेलंगाना की जनता और आदिवासी संगठन कई आन्दोलनों को चला रहा है। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना सीमा पर डूबने वाले 400 गांव असल में तेलंगाना के खम्मम जिला के हैं, लेकिन लम्बे जन आन्दोलन के परिणामस्वरूप भारतीय संविधान में प्रदत आदिवासी अधिकारों का उल्लंघन करते हुए उनका कल्याण, उनकी आकांक्षाओं और जन्मसिद्ध अधिकार स्वायत्तता के पूरा खिलाफ में उन गांवों को ब्राह्मणवादी हिंदू फासीवादी मोदी सरकार द्वारा आंध्र प्रदेश में मिला दिया गया। इसके खिलाफ हमारी पार्टी सहित कई पार्टियां, जन संगठन, आदिवासी हितैषी लोग एकजुट होकर चलाए गए राज्य व्यापी बंद सहित कई तरह के विरोध प्रदर्शन, भूख हड़ताल आदि आन्दोलनों से तेलंगाना उथल-पुथल हो गया।

पोलावरम बांध निर्माण का विरोध आदिवासियों, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के क्रांतिकारी एवं जनवादी शक्यिों, प्रगतिशील पर्यावरणवादियों, मानव वैज्ञानिक, इंजीनियर, विशेषज्ञ आदि कर रहे हैं। विशाखा-नेल्लूर औद्योगिक गलियारा निर्माण के द्वारा मिलने वाले भ्रष्ट पैसे के कारण, इस गलियारा में लगाने वाले रियल इस्टेट व्यापार के कारण, बे-रोकटोक होने वाले भ्रष्टाचार के कारण, इससे इतना मुनाफा पाते है कि कल्पना भी नहीं कर सकते-उस तरह का मुनाफा पाने के लिए देशी-विदेशी कॉरपोरेट कंपनियों, आंध्रा-रायलसीमा के स्थानीय पूंजीपतियों, जमीन्दारों, बड़े माफिया, राजनेताओं, बड़े ठेकेदारों के अलावे इस बहुविनाशक बांध या परियोजना को कोई समर्थन नहीं करेगा। इस बांध के बारे में कई विशेषज्ञ ऐसे चेतावनी दे रखे थे कि इस बांध बाढ़ के उफान से तबाह होने का खतरा है, यह पूर्वी घाटियों में भीषण मानव त्रासदी की ओर धकेल देता है। अगर इसका निर्माण होता है तो किस तरह का खतरा होगा, इसके बारे में वे कई वैज्ञानिक सबूतों और तथ्यों को सामने रख चुके हैं। इस बांध के निर्माण की वजह से मुख्य रूप से तेलंगाना की जनता, खासकर विस्थापित होने वाले लाखों आदिवासी जनता ही शिकार होगी। यह एक सांस्कृतिक त्रासदी के अलावा और कुछ नहीं है। क्योंकि इस बांध के कारण वहां के जमीन और जंगल पर आधारित होकर जीवनयापन करने वाले तीन लाख से ज्यादा कोया, कोण्डारेड्डी (एसटी) आदि अनुसूचित जनजाति और कई अन्य समुदाय अपने मूल निवास स्थलों से निर्दयतापूर्वक उजड़ जाएंगे।

पोलावरम बांध के खिलाफ आदिवासी संगठन व्यापक संयुक्त मोर्चा का गठन कर लड़ रहे हैं। आदिवासी जनता पूरी तरह इस आन्दोलन में कूद पड़ने के कारण अनिवार्य रूप से खम्मम जिले के बुर्जुआ और संशोधनवादी पार्टियां भी नाम के वास्ते इसका समर्थन कर रही हैं। यह संघर्ष दिनोंदिन मजबूत होता हुआ जुझारू रूप ले रहा है।

तेलंगाना में जनता के और कई जीवन-मरण एवं विस्थापन समस्याओं पर भी जन संगठन द्वारा संयुक्त मोर्चों का गठन कर कई ओन्दोलन चलाया जा रहा है। बाबली बांध पर बड़े पैमाने पर आन्दोलन चलाया गया। सिंगरेनी ओपन कास्ट खदान, बय्यारम इस्पात उद्योग को विशाखापट्टनम में ले जाने के खिलाफ, प्राकृतिक स्रोतों के बचाव के लिए, महबूब नगर के पानी की समस्या, सेज, हैदराबाद फ्री जोन, कव्वाल टाइगर जोन, बोदन शक्कर कारखाना का निजीकरण के खिलाफ, सिंगरेनी में बरखास्त मजदूरों की समस्याओं पर आन्दोलन जुझारू रूप से चलाया जा रहा है। उस्मानिया विश्वविद्यालय का मेस में बीफ (गोमांस) को मेमो में शामिल करने की मांग पर छात्रों द्वारा आन्दोलन चलाया गया। इसके तहत बीफ का त्योहार मनाया गया। इस राजनीतिक संघर्ष के जरिए छात्रों में, जनवादियों और अन्य जन समुदायों में अच्छी-खासी चर्चा को सामने लायी है। आदिवासियों को स्वायत्तता देने की मांग को लेकर आन्दोलन जारी है। तेलंगाना राज्य के लिए आन्दोलन सहित इन सभी आन्दोलनों में जनता सक्रिय रूप से भाग ली। इन आन्दोलनों में कई जन संगठन एवं संयुक्तमोर्चा न केवल संगठित हुआ, इससे नयी शक्तियां भी पटल पर आयी।

महाराष्ट्र में आन्दोलन

महाराष्ट्र में जनता केन्द्र और राज्य सरकारों की विस्थापन नीतियों के खिलाफ जैतापुर जैसे कई आन्दोलन को जनता द्वारा चलाये गये। हमारे आन्दोलन के इलाके में उल्लेखनीय आन्दोलन के रूप में सामने आया है कोरची लौह प्रकल्प के खिलाफ आन्दोलन।

कोरची लौह प्रकल्प के खिलाफ आन्दोलन- गोन्दिया जिला में प्रस्तावित कोरची लौह प्रकल्प के खिलाफ कई जन संगठन के संयुक्त नेतृत्व में जनता ने जुझारू आन्दोलन चलाया। इसके कारण सरकार को इस लौह प्रकल्प के प्रस्ताव को रद्द करना पड़ा। इस आन्दोलन के दौरान हजारों किसान आदिवासी किसान-मजदूर संगठन में गोलबंद हो गये। एक नया जन मिलिशिया संगठन का भी गठन हुआ। इस आन्दोलन के तहत गठित संयुक्त मोर्चा के नेतृत्व में और कुछ जन समस्याओं पर जन आन्दोलन जारी है।

पर्यावरण समस्याओं पर आन्दोलन

बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर होने वाले माइनिंग की वजह से पर्यावरण नष्ट हो जाने और निचले इलाकों में आने वाले प्रदूषित लाल पानी के कारण बेकार होने वाले किसान अपनी फसल उगाने वाली जमीन को बचाने की मांग करते हुए 2014 में हजारों की तादाद में सड़क पर उतर कर आन्दोलन कर रहे हैं।

दण्डकारण्य में एनएमडीसी के बैलाडिला खदान के कारण प्रभावित जनता 'बैलाडिला खदान प्रभावित संघर्ष समिति' के नेतृत्व में संगठित होकर किरंदूल के एनएमडीसी कार्यालय का घेराव की। 50 से ज्यादा गांवों से हजारों जनता इसमें शामिल हुई। उन्होंने आरोप लगाया कि 'उस खदानों से नदियों में छोड़ने वाले रद्दी पदार्थों का नियंत्रण के बारे में अतीत में दिए गए आश्वासनों को मालिकों की तरफ से पूरा नहीं किया गया है।' 5 महीने पहले वे प्रदूषित पानी द्वारा प्रभावित जनता को पर्याप्त मुआवजा देने, बच्चों की शिक्षा, प्रभावित गांवों के बेरोजगारों को एनएमडीसी में नौकरी दिलाने, प्रभावित जनता को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करवाने के सहित पूरे 33 मांगों को लेकर यहीं पर उन्होंने विरोध प्रदर्शन किया। फिर से अपनी मांगों को नजरअंदाज करने से आन्दोलन को तेज करने की चेतावनी दी।

झारखण्ड के सराइकेला जिले में रामकृष्णा फोर्जिंग कंपनी के प्रदूषित पानी नदी में छोड़े जाने के खिलाफ जनता आन्दोलन कर रही है। मुडिया और बीरबांस पंचायतों के 8 गांवों के जनता ग्राम सुरक्षा समिति के नेतृत्व में आन्दोलन कर रही हैं।

जन प्रतिवाद-प्रतिरोध आन्दोलन

शोषक-शासक वर्गों और उनकी सरकारों द्वारा जब जन आन्दोलनों पर दमनचक्र चलाया जाता है, उसका मुकाबला करने के लिए जनता भी जब जन आन्दोलनों को और उच्चस्तर पर विकास करने के लिए तैयार हो जाती है, तब उन्हें हथियारबंद कर उसे और जुझारू तरीके से आगे बढ़ाना होगा एवं राजसत्ता को कब्जा करने की दिशा में उसे विकसित करना होगा। इसमें जन मिलिशिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। जन मिलिशिया का मतलब है क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में संगठित व्यापक जनता के हथियारबंद बल। कामरेड माओ ने कहा, 'सिर्फ संगठित हथियारबंद जनशक्ति द्वारा ही शोषणकारी व्यवस्था को उखाड़ फेंककर जनता की राजसत्ता को स्थापित की जा सकती है।' इसके आलोक में व्यापक जनता को हथियारबंद करने के लक्ष्य से हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए जन मिलिशिया का गठन व संगठित कर रही है। यह हमारी जनसेना में बुनियादी बल (Base Force) है।

जन आन्दोलनों के विकास के क्रम में दण्डकारण्य, बिहार-झारखण्ड, एओबी, ओड़िशा, पश्चिम बंग, तेलंगाना आदि राज्यों में क्रांतिकारी जन संगठन सहित आत्मरक्षा दल (सेल्फ डिफेंस स्क्वाड-एसडीएस), जन मिलिशिया दल (पीपुल्स मिलिशिया स्कवाड-पीएमएस), ग्राम रक्षा दल (जीआरडी), उसके बाद एरिया रक्षा दल (एआरडी) और व्यापक रूप से विकसित होते गए। जहां जनता की राजसत्ता के इकाइयों यानि क्रांतिकारी जन कमेटियों (आरपीसी) का गठन हुआ वहां मिलिशिया प्लाटून गठन किया जा रहा है। कुछ जगहों पर मिलिशिया कंपनी भी गठन की गयी है।

जन मिलिशिया पार्टी के नेतृत्व में कई गतिविधियों में व्यापक रूप में शामिल होती है। वह वर्ग संघर्ष में भाग ले रही है। जन प्रतिरोध का नेतृत्व कर रही है। दुश्मन के हमलों से जनता, जनता के जमीन, संपत्ति और फसलों को बचा रही है। जन संगठन को संगठित करने में मदद कर रही है। स्थानीय शोषक वर्गों की सत्ता को उखाड़ फेंककर उत्पीड़ित जनता की राजसत्ता को स्थापित करने में एक साधन के रूप में मदद कर रही है। जहां जनता की राजसत्ता की इकाइयां गठन होती हैं वहां उसे रक्षा करते हुए, बचाने का प्रयास कर रही है। जनता की राजसत्ता की इकाइयों की रक्षा इकाई के तौर पर उसके निर्णयों को अमल कर रही है। पार्टी निर्णय और जन अदालतों में जनता के फैसलों के अनुसार स्थानीय जन दुश्मनों, वर्ग दुश्मनों (जमीन्दारों, जन विरोधियों, अराजक शक्तियों), प्रतिक्रांतिकारियों, प्रतिक्रांतिकारी काले गिरोहों, श्वेत मिलिशिया (सलवा जुडूम, हर्माद वाहिनी आदि संगठन) को सजा दे रही है। पुलिस मुखबिरों और दुश्मन के दलालों को चिन्हित कर आरपीसी/जन संगठन के हवाले कर जन अदालतों के फैसले के अनुसार सजा दे रही है। प्रधान, द्वितीय बलों के साथ मिलकर युद्ध कार्रवाइयों में शामिल होने, इसके तहत बढ़ते जनयुद्ध के स्तर के अनुरूप मिलिशिया अपनी लड़ाकू क्षमता बढ़ाते हुए स्वतंत्र रूप से विभिन्न किस्म के गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों को (एम्बुश, रेड, पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के कैंपों पर गोलीबारी करना) अंजाम दे रही है। पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों को हैरान-परेशान करने, धोखा देने, चोट पहुंचाने की कार्रवाई करते हुए मौका मिलते ही दुश्मन का सफाया कर हथियार जब्त करती है। गांवों पर हमले के लिए आने वाली सशस्त्र पुलिस बल और प्रतिक्रांतिकारी हत्यारे गिरोहों को कदम-कदम पर रोकने के लिए हजारों जनता को गोलबंद कर हजारों बूबीट्रैप और परम्परागत ट्रैप लगाती है। जनता की सेवा करने की सोच रखते हुए उत्पादन को बढ़ाने के कार्यक्रम, जन कल्याण के कार्यक्रमों में आगे रहती है। गांव के युवक-युवतियों को सैनिक प्रशिक्षण दे रही है। प्रधान और द्वितीय बलों को सभी तरह का सहयोग दे रही है (सामान

पहुंचाना, युद्ध में घायल जनयोद्धाओं को सुरक्षित इलाकों में पहुंचाना आदि)। प्रधान और द्वितीय बलों के लिए, जनसत्ता की इकाइयों के लिए दुश्मन की खुफिया जानकारी को इकट्ठा करती है। प्रधान और द्वितीय बलों से संबंधित तथा पार्टी और जनसत्ता इकाइयों से संबंधित गुप्त सूचना दुश्मन तक नहीं पहुंचने हेतु चौकसी बरतती है। गांवों में, पार्टी और पीएलजीए के कैंपों में संतरी ड्यूटी करती है। सभी बंद और प्रतिरोध कार्यवाहियों में भाग लेती है। सड़क और कम्युनि-केशन (सेल फोन टावर) को ध्वस्त करते हुए लुटेरे वर्गों को नुकसान करती है। दुश्मन की गतिविधियों को रोकती है। दुश्मन की सप्लाई को रोकती है और जब्त करती है। जनसत्ता की इकाइयों के निर्णयों के अनुसार छापामार आधार क्षेत्रों में जनता की सुरक्षा करने का जिम्मा निभाती है। जन दुश्मनों पर, प्रतिक्रांतिकारियों पर निगरानी रखती है। प्रधान और द्वितीयक बलों में लगातार भर्ती के लिए यह एक स्रोत है। पिछले दस वर्षों की अवधि में दसियों से लेकर हजारों संख्या तक जन मिलिशिया एकजुट होकर विभिन्न गतिविधियों में भाग लेती है।

इसकी व्यापक गतिविधियों को देखकर जनमिलिशिया नाम सुनते ही पुलिस, अर्द्धसैनिक बल और लुटेरे शासक वर्ग कांपते हैं। इसलिए मिलिशिया को निशाना बनाकर बड़े पैमाने पर दमनकारी हमले चलाते हैं। इसके तहत कई वीर मिलिशिया प्लाटून कमांडर, मिलिशिया दल कमांडर, मिलिशिया सदस्य युद्ध क्षेत्र में वीरतापूर्ण ढंग से लड़ते हुए शहीद हुए हैं। सिद्धू-कान्हु मिलिशिया कमांडर कामरेड सिद्धु सोरेन, घेनुवां वाहिनी के कमांडर कामरेड सिंगन्ना आदि कई कामरेड इस तरह शहीद हुए हैं।

क्रांतिकारी आन्दोलन का सफाया करने के लिए एलआईसी के तहत लुटेरे सरकार द्वारा सलवा जुडूम, सेन्द्रा, नागरिक सुरक्षा समिति, हर्माद वाहिनी जैसे कई प्रतिक्रांतिकारी हत्यारे गुटों, अभियानों और एसपीओ तंत्र को निर्माण कर उकसा रहे हैं। इसके खिलाफ जनता को जागरूक करते हुए, वर्ग दिशा और जनदिशा को दृढ़ता से अमल करते हुए पीएलजीए और जनमिलिशिया द्वारा इन प्रतिक्रांतिकारी गुटों का सामना किया जा रहा है। जनता को हथियारबंद कर जनमिलिशिया संगठनों में संगठित किया जा रहा है।

दण्डकारण्य में प्रतिक्रांतिकारी सलवा जुडूम अभियान 5 जून, 2005 को नेशनल पार्क एरिया के अंबेली गांव पर हमले से शुरू हुआ था। इस हमले में दण्डकारण्य आदिवासी किसान संगठन के 5 सदस्यों को पकड़कर गम्भीर यातनाएं दी गयी थी। 18 जून को सलवा जुडूम गुण्डों द्वारा इसी एरिया में ताड़मेंड्री गांव पर हमला कर जनता और जन संगठन के सदस्यों को सरेंडर होने, सलवा जुडूम में शामिल होने, नक्सलवादियों को गांवों में घुसने नहीं देने की धमकी देकर जन संगठन के दो सदस्यों को बेरहमी से पिटाई कर कुल्हाड़ियों से काट कर घायल कर दिया गया। यह समाचार सुनकर आस-पास के गांवों के जन मिलिशिया और पीएलजीए योद्धा एकजुट होकर उन गुण्डों पर जवाबी हमला किया गया, इससे वे दुम दबाकर भाग गये। इस तरह सलवा जुडूम का पहला हमला को जनता और पीएलजीए द्वारा मुहतोड़ जवाब दिया गया। इस हमले में बड़ी संख्या में आदिवासी मारे जाने, कुछ लोग लापता होने का दुष्प्रचार शासक वर्गों द्वारा किया गया। असल में एक भी व्यक्ति इसमें नहीं मरा है। इसके बाद भैरमगढ़ एरिया में माट्वाड़ा से हमले करने आ रहे 3 हजार सलवा जुडूम के गुण्डों को जन मिलिशिया ने 'कोत्रापाल' जन प्रतिरोध के जरिए मुहतोड़ जवाब दिया। जनता, खासकर महिला आगे में रहकर सलवा जुडूम के हमलों का हर जगह प्रतिरोध किया। सलवा जुडूम के कई क्रूर सरगानाओं और गुण्डों का सफाया किया गया। इसमें जन मिलिशिया की ही मुख्य भूमिका रही। सलवा जुडूम के गुण्डों और उसकी मदद में आने वाले सरकारी सशस्त्र बलों को कदम-कदम पर हैरान-परेशान करने वाली कार्रवाइयों को अंजाम देते हुए कई गुण्डों और पुलिस को घायल और सफाया किया गया। अकेले, जोड़ी-जोड़ी, और ग्रुप-ग्रुप में घूमने वाले गुण्डों और पुलिस पर परम्परागत हथियारों से कई हमले कर उन्हें सफाया किया और उनके हथियारों को जब्त कर पीएलजीए को सौंपा।

झारखण्ड में बाबूलाल मरांडी के नेतृत्व में हमारी पार्टी, पीएलजीए और केकेसी पर किये गये प्रतिक्रांतिकारी 'सेन्द्रा' (शिकार) हमलों को पार्टी और पीएलजीए के नेतृत्व में जनता द्वारा प्रतिरोध किया गया। दसियों की संख्या में सेन्द्रा के सरगाना और गुण्डों का सफाया किया गया। इस प्रतिरोध की वजह से बीजे, पश्चिम बंग के बीजेओ इलाकों में सेन्द्रा और नागरिक सुरक्षा समिति को हार का सामना करना पड़ा।

बिहार-झारखण्ड में प्रतिक्रांतिकारी, लुटेरी सरकार की देखरेख में संचालित सनलाइट सेना, रणवीर सेना जैसे निजी सेनाओं और टीपीसी, जेपीसी, जेजेएमपी, पीएलएफआई, एसपीएम जैसे सशस्त्र गिरोहों का गठन हुआ। बिहार में पहले से ही जमीन्दारों की सेनाओं से लोहा लेने के अनुभवों से लैस जनता और जन मिलिशिया द्वारा वर्ग दिशा और जनदिशा को ऊंचा उठाते हुए मध्य बिहार और पश्चिमी झारखण्ड में इन प्रतिक्रांतिकारी सशस्त्र गिरोहों और निजी सेनाओं के खिलाफ प्रतिरोध संघर्ष चलाया गया। इन प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों के हमलों में हमारी पार्टी के कई नेतृत्वकारी और कार्यकर्ता, पीएलजीए के कमांडर और योद्धा, केकेसी के नेतृत्वकारी और कार्यकर्ता और समर्थक शहीद हुए हैं। इन अमर शहीदों के दिखाए रास्ते पर दृढ़तापूर्वक खड़ा होकर ही जनता इन निजी सेनाओं का प्रतिरोध करने में सक्षम हुई

3यू (अब 2यू) में 2013-15 के बीच दुश्मन के भारी घेराव-दमन के बावजूद संघर्षशील जनता बहादूरी से मुकाबला कर रही है और पूरी पार्टी कतारों को आंखों की पुतली के समान रक्षा कर रही है। कई जगहों पर जनता ने पुलिसिया दमन का जुझारू प्रतिरोध की है। कई बार जनता के संगठित प्रतिरोध से भयभीत होकर पुलिस को भागना पड़ा है। इन शानदार लड़ाइयों के बाद क्रांतिकारी जनता व जनमिलिशिया में नया जज्बा व उत्साह का संचार हुआ है और यह भरोसा भी जगा है कि कम ताकत से भी दुश्मन पर चोट की जा सकती है और उसे पीछे हटने पर मजबूर किया जा सकता है एवं हराया जा सकता है। कुछ इलाके में जनमिलिशिया को गांव-गांव में जहां हमारा जनाधार मजबूत है वहां इसका पुनर्गठन करने, नया गठन करने व परम्परागत हथियार व जनता के सहयोग से उन्हें हथियारबन्द करने का प्रयास जारी है। वर्तमान में होने वाली कुछ लड़ाइयों में जनमिलिशिया ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। वर्तमान में जिला व एरिया स्तर पर कुछ संयुक्त मोर्चे के तहत कई जगहों में हजारों जनता को गोलबंद करते हुए जन आन्दोलन और विरोध प्रर्दशन संचालन किया जा रहा है। खासकर 2013 से 2015 के दौरान निचले स्तर और प्रखण्ड स्तर के कई जनगोलबंदी का कार्यक्रम, राजनीतिक वर्कशॉप, प्रचार व जन समस्याओं एवं अंधविश्वास का भण्डाफोड़ करने आदि मुद्दों को लेकर विभिन्न कार्यक्रम हुए हैं।

महिलाओं पर अत्याचार और पुलिस दमन के खिलाफ जन प्रतिरोध

एओबी के विशाखापट्टम जिले के वाकापल्ली और भल्लुगुड़ा गांव में कुव्वी आदिवासी महिलाओं पर आंध्र प्रदेश के ग्रेहाउण्ड्स कमांडो बलों द्वारा किए गए अत्याचारों के खिलाफ कई संघर्ष चलाये गये। ग्रेहाउण्ड्स बल अपने श्वेत आतंक अभियान के तहत अगस्त 2007 में वाकापल्ली गांव में 11 आदिवासी महिलाओं पर किए गए लैंगिक अत्याचारों के खिलाफ कई राज्यव्यापी जन आन्दोलन चलाया गया। आदिवासी महिला अपने ऊपर किए गए अत्याचारों के खिलाफ आक्रोशित होने के बावजूद पुलिस उच्च अधिकारी ऐसी व्याख्या करते हैं कि यह कूंबिंग रोकने के लिए नक्सलवादियों की साजिश है, सही समय पर उन महिलों की मेडिकल जांच नहीं करवाना, अभियुक्तों को कम-से-कम गिरफ्तार भी नहीं करना, दोषियों की पहचान करने की प्रक्रिया भी नहीं अपनाना, उन महिलाओं पर केस को वापस लेने की धमकियां देने, प्रलोभन देने से राज्य के जनता, जन संगठन और जनवादियों में तीव्र आक्रोश पैदा किया। पीड़ित महिलाएं दृढ़ता से खड़े होने, उन्हें कई जन संगठन, जनता द्वारा मदद मिलने और आन्दोलन चलाने की वजह से सरकार को अनुसूचित विभाग को जांच का आदेश देना पड़ा। वह अपनी जांच रिपोर्ट ऐसा बताया कि 'अत्याचार होने का सबूत है।' लेकिन सरकार उस रिपोर्ट को ठंडे बस्ते में डालकर सीआईडी की जांच के लिए आदेश जारी की। सीआईडी ने अत्याचार के आरोप को इंकार किया। इस पर आधारित होकर उच्च न्यायालय द्वारा मामले को रद्द कर दिया गया। लेकिन इतने में ही मामला नहीं रूका, विशाखापट्टनम जिले के पाड़ेरु न्यायालय द्वारा पीड़ित महिलाओं को ही नोटिस भेजी कि वे अपने आरोपों का सबूत दिखाना होगा, नहीं तो उनपर कार्रवाई होगी। इस तरह पुलिस, सरकारी उच्च अधिकारी और न्यायाधीश ही गैर-संवैधानिक तरीके से व्यवहार करने के जरिए भारतीय संविधान के शोषक वर्गीय चरित्र को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। अदालत उन दोषियों को निर्लज्जतापूर्वक छोड़ने के बावजूद जन अदालत में देने वाली सजा से उन्हें बचा नहीं सकते। वाकापल्ली की महिलाओं ने धीरज के साथ ऐसी घोषणा की कि अगर पुलिस अगली बार अपने गांव में घुसने से उन्हें जरूर सजा दिलाएगी। यही दोषियों के लिए असली सजा होगी। हम उनकी ऐसी लड़ाकू चेतना को ऊंचा उठाते हैं!

इसी तरह विशाखापट्टनम जिले मुंचंगिपुट्टु मंडल के भल्लुगुड़ा गांव पर मुंचंगिपुट्टु थाना प्रभारी के नेतृत्व में ग्रेहाउण्ड्स पुलिस हमला कर जबरदस्ती घरों में घुसकर पुरुषो एवं बाल-बच्चों को अपने नियंत्रण में लेकर 5 आदिवासी कुव्वी महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया। इसके खिलाफ जन संगठनों द्वारा कई आन्दोलन चलाये गये। इन सभी को नजरअंदाज करते हुए सबूत नहीं है कहकर सरकार द्वारा इस मामले को भी रफा-दफा कर केवल पीड़ित महिलाओं को दिखायी गयी। ये सारी घटनाएं ऐसी आवश्यकता को दर्शाता है कि शोषक-शासक वर्ग की सरकारों के वर्ग चरित्र को जनता के समक्ष पर्दाफाश करते हुए जनयुद्ध को और आगे बढ़ाकर ही पीड़ितों को उचित न्याय मिलेगा।

दण्डकारण्य में नवम्बर 2015 में बीजापुर जिले के बासागुड़ा और सारकेनगुड़ा पुलिस थाना और कैम्प के सीआरपीएफ बल द्वारा चलाया गया दमन अभियान के तहत छोटा गेल्लूर, बड़ा गेल्लूर, बोदेम आदि गांवों पर हमला कर जनता को बेरहमी से पिटाई की गयी। घरों में घुसकर सोना-चांदी के गहने और पैसा लूटने के साथ-साथ 15 साल की नाबालिग लड़की सहित चार महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया। इसके खिलाफ जनता बड़े पैमाने पर गोलबंद होकर बीजापुर जिला कलेक्टर और एसपी कार्यालयों का घेराव और विरोध प्रर्दशन की।

2012 में ओड़िशा के मलकानगिरि जिले के राल्लगड्डा गांव के सरकारी कॉफी प्लांटेशन की जमीन को जब्त किये जाने पर यह गांव पुलिस का निशाना बन गया। आन्दोलन के नेतृत्वकारी को गिरफ्तार करने के लिए गांव पर पुलिस आधी रात को हमला कर धुआंधार बम बरसायी। जनता परम्परागत हथियारों से पुलिस का प्रतिरोध की। काफी देर तक दोनों पक्षों के बीच संघर्ष में 8 गांववाले और 4 पुलिस घायल हो गए। अगले दिन पुलिस अत्याचार के खिलाफ

जनता अन्नावरम थाना का घेराव की।

2012 जून में दण्डकारण्य के बीजापुर जिले सारकेनगुड़ा में सीआरपीएफ द्वारा किए गए अंधाधुंध गोलीबारी में 19 आम जनता का नरसंहार किया गया। इसके खिलाफ देशव्यापी विरोध प्रदर्शन हुआ। इस सारकेनगुड़ा नरसंहार के दोषी पुलिस अधिकारियों को सजा देने की मांग करते हुए दण्डकाण्य के बस्तर जिला मुख्यालय जगदलपुर शहर में हजारों आदिवासी जनता विरोध प्रदर्शन की। इसी तरह बीजापुर जिला मुख्यालय में भी इस नरसंहार के खिलाफ चलाया गया विरोध प्रदर्शन में हजारों जनता भाग ली।

17 मई, 2013 को बीजापुर जिला गंगालूर थाना क्षेत्र में एड्समेट्टा गांव में सीआरपीएफ बलों द्वारा पाशविक तरीके से किया गया नरसंहार में तीन बच्चे सहित 8 ग्रामीण मारे गये। इसके विरोध में जनता, खासकर महिलाएं तीव्र आक्रोश के साथ गंगालूर थाना का घेराव की। पुलिस का पत्थराव की। इस घटना के दोषी पुलिस वालों को सजा देने की मांग की। सरकार द्वारा दिया जाने वाला मुआवजा को पीड़ित परिवारों ने ठुकरा दिया।

दण्डकारण्य में जनता और जन मिलिशिया बल बड़े पैमाने पर एकजुट होकर हथियार के साथ और निहत्थे भी प्रतिरोध के जरिए 2013-2014 में दुश्मन द्वारा बिठाये गए दो नए कैंप को हटाने के लिए मजबूर कर दिया गया। पहली घटना मिनपा कैंप की है जिसे मई 2013 में दण्डकारण्य के सुकमा जिला के चिंतागुफा इलाके में मिनपा गांव में सीआरपीएफ द्वारा एक नया कैंप बिठाया गया था। इसके खिलाफ सैकड़ों पीएलजीए योद्धा, हजारों जनता द्वारा चलाए गए 11 दिन के जुझारू सशस्त्र प्रतिरोध की वजह से उस कैंप को हटाना पड़ा। इस प्रतिरोध में सिलसिलेवार हुए हमलों में 5 सीआरपीएफ जवान मारे गए और 5 घायल हो गए। दूसरी घटना हर्राकोड़ेर कैंप की है। दण्डकारण्य के पूर्वी बस्तर डिविजन के एक गांव है हर्राकोड़ेर। यहां 2014 में सीआरपीएफ द्वारा एक कैंप लगाया गया था। इसके खिलाफ जनता खासकर निहत्थी महिलाएं एक नयी तरह का सामूहिक प्रतिरोध का रूप अपनाया। पुलिस का सामाजिक बहिष्कार किया और कैंप के निकट पेय जल की बोरिंग की चारों ओर बाल-बच्चों सहित डेरा डाल कर पुलिस को पानी वहां से नहीं लेने दिया। बस! और क्या था, दुश्मन इससे हर्राकोड़ेर गांव से सीआरपीएफ कैंप को हटाने के लिए मजबूर हो गया।

नवम्बर, 2014 में उत्तर बिहार के बंसहियां गांव के मुन्ना महतो ने एक नाबालिग लड़की की इज्जत लूटकर हत्या कर दी। इस घटना पर पुलिस की निष्क्रियता देखकर आक्रोशित क्रांतिकारी जनता ने पुलिस की गाड़ी को जला दी तथा कुछ पुलिस की मारपीट की और बंधक बना ली। वरिष्ठ पुलिस पदाधिकारी के अनुनय-विनय करने पर छोड़ा।

विभिन्न पार्टी कमेटियों द्वारा विभिन्न मौकों पर बंद, विरोध दिवस का आह्वान किया गया। इन मौकों पर और इससे अलग भी चलाए गए सैकड़ों विरोध कार्रवाइयों में वर्ग दुश्मनों के करोड़ों की संपत्ति को हमारे क्रांतिकारी जनता, जन मिलिशिया और पीएलजीए बलों द्वारा ध्वस्त किया गया।

तेलंगाना राज्य के लिए आन्दोलन सफल

60 सालों से जारी तेलंगाना राज्य के लिए तेलंगाना जनता का जुझारूपूर्ण संघर्ष सफल हुआ। केन्द्र सरकार ऐसी घोषणा करने के लिए मजबूर हो गयी कि तेलंगाना राज्य ही में हैदराबाद शहर होगा। तेलंगाना राज्य के गठन को रोकने के लिए आंध्र-रायलसीमा के नेतागण अंतिम क्षण तक तीव्र प्रयास किये। लेकिन उनकी कोई भी साजिश उसे रोक नहीं पाई। तेलंगाना राज्य का गठन पूरा तेलंगाना जनता की आन्दोलन की जीत है। कांग्रेस, टीडीपी, भाजपा, अन्य बुर्जुआ और संशोधनवादी पार्टियों की साजिशों का मुकाबला करते हुए तेलंगाना जनता एक महत्वपूर्ण जन आन्दोलन को चलाया। वे टीआरएस द्वारा अपनायी गयी चुनावी राजनीति से प्रभावित करने वाली कार्यनीति को परास्त करते हुए संघर्षशील राह पर आगे बढ़े। लम्बे समय तक दृढ़ता के साथ जनता द्वारा चलाई गई इस लड़ाई में शोषक-शासक वर्ग को अवश्य ही हार खाना पड़ा। दृढ़निश्चयता के साथ संगठित होकर अगर लड़े तो जनता किसी भी लक्ष्य को हासिल कर सकती है- यह इतिहास में और एक बार साबित हुआ।

जनता की आकांक्षा के रूप में तेलंगाना राज्य की मांग को हमारी पार्टी 1969 से ही समर्थन करते हुए इस आन्दोलन का नेतृत्व करती आयी है। 1996 से अंतिम चरण के आन्दोलन शुरू करने में हमारी पार्टी द्वारा किया गया प्रयास महत्वपूर्ण है। वरंगल में भारी आमसभा का आयोजन कर वरंगल घोषणा-पत्र का एलान किया गया। जनवादी तेलंगाना गठन के लिए पार्टी द्वारा जनता को लड़ने का आह्वान किया गया। इस आन्दोलन में कई छात्र और जनता के साथ हमारे पार्टी कार्यकर्ता भी सरकार के दमन में अपनी जान को न्योछावर किया। कई लोगों को जेलों में ठूंस दिया गया। पार्टी तेलंगाना राज्य गठन के लिए समझौताविहीन जुझारूपूर्ण संघर्ष को संचालन करते हुए अगली पंक्ति में खड़ी थी। कई जटिल परिस्थितियों में जन आन्दोलन का नेतृत्व की। कांग्रेस, टीडीपी, समुद्रवर्ती आंध्रा के बड़े पूजीपतियों के खिलाफ आन्दोलन चलायी। 610 जी.ओ. सहित, तेलंगाना के स्रोतों को आंध्रा-रायलसीमा के लुटेरों से बचाने का आह्वान की। तुरंत तेलंगाना राज्य की घोषणा करने की मांग को लेकर उस्मानिया, काकतीय विश्वविद्यालयों के छात्र

(शेष भाग पृष्ठ-117 में...)

शोषण व्यवस्था के विकल्प में अंकुरित होने वाली क्रांतिकारी जनसत्ता का निर्माण

हमारी एकताबद्ध पार्टी स्पष्ट की है कि दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन पर भारत में नव जनवादी क्रांति आगे बढ़ेगी। इसके अनुसार ''ग्रामीण क्षेत्रों में खासकर, सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में (जो क्षेत्र छापामार युद्ध, जनसेना और आधार इलाकों के निर्माण के लिए सबसे ज्यादा अनुकूल हों) सुनियोजित रूप से कृषि-क्रांतिकारी छापामार युद्ध के लिए जनता को जागृत और संगठित करना तथा छापामार युद्ध के जरिए जनसेना और ग्रामीण लाल आधार क्षेत्रों का निर्माण करना क्रांति के वर्तमान स्तर का बुनियादी, प्रधान और फौरी कार्यभार है।'' (भारतीय क्रांति की रणनीति और कार्यनीति, पृष्ठ-67, दूसरा परिच्छेद)।

हमारी एकता पार्टी गठन से पहले ही पूर्ववर्ती एमसीसीआई और पूर्ववर्ती पी. डब्ल्यू ऐसी एक निर्दिष्ट योजना के तहत काम कर रहे थे कि रणनीतिक इलाकों में गुरिल्ला जोनों को आधार इलाकों में परिवर्तन करने के लक्ष्य से छापामार आधार क्षेत्रों को निर्माण किया जाए। एकताबद्ध पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और सेन्ट्रल मिलिटरी कमिशन (सीएमसी) की पहली बैठक में ही छापामार आधार क्षेत्रों की स्थापना के लिए रणनीतिक इलाकों के गुरिल्ला जोनों में कुछ पॉकेट का चयन कर, निर्दिष्ट योजनानुसार, नेतृत्वकारी का केन्द्रीकरण करके काम शुरू करने का निर्णय लिया गया था। यानि पहले ही गुरिल्ला जोन के रूप में विकसित इलाकों में इस तरह के कुछ छापामार आधार क्षेत्रों को पहले विकसित करते हुए, एक-एक गुरिल्ला जोन में उस छापामार आधार क्षेत्र को केन्द्र में रखकर पार्टी, जनसेना और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा को और मजबूत करते हुए, पूरा गुरिल्ला जोन में छापामार आधार क्षेत्र को विस्तार करने, वैसा ही अन्य रणनीतिक इलाकों में कुछ लाल प्रतिरोध इलाकों को चयनित कर काम करने का परिप्रेक्ष्य को अपनाया गया था।

जहां शोषक-शासक वर्गों के अधिकार ध्वस्थ की गई, वहां क्रांतिकारी किसान कमेटियों का गठन के साथ, चाहे जनता की क्रांतिकारी सत्ता बीज रूप में ही हो, देश में पहली बार स्थापित की गई। खासकर, यह सिर्फ श्रीकाकुलम, सोनारपुर, कांकसा, बीरभूम में ही नहीं, बल्कि अन्य प्रांतों में भी स्पष्ट रूप से देखने को मिला। उस समय नक्सलबाड़ी राह पर उभरी अलग-अलग क्रांतिकारी आन्दोलनों तथा सोनारपुर व कांकसा के क्रांतिकारी किसान आन्दोलनों की फौरी लक्ष्य यही है।

इसके बाद हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस द्वारा ''दण्डकारण्य और बिहार-झारखण्ड में गुरिल्ला जोन को आधार इलाके में परिवर्तन करने'' का केन्द्रीय, प्रधान और फौरी कर्तव्य लिया गया था। इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए यानि आधार इलाकों की स्थापना के लिए हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस द्वारा ऐसा सूचित किया गया है कि देशभर में क्रांतिकारी आन्दोलन को नए इलाकों में विस्तार करते हुए सामंतवाद विरोधी, साम्राज्यवाद विरोधी वर्ग संघर्ष को तेज करने, लाल प्रतिरोध इलाकों को विकसित करने, लाल प्रतिरोध के विकसित इलाकों में गुरिल्ला युद्ध को विकसित करते हुए उसे गुरिल्ला जोनों के रूप में विकसित करने, गुरिल्ला जोनों में गुरिल्ला युद्ध को उन्नत स्तर में विकसित करते हुए उसे चलायमान युद्ध में परिवर्तन करने, पीएलजीए में गुणात्मक बदलाव लाते हुए उसे पीएलए में तब्दील करने, गुरिल्ला जोनों में कुछ अनुकूल पॉकेटों को चयनित कर उसे एरिया, जोनल/डिविजनल/जिला छापामार आधार क्षेत्रों के रूप में विकसित कर विस्तार करने के लिए क्रांतिकारी जन कमेटियों को स्थापित करने, उसे संगठित करने व विस्तार करने की प्रक्रिया को लागू करना होगा।

इन दस साल की अवधि में हमारी पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा एकजुट होकर पार्टी निर्धारित केन्द्रीय कर्तव्य को पूरा करने के लिए प्रयास करते आए थे। उस हद तक भारत में महान रणनीतिक महत्व रखने वाले कई विशाल इलाकों में जनयुद्ध कई धक्के खाते हुए, ज्वार-भाटा, कष्ट-तकलीफों, उतार-चढ़ावों और मोड़ों से गुजरते हुए, संगठित व विस्तार करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इसमें से कुछ इलाकों में क्रांतिकारी आन्दोलन पीछे हटने के बावजूद, और कुछ इलाकों में विस्तार हुआ है। कुछ इलाकों में सरकारी सशस्त्र बलों से घमासान लड़ाई लड़ते हुए दुश्मन के बलों का सफाया कर, हथियार जब्त करने तथा शोषक राजसत्ता को उखाड़ फेंककर जनता की राजसत्ता के इकाइयों का गठन करते हुए आगे बढ़ रहा है।

कामरेडो! आधार इलाकों की स्थापना के संबंध में हमारी पार्टी की दस्तावेज 'भारतीय क्रांति की रणनीति और कार्यनीति' से विभिन्न पहलुओं को लेकर संदर्भ अनुसार इस लेख में पहले दस पृष्ठ में विस्तार से उल्लेख किया गया है। पृष्ठ नंबर दिया गया है। देखें)

हमारी पार्टी द्वारा लिये गये केन्द्रीय कर्तव्य को व्यवहार में हम इस प्रकार अमल करते आ रहे हैं :

भारतीय जनता के कंधों पर चढ़कर उसे दबाने वाले तीन पहाड़- साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग को उखाड़ फेंककर जनता को शोषण से मुक्ति दिलाना, नव जनवादी व्यवस्था को स्थापित करते हुए समाज को सही विकास की दिशा में, समाजवाद से साम्यवाद की ओर ले जाना भारत की नव जनवादी क्रांति का लक्ष्य है। यह भारत के सर्वहारा वर्ग के अग्रणी दस्ता के रूप में हमारी पार्टी के नेतृत्व में कृषि क्रांति पर आधारित होकर आगे बढ़ती है। इसमें मजदूर वर्ग बहुत ही विश्वसनीय और मजबूत मित्र वर्ग किसान है। मजदूर-किसान एकता की बुनियाद पर चार मित्र वर्गों के साथ गठित होने वाले व्यापक नव जनवादी संयुक्त मोर्चा भारतीय क्रांति के तीन जादूई हथियारों में से एक है। जिस इलाके में यह मजबूत होता है वह इलाका आधार इलाके में विकसित होता है। सर्वहारा वर्ग की पार्टी अपने आपको बोल्शेवीकरण करते हुए एक जनयुद्धक पार्टी के रूप में फौलादी बनकर जनसेना और आधार इलाकों को जितना विकास कर पाती है उतना जनयुद्ध आगे बढ़ेगा और क्रांति जीत की ओर अग्रसर होगी।

''मुक्त क्षेत्रों की अनुपस्थिति में जारी छापामार युद्ध को अथवा छापामार क्षेत्र को आगे बढ़ाना असम्भव है । जनमुक्ति सेना को अपनी शक्तियों की रक्षा करने और उनका विस्तार करने के लिए तथा दुश्मन की शक्तियों को नष्ट करने के लिए मुक्त क्षेत्रों पर निर्भर रहना होगा । एक वाक्य में कहें तो, *''छापामार सेनाएं अपने रणनीतिक कार्यभारों को पूरा करने के लिए इन रणनीतिक आधारों पर निर्भर करती हैं ।''* मुक्त क्षेत्र छापामार सेनाओं के लिए पृष्ठभागीय क्षेत्रों का काम करते हैं । इसके अलावा, किसी क्षेत्र विशेष में जनता की जनवादी राजनीतिक सत्ता की स्थापना करने और वहाँ कृषि-क्रांति के कार्यभारों को व्यवहार में लागू करने के जरिए न सिर्फ यह संभव हो पायेगा कि देश के अन्यान्य भागों की जनता को भारी पैमाने पर उत्साहित किया जाए, बल्कि यह भी संभव होगा कि उनमें आत्मविश्वास का संचार किया जाए और सभी जगह संघर्ष के क्षेत्रों का निर्माण किया जाए। इस प्रकार इस कार्य को वास्तविक रूप देने के जरिए समूचे देश में क्रांति के एक ऊँचे उभार को आगे बढ़ाना व प्रसारित कर देना संभव होगा और इसी तरह नये-नये आधार क्षेत्रों के निर्माण की नींव डाली जा सकेगी तथा जनसेना और आधार क्षेत्रों को क्रमशः सुदृढ़ बनाया जा सकेगा एवं उनका विस्तार किया जा सकेगा । इस तरह हम शोषक-शासक वर्गों को भारी क्षति पहुंचाने, क्रांति की रफ्तार को तेज करने और क्रांतिकारी युद्ध को उसकी अंतिम विजय की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम होंगे।

चूँकि देश में चल रहे लोकयुद्ध में एक गुणात्मक छलांग लाने की दिशा में जनसेना और लाल आधार क्षेत्रों का निर्माण करना एक अपरिहार्य और अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम है।'' (पृष्ठ-67-68)।

भारत के ''विस्तीर्ण देहाती क्षेत्रों में जनसेना और आधार क्षेत्र की स्थापना करने'' (पृष्ठ-65, पहला परिच्छेद) के लक्ष्य से हमारी पार्टी ''पहले अपने ग्रामीण कार्यों की शुरुआत करने के लिए रणनीतिक क्षेत्रों का चयन'' (पृष्ठ-68, अंतिम परिच्छेद) की है। पार्टी पहले से ही ''रणनीतिक क्षेत्रों को अवश्य ही पहली प्राथमिकता'' (पृष्ठ-69, दूसरा परिच्छेद) दे रही है। पार्टी और पीएलजीए द्वारा लाल प्रतिरोध इलाकों, ''छापामार क्षेत्रों और छापामार युद्ध को विकसित करने के साथ-साथ'' (पृष्ठ-67, तीसरा परिच्छेद) हमारी पार्टी और पीएलजीए ''रणनीतिक क्षेत्रों में अपनी शक्तियों को केन्द्रित करने'' के सिद्धांत पर काम कर रहे हैं। पार्टी ''इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य के साथ तालमेल कायम करते हुए ही अन्यान्य क्षेत्रों के सारे कार्यों को'' चला रही है। विभिन्न इलाकों के निर्दिष्ट आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक परिस्थितियों पर, जनता की चेतना पर, हमारे क्रांतिकारी आन्दोलन की स्थिति पर आधारित होकर संघर्ष और सांगठनिक रूपों एवं प्रधान नारों को चयनित कर रही है।

पार्टी द्वारा इन ''रणनीतिक क्षेत्रों में'' अन्यान्य ग्रामीण और शहरी इलाकों से, चाहे सीमित संख्या में ही हो ''पार्टी-कार्यकर्ताओं'' को, बलों को खासकर, ''तकनीशियनों, डॉक्टरों व अन्यान्य लोगों को'' एक योजना के तहत भेजने के लिए, ''उन्हें सैनिक साजो-सामान संबंधी सहयोग देने'' के लिए प्रयास की जा रही है। रणनीतिक क्षेत्रों के लिए ''एकजुटता आन्दोलन'' (पृष्ठ-66, अंतिम परिच्छेद), उस पर दुश्मन के बलों द्वारा चलाए जाने वाले घेराव-दमन, नरसंहार, अत्याचार और मानवाधिकार उल्लंघनों के खिलाफ जन प्रतिवाद-प्रतिरोध आन्दोलन खड़ा करने के लिए प्रयास की जा रही है। ''पूरी पार्टी केन्द्रीय एवं बुनियादी कार्य के इर्द-गिर्द गोलबंद'' कर रही है। ''देश के विभिन्न आन्दोलनों के बीच क्रांतिकारी संबंध, सहयोग और तालमेल कायम'' कर रही है। (पृष्ठ-67, पहला परिच्छेद)।

पार्टी और पीएलजीए द्वारा चयनित रणनीतिक क्षेत्रों में ''पहला महत्वपूर्ण कार्य सामाजिक जांच-पड़ताल'' किये जा रहे हैं। ''इसका मतलब वहां शोषण और उत्पीड़न के ठोस रूपों का पता लगाना, ठोस वर्ग-विश्लेषण करना अथवा क्षेत्र में वर्गीय संबंधों का पता लगाना और यह निर्णय लेना है कि हमारे दोस्त कौन हैं एवं हमारे दुश्मन कौन हैं, किनके साथ एकताबद्ध हुआ जाए एवं किन्हें अपने प्रहार का मुख्य निशाना बनाया जाए तथा उत्पीड़ित जनता को गोलबंद करने के लिए कौन-से मुद्दे उठाये जाएं। विभिन्न वर्गों खासकर, बुनियादी वर्गों के आर्थिक मुद्दों के अलावा हम जनता को गोलबंद करने के लिए मुख्य राजनीतिक मुद्दों की भी पहचान कर'' रहे हैं। ''दूसरा मुख्य कार्य वहां कामकाज शुरू करने के पहले जितना संभव हो उस क्षेत्र के धरातल का ठोस रूप से अध्ययन करना है।''

पार्टी द्वारा ''नेतृत्व को और पूरी पार्टी को भी, अपने समूचे कामकाज को परिप्रेक्ष्य क्षेत्रों के कामकाज से तालमेल रखते हुए संचालित करने के लिए तैयार'' करती आयी है। (पृष्ठ-69, तीसरा परिच्छेद)। नेतृत्व और पार्टी-कार्यकर्ताओं को उस इलाके में तैनात कर सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक और सैनिक तैयारियों के साथ सामग्रिक रणनीतिक योजना तय कर अमल करती आयी है। इस तरह पार्टी और पीएलजीए अपनी शक्ति के अनुसार एक योजना के मुताबिक पहले ''अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जहां कि सामंती शोषण अपने सबसे बुरे रूप में हैं, जहां सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अन्तरविरोध तीव्र होते जा रहे हैं, जहां कि वर्ग संघर्ष तीखा होता जा रहा है, जहां कि दुश्मन अपेक्षाकृत रूप से कमजोर है और जहां की भौगोलिक परिस्थितियाँ (पहाड़, पहाड़ियाँ, जंगल और दूसरे अनुकूल धरातल) छापामार युद्ध के संचालन के लिए ज्यादा अनुकूल हैं।'' (पृष्ठ-59, अंतिम परिच्छेद से)। इस तरह काम करते आए हैं।

''आम रूप से कहें तो, अनुकूल धरातल वाले इन सभी पिछड़े क्षेत्रों में बिल्कुल शुरू से ही संघर्ष के सशस्त्र रूपों को अपनाया जाना संभव है, क्योंकि यह समूचे नव जनवादी क्रांति के दौर में संघर्ष का प्रधान रूप है।'' इस सिद्धांत के अनुसार हमारी पार्टी ''समूची दिशा, हमारा समूचा ध्यान और ठोस योजना'' बनाती आयी। इसका मतलब यह है कि हमारे पार्टी और पीएलजीए द्वारा बिल्कुल शुरू से ही किसानों के बीच खासकर, गरीब व भूमिहीन किसानों के बीच सत्ता दखल की राजनीति का प्रचार करते'' आए हैं। (पृष्ठ-70, दूसरा परिच्छेद)। कृषि क्रांति के कार्यक्रम को विस्तृत रूप से प्रचार करते हुए ''बिल्कुल शुरू से ही हमें जनता को निम्न नारों के आधार पर गोलबंद करते'' हुए, *''जोतने वालों को जमीन'', ''किसान कमिटियों के हाथों सारी सत्ता'', ''जनता के हाथों में यदि सत्ता नहीं है, तो उसके पास कुछ भी नहीं है''* और *''यदि जनता के पास जनसेना नहीं है, तो उसके पास कुछ भी नहीं है।''* (पृष्ठ-70, तीसरा परिच्छेद) के केन्द्रीय नारों के तहत सामंतवाद विरोधी वर्ग संघर्षों में जनता को संगठित करते आए हैं। ''उत्पीड़ित जनता पर सर्वहारा (पार्टी) नेतृत्व को स्थापित करने पर बल देते'' हुए जनयुद्ध को विकास करते आए हैं।

''अपरोक्त नारों ... अनुसार'' हमारे पार्टी और पीएलजीए ''इन रणनीतिक क्षेत्रों में बिल्कुल शुरू से ही'' (पृष्ठ-70, अंतिम परिच्छेद) ''हथियारबंद संगठक के रूप में या सीधे दस्तों के रूप में'' ''गरीब व भूमिहीन किसानों के बीच'' ''गुप्त रूप से काम कर'' रहे हैं। ''हमारा मुख्य जोर इस बात पर होना चाहिए कि हम राजनीतिक रूप से सचेत और जुझारू तत्वों को, खासकर बुनियादी वर्गों के बीच से, भूमिगत किसान-संगठनों या कमिटियों में शामिल कर'' रहे हैं। (पृष्ठ-71, पहला परिच्छेद)।

गुप्त किसान-संगठनों या कमिटियों के साथ-साथ हम अवश्य ही, जहां भी परिस्थितियां इजाजत देती हों, किसानों के विस्तृत व खुले संगठनों का निर्माण भी कर रहे हैं। ''साम्राज्यवादी, दलाल नौकरशाह पूंजीवादी व सामंती शोषण के खिलाफ एवं राजसत्ता के खिलाफ सामने आ रहे मुद्दों पर जुझारू संघर्ष'' चला रहे हैं। (पृष्ठ-71, पहला परिच्छेद)। ''गुप्त व गैरकानूनी क्रियाकलापों से अवगत कराते'' हुए ''उसे इनके दौर से तपाया जा'' रहा है। (पृष्ठ-71, दूसरा परिच्छेद)। इसके विपरीत निर्माण करने वाले आन्दोलन जितना भी मजबूत हो वह ''निश्चित रूप से अर्थवाद और सुधारवाद में जा समाप्त हो जाएगा''- इस तरह की चेतना दे रहे हैं। (पृष्ठ-72, पहला परिच्छेद)। इसके लिए ''उनकी रोजमर्रे की समस्याओं के मुद्दे पर तथा साथ ही जमीन, जनवाद एवं जनता के लिए राजनीतिक सत्ता की बुनियादी मांगों के आधार पर भी उन्हें जुझारू संघर्षों में संगठित करते'' हुए, ''सशस्त्र कर'' रहे हैं। ''प्रचार, जांच-पड़ताल, संघर्ष और संगठन इन चारों पहलुओं के बीच के अन्तरसंबंधों को सही ढंग से'' समझते हुए अमल कर रहे हैं। ''इस प्रकार'' चयनित रणनीतिक क्षेत्रों में ''लाल प्रतिरोध संघर्ष और सामंतवाद को पूरी तरह उखाड़ फेंकने के संघर्ष शुरू कर'' ''विकसित कर'' रहे हैं। (पृष्ठ-70, दूसरा परिच्छेद)। इन सभी प्रयासों में ''हमारा प्रधान लक्ष्य ... यह ... कि राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने के लक्ष्य से छापामार युद्ध और दीर्घकालीन लोकयुद्ध के लिए जनता को जागृत और संगठित'' करना ''ग्रामीण क्षेत्रों में छापामार संघर्षों का विकास करने के लिए क्रांतिकारी सशस्त्र शक्तियों के एक अनन्त प्रवाह का सृजन'' करना। (पृष्ठ-72, पहला परिच्छेद)।

लेकिन सामंतवाद विरोधी और साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष को तेज करने के लिए, ''बिल्कुल शुरू से ही वह सशस्त्र रूप'' लेते हुए उसके अनुसार ''शुरू से ही किसानों के भूमिगत संगठन का निर्माण करने पर बल दे'' रहे हैं। ''किसानों के खुले संगठन'' कुछ भी हो ''भूमिगत किसान कमिटियों का निर्माण करने और जितनी जल्दी संभव हो, सशस्त्र छापामार इकाइयों का गठन करने की हमारी आम लाइन के मातहत'' रखते हुए निर्माण कर रहे हैं। (पृष्ठ-71, दूसरा परिच्छेद)।

''बिल्कुल शुरू से ही पार्टी और क्रांतिकारी किसान कमिटी को, हथियार उठाकर जमींदारों के प्रहारों का सामना करने और अपने संघर्षों की रक्षा करने हेतु आत्मरक्षा दस्तों का निर्माण करने के लिए, किसानों को शिक्षति कर'' रहे हैं। ''सामंतवाद-विरोधी, साम्राज्यवाद-विरोधी और राजसत्ता-विरोधी संघर्षों से निरंतर निकलकर सामने आ रहे जुझारू तत्वों को सशस्त्र करने की प्रक्रिया के दौर से ... छापामार युद्ध को तीव्र कर'' रहे हैं। पीएलजीए को मजबूत-विस्तृत

करने के लक्ष्य से ''ग्राम स्तरों पर आत्म रक्षा दलों, ग्राम रक्षा दलों और जनमिलिशिया का निर्माण करने'' मजबूत-विस्तृत करने के लिए, कुछ क्षेत्रों में और निर्दिष्ट रूप से ''एक सुनिश्चित व समयबद्ध योजना बनाकर'' अमल कर रहे हैं। ''मुख्य रूप से मजदूर वर्ग और निम्न मध्यम, गरीब व भूमिहीन किसानों के बीच से'' पार्टी और पीएलजीए में भर्ती कर रहे हैं। ''छात्रों, नौजवानों, महिलाओं और निम्न पूंजीवादी तबकों जैसे गौण व सहायक स्रोतों से भी भर्ती'' कर रहे हैं। (पृष्ठ-72-73, अंतिम परिच्छेद से)।

''लाल प्रतिरोध संघर्ष के दौर में ही'' पार्टी और पीएलजीए द्वारा ''न सिर्फ स्थानीय छापामार दस्तों, स्पेशल छापामार दस्तों और जन मिलिशिया का गठन'' (पृष्ठ-72, तीसरा परिच्छेद से) किया जा रहा है ''बल्कि, वर्ग-दुश्मनों अर्थात्, जमींदार वर्गों आदि से और पुलिस व अर्द्धसैनिक बलों से हथियार छीनकर जनता को'' (पृष्ठ-73, दूसरा परिचछेद से) हथियारबंद करते हुए, प्रशिक्षण दे रहे हैं।

''विभिन्न किस्म के क्रांतिकारी और जनवादी जन संगठनों का मसलन, छात्रों, नौजवानों, महिलाओं आदि के संगठनों का निर्माण करते'' हुए ''उनके क्रियाकलापों को सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी कार्यक्रमों के साथ समन्वित करने'' के लिए प्रयास कर रहे हैं। (पृष्ठ-73, अंतिम परिच्छेद)।

''लाल प्रतिरोध के चरण में संघर्ष एक के बाद एक लहरों की तरह आगे बढ़ेगा, अत: पार्टी'' और पीएलजीए ''को चाहिए कि वह सचेत रूप से एक संघर्ष से दूसरे संघर्ष के बीच के अन्तरालों को, संघर्ष के नतीजों को सुदृढ़ बनाने के लिए इस्तेमाल कर'' रहे हैं। ''यहां सुदृढ़ बनाने का मतलब यह है कि राजनीतिक सत्ता दखल करने की राजनीति से जनता को शिक्षित किया जाए, भूमिगत पार्टी-संगठनों, क्रांतिकारी किसान-संगठनों, क्रांतिकारी जन-संगठनों एवं ग्रामीण आत्मरक्षा दलों व किसानों के छापामार दस्तों को और भी मजबूत बनाया जाए, उन्हें यह महसूस कराया जाए कि आम शत्रु के खिलाफ और भी बहादुराना संघर्ष संचालित करने के लिए साम्राज्यवाद-विरोधी व सामंतवाद-विरोधी अन्यान्य तबकों के साथ एकता कायम करना आवश्यक है, सभी किस्म के संशोधनवाद के प्रभाव से उन्हें मुक्त करते हुए उनकी समाजवादी चेतना को आगे बढ़ाया जाए तथा जन संघर्षों के दौरान उभरकर सामने आ रहे जुझारू तत्वों को लेकर पार्टी का निर्माण किया जाए। किसी गांव में सिर्फ क्रांतिकारी वर्ग संघर्ष के तीव्र होने की प्रक्रिया के दौर से ही यह सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया आगे बढ़ाने'', ''उस गांव के आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक जीवन-क्षेत्रों पर से जमींदारों की गिरफ्त कमजोर'' होकर ''गांव की व्यापक जनता पर सर्वहारा वर्ग का दृढ़ नेतृत्व स्थापित हो'' रहा है।'' (पृष्ठ-74, दूसरा परिच्छेद)।

इस तरह पार्टी और पीएलजीए द्वारा लाल प्रतिरोध के विकसित क्षेत्रों को गुरिल्ला जोनों के रूप में विकसित करने के क्रम में केन्द्रीय नारा को 'जोतने वालों का ही जमीन-क्रांतिकारी जन कमेटियों के हाथों सारी सत्ता' के रूप में परिवर्तन करते हुए जनता के राजनीतिक सत्ता के भ्रूण रूप में क्रांतिकारी जन कमेटियों की नींव रख रहे हैं। गुरिल्ला जोनों में कुछ पॉकेटों को चुनकर उसे छापामार आधार क्षेत्रों के रूप में विकसित करने और उस पर केन्द्रीकरण कर काम करने के लिए पार्टी के नेतृत्व को एवं कार्यकर्ताओं को चुनना और वहां पीएलजीए बलों को तैनात करने, जनता को राजनीतिक रूप से गोलबंद व संगठित करने, छापामार युद्ध को उन्नत स्तर में विकसित करते हुए दुश्मन की राजसत्ता को ध्वस्त करते हुए, जनता की राजसत्ता को स्थापित करने की योजना तय करके इस दस साल की अवधि में एक हद तक सफल हुए हैं।

''छापामार क्षेत्रों में प्रधान रूप से राजनीतिक सत्ता के लिए शत्रु और हमारे बीच छीना-झपटी होती रहेगी।'' इसलिए जहां ''शत्रु की राजनीतिक सत्ता ध्वस्त'' किया गया है वहां ''जनता की राजनीतिक सत्ता का निर्माण'' कर रहे हैं।'' (पृष्ठ-75, अंतिम परिच्छेद से)। ''छापामार क्षेत्रों में अच्छे जनाधार और अनुकूल धरातल वाले रणनीतिक क्षेत्रों को छापामार आधारों में विकसित करने'' के लिए, ''संवेदनशील क्षेत्रों से दुश्मन को उखाड़ फेंकने, उसे उस क्षेत्र से खदेड़ देने और क्रांतिकारी शक्तियों को सुदृढ़ बनाने पर अपने को केंद्रित करने के जरिए छापामार युद्ध को और तेज करने'' के लिए प्रयास कर रहे हैं। ''ऐसे छापामार क्षेत्रों में'' पार्टी, ''पीएलजीए और जन राजनीतिक सत्ता को सृदृढ़ व शक्तिशाली बनाते'' हुए, ''छापामार क्षेत्र के बाकी इलाके में राजनीतिक सत्ता का विस्तार'' कर रहे हैं। (पृष्ठ-76, अंतिम परिच्छेद और पृष्ठ-77 पहला परिच्छेद से)। छापामार आधार क्षेत्रों में ..... नई राजनीतिक सत्ता स्थायी होते हुए, ''कृषि क्रांति को तेज करते हुए उत्पादन-संबंधों में बदलाव ला'' रहे हैं और '''जोतनेवालों को जमीन' के आधार पर जमीन का वितरण कर'' रहे हैं तथा ''कृषि के विकास के लिए जनता के बीच सहकारिता आंदोलन को प्रोत्साहित'' कर रहे हैं। ''नव जनवादी सत्ता के भ्रूण रूप को सुदृढ़ बना'' रहे हैं। इस तरह कुछ रणनीतिक क्षेत्रों में ''छापामार आधार के निर्माण'' करने के जरिए ''आधार क्षेत्र के निर्माण की प्रक्रिया में'' पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा द्वारा ''एक महत्वपूर्ण विकास'' हासिल किया गया। ''यह छापामार आधार के चारों ओर के क्षेत्रों की जनता पर जबर्दस्त प्रभाव डाल'' रहा है। ''इन्हें और भी ज्यादा व्यापक पैमाने पर लोकयुद्ध में भाग लेने के लिए प्रेरित कर'' रहा है। (पृष्ठ-78, दूसरा परिच्छेद से)।

''जिन मैदानी क्षेत्रों में धरातल कुछ अनुकूल है और जहां मजबूत जनाधार मौजूद है, वहां मौसम का इस्तेमाल करते हुए अस्थायी छापामार आधार विकसित'' करने के लिए पार्टी और पीएलजीए द्वारा प्रयास किया गया है। ''मैदानी क्षेत्रों में राजनीतिक सत्ता की स्थापना काफी अस्थायी होगी और वह लहरों की तरह होगी।'' इसके अनुरूप ही ''कुछ गांवों में जहां कि जनता की चेतना विकसित हुई है, राजनीतिक सत्ता के अंगों का निर्माण'' किया गया है। (पृष्ठ-78, तीसरा परिच्छेद से)। मैदानी इलाके के आन्दोलन पीछे हटने के साथ-साथ वहां के जनसत्ता की इकाइयां/छापामार आधार भी धक्का खाया, इसके बावजूद किसी-किसी समय में इसके द्वारा कुछ और नतीजे हासिल किये गये हैं।

हमारे पार्टी और पीएलजीए ''छापामार क्षेत्रों और उन क्षेत्रों में जहां कि मुक्त क्षेत्र के निर्माण के कार्यभार के साथ काम चल रहा है, हमें निम्नलिखित ठोस नारों के इर्द-गिर्द जनता को लामबंद करते हुए उसे संघर्ष में संगठित करना चाहिए। राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने की राजनीति के एक हिस्से के तौर पर क्रांतिकारी जन कमिटी (RPC) के माध्यम से ऐसा किया जा सकता है।''

1. सामंती प्राधिकार को उखाड़ फेकें, भूमिहीन तथा गरीब किसानों और खेतिहर मजदूरों के नेतृत्व में जनता की राजनीतिक सत्ता की स्थापना करें!
2. जमींदारों की जमीन, सरकारी जमीन और दूसरी शोषक संस्थाओं की जमीन पर कब्जा करके उसे गरीब-भूमिहीन किसानों में वितरित करें!
3. सशस्त्र जन मिलिशिया का निर्माण करें!
4. जमींदारों और सूदखोरों के कर्जो को वापस लौटाना और उन्हें सूद देना बंद करें!
5. सरकार को टैक्स, उपकर और लेवी देना बंद करें!
6. जंगलों पर आदिवासियों और मेहनतकश जनता का अधिकार है, साम्राज्यवादियों, दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों और बड़े ठेकेदारों द्वारा वन-संपदा की लूट-खसोट बंद करें!
7. कृषि व सहकारिता आंदोलन का विकास करें! उत्पादन बढ़ाएं और हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करें!

''उपरोक्त नारों के आधार पर'' किए गए ''राजनीतिक गोलबंदी के परिणामस्वरूप'' ''वर्ग संघर्ष'' सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध के रूप में तेज होता जा रहा है। ''मुक्त क्षेत्र स्थापित होने की परिस्थितियां परिपक्व होती जा रही है।'' (पृष्ठ-80 से)।

एक तरफ हमारी पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा द्वारा भारत की अर्द्धऔपनिवेशिक, अर्द्धसामंती व्यवस्था के वैकल्पिक क्रांतिकारी जन राजनीतिक सत्ता को भ्रूण रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके विपरीत भारत के शोषक-शासक वर्ग और उसकी राजनीतिक पार्टियों द्वारा बिना थके ऐसे दुष्प्रचार करने में जुटी हुई हैं कि ''माओवादी विकास विरोधी हैं'', ''माओवादियों को मिटाए बिना देश में विकास सम्भव नहीं होगा'', ''माओवादी पार्टी देश की आंतरिक सुरक्षा के मामले में सबसे बड़ा खतरा है।'' असल में इस देश के विकास के लिए उत्पीड़ित जनता को किस मार्ग को अपनाना होगा, अपनी गरीबी और दुख को दूर करना है तो या साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग के शोषण से उत्पीड़ित जनता को जनवाद और मुक्ति दिलाने के लिए इस देश के राज की व्यवस्था किस तरह होना चाहिए, उसे स्थापित करने का रास्ता क्या है, यह किस तरह की सरकार को जनता के सामने लायेगा- ये सब मौलिक सवाल हैं। हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा स्थापित किए जाने वाले क्रांतिकारी जन राजनीतिक सत्ता के बारे में ''क्रांतिकारी जन कमेटी के मूलभूत नियम और कार्य'' इस तरह बताया गया है :

''अर्द्ध-सामंती, अर्द्ध-औपनिवेशिक राज्य, उसकी राजनीति, अर्थव्यवस्था व संस्कृति को उखाड़ कर राजसत्ता को छीनना और नव जनवादी राज्य की स्थापना ही भारतीय क्रांति का केन्द्रीय कर्तव्य है। नई जनवादी क्रांति का लक्ष्य है इस नव जनवादी राज्य का राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था और उसकी संस्कृति को स्थापित करना। इस लक्ष्य को हासिल करने के द्वारा समूचे भारतीय समाज को विकसित करने के रास्ते खुल जाएंगे। जनता की गरीबी और दुख दूर होंगे।

उक्त केंद्रीय कर्तव्य को पूरा करने के लिए भारत की जनता को पहले जन सेना में संगठित होना होगा। युद्ध करते हुए भारतीय राज्य के प्रतिक्रांतिकारी सशस्त्र बलों के साथ-साथ पूरा राज्य-यंत्र को नष्ट करना होगा। उसकी जगह जनता का लोकतान्त्रिक राज्य को स्थापित करना होगा।

दीर्घकालीन लोकयुद्ध ही जनता की जनवादी क्रांति की लाइन है। विशाल ग्रामीण इलाके में आत्मनिर्भरशील आधार इलाके निर्माण के क्रम में, क्रांतिकारी जनता की सरकार अस्तित्व में आकर संगठित व विस्तार होते हुए, अंत में शहरों की मुक्ति होगी, देशभर में जनता की जनतांत्रिक क्रांति सफल होगी। जनता की सरकार बनेगी। देशभर में नव जनवादी राज्य स्थापित होगा। क्रांतिकारी जन कमेटियां अस्तित्व में आना, संगठित और विस्तार होना, वैसा ही देशभर में नव जनवादी क्रांति सफल होकर नव जनवादी राज्य स्थापित होना- यह सब एक दूसरे से संबंधित पहलू है। इसलिए क्रांतिकारी जन कमेटियां अपने आप संगठित होते हुए जनयुद्ध को विस्तार और विकास करने के लिए पूरी ताकत से काम करती हैं।

नव जनवादी राज्य द्वारा सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में मजदूर, किसान, निम्न पूंजीपति और राष्ट्रीय पूंजीपति- इन चार वर्गों का संयुक्त अधिनायकत्व चलाया जाता है। नव जनवादी क्रांति की जीत के लिए इन चार वर्गों के सयुंक्त मोर्चा अवश्य होना चाहिए। इन चार वर्गों के सयुंक्त मोर्चा सभी उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं, परेशानी झेलने वाले धार्मिक अल्पसंख्यकों और अन्यान्य सभी उत्पीड़ित सामाजिक तबकों को अपने इर्द-गिर्द एकत्र कर संघर्ष करेगा।

नव जनवादी सरकार व्यापक महेनतकश जनता के सभी प्रकार के हक-अधिकार और जनवाद की गारन्टी करेगी। वह हर समय जनता के हितों की रक्षा करेगी। निम्नलिखित अधिकारों का वादा करती है : 1) अभिव्यक्ति की आजादी (बोलने, लिखने व प्रेस की आजादी), 2) सभा करने का अधिकार, 3) संगठन बनाने का अधिकार, 4) हड़ताल, रैली-प्रदर्शन करने का अधिकार, 5) जहां इच्छा हो वहां बसने का अधिकार, 6) प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार, 7) स्वास्थ्य सुविधा पाने का अधिकार और 8) रोजगार पाने का अधिकार।

इस नव जनवादी राज्य के वास्ते वर्तमान में भ्रूण रूप में रहे क्रांतिकारी जन कमेटियों के सभी स्तर पर प्रतिनिधियों को कट्टर प्रतिक्रियावादियों के सिवाय 18 साल होने वाले सभी नागरिकों को चुनने, प्रतिनिधि के रूप में चुने जाने, चुने हुए प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार होगा।

नव जनवादी राज्य द्वारा जमींदारों और देवताओं के नाम पर रखी गई सभी जमीन को जब्त कर 'जोतने वाले को ही जमीन' के आधार पर गरीब, भूमिहीन किसानों और खेतिहर मजदूरों को वितरण करेगा। यह धनी किसानों की जमीन जब्त नहीं करेगा। सूदखोरों और व्यापारियों द्वारा किसानों की लूट को बंद करेगा। किसानों की पहलकदमी और क्षमता को प्रस्फुटित करेगा। सभी क्षेत्रों में सहकारी समितियों को बनाएगा। कृषि विकास के लिए काम करेगा। कृषि पर आधारित मजबूत औद्योगीकरण के लिए प्रयास करेगा।

साम्राज्यवादियों और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग के सभी कारखानों, बैंकों और अन्यान्य सभी प्रकार के व्यापारिक संस्थाओं को जब्त करेगा। साम्राज्यवादियों के सभी कर्जों को रद करेगा। साम्राज्यवादियों के साथ शोषणकारी सरकार द्वारा किए गए सभी समझौतों को रद करेगा। देश में साम्राज्यवादी संस्थान और बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा चलाए जाने वाले सभी प्रकार के नया औपनिवेशिक लूट पर रोक लगाएगा। उसकी प्रवेश पर पाबंदी लगाएगा। स्वावलंबी जन अर्थव्यवस्था का विकास करेगा।

बाकी निजी संपत्ति को जब्त नहीं करेगा। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के द्वारा चलाए जा रहे लघु उद्योग, मध्यम किस्म के उद्योग पर नियंत्रण रखेगा। सहकारी सगंठनों के जरिए कुटीर उद्योग, हस्तशिल्पों के विकास के लिए प्रयास करेगा।

यह राज्य देश की औद्योगिक अर्थव्यवस्था को विकास करने में पर्यावरण संतुलन को बचाता है।

नव जनवादी राज्य द्वारा सभी मजदूरों को एक दिन में आठ घंटे का काम और न्यूनतम वेतन लागू किया जाएगा। ठेका मजदूरी, बाल-श्रम को रद्द करेगा। समान काम के लिये समान वेतन के आधार पर महिला और पुरुष को एक ही तरह का वेतन निर्धारित करेगा। मजदूरों के सामाजिक सुरक्षा और कार्यस्थलों पर सुरक्षित परिस्थितियों को सुनिश्चित करेगा।

देश की रक्षा के लिए जनता को हथियारबंद करेगा।

जनता की जनतांत्रिक सरकार जनदिशा की बुनियाद पर प्रगतिशील और जनवादी न्याय व्यवस्था को लागू करेगा। इसके लिए विभिन्न स्तरों में जन अदालतों का गठन करेगा।

यह कबिलाई, जाति, धर्म, राष्ट्र, लिंग, भाषा, क्षेत्र, शिक्षा, पद एवं प्रतिष्ठा के आधार पर भेदभव नहीं रखेगा।

जाति भेदभाव, उच्च-नीच के जाति अंतर को खत्म करेगा। छुआछूत और पूरी जाति व्यवस्था को ही संपूर्ण रूप से खत्म करेगा। तब तक दलितों और सामाजिक उत्पीड़ित जातियों को सभी क्षेत्रों में विकास करने के लिए प्रयास करेगा एवं जरूरी विशेष योजनाओं को लेकर अमल करेगा।

महिलाओं के ऊपर हो रहे सभी तरह के भेदभाव को रद्द करने के लिए, पितृसत्ता को खत्म करने के लिए प्रयास करेगा। घरेलू काम से महिलाओं को बाहर निकाल कर सामाजिक उत्पादन, राजनीतिक, सैनिक, प्रशासनिक आदि कामों में शामिल करने के लिए कोशिश करेगा। संपत्ति पर समान अधिकार देगा। महिलाओं पर असमान कानूनों को तुरंत रद्द करेगा। वेश्यावृत्ति को प्रतिबंधित करेगा, इसमें लगी महिलाओं को इससे निकालकर उनका पुर्नवास की व्यवस्था करेगा।

महिला और पुरुषों के बीच विवाह परस्पर प्रेम और अनुमति के आधार पर होगा। बाल विवाह पर प्रतिबंध लगाया जाएगा। विधवा विवाह की मंजूरी होगी। महिलाओं को गर्भ गिराने का अधिकार होगा। बाल कल्याण पर सरकार विशेष ध्यान देगी।

पति-पत्नि दोनों की स्वीकृति से छोड़ चिट्ठी (तलाक) देगी। एक तरफ से मांगने पर जांच-पड़ताल करके ही तलाक की मंजूरी होगी। तलाक के बाद सामूहिक संपत्ति का दोनों में समान रूप से बंटवारा किया जाएगा। बाल-बच्चों के पालन-पोषण में होने वाले खर्च में पुरूष दो तिहाई और महिला एक तिहाई हिस्सा लेना होगा। संपत्ति पर लिए कर्ज की भरपाई पुरूष को करना होगा।

यह जन सरकार आदिवासी समाज के समग्र विकास के लिए स्वायत्तता सुनिश्चित करेगी। जंगल पर आदिवासी जनता को ही सभी अधिकार देगी। दलाल बड़े पूंजीपतियों, साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा इस इलाके की प्राकृतिक संपदा की लूट को बंद करेगी। उनकी भाषा, संस्कृति के विकास के लिए मदद देगी। उसके अनुरूप योजनाएं बनाएगी।

नई जनतांत्रिक सरकार उत्पीड़त राष्ट्रीयताओं और राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों को आत्मनिर्णय का अधिकार को चिन्हित करेगी। इन सभी स्वयत्तता वाले इलाके जनता की जनतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप होंगे, इसके साथ-साथ उस राष्ट्रीयता के बहुसंख्यक जनता की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करेगी। राष्ट्रीय अल्पसख्यंक लोग जहां रहेंगे उस इलाके के जनसभाओं और प्रतिनिधि सभाओं में अपनी अबादी के मुताबिक उनका पर्याप्त प्रतिनिधित्व रहेगा।

जनता की जनतांत्रिक सरकार सभी प्रकार की क्षेत्रीय असमानताओं को खत्म करेगी। पिछड़े इलाकों के विकास की कोशिश करेगी। जरूरत हो तो उन्हें क्षेत्रीय स्वायत्तता भी देगी।

राज्य व सरकार का चरित्र धर्म निरपेक्ष होगा। धर्म व्यक्तिगत विषय होगा। अपना धर्म ही बड़ा है के विचार से लोगों को लालच दिखाकर और धमकाकर अपने पक्ष में करने के जनविरोधी तरीकों में धर्म विस्तार करने की कोशिशों पर रोक लगाएगी। सभी प्रकार की धार्मिक कठमुल्लावाद का विरोध करेगा। धर्मांधता का विरोध करेगा।

पितृसत्ता, पुरुष प्रधानता, लिंग-भेद, जाति और रंग-भेद, हिंदु धर्मांधता, धार्मिक कठमुल्लावाद, बेकार पश्चिमी संस्कृति के लिए जिम्मेवार अर्द्ध सामंती-अर्द्ध औपनिवेशिक संस्कृति के साथ-साथ साम्राज्यवादी संस्कृति को कुल मिलाकर उस लूटेरे सोच को उखाड़ फेंक कर उसकी जगह एक नई संस्कृति, यानि वैज्ञानिक और जनवादी सस्कृति को स्थापित करना नव जनवादी सरकार का कर्तव्य होगा।

वर्तमान सामंतवाद और साम्राज्यवाद परस्त गुलामी शिक्षा प्रणाली को खत्म करेगी। उसकी जगह एक वैज्ञानिक जनतान्त्रिक-समाजवादी शिक्षा प्रणाली को बनाएगी। लोकतांत्रिक भारत की जरूरतों के अनुसार उसे उत्पादन के साथ जोड़ेगी।

सभी राष्ट्रों की भाषाओं को सरकार समान स्तर देगी। राष्ट्रीय भाषा के नाम पर या लिंक भाषा के नाम पर या कोई दूसरा बहाना बनाकर दूसरी भाषा को अन्यान्य राष्ट्रों पर नहीं थोपेगी।

सभी शारीरिक और मानसिक विकलांगों, बूढ़ों, अनाथों, अपाहिजों को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा देगी। स्वच्छ सामाजिक और सांस्कृतिक माहौल बनायेगी। सभी लोगों को, खासकर मजदूर, किसान और अन्यान्य महेनतकश जनता को मुफ्त चिकित्सा और अच्छे स्वास्थय के लिए एक जनहित स्वास्थ्य प्राणाली लागू करेगी।

पड़ोसी देशों के साथ सीमा, पानी आदि विवादों को शांतिपूर्वक और सहयोग से निपटते हुए उसे मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ाने के लिए यह राज्य दृढ़ता से कोशिश करेगा।

अलग-अलग सामाजिक व्यवस्था वाले देशों के साथ संबंधों के बारे में पंचशील सिद्धांतों को पालन करेगा- क्षेत्रीय अखण्डता और सम्प्रभुता का परस्पर सम्मान करना, परस्पर अनाक्रमण, एक दूसरे के आतंरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करना, समानता, पारस्परिक हित और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

विश्वभर में पूंजीवादी व्यवस्था और साम्राज्यवाद के खिलाफ चल रहे सभी आन्दोलनों, विशेष रूप से विभिन्न माओवादी क्रांतिकारियों के नेतृत्व में चल रहे क्रांतिकारी आन्दोलनों एवं क्रांतिकारी युद्धों को नव जनवादी सरकार द्वारा सभी प्रकार की मदद और सहयोग दिया जाएगा। क्रांति सफल होने के बाद पहले नव जनवादी भारत और उसके बाद समाजवादी भारत विश्व सर्वहारा क्रांति की जीत को सुगम बनाने के लिए आधार इलाके के रूप में काम करेगा। भारतीय उपमहाद्वीप में जनता के साथ ऐतिहासिक रिश्ते के आधार पर, खासकर, दक्षिण एशिया में क्रांतिकारी माओवादी शक्तियों के साथ, उनके आन्दोलनों के साथ घनिष्ठ संबंध रखेगा। पुरानी सरकार द्वारा किए गए सभी असमान समझौतों को रद्द करेगा। (क्रांतिकारी जन कमेटियों के नियमों-कार्यक्रमों की भूमिका-2008, पृष्ठ 3 से 11 तक)

आरपीसी का उद्भव, वृद्धि और विकास

भारत में जनयुद्ध को आगे बढ़ाने और सफल बनाने के लिए चार उत्पीड़ित वर्गों का संगठन ही है क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा। सामंतवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ उत्पीड़ित वर्गों द्वारा लम्बे समय से चलाया गया क्रांतिकारी आन्दोलन के जरिए इन वर्गों के क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा के रूप में जनता की सत्ता के बतौर क्रांतिकारी जन कमेटियों (आरपीसी) का गठन हमारे देश में जनता की सरकार स्थापित करने के सदियों के सपनों को साकार किया है। यह लम्बे भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में एक बहुत बड़ी अपलब्धि व सफलता है।

डीके में जनता की राजसत्ता के रूप में पहले ग्राम राज्य कमेटी (जीआरसी) की नींव डाली गयी। उसके बाद क्रांतिकारी जनताना सरकार के रूप में लोकप्रिय क्रांतिकारी जन कमेटियों (आरपीसी) का गठन हुआ। लुटेरे सरकार का वन विभाग, ठेकेदार, कुछ इलाकों में जमींदार या आदिवासी मुखियाओं की सत्ता और उनके शोषण को उखाड़ फेंकने

के लक्ष्य से पार्टी और पीएलजीए के नेतृत्व में आदिवासी किसान हथियार उठाया। सरकारी सशस्त्र बल और जनमुक्ति गुरिल्ला बलों के बीच गुरिल्ला युद्ध प्रधान रूप धारण किया है, जहां शोषक वर्गों की सत्ता ध्वस्त की गयी है वहां ग्राम स्तर पर, क्रमश: एरिया स्तर पर आरपीसीयों का गठन हुआ है। उच्च स्तर के डिविजनल आरपीसीयों का भी गठन किया जा रहा है। 2007-2010 के बीच अधिकतर छापामार आधार क्षेत्रों में एरिया स्तर में और कुछ डिविजन स्तर के क्रांतिकारी जन सरकारों का गठन किया गया है। 2008 में समूचे स्पेशल जोनल स्तर पर क्रांतिकारी जनताना सरकार की तैयारी कमेटी का गठन किया गया है।

बीजे में ''क्रांतिकारी किसान कमेटी के हाथ में राजनीतिक सत्ता'' नारे के साथ गठित केकेसी पहले गांव स्तर में जनता की राजनीतिक सत्ता की इकाइयों के रूप में काम करती आई। उसके बाद एरिया स्तर के केकेसी की इकाइयों का गठन हुआ। पार्टी और पीएलजीए के नेतृत्व में हथियारबंद केकेसी की इकाइयां उच्च जातीय सामंती व्यवस्था की जंगीरों को तोड़ने और उसकी निजी सेनाओं को परास्त करने और जमीन को जब्त करने-बांटने में औजार के रूप में काम किया। सरकारी सशस्त्र बलों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध तेज होने के क्रम में वे और विकास होकर, विभिन्न स्तरों में आरपीसीयों के रूप में परिवर्तन हो रहे हैं। पूर्ववर्ती बिहार-झारखण्ड-उत्तरी छत्तीसगढ़ सैक के इलाके (वर्तमान में यह सैक दो सैक के रूप में पुनर्निर्माण किया गया है जो बिहार-झारखण्ड-उत्तरी छत्तीसगढ़ सैक और पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखण्ड सैक के रूप में गठन हुआ है) के झारखण्ड रीजनल कमेटी (जेआरसी) के कुछ इलाकों में गांव और एरिया स्तर की आरपीसीयों का गठन हुआ है। बिहार रीजनल कमेटी (बीआरसी) के कुछ इलाकों में भी कुछ गांव और एरिया स्थर की आरपीसीयों का गठन हुआ है।

वे बिहार-झारखण्ड में सीमित समय काल तक ही काम किया, उसके बावजूद जनता के स्वावलम्बी व्यवस्था की स्थापना के लिए किया गया प्रयास के द्वारा कुछ अनुभव मिला है। एरिया आरपीसी कमेटियों में कार्यकारणी सदस्यों का भी चुनाव किया गया है। इसमें 30-41 परिषद सदस्य के रूप में और 11 तक कार्यकारणी सदस्य के रूप में चुनाव किया गया है। इन एरिया आरपीसीयों में किसान संगठन, महिला संगठन, सांस्कृतिक संगठन, युवा संगठन, जन मिलिशिया दल, पार्टी सेल, सबजोनल कमेटी से प्रतिनिधि निर्धारित संख्या के अनुसार कमेटियों में चुनकर आरपीसीयों का गठन किया गया है। आरपीसीयों में सात विभागों तक गठन किया गया है। इनमें रक्षा और न्याय विभाग, आर्थिक विभाग, कृषि और सिंचाई विभाग, शिक्षा और सांस्कृतिक विभाग, स्वास्थ्य विभाग, प्रचार एवं प्रकाशन विभाग, खेल और मनोरंजन विभाग शामिल हैं। ये अपने दायरे में सत्ता को चलाते हुए राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में वैकल्पिक जनता की राजनीतिक व्यवस्था को विकास करने के लिए प्रयास किये।

आंध्रा-ओड़िशा सीमा इलाके (एओबी) में पूर्वी डिविजन, मलकानगिरि, कोरापुट डिविजनों में सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध को आगे बढ़ाने के तहत हजारों एकड़ सरकारी वनभूमि, कॉफी प्लांटेशन और जमींदारों की पट्टा जमीन पर जनता द्वारा कब्जा किया गया। सरकारी सशस्त्र बलों के भीषण दमन ऑपरेशनों और नरसंहारों को मुकाबला करते हुए क्रांतिकारी भूमि सुधारों के तहत जमीन को खेतिहर मजदूर और गरीब किसानों को बांट दिया गया। उस जमीन में उत्पादन को बढ़ाने के लिए पहले कृषि कमेटियों का गठन किया गया। उसके नेतृत्व में विकास काम किया गया। जनता पार्टी, मिलिशिया और विभिन्न क्रांतिकारी जन संगठनों में संगठित होकर राजसत्ता को छीनने की चेतना से लड़ते हुए, जहां दुश्मन के वर्गों की सत्ता को उखाड़ फेंकी गई वहां एक क्रम में पार्टी के नेतृत्व में आरपीसीयों का गठन किया गया।

1995 से पूर्वी डिविजन में ग्राम राज्य कमेटियों (जीआरसी) का गठन शुरू हुआ। 2001 से उसे आरपीसी के रूप में जाना जाता है। एओबी भर में 21 गांव स्तर के आरपीसीयों और एक एरिया आरपीसी तैयारी कमेटी का गठन किया गया। दुश्मन के भीषण दमन के कारण मार खायी आरपीसीयों का पुनर्गठन के लिए प्रयास किया जा रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में 2014 में स्पेशल जोनल स्तर पर आरपीसीयों पर एक वर्कशॉप चलाया गया। कुल मिलाकर, इन 11 साल में एओबी में गठित इन आरपीसीयों द्वारा पार्टी और जनता को महत्वपूर्ण अनुभव मिला। जनता अपनी सत्ता चलाने के कार्यकलापों में शामिल होकर जनता के कल्याण, जमीन बंटवारा, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक विकास, रक्षा, जनता के बीच के अंतरविरोधों को सुलझाने आदि समस्याओं से निपटते हुए राजसत्ता को संचालन करने का भी एक नया अनुभव हासिल हुआ है।

पश्चिम बंग में लालगढ़ जन आन्दोलन 'पुलिस अत्याचार विरोधी जन कमेटी' (पीसीएपीए) के नेतृत्व में पहले राज्यहिंसा के खिलाफ शुरू होने के बावजूद, हमारी पार्टी के नेतृत्व में किए गए प्रयास के परिणामस्वरूप पीसीएपीए धीरे-धीरे जनता की मौलिक समस्याओं को लेकर आन्दोलन को आगे बढ़ाया गया। आन्दोलन विस्तार होकर सिद्धू-कान्हु मिलिशिया और पीएलजीए एक हद तक मजबूत हुआ। जन आन्दोलन द्वारा जन कल्याण के लिए, वैकल्पिक जनता का राज्य के लिए जरूरी संगठनों और विभागों का गठन करना शुरू किया गया। छात्रों के लिए स्कूल, जनता के लिए स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करवाना शुरू किया गया। गरीबों के लिए राशन, कपड़ा वितरण किया गया। 50 से ज्यादा

गांवों में जमीन को जब्त कर वितरण किया गया। सामूहिक खेती, सामूहिक मछली पालन शुरू किया गया। ऐसा एक के बाद एक कल्याण और विकास कार्यक्रमों को चलाते हुए संशोधनवादी विकास के नमूना को ध्वस्त कर जनता का विकास के नमूना को खड़ा करने में उल्लेखनीय प्रयास किया गया। जंगल महल इलाके में डेढ़ साल की अवधि में पुलिस का सामाजिक बहिष्कार से शुरू कर पुलिस को गांवों में आने से रोक दिया गया। लूटेरी सरकार स्थगित हो गयी। उत्पीड़ित जनता की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करते हुए व्यापक तौर पर ग्रामीण इलाके में जनता के राजसत्ता का स्वरूप सामने आया। इसे एक एरिया आरपीसी का रूप देकर संगठित करने की योजना तय करने के बावजूद, वह व्यवहार में लागू नहीं होने, केन्द्र-राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से देशभर में चलाए गए ऑपरेशन ग्रीन हण्ट अभियान के दौरान जनता के राजसत्ता का यह स्वरूप भी जच्चगी में ही नष्ट हो गया।

महाराष्ट्र के गोन्दिया जिले में भी कुछ ग्राम स्तर के आरपीसीयों का गठन किया गया। कोरची लौह परियोजना के खिलाफ सफलतापूर्वक चलाया गया जुझारू जन आन्दोलन में इन आरपीसीयों की सक्रिय भूमिका थी।

स्वावलम्बी व्यवस्था की ओर ....

'क्रांतिकारी जन कमेटियों के नियमों-कार्यक्रमों की भूमिका' के निर्देशानुसार आरपीसीयों के दायरे में जनता को सभी प्राथमिक जनवादी अधिकार- अभिव्यक्ति की आजादी (बोलने, लिखने व प्रेस की आजादी), सभा करने का अधिकार, संगठन बनाने का अधिकार, हड़ताल, रैली-प्रदर्शन करने का अधिकार, जहां इच्छा हो वहां बसने का अधिकार, प्राथिमक शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार, स्वास्थ्य सुविधा पाने का अधिकार, रोजगार पाने का अधिकार है। मतदाताओं को 'वापस बुलाने का अधिकार' है। आरपीसीयों में महिलाओं को समान प्रतिनिधित्व दिया जा रहा है। आरपीसीयों द्वारा रक्षा, वित्तीय, कृषि, व्यापार, उद्योग, न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, सामाजिक कल्याण, वन सुरक्षा, जन संपर्क विभागों के जरिए जनता के जीवन-यापन संबंधित सभी पहलुओं को अपनी ताकत के मुताबिक निपटने के लिए प्रयास किया जा रहा है। इन विभागों द्वारा जनता अपना उत्पादन पर नियंत्रण कर पा रहे हैं, स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था, नयी संस्कृति, शिक्षा का विकास कर रहे हैं। गांव स्तर के आरपीसीयों से चुने जाने वाले प्रतिनिधियों से एरिया आरपीसीयों का गठन किया गया है। उसी तरह एरिया आरपीसीयों से चुने जाने वाले प्रतिनिधियों से डिविजिनल (जिला) स्तर के आरपीसीयों का गठन किया गया है।

क्रांतिकारी आन्दोलन के इलाकों में प्राथमिक स्तर में गठन होने वाले यह नव जनवादी आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था मौजूदा अर्द्ध-औपनिवेशिक, अर्द्ध-सामंती व्यवस्था और साम्राज्यवाद निर्देशित भूमण्डलीकरण नीतियों के वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में देश के जनता के सामने एक नमूना पेश कर रही है। कोई भी विकास हो, जनता एक तरफ शोषकों से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष करते हुए, दूसरी तरफ वे खुद अपने प्रयास के द्वारा जीवनयापन करने, अपना भविष्य को अपने ही निर्माण करने का विश्वास जगाना होगा, सभी क्षेत्रों में उनकी क्षमता को बढ़ाने, संसाधनों के इस्तेमाल करने, उनकी सृजनशीलता को प्रस्फुटित करने, क्रमशः उत्पादन शक्ति को बढ़ाने के लिए मदद करनी होगी। यह तब हो सकता है जब अपने भाग्य का फैसला खुद करने को तैयार हो। उस अवधारणा के साथ आधार इलाकों का निर्माण के लक्ष्य से विभिन्न गुरिल्ला जोनों में पार्टी के नेतृत्व में क्रांतिकारी जनता अनन्य बलिदान करते हुए साम्राज्यवादियों और भारत के शोषक-शासक वर्गों के खिलाफ जनयुद्ध को आगे बढ़ा रहे हैं। सशस्त्र कृषि क्रांति आगे बढ़ने के दौरान स्वावलम्बी व्यवस्था निर्माण करने का प्रयास करते हुए प्राथमिक तौर पर जनता की राजनीतिक सत्ता के इकाइयों के बतौर गठित आरपीसीयों द्वारा हासिल प्रगति इस प्रकार है :

डीके में :

डीके में आदिवासी और गैर-आदिवासी खेतिहर मजदूर, गरीब और मध्यम किसान द्वारा 1995 तक ही लाखों एकड़ वनभूमि, जमींदारों, जनविरोधी आदिवासी मुखियाओं के हाथों से हजारों एकड़ पट्टा जमीन को पार्टी के नेतृत्व में जनता द्वारा जब्त की गयी है। 1996 से 2014 तक यानि 18 सालों में हजारों एकड़ वनभूमि और सैकड़ों एकड़ जमींदारों, जनविरोधी मुखियाओं, बड़ा ठेकेदारों, बड़ा व्यापारियों की जमीन को जनता द्वारा जब्त की गयी। क्रांतिकारी भूमि सुधारों में यह पहला कदम है। उसके बाद, उस जमीन में उत्पादन बढ़ाना दूसरा कदम है। इसके दौरान जनता को जमींदारों और धनी किसान के दासत्व से मुक्त करना एक अनिवार्य कर्तव्य बन गया है। बुआई के बीज के लिए गरीब और मध्यम किसान को दासत्व करने की स्थिति से मुक्ति दिलाने के लिए उनके द्वारा धान के सहकारी संगठन (बीज का बैंक) स्थापित किया गया। जोतने के लिए जिन गरीब किसान के पास बैल नहीं है, उन्हें सहायता करने के लिए 50 से ज्यादा बैल जिन जमींदारों और धनी किसानों के होते हैं उनसे एक-एक बैल लेवी के रूप में लिया गया है। बीज और बैल दोनों मिलने के बाद दासत्व से मुक्ति पाने के लिए एक आधार बन गया है। वर्तमान में विभिन्न स्तर के जनताना सरकारों द्वारा जनता की जमीन को समतल करने और उसे सिंचाई की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए प्रयास कर रहा है। भीषण दमन के बीच ही वे इस कर्तव्य को निभा रहा है। जनता के सामूहिक श्रम द्वारा फल का बागान लगाने, तालाब, मछली तालाब निर्माण करने का काम हो रहा है। शुरुआती के दिनों के बीज के सहकारी संगठनों को

ऋण सहकारी संगठन के रूप में विकास किया गया है।

भूमि समतलीकरण अभियानों को 2011 से डीकेभर में हर साल जनवरी-फरवरी में चलाया जा रहा है। इसके द्वारा बढ़ते बचत के आधार पर धान के मिल, तेल के मिल निर्माण करने, वन उत्पादनों का व्यापार चलाने आदि रूपों में बहुत ही प्राथमिक स्तर पर व्यापार और उद्योगों के निर्माण करने का प्रयास शुरू हुआ है।

आर्थिक कार्यक्रम :

1. इन 11 सालों में ''जोतने वालों का ही जमीन-क्रांतिकारी जनताना सरकार के हाथों में ही सारी सत्ता'' के नारे के साथ डीके में क्रांतिकारी जनताना सरकार द्वारा क्रांतिकारी भूमि सुधार कार्यक्रम लागू किया गया। वर्ग संघर्ष के दौरान जब्त शोषक सरकार की वनभूमि और जमींदारों की जमीन को खेतिहर मजदूर और गरीब किसानों को प्राथमिकता देकर हर परिवार को जमीन बांटना, जमीन के साथ बीज देने, श्रम सहकारिता टीमों में किसान एक दूसरों को हर काम में सहयोग करवाने के जरिए उनके पैदावर में वृद्धि आई, उनका जीवन-स्तर पहले के मुकाबला बेहतर होने के साथ-साथ लोगों में सहकारिता, सामूहिकता और एकता की भावना अधिकाधिक रूप से वृद्धि हुई।

2. झूठे सुधारों के खिलाफ जनता को संगठित किया गया।

3. सैकड़ों, हजारों जनता एकजुट होकर अपने आप मेहनत करने के साथ सामूहिक रूप से निम्नलिखित काम पूरा किया गया : तालाब-4,762, छोटा तालाब-6,381, मछली तालाब-397, सिंचाई के लिए नाला-22, तालाबों की मरम्मत-1,737, जहां पेयजल समस्या है वहां सिमेंट कुआं-130, रिंग कुआं-20 निर्माण किया गया।

4. 2011 से शुरू हुए भूमि समतलीकरण अभियान में सभी जनता उत्साह के साथ भाग ली। इस तरह पिछले तीन सालों में 13,668 परिवारों के 14,357 एकड़ जमीन (मुख्य रूप से गरीब किसानों का) का समतलीकरण किया गया। इसके जरिए एक फसल उपजाने लायक गारंटी की गयी। इस तरह समतल की गई जमीन में अमर शहीदों के परिवारों की जमीन, पीएलजीए के योद्धाओं और जेल कामरेडों के परिवारों की जमीन भी शामिल है। इसके साथ-साथ इस तरह के परिवारों को कई तरह के हार्दिक व आर्थिक सहायता आरपीसीयों द्वारा दी जा रही है। कुछ गांवों में दसियों की संख्या में ऐसे परिवार भी हैं जिनकी जमीन को दो फसल उपजाने लायक भी तैयार किया गया है। वैसा ही खेती-बाड़ी में भी इस तरह का बदलाव लाया गया है कि हर परिवार की जमीन में 1-2 भूखण्ड या गाटर में धान रोपने का तरीका को अमल में लाया गया है, इससे जनता के आर्थिक जीवन-स्तर में कुछ उन्नति हुई है। इसके चलते वर्ग संघर्ष और गुरिल्ला युद्ध में उनकी सक्रिय भागीदारी में भी वृद्धि हुई है।

5. हर पंचायत (गांव स्तर की जनताना सरकार) में आम, जामुन, शरीफा या सीता फल, नींबू, अनार, कटहल, केला जैसे सैकड़ों पौधों को लगाकर फल के बगीचे बनाने के लिए जनताना सरकारों द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है।

6. 2006 से साग-सब्जी की खेती, तालाबों में मछली पालन गांव के सभी लोग सामूहिक और व्यक्तिगत तौर पर भी करवाने के लिए जनताना सरकार द्वारा एक कार्यक्रम लिया गया है, जिसको ज्यादा से ज्यादा अमल में लाया गया है। और कुछ जगहों पर इसके लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

7. जोतने के लिए जिन किसानों के पास बैल नहीं है उनको जनताना सरकार द्वारा सहकारी टीमों में शामिल करवाकर उनको काम करवाना और मौका मिलने पर कुछ किसानों को बैल वितरण किया गया है। इस तरह सहकारी आन्दोलन को उच्च स्तर तक विकसित करते हुए धान की कटाई के साथ-साथ और कुछ कामों तक भी उसे विस्तार किया गया। खेतों में खाद डालकर अच्छी फसल उपजाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, वर्णसंकर बीजों से बचते हुए स्थानीय बीजों के साथ स्वावलम्बी नीति को लागू करते हुए फसल का उत्पादन बढ़ाने के लिए जनताना सरकार द्वारा 'कृषि वर्कशॉप' चलाते हुए चर्चा के जरिए किसानों की समझदारी बढ़ायी जा रही है। इसके साथ-साथ बकरी पालन, सुअर पालन, मुर्गा पालन को भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

राजनीतिक कार्यक्रम :

1. कबिलाई नौकरशाह, पूजारियों (वड्डे) की सत्ता को उखाड़ फेंकना।

2. शोषक वर्गों के सरकारी तंत्र को ध्वस्त करना।

3. महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देना।

4. पंचायत (गांव स्तर के), एरिया, डिविजन स्तर में उत्पीड़ित जनता अपने आप ग्रामसभा और समिति (प्रतिनिधियों की सभा) में चुने गए क्रांतिकारी जन सरकारों को खुद संचालन करना; इसमें महिलाओं की सक्रिय भूमिका और भागीदारी को बढ़ाने के लिए प्रयास करना; नयी राजसत्ता को चलाने लायक किसानों खासकर गरीब किसानों को व्यापक तौर पर राजनीतिक क्षेत्र में लाना और उनकी भूमिका बढ़ाने के लिए प्रयास करना।

5. जनयुद्ध में जनता को राजनीतिक रूप से व्यापक तौर पर सक्रिय रूप से गोलबंद करते हुए राजसत्ता का विस्तार

करना।

सैनिक कार्यक्रम :

1. दुश्मन के दमन अभियानों को खासकर सलवा जुडूम को परास्त करने में आरपीसीयों की सक्रिय भूमिका रही। ऑपरेशन ग्रीन हंट के दौरान कुछ जगहों पर आरपीसीयों को धक्का लगी, इसके बावजूद दुश्मन के भारी हमले को परास्त करने के लिए वे भीषण लड़ाई लड़ रही हैं।

2. पीएलजीए द्वारा किये गये कई हमलों को सफल करने में आरपीसीयों द्वारा गंम्भीर प्रयास किया गया। दूसरी तरफ आरपीसीयों की पीएलजीए ने दृढ़ता के साथ मदद की। उसपर होने वाले दुश्मन के हमलों के खिलाफ गम्भीर रूप से प्रतिरोध किया जा रहा है।

3. जनसत्ता को ध्वस्त करने के लिए आने वाले दुश्मन के बलों का प्रतिरोध करने के लिए जन मिलिशिया प्लाटून व्यापक पैमाने पर गठन कर काम कर रहा है। कुछ जगहों में जन मिलिशिया कम्पनियों का भी आविर्भाव हुआ। दुश्मन पर हमलों में भाग लेते समय, जन सुरक्षा और उत्पादन के काम में भाग लेते समय जन मिलिशिया को आरपीसीयों द्वारा सभी तरह की मदद दी जा रही है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम :

1. बाल-बच्चों को 'शिक्षा-ज्ञान' देने के लक्ष्य से पंचायत स्तर में स्कूल, एरिया और डिविजनों में आश्रम स्कूल चलाते हुए हजारों बाल-बच्चों को शिक्षा मुहैया कराना।

2. डीके आदिवासी जनता की संस्कृति में अच्छाई को प्रोत्साहन देते हुए, बुराई के खिलाफ संघर्ष करते हुए जन संस्कृति को क्रांतिकारीकरण करते हुए नव जनवादी संस्कृति को खड़ा करना।

3. आदिवासी परम्परा में जबर्दस्त सादी को रोकना, प्रेम विवाह के साथ दोरला (राजगोंड) और कोया जन समुदायों के बीच सादियां करने के लिए प्रोत्साहित करना।

4. नरबलि के खिलाफ प्रचार करने, जन अदालतों में चर्चा करने, जनदिशा के अनुसार जनताना सरकार के न्याय विभाग द्वारा फैसला करने, सामंतवादी और साम्राज्यवादी बेकार संस्कृति और अंधविश्वास के खिलाफ प्रचार कर वैज्ञानिक सोच के साथ चेतना बढ़ाने, नव जनवादी संस्कृति को खड़ा करने और विस्तार करने के लिए प्रयास करना।

5. महिलाओं की अस्वस्थता की समस्याओं पर समझदारी बढ़ाते हुए उनको जनता के डॉक्टरों से शिक्षा देना, चर्चा के रूप में शिक्षा देना, दवाई देना, साफ-सफाई पर ध्यान देना, माता-शिशु कल्याण कार्यक्रम को गांव/पंचायत तक ले जाना।

6. तात्कालिक चिकित्सा शिविर और चलायमान अस्पताल लगाकर जनता के स्वास्थ्य और कल्याण की देखभाल करना, जाड़ीबूटी दवाई को प्रोत्साहन देते हुए उससे भी और अंग्रेजी दवाई से भी चिकित्सा सेवाएं जनता को उपलब्ध करना।

इस तरह चाहे, प्राथमिक स्तर में ही हो, डीके के क्रांतिकारी जन सरकार नव जनवादी विकास के पथ पर आगे बढ़ रही है।

बीजे में :

राजनीतिक क्षेत्र में :

1. ऊंच जाति की सामंती व्यवस्था की जंजीरों को तोड़ना, ग्रामीण क्षेत्रों में शोषक वर्ग के सरकारी तंत्र को ध्वस्त करना।

2. जमींदारों की जमीन को जब्त करना, खेतिहर मजदूर और गरीब किसानों को वितरण करना, जनयुद्ध के लिए जनता का समर्थन बढ़ाना।

आर्थिक क्षेत्र में :

आरपीसीयों में जन कल्याण, खेती और सिंचाई और स्वास्थ्य क्षेत्रों में कुछ प्रयास किया गया।

1. जेआरसी के एक इलाके में कुछ जन कल्याण के कार्यक्रम के तहत पेयजल के लिए कुछ कुओं की मरम्मत की गयी। 15 नए कुओं का निर्माण किया गया।

2. जेआरसी में कुछ जगहों पर कृषि और सिंचाई के कार्यक्रमों को आरपीसी द्वारा जनभागीदारी के जरिए कुछ चेकडैम, कुछ मध्यम किस्म के डैम का निर्माण किया गया।

3. जेआरसी में कुछ गांवों में जरूरत के मुताबिक स्वास्थ्य शिविर लगाकर दवाइयों का भी वितरण किया गया है।

4. जेआरसी में कुछ गांवों में गलियों और नालों को साफ करने का कार्य हुआ है।

5. जेआरसी में कुछ गांवों में पेड़ भी लगाया गया है।

सैनिक क्षेत्र में :

1. गुरिल्ला युद्ध को तेज करना।

2. ऊंच जाति के सामंती निजी सेनाओं को ध्वस्त करना।

3. एक हद तक जन मिलिशिया को संगठित कर प्रशिक्षित करना व हथियारबंद करना।

सांस्कृतिक क्षेत्र में :

1. कुछ जगहों पर स्कूल का निर्माण करना।

2. क्रांतिकारी संस्कृति को खासकर जेआरसी इलाके में विकसित करना।

3. अंधविश्वास और सामंतवादी एवं साम्राज्यवादी संस्कृति के खिलाफ जनता की चेतना बढ़ाना।

एओबी में :

आर्थिक कार्यक्रम :

1. खेतिहर मजदूर और गरीब किसानों को गांवों में अतिरिक्त जमीन, वनभूमि और जमींदारों की जमीन, धनी किसानों को समझा-बुझाकर लिए गए जमीन, बंजर जमीन, गांव में पड़े हुए जमीन को जब्त कर वितरण किया गया। लूटेरी सरकार को जमीन के लिए कर देना बंद किया गया। सामूहिक श्रम सहकारिता टीमों का गठन कर कृषि विकास का काम (जोतना, बीज बोना, मेंड़ व खेत बनाना, घांस निकालना, कटाई करना, धान मिंजाई आदि) किया गया। कुछ आरपीसीयों में कुछ परिवारों को एक-एक एकड़ ट्रैक्टर से जोतवा दिया। गोबर को खाद के रूप में जमा कर खेतों में इस्तेमाल किया गया। कृषि उत्पादन में कुछ विकास हासिल किया गया। पारम्परिक फसलों के साथ बादाम, प्याज और अन्यान्य सब्जी उगाया गया। बीज और फलदार पौधे वितरण किये गये। एक आरपीसी के दायरे में 7 गांवों में धान की दो फसल उपजायी गयी।

2) जनता सामूहिक रूप से कई चेक डैम, तालाब, छोटा तालाब निर्माण की। सिंचाई के लिए आइल इंजन का इस्तेमाल किया गया। गांवों में सिंचाई के लिए नाली बनायी गयी। सामूहिक रूप से मछली तालाब निर्माण कर, नौकरशाहों के हाथ से जब्त कर मछली पालन किया गया।

पूर्वी डिविजन में दो गांवों में भूमि समतलीकरण कार्यक्रम को लागू किया गया। पेयजल सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कई गांवों में पानी की बड़ी मटकी बनायी गयी और पाइपों को बिछाया गया। घर बनाने के लिए ईंटों का वितरण किया गया।

3. जोतने के लिए बैल जिनके पास नहीं उनके लिए मंगवाकर या जमींदारों से जब्त कर वितरण किया गया। पशु पालन के तहत पशुशालाओं का निर्माण किया गया।

4. धान का मिल लगाया गया।

5. एक आरपीसी क्षेत्र में अकाल की समस्या को ध्यान में रखकर शाहुकारों से 1000 किलो चावल वसूल कर सभी गांवों में प्रति परिवार को 50 किलो करके वितरण किया गया।

6. अनाथ और वृद्धों के लिए घर बनाकर देते हैं। गरीब परिवारों में शादी होने से सामूहिक जमीन में उगाए गए धान से कुछ हिस्से को सहायता के रूप में देते हैं। अमर शहीदों के परिवार और जेल कामरेडों के परिवारों एवं अनाथों की जमीन की जुताई में सहायता करते हैं।

7. 1 से 5वीं कक्षा तक पढ़ाई करने वाले बच्चों के लिए आश्रम स्कूल चलाते हैं।

8. जनता की जरूरतों के मुताबिक जन वन सुरक्षा विभाग की अनुमति से जंगल काटने के नियम को अमल में लाये हैं। कोई बाहर से आकर जंगल काटकर अवैध लकड़ी व्यापार करने पर पाबंदी लगा दिया गया है। पारम्परिक तौर पर जंगल काटकर खेती करने वालों से बात कर जंगल को सुरक्षित रखने की जरूरत समझाते हुए जंगल सुरक्षा पर ध्यान दे रहे हैं।

9. केनाल द्वारा जमीन की सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाने की मांग को लेकर धरना और रैली, हर साल धान कटाई, बांस कटाई, तेंदू पत्ता मजदूरी वृद्धि, महुआ का समर्थन मूल्य बढ़ाने के लिए आर्थिक आन्दोलन चलाया गया।

10. आरपीसीयों द्वारा जन अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए जरूरी आर्थिक स्रोत के बतौर महुआ और विभिन्न फल

आदि बेचकर जनता को प्राप्त होने वाले पैसे से कुछ पैसे वसूलने, तेंदू पत्ता, धान और बांस कटाई की मजदूरी से एक दिन की मजदूरी वसूलने के जरिए इकट्ठा किया जाता है।

राजनीतिक कार्यक्रम :

1. आदिवासी मुखियाओं और पूजारियों के जुल्म पर रोक लगाये जा रहे हैं।

2. ग्रामीण क्षेत्रों में लुटेरे सरकारी तंत्र को ध्वस्त किये जा रहे हैं।

3. झूठे चुनावों का जनता द्वारा बहिष्कार किये जाते हैं, सरपंच और समिति सदस्यों का इस्तीफा देने की मांग को लेकर एकत्र होकर संघर्ष किये जाते हैं। जेलों में बंद राजनीतिक कैदियों की रिहाई के लिए, दमन, महिलाओं पर राज्यहिंसा व यातनाओं के खिलाफ, शराब पर प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर, भ्रष्टाचार के खिलाफ राजनीतिक आन्दोलन चलाये जाते हैं।

4. लुटेरी सरकार के झूठे सुधार कार्यक्रमों का विरोध किये जा रहे हैं। इंदिरा आवास के तहत घरों को बनाने पर रोक लगाये जा रहे हैं। पुलिस कैंप के रूप में इस्तेमाल किये जाने के उद्देश्य से बनाये जानेवाले स्कूलों पर भी रोक लगाये जा रहे हैं।

सैनिक कार्यक्रम :

1. सरकारी सशस्त्र बलों से जनता को बचाने के लिए गांवों में संतरी व्यवस्था लागू की जा रही है। सी.आई.डी. को पहचान कर सजा दी जा रही है। जन दुश्मनों पर निगरानी रखकर उन्हें नियंत्रित किया जा रहा है।

2. पुलिस पर हमले और हैरान-परेशान करने वाली कार्रवाइयों को अंजाम दिया जा रहा है। एस्सार कंपनी की पाइप लाइन को तीन बार काट दिया गया। वर्ग दुश्मनों और सरकारी संपत्ति को ध्वस्त किया जा रहा है।

3. सभा और बैठकों के लिए सुरक्षा दी जा रही है।

न्याय संबंधी कार्यक्रम :

जनता के बीच पनपने वाली समस्याओं और पति-पत्नि के बीच खींचतान को तालमेल के साथ जनवादी तरीके से निपटते हुए उनके बीच एकता स्थापित कर रहे हैं। जाति पंचायतों के फैसलों के जरिए जुर्माना लगाने की सामंती नीति को रद्द किया जा रहा है।

सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम :

1. जनता को अंधविश्वासों से बाहर लाते हुए पूजारी व्यवस्था को निरुत्साहित किया जा रहा है। उन्हें वैज्ञानिक ज्ञान की शिक्षा देने लायक, साम्राज्यवादी संस्कृति के खिलाफ आदिवासी पारम्परिक कलारूपों को प्रोत्साहित करते हुए, सांस्कृतिक दलों द्वारा प्रदर्शन किया जा रहा है। पूजारियों के मेलों पर प्रतिबंध लगाये जा रहे हैं। नव जनवादी क्रांति की राजनीति का प्रचार किया जा रहा है।

2. महिलाओं पर आदिवासी परम्पराओं के तहत लागू होने वाली पितृसत्ता का, जबर्दस्ती सादियों का विरोध करते हुए पारस्परिक अनुमति से होने वाली सादियों को प्रोत्साहित करना, बहु विवाह प्रथा का विरोध किया किया जा रहा है और उस पर रोक लगाया जा रहा है। धूमधाम (अधिक खर्चा कर) से की जाने वाली सादियों को निरुत्साहित करते हुए पारम्परिक खर्चा को कम किया जा रहा है।

3. आदिवासियों पर आर्थिक बोझ बढ़ाने वाले त्योहारों को कम किया जा रहा है। वर्तमान में तीन त्योहार को मनाया जा रहा है। त्योहार का मजा लेने के नाम पर शराब लाकर पीने, ताश खेलने जैसी संस्कृति घुस गयी है। इसे भी निरुत्साहित किया जा रहा है।

4. किसी की मृत्यु होने पर अंतिम संस्कार करने के मौकों पर परिवारों से परम्परा के नाम पर देने वाले खर्चों पर पाबंदी लगाकर, उस तरह के परिवारों का अंतिम संस्कार के लिए गांव के हर परिवार से 10 रूपए, एक किलो चावल देकर जनता द्वारा सहयोग देने का कार्यक्रम लिया जाता है।

5. मंत्र-तंत्र, पूजारियों के पूजों का विरोध करते हुए जनता को वैज्ञानिक चिकित्सा की ओर ले जाया जा रहा है। कुछ गांवों में डॉक्टरों का निर्वाचन कर उन्हें प्रशिक्षित कर जनता को मुफ्त स्वास्थ्य सुविधा मुहैया किये जा रहे हैं। स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए पूर्वी डिविजन में दो मेडिकल कैंप लगाये गये थे। एक हजार जनता उपस्थित होकर उससे लाभन्वित हुए। कोरुकोण्डा सरकारी अस्पताल को एक आरपीसी अपने कब्जे में लेकर जनता को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाई है। इस तरह स्वास्थ्य समस्याएं कुछ हद तक सुलझा पाने के साथ हर साल मलेरिया और डायरिया से मरने वालों की संख्या में कमी आई है। जनता में स्वास्थ्य के बारे में समझदारी बढ़ायी गयी है। साफ-सफाई

का कार्यक्रम लागू किया गया है।

जन राजसत्ता को चलाने में, खासकर वैकल्पिक विकास नमूना सामने लाने में जनता की भागीदारी को समझने के लिए यहां कुछ नमूने प्रस्तुत किये जा रहे हैं :

2013-14 साल में डीके के गढ़चिरोली डिविजन में जनता द्वारा स्वयंस्फूर्तता से 25,000 मानव श्रम के दिन का इस्तेमाल किया गया। 2012-13 में दक्षिण बस्तर डिविजन में 2,39,697 श्रम के दिन का इस्तेमाल किया गया। 2005-2011 के बीच दक्षिण बस्तर में प्रतिक्रांतिकारी सलवा जुडूम और ऑपरेशन ग्रीन हण्ट की वजह से जनता की अर्थ व्यवस्था बहुत खराब हो गयी थी। इसे पुनर्निर्माण करने के लिए युद्ध स्तर पर गांव और एरिया स्तर के क्रांतिकारी जनताना सरकारों द्वारा 2011 में क्रांतिकारी जनता को तैयार किया गया। 1,20,000 जनता, इसमें एक तिहाई महिलाएं सामूहिक कार्यों में भाग लिये। 7 हजार जन मिलिशिया कार्यकर्ताओं द्वारा 500 भरमार बंदूक, 9 हजार धनुष, 20 हजार तीरों से लैस होकर 24 घंटे सुरक्षा व्यवस्था मुहैया करवाया गया है। एक हजार जन कलाकारों द्वारा गाना, नृत्य, नाटक हर रोज न्यूनतम दो घंटे तक प्रदर्शित कर, रोज लगभग 8 घंटे तक मेहनत करने वाले किसान जनता मनोरंजन किया। जनता बैच के हिसाब से अलग होकर, परस्पर एक दूसरे को सहयोग देते हुए, कार्यों को सही समय में, अनुशासन के साथ चलाने लायक देखा गया। प्रति एक घंटे में दस मिनट आराम देते थे। कार्यस्थलों में ही खाना बनाया गया। सिर्फ जेगुरगोण्डा एरिया में ही 115 खाना बैच गठन किया गया है। कार्यस्थल गांवों के रूप में तब्दील हो गया (यानि लगभग गांव में अधिकतर जनता सामूहिक श्रम में भाग ली)। क्रांतिकारी जनताना सरकारों द्वारा दिए गए चावल और दाल के साथ-साथ जनता द्वारा अपने गांवों से लाए गए चावल और सब्जियों से भी खाना बनाया गया। जनता अपने साथ लाए गए औजार जनताना सरकार द्वारा उपलब्ध करवाए गए औजारों से कहीं ज्यादा है। बढ़ई और लोहार का काम करने वाले साथी औजारों को धार देने व मरम्मत करने में पूरी तरह लगे रहते थे। स्वास्थ्य विभाग के किसान डॉक्टर दवाइयों के साथ हमेशा तैयार रहते थे। उनके द्वारा सैकड़ों जनता को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाये गये। जेगुरगोण्डा एरिया में ही लगभग 17,000 जनता को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाये गये। इस अभियानों के दौरान किष्टारम एरिया में 70,000 रुपए की दवाइयां जनता को वितरण किया गया। कार्यस्थलों में जच्चे-बच्चे के लिए झूलों की व्यवस्था की गयी। जच्चे-बच्चे को छोड़कर उनके मां बेफिक्र से काम में भाग ली। इन झूलों को झूलने के लिए भी छोटे बच्चों से बैच का गठन किया गया। जेगुरगोण्डा इलाका में कार्यस्थलों को देखते ही इतिहास के ग्रंथों के 'जन कम्यूनों' की याद आती थी। दक्षिण बस्तर में भूमि समतलीकरण करने के लिए क्रांतिकारी जनता सरकारों द्वारा 30 हजार रुपए खर्च किये गये। एक तरफ इस भूमि समतलीकरण अभियानों में जनता अत्यंत उत्साह के साथ भाग ली, दूसरी तरफ इसे विफल करने के लिए दुश्मन के बल हमले करता रहा। लेकिन, भीषण पुलिस कूंबिंग और हमलों का सामना करते हुए जनता साहस और दृढ़संकल्प के साथ इस भूमि समतलीकरण अभियानों को सफल बनायी। वे खुद अपने भविष्य का निर्माण कर रहे हैं।

उत्पादन में पीएलजीए की भागीदारी

एक क्रांतिकारी जनसेना के बतौर पीएलजीए जन उत्पादन में भाग लेने, जनता से घुलमिल कर उन्हें सेवा करने में अपनी भूमिका निभा सके इसके लिए कमिशनों और कमानों द्वारा शिक्षा दी जा रही है। व्यवहार में युद्ध या सुरक्षा कार्रवाइयों के दौरान कुछ आराम करने के समय, मौका रहने पर भूमि समतलीकरण, जुताई, बीज बोआई, नाले की खुदाई, फसल कटाई जैसे कार्यों में पीएलजीए के तीन किस्म के बल शामिल हो रहे हैं। खासकर, जहां जन राजसत्ता की इकाइयों का गठन किया गया है, वहां उसे मजबूत करने, इस शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ वैकल्पिक क्रांतिकारी आर्थिक नमूना जनता के सामने पेश करने के लिए पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए प्रयास कर रही है। इसमें जन मिलिशिया बलों की भूमिका प्रमुख है। एक क्रांतिकारी नागरिक सेना के नाते जन मिलिशिया एक तरफ अपने घरेलू काम को जितना संभव हो उतना सामूहिक कार्यों में जोड़ते हुए, गांव और एरिया पार्टी कमेटियों के नेतृत्व में अपना प्रधान कर्तव्य युद्ध संबंधी गतिविधियों को चलाने, दूसरी तरफ जनता को जागरूक करने का कार्य करते हुए, जनता से घुलमिल कर सामूहिक रूप से जन उत्पादन में उल्लेखनीय तौर पर भाग ले रहा है। जनता का जीवन-स्तर बढ़ाने, पार्टी कतारों, पीएलजीए के प्रधान और द्वितीय बलों को खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने में मदद दे रहा है। पीएलजीए के प्रधान और द्वितीय बल भी सिर्फ मौका मिलने पर ही नहीं, बल्कि पार्टी के आह्वान पर भूमि समतलीकरण अभियानों में, जनता को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने में, पेयजल के लिए कुआं और सिंचाई के लिए नाले या नहर निर्माण करने में, घर बनाने जैसे अन्यान्य जन कल्याण के कार्यों में शामिल हो रहे हैं।

नई पीढ़ियों के लिए शिक्षा सुविधा

डीके में जनताना सरकारों के दायरे में स्कूलों को स्थापित किया गया है। उसमें भाषा, गणित, विज्ञान की शिक्षा दी जा रही है। इसे अपनी मातृभाषा 'कोया' में दी जा रही है। तीसरी कक्षा से हिंदी, पांचवीं कक्षा से अंग्रेजी की शिक्षा

दी जा रही है। इन स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों को पढ़ाने के तरीके, छात्रों की मनोस्थिति, वैज्ञानिक शिक्षा देने आदि के तरीके पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पढ़ाते समय छात्रों के आस-पास की परिस्थितियों और उनके अनुभवों को ध्यान में रखकर पढ़ाया जा रहा है। श्रम का सम्मान करने, सामूहिक उत्साह व मनोरंजन, जनता की सेवा करने जैसे सामाजिक मूल्यों से छात्रों को ओतप्रोत करने के लिए भी कोशिश की जा रही है। आदिवासी संस्कृति में सामूहिक उत्साह व मनोरंजन, श्रम का सम्मान करना जैसे अच्छे पहलुओं को बचाते हुए समाज में जड़ जमाए हुए अंधविश्वास को उखाड़ने के लिए वैज्ञानिक ज्ञान को शिक्षा में जोड़ा जा रहा है। पहले गांवों के स्कूलों के अलावा 9 आश्रम स्कूल हैं। वर्तमान में दुश्मन के हमलों से बचाने के लिए आश्रम स्कूलों को चलायमान स्कूलों में तब्दील कर चलायमान रहते हुए चलाने में मजबूर हो गया है। दुश्मन खासकर जनताना सरकार द्वारा चलाये जा रहे स्कूलों और उसकी शिक्षकों को अपना निशाना बना रहा है। स्कूलों में शिक्षक और छात्र हमेशा आत्मरक्षा के लिए तीर-धनुष के साथ रहते हैं और नियमित रूप से संतरी करते हैं।

जंगलों और प्राकृतिक स्रोतों की रक्षा करना

आरपीसीयों के कामकाज में एक मुख्य पहलू है 'जंगलों पर आदिवासी/स्थानीय जनता के हाथों सारी सत्ता' के नारे को साकार करना। इसके तहत आरपीसीयों द्वारा वनोपजों का संग्रहण पर लगायी गयी सभी तरह की पाबंदियों को, उस पर लगाए जाने वाले शुल्क को रद्द किया गया है। वनोपजों को स्वेच्छा से संग्रह कर सकते हैं और इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन, आरपीसीयों की अनुमति के सिवाय जंगल से किसी भी स्रोत को बाहर ले जाना प्रतिबंध है। साम्राज्यवादी बहुरष्ट्रीय कंपनियों और दलाल कंपनियों का प्रवेश पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया है। जंगल को बेहिसाब काटने, लुटेरी सरकार द्वारा, लकड़ी माफिया द्वारा बहुमूल्य लकड़ी को अवैध रूप से तस्करी करने पर रोक लगा दिया गया है। जंगल की सुरक्षा करने के कर्तव्य को निभाने के लिए एक तरफ जनता के अधिकार की गारंटी करते हुए, लकड़ी के लिए बढ़ती मांग को संतुलन में रखने के लिए भी आरपीसीयों द्वारा ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। इस विषय में वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी आदिवासियों द्वारा अपनाई गई पद्धतियों को लागू कर रहे हैं। उन्होंने सदियों से हमारे देश में विस्तार से फैले हुए जंगलों में निवास करते हुए जमीन और वनोपजों को न्यायपूर्ण तरीके से इस्तेमाल करते हुए जंगलों की रक्षा की है और पर्यावरण को बचाया है। वर्तमान समाज में अपने आपको सभ्य समाज कहलाने वालों- पहले ब्रितानी गोरे उपनिवेशवादियों उसके उपरांत सत्ता का हस्तांतरण के बाद देशीय काले निरंकुश शासकों द्वारा हमले करने और उन आदिवासियों की जमीन को कब्जा करने के कारण ही जंगलों की क्षीणता तेजी से शुरू हुई है।

जनयुद्ध और आरपीसीयों की नीतियों द्वारा डाले गये अनुकूल प्रभाव के कारण जंगलों का क्षेत्रफल बढ़ा है- यह बात भारतीय वन सर्वे द्वारा जारी की गई वनों की स्थिति-2009 की रिपोर्ट में मौजूद आंकड़ों से भी साबित होती है। उसके अनुसार पिछले 4-5 सालों से अधिकाधिक माओवादी प्रभाववाला दंतेवाड़ा, कांकेर, बस्तर, राजनांदगांव, धमतरी आदि जिलों में जंगलों के क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग मुट्ठीभर कारपोरेट हित के लिए, साम्राज्य-वादी गिद्धों के लिए लागू जनविरोधी विकास नमूने के विपरीत हमारी पार्टी के नेतृत्व में विकसित किये जा रहे वैकल्पिक विकास के नमूने के बल ही यह दर्शा रहा है। अन्य प्राकृतिक स्रोतों पर भी इस तरह का व्यवहार हो रहा है।

राजसत्ता को छीनने की राजनीति को प्रचार-प्रसार करने से लेकर जनसत्ता की इकाइयों का गठन, सुरक्षा, मजबूतीकरण-विस्तारीकरण और उसे शोषणकारी व्यवस्था के विपरीत वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में देश की जनता के सामने खड़े करने में पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए का प्रयास उल्लेखनीय है। इस नव जनवादी अर्थ व्यवस्था को विकासित करने के तहत जनता की सेवा करने, उत्पादन में भाग लेने के लिए सभी क्रांतिकारी इलाकों में पीएलजीए के प्रधान और द्वितीय बलों द्वारा कई कार्यक्रम चलाने के साथ-साथ कई अभियान चलाये गये हैं। आरपीसीयों द्वारा चलाए गए अभियानों में शामिल होकर जनता से कंधे से कंधा मिलाकर उत्पादन में भाग लिये हैं।

आरपीसीयों का एक नया राज्य के रूप में विकसित होना, इसके जरिए भारत और विश्वभर के उत्पीड़ित जनता को मिल रहा संदेश को देखकर भारत के शासक वर्ग और साम्राज्यवादियों को परेशानी हो रही है। इसके कारण स्वाभाविक तौर पर ही आरपीसीयों को निशाना बनाते हुए उसे भारतीय राज्य तंत्र अपना एक मुख्य निशाना के रूप में रखा है। आरपीसी कमेटी के सैकड़ों सदस्यों को गिरफ्तार कर यातनाएं दी गयीं। आरपीसीयों के महिला सदस्यों पर लैंगिक अत्याचार किया गया और कई महिला-पुरुष सदस्यों की हत्या की गयी। आरपीसीयों में शामिल होने वाली जनता में आतंक फैलाने के लिए उन पर सरकारी सशस्त्र बलों और राज्य पोषित प्रतिक्रांतिकारी हत्यारे गिरोहों द्वारा अत्यंत निर्मम हत्यांकांड को अंजाम दिया गया है। उन्होंने जनता द्वारा अपना सामूहिक श्रम के जरिए बनाये गये तालाबों, अन्य मौलिक सुविधाओं, स्कूल, सहाकरी कृषि क्षेत्र, फल के बागानों को विशेष कर निशाना बनाकर नष्ट किया है। लेकिन अगर हम आरपीसीयों के गठन से प्राप्त अनुभव और परिणामों को देखें तो और एक बार ऐसा निर्ष्कष निकाला जा सकता है कि पुराना को ध्वस्त कर नयी राजसत्ता को विकास करना, कमजोर शक्ति द्वारा मजबूत शक्ति को परास्त करना संभव है।

★

जनयुद्ध में महिलाओं की भूमिका

''साम्यवादी क्रांति है पारंपरिक संपत्ति संबंधों से आमूल-चूल विच्छेद है; फिर इसमें आश्चर्य क्या कि इस क्रांति के विकास का अर्थ है पारंपरिक विचारों से आमूल-चूल संबंध-विच्छेद।''

– कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणा पत्र से

''रसोई घर के महिला राजनेता बनना होगा। तब ही समाजिक क्रांति का जीत होगी। जनता में आधी भाग रही महिलाओं की भागीदारी अगर नहीं है तो हमें कैसे बता सकते हैं कि समाज में परिवर्तन होगी?''

– कामरेड लेनिन

सभी जानते हैं कि वर्ग समाज के आविर्भाव के साथ ही मानव समाज में महिलाओं की स्थिति द्वितीय श्रेणी में धकेल दी गयी थी। वह गुलामी समाज हो, सामंती समाज हो या पूंजीवादी समाज, पुरुषों का स्थान हमेशा पहली श्रेणी में ही रहा। वर्ग समाज में उत्पीड़ित वर्गों के महिला और पुरुष दोनों शोषण और उत्पीड़िन से शिकार होते हैं, इससे अतिरिक्त आसमान में आधा हिस्सा रखने वाली महिलाएं पुरुष-प्रधानता, भेदभाव जैसे रूपों में पितृसत्ता द्वारा पीड़ित है। आसमान में आधा हिस्सा होने वाली महिला संघर्ष में भी आधा हिस्सा अगर अपनी जिम्मा नहीं निभाती हैं, तो किसी भी सामाजिक क्रांति आगे नहीं बढ़ सकती। खासकर, सर्वहारा नेतृत्व में चलाने वाले विश्व सर्वहारा क्रांति के तहत भारत की नव जनवादी क्रांति में 'अगर महिलाओं का भागीदारी न हो तो क्रांति नहीं होगी' के नारे सदियों की क्रांतिकारी व्यवहार द्वारा ही उभर कर आयी है। क्रांति में महिलाओं की भागीदारी क्रांति की उन्नत स्वभाव और प्रगतिशीलता को प्रतिबिंबित करती है।

हमारी पार्टी के एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस द्वारा पारित 'पार्टी कार्यक्रम' के मौलिक दस्तावेज में महिला सवाल पर इस तरह बताया गया है :

''वर्ग-विभाजित समाज के उद्भव के बाद से ही महिलाएँ विभिन्न किस्म की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक भेदभाव व वंचना का शिकार हैं। ये घिनौनी परम्पराएँ, जैसे जाति प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधावा प्रथा, देवदासी प्रथा आदि मुख्यत: आज भी जारी हैं। हमारे देश की आधी आबादी महिलाएं हैं। साम्राज्यवादी-सामन्ती शोषण-उत्पीड़न झेलने के अलावा वे परिवार, धर्म, जाति व्यवस्था, सम्पत्ति के सम्बन्धों और संस्कृति के क्षेत्र में पितृसत्तात्मक संस्थाओं के बने रहने के कारण पुरुष प्रधानता तथा उत्पीड़न का शिकार हैं। उन्हें कानूनी तौर पर सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त होने के बावजूद वस्तुत: व्यवहार में उनके ये अधिकार फरेब साबित होते हैं। महिलाओं की भागीदारी उत्पादन के क्षेत्रों में बढ़ी तो है, पर उन्हें कम मजदूरी मिलती है तथा कार्य-स्थल पर तमाम तरह की उत्पीड़न के साथ-साथ लिंग-आधारित पेशेगत असमानताओं को भी झेलना पड़ता है। हाल के वर्षों में, खास कर साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और उपभोक्तावाद के चलते महिलाओं पर यौन-उत्पीड़न व अत्याचार बढ़े हैं। साथ ही पितृसत्तात्मक विचारधारा के प्रभाव में महिलाओं के खिलाफ जारी भेदभाव के फलस्वरूप महिला-पुरुष अनुपात घटा है। साम्प्रदायिकता और कट्टरतावाद को, खास कर हिन्दू कट्टरतावाद को भड़काने की शासक वर्गों की कोशिशों ने महिलाओं की पीड़ा-व्यथा को और भी बढ़ा दिया है। अपने न्यायोचित अधिकारों के लिए उठ रही उनकी आवाजों को दबाने के लिए उनके खिलाफ बलात्कार को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। इस हथियार का इस्तेमाल राज्य भी विभिन्न संघर्षों में शामिल हो रही महिलाओं के दमन के अत्यन्त नीचतापूर्ण तरीके के बतौर कर रहा है। राज्य और शासक वर्ग की विभिन्न पार्टियों द्वारा समर्थित सामन्ती शक्तियों की निजी सेनाएँ भी उत्पीड़न के अत्यन्त जघण्य तरीके के रूप में इस हथियार का इस्तेमाल कर रही हैं।

'महिलाएँ आधा आसमान उठाये हुए हैं।' महिलाओं में दबे हुए आक्रोश को क्रान्ति की विराट शकित के रूप में निर्बन्ध किये बिना क्रान्ति में जीत हासिल कर पाना असम्भव है। यह गर्व की बात है कि महिलाएँ, खासकर गरीब व भूमिहीन किसान वर्ग की महिलाएँ आगे बढ़ रही सशस्त्र कृषि क्रान्ति में सक्रियतापूर्वक भाग लेने और कभी तो उसकी अगली कतार में शामिल होने के लिए ज्यादा से ज्यादा संख्या में निरन्तर आगे आ रही हैं। इस तरह साम्राज्यवाद-सामन्तवाद के खिलाफ आगे बढ़ रहे जन युद्ध में महिलाओं की गोलबन्दी अनिवार्य है। वर्ग संघर्ष के साथ-साथ हमें राजनीतिक, आर्थिक, विचारधारात्मक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी महिलाओं के समान अधिकारों और विकास के समान अवसरों के लिए संघर्षों को आगे बढ़ाना होगा। नव-जनवादी क्रान्ति की प्रक्रिया के दौरान और उससे भी आगे समूचे समाज के समाजवादी रूपान्तरण की प्रक्रिया के दौरान ही स्त्री और पुरुष के बीच वास्तविक समानता हासिल की जा सकती है। इसीलिए हमारी पार्टी को निश्चित रूप से महिलाओं को जागृत, गोलबन्द और संगठित करने पर विशेष ध्यान देना होगा और उन्हें विभिन्न किस्म के मौजूदा संघर्षों में, खास कर क्रान्तिकारी महिला संगठनों में और लोक युद्ध में शामिल होने के लिए आगे आने में सहायता देनी होगी। हमें उनके बीच से दृढ़निश्चयी व दूरदर्शी

''कम्युनिस्ट नेता विकसित करने पर भी बल देना होगा। '' (पार्टी कार्यक्रम के 22वीं प्वाइंट)

दसियों साल से हमारी पार्टी द्वारा किया गया प्रयास और उक्त हमारा पार्टी कार्यक्रम के अनुसार हमारी पार्टी द्वारा ध्यान दिए जाने के परिणामस्वरूप भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन के इलाकों में महिला क्षेत्र में उल्लेखनीय बदलाव हो रहा है। पूर्वी और मध्य भारत के बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंग, दण्डकारण्य (छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र), आंध्रा-ओड़िशा सीमा के अंदरूनी जंगल और मैदानी इलाकों में, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओड़िशा के ग्रामीण इलाकों में महिलाएं सामंती पितृसत्तात्मक जंजीरों को तोड़ने और नव जनवादी क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय रूप से संगठित हो रही हैं। हमारी पार्टी के नेतृत्व में जनयुद्ध के विकास व विस्तार के साथ-साथ उन महिलाओं में जमे हुए आक्रोश को बाहर निकाल कर उन्हें क्रांति में एक मजबूत शक्ति के रूप में विकसित की। आज पूरे देश में मजबूत महिला ओन्दोलनों में एक है हमारे क्रांतिकारी महिला ओन्दोलन।

क्रांतिकारी महिला आन्दोलन द्वारा विभिन्न रणनीतिक और मैदानी इलाकों में, शहरों और कसबों में हजारों मजदूर, किसान, आदिवासी, छात्र और मध्यम वर्ग के महिलाओं को संगठित किया और उनका साथ दिया गया। भारत में जनयुद्ध के शुरुआती दिनों से ही महिलाएं अगली पंक्ति में खड़े होकर न केवल भाग लिए, उसके विकास में अपना हिस्सा के रूप में जिम्मेवारी निभाती आयी है। मजदूर-किसान आदि उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के साथ ही महिला मुक्ति होगी- इस समझ के साथ शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ, राज्यहिंसा और पितृसत्ता (पुरुष-प्रधानता और भेदभाव) के खिलाफ जन आन्दोलनों में, सामंतवाद विरोधी सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी आन्दोलनों में, जन प्रतिवाद-प्रतिरोध आन्दोलनों में, गुरिल्ला युद्ध शहरी और मैदानी आन्दोलनों में पुरुषों के साथ कंधे में कंधा मिलाकर उल्लेखनीय संख्या में हिस्सा ले रही हैं। परिणामस्वरूप आन्दोलन के इलाकों में महिलाओं का आधिकारिक रूप से प्रभाव बढ़ा है। वहां आज महिलाओं को द्वितीय श्रेणी के नागरिक के रूप में देखना कम होता जा रहा है। उनके अभिमतों का सम्मान देने की स्थिति पैदा हुई। राजनीतिक निर्णय लेने में भी वे शामिल हो रही हैं। महिलाओं का हिस्सा नहीं है ऐसे क्रांतिकारी जन संगठन हो, जन मिलिशिया हो, पार्टी के प्राथमिक (पार्ट-टाइम) इकाइयां हो, पार्टी कमेटियां हो, क्रांतिकारी जन कमेटियां (आरपीसी) हो कम है। ऐसे कोई भी क्रांतिकारी संगठन नहीं हैं जिसमें महिलाओं की भागीदारी न हो।

सांगठनिक क्षेत्र को अगर देखें, तो महिलाएं क्रांतिकारी महिला संगठन के नेत्री और संगठक के रूप में काम करते हुए महिला संगठनों को मजबूत कर रही हैं। क्रांतिकारी सांस्कृतिक संगठनों में महिलाओं की भूमिका प्रमुख है। पार्टी सेल, ग्राम पार्टी कमेटियों, एरिया कमेटियों, जिला/जोनल/डिविजनल कमेटियों में सदस्यों के रूप में, कई जगह उन कमेटियों के सचिव के रूप में विकसित हो रही हैं। स्थानीय सांगठनिक दस्तों (एलओएस) के सदस्यों और कमांडरों के रूप में काम कर रही हैं। गुरिल्ला जोनों में जहां शोषक वर्गों की सत्ता को उखाड़ दिया गया है, वहां गठित होने वाली क्रांतिकारी जन कमेटियों (आरपीसी) में ग्राम स्तर से लेकर एरिया और जिला स्तर तक आरपीसी सदस्यों, आरपीसी अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, विभिन्न विभागों के इंचार्ज के रूप में क्रांतिकारी जनसत्ता के निर्माण में महिलाएं हिस्सा ले रही हैं।

प्रेस और प्रचार क्षेत्रों में प्रेस दस्ते/प्लाटून के सदस्य, कमांडर, इनचार्ज, कम्प्यूटर ऑपरेटर के रूप में काम कर रही हैं।

क्रांतिकारी सांस्कृतिक गुरिल्ला दस्तों में सदस्य और कमांडर के रूप में काम करते हुए क्रांतिकारी सांस्कृतिक आन्दोलन को विकास कर रही हैं।

सैनिक क्षेत्र में, सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी आन्दोलन तेज होकर राज्य विरोधी सशस्त्र संघर्ष के रूप में विकसित होने के क्रम में जनमुक्ति छापामार दस्ते, प्लाटून अस्तित्व में आने के साथ-साथ उसमें भी महिलाएं शामिल होना शुरू हो गया। पीएलजीए का गठन होकर इस तरह की अलग-अलग इकाइयां एक छापामार सेना के रूप में संगठित करने के साथ-साथ उन यूनिटों में रहने वाले सभी महिला छापामार सैनिक भी सेना में शामिल हुए। बुर्जुआ सेनाएं महिलाओं को कम आकलन कर नानकम्बैट (गैर-संघर्षवाले) विभागों तक ही सीमित किया है, इसके विपरीत पीएलजीए में महिलाओं को युद्ध कार्रवाइयों में शामिल कर उनका आत्मविश्वास बढ़ा रहे हैं। सैनिक क्षेत्र में महिलाएं काम के लायक नहीं है- ऐसे पूंजीवादी और सामंतवादी सोच को चकनाचूर कर रहे हैं। वैसा ही भ्रूणरूप से विकसित होने वाले जनसत्ता (आरपीसी) के संगठनों में महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय है। आसमान में आधा हिस्सा और संघर्ष में आधा हिस्सा लेंगे, बलिदानों से पीछे नहीं हटेंगे- कहते हुए वे अपनी भूमिका निभा रही हैं।

क्रांतिकारी महिला आन्दोलन का विकास

पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए के बल पर बिहार-झारखण्ड, दण्डकारण्य (छत्तासीगढ़-महाराष्ट्र), एओबी, पश्चिम बंग, ओड़िशा, असम, तमिलनाडु-कर्नाटक-केरलम आदि स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों में क्रांतिकारी महिला आन्दोलन विकसित हो रहा है। हर संघष में महिलाएं बड़े पैमाने पर हिस्सा ले रही हैं। महिला सवालों पर कई आन्दोलन हो रहे हैं। हर साल 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय श्रामिक महिला संघर्ष का दिन के रूप में महान प्रेरणा के साथ आयोजित कर रहे

हैं। सभा और सेमिनारों में हजारों महिलाएं हिस्सा लेना आम बात हो गई है। पहले ये सब खुलेआम चलाने के बावजूद, जब से आन्दोलन के इलाकों में क्रांतिकारी महिला संगठनों पर सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाया गया, तब से गुप्त रूप से चलाया जा रहा है। इसके बावजूद जनता की मदद और पीएलजीए और जनमिलिशिया की सुरक्षा में संगठनों में महिलाओं की भूमिका कम नहीं बल्कि रोज-रोज बढ़ती जा रही है। आज आन्दोलन के इलाकों में हजारों की संख्या में महिलाएं क्रांतिकारी महिला संगठनों में संगठित होना, देश में (संसदीय दलदल में फंसा बुर्जुआ और संशोधनवादी महिला संगठन का नाम मात्र सदस्यता को छोड़कर) और कोई महिला संगठनों में भी इतना सदस्यता नहीं होना अतिश्योक्ति नहीं है। महिला आन्दोलन का विकास के लिए अथक प्रयास करने वाली कामरेड महिता और कामरेड उर्मिला जैसे उच्च स्तर के कुछ महिला नेतृत्वकारी कामरेड इस 11 साल में शहीद हुए हैं।

जन आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका

पिछले 11 साल में जन आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका बढ़ती जा रही है। महिला सवालों पर ही नहीं, कई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समस्याओं पर संचालित करने वाले आन्दोलनों में महिलाएं उल्लेखनीय तरीके से भाग ले रही हैं। खासकर, राज्यहिंसा, काले कानून, ऑपरेशन ग्रीन हंट में पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों के खिलाफ संघर्षों में, विस्थापन समस्या के खिलाफ संघर्षों में, मजदूरी बढ़ाने, जमीन कब्जा करने, किसानों के लिए समर्थन मूल्य आदि कई समस्याओं पर चलाये जाने वाले संघर्षों में, अधिक सूद पर शोषण करने वाले सूदखोरों के खिलाफ संघर्षों में, संसदीय चुनाव बहिष्कार करने के लिए प्रतिरोध कार्रवाइयों में, महिलाओं पर अत्याचार, दहेज के लिए की जाने वाली हत्याओं के खिलाफ और राजनीतिक कैदियों की रिहाई के लिए चलाय जाने वाले संघर्षों में- इस तरह कई संघर्षों में महिलाएं सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। आन्दोलन के इलाकों में लगाए जाने वाले पुलिस कैंपों के खिलाफ महिलाएं संगठित होकर संघर्ष कर कई जगहों में पुलिस कैंपों को हटवाया गया है। कुछ उल्लेखनीय संघर्ष निम्न प्रकार हैं :

राज्यहिंसा के खिलाफ संघर्षों में

जनयुद्ध में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने के साथ-ही शोषणकारी राज्य द्वारा उन पर सामूहिक लैंगिक अत्याचारों को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना आम बात हो गयी है। आन्दोलन के इलाकों के महिलाओं को गिरफ्तार करना, तीव्र यातना देना, अपमानित करना, अमानवीय ढंग से हत्या करना आदि बर्बरता चलाये जा रहे हैं। भाकपा (माओवादी) के गठन के बाद शासक वर्गों द्वारा जारी देश व्यापी पाशविक चौतरफा हमला- ऑपरेशन ग्रीन हण्ट में खासकर महिलाओं द्वारा कई कष्ट-तकलीफों का सामना कर रही हैं। महिला संगठन के सदस्यों और नेतृत्वकारियों, पीएलजीए सदस्यों को निशाना बनाकर हमले हो रहे हैं। कई मुठभेड़ों में इन 11 सालों में सैकड़ों महिला साथी शहीद हो गए। कई सौ महिलाएं जेलों में, कुछ साथी बच्चों के साथ दूभर जिन्दगी बिता रही हैं। महिलाओं में आतंक पैदाकर उन्हें आन्दोलन से अलग करना उनकी दुष्ट योजना रही है। लेकिन, महिलाओं पर जितने गम्भीर दमन लागू करने के बावजूद पीछे नहीं हट रही हैं। पाशविक राज्यहिंसा के खिलाफ जनप्रतिरोध आन्दोलनों में महिलाओं की भागीदारी और बढ़ रही है। ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के तहत पुलिस और स्पेशल बल गांवों पर भेड़ियों की तरह हमले कर कोई भी आदमी को देखते ही गोली मारने की स्थिति में भी महिलाएं उन बलों के खिलाफ प्रतिवाद-प्रतिरोध करने में अगली पंक्ति में खड़े हैं। जेलों में महिलाएं संघर्षरत झण्डा को ऊंचा उठाते हुए क्रांतिकारी उत्साह दिखा रही हैं।

अवैध रूप से अपने रिश्तेदारों को, संगठन के सदस्य और नेतृत्वकारियों एवं पार्टी के नेतृत्वकारियों को पकड़ने के मामले में उनकी रिहाई के लिए, पुलिस गोलीबारी में अपने जान गंवाने वालों के पार्थिक शरीरों को लाने के लिए, संगठित रूप से और कुछ बार अकेले भी महिलाएं प्रतिवाद-प्रतिरोध करते हुए वीरोचित परम्पराओं को आगे ले जा रही हैं। छोटी उम्र से ही महिलाओं में संरकारों और उसके भाड़े के पुलिस बलों के प्रति तीव्र घृणा बढ़ते जाने और उसके खिलाफ जन प्रतिवाद-प्रतिरोध आन्दोलनों में फौलादी होकर पीएलजीए में महिलाओं की भर्ती उल्लेखनीय रूप से बढ़ती गयी है।

झारखण्ड में पुलिस अत्याचारों के खिलाफ

झारखण्ड में 1997 से महिला आन्दोलन पर दमन तेज हुआ है। महिलाओं को अपमान करने के लिए गिरफ्तार कर सड़कों पर घूमाते थे। कई महिलाओं को जेल में ठूंस दिया गया। भीषण राज्यहिंसा को महिलाओं ने प्रतिरोध किया। कई मामलों में पुलिस वालों को घेरकर पिटाई की। गिरफ्तार महिला कार्यकर्ताओं की रिहाई के लिए पुलिस थाना पहुंच कर घेराव किया। कुछ मामलों में पूरे गांव-गांव में ही प्रतिवाद-प्रतिरोध में उतरती थी। थाना घेराव किए महिलाओं पर कुछ मामले में पुलिस द्वारा गोलीबारी भी की गयी।

गांवों में जब पुलिस घुसते हैं आदिवासी जनता नगाड़ा बजाते हैं। इसे सुनते ही तुरंत आस-पास के गांवों के जनता पुलिस वालों का प्रतिरोध करने के लिए तीर-धनुष के साथ संघर्ष में उतर जाते हैं, संघर्ष भी किए हैं। महिलाएं हाथ में लगे किसी भी रसोई सामान को ही हथियार के रूप में लेते हैं या पत्थर फेंकते हैं। जुझारू प्रतिरोध के द्वारा पुलिस

वालों को सबक सिखाते हैं। लगभग हर मामले में ही पुलिस वालों को गलतियों के लिए क्षमा मांगने में और उस तरह की गलतियां आगे कभी नहीं करेंगे, फिर इस गांव में नहीं घुसेंगे- ऐसा समझौता लिखने के लिए मजबूर करते हैं।

कलिंगनगर के विस्थापित जन आन्दोलन में

ओड़िशा में जजपुर जिला के कलिंगनगर के पास दलाल नौकरशाह पूंजीपति टाटा के टिसको कंपनी द्वारा आदिवासियों के 12 हजार एकड़ जमीन को छीन कर स्थापित करने वाले स्टील प्लांट के खिलाफ आदिवासी जनता (हो, मुंडा और संथाल) 2005 से जुझारू संघर्ष कर रहे हैं। इस आन्दोलन में महिलाएं जुझारू भूमिका निभा रही हैं। इस संघर्ष के लिए हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए पूरी तरह समर्थन करती है। महिलाएं पुलिस द्वारा गम्भीर यातनाएं, परेशानियां, गिरफ्तारियां और हत्याकांड का मुकाबला करते हुए इस संघर्ष में अगली पंक्ति में खड़ी हैं। 2 जनवरी, 2006 को पुलिस द्वारा किया गया जनसंहार (जिसमें 14 आदिवासी जनता जन गंवायी) के बाद आन्दोलन उग्र रूप लिया। वर्तमान में अस्थाई तौर पर स्टील प्लांट के निर्माण पर रोक लगाने के बावजूद जनता के संघर्ष की चेतना पर चोट पहुंचाकर प्लांट निर्माण को आगे बढ़ाने की कोशिशों के खिलाफ विभिन्न रूपों में आन्दोलन जारी है।

नंदीग्राम आन्दोलन में

पश्चिम बंग के मेदिनीपुर जिला के नंदीग्राम में सलेम कंपनी द्वारा रसायन हब निर्माण के लिए हजारों एकड़ बहुमूल्य उपजाऊ जमीन को कब्जा कर विशेष आर्थिक जोन (सेज) निर्माण करने के खिलाफ 3 जनवारी, 2007 से जनता द्वारा आन्दोलन शुरू किया गया है। अपनी जमीन, घर-बार और गांवों को बचाने के लिए भूमि उच्छेद प्रतिरोध कमेटी (बीयूपीसी) के नेतृत्व में चलाया गया साहसिक आन्दोलन में महिलाएं अगली पंक्ति में खड़ी हैं। अत्यंत वीरतापूर्ण चलाए गए जन प्रतिरोध-प्रतिवाद की वजह से सरकार को नंदीग्राम में सेज निर्माण बंद करने के लिए मजबूर कर दिया। लेकिन माकपा सामाजिक फासीवादी सरकार की योजना के अनुसार 14 मार्च, 2007 को और 6-14 नवंबर के बीच अमानवीय हत्याकांड और अत्याचार को अंजाम देकर सिंगूर जैसे संघर्ष नंदीग्राम के नमूना को अनुसरण किए बिना रोकने का दिवास्वप्न देखी। नवंबर हत्याकांड में उस संघर्ष में अगली पंक्ति में खड़ी दसियों महिलाओं को- माताओं के सामने बच्चियों को, बच्चों के सामने माताओं को मकापा गुण्डों द्वारा सामूहिक अत्याचार किया गया। कई सौ लोगों की हत्या कर, लापता कर, हजार से ज्यादा लोगों को घायल किया गया। केन्द्र व राज्य सरकारों के खिलाफ समझौते किए बिना नंदीग्राम की जनता द्वारा चलाया गया आन्दोलन एक महान आन्दोलन के रूप में इतिहास में अंकित है। वह इस तरह कई आन्दोलन को प्रेरणा दे रहा है।

लालगढ़ जन उभार में

पीएलजीए द्वारा कार्यान्वित सलबोनी एम्बुश के बाद लालगढ़ की जनता पर पुलिस अत्याचारों के खिलाफ शुरू हुए आन्दोलन अल्प अवधि में ही दावानल में बदल गया। 'लालगढ़ जन उभार' के रूप में तब्दील हो गया। पुलिस अत्याचारों के खिलाफ जन कमेटी के नेतृत्व में चलाया गया इस जन उभार में सैकड़ों-हजारों महिलाएं प्रमुख भूमिका निभायी। जनता पर आतंक मचाने वाले पुलिस अफसरों और सरकार को जनता से क्षमा याचना करने की मांग की जाने लगी। उस इलाके से पुलिस को मार भगाने में, 1100 गांवों के जनता उस इलाके में पुलिस और सरकार को घुसने नहीं देने के साथ बाहरी दुनिया से संबंध तोड़कर सभी सड़क मार्ग को बंद करने, बारूदी सुरंग और बूबीट्रैपों को लगाने और 1300-1400 गांवों में दिन-रात पहारा करने में महिलाएं बड़ी संख्या में सिद्धू-कान्हु जन मिलिशिया में शामिल हो गयी। परम्परागत हथियारों से लैस जनता के लालगढ़ से कोलकता तक किये गये कई जुलूस-प्रदर्शनों में महिलाएं आगे रहीं। इस विद्रोह के निर्माण और विकास में हमारी पार्टी और पीएलजीए की प्रमुख भूमिका रही।

माकपा के पार्टी कार्यालय पुलिस कैंपों के रूप में तब्दील होने वाले सरकारी भवनों को ध्वस्त करने, हर्मद वाहिनी को चलाने वाले माकपा नेताओं, उनके गुण्डों और अन्य हथियारबंद गिरोहों का सफाया करने, जून 2009 में केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से चलाए गए 'लालगढ़ ऑपरेशन' के विरूद्ध सैकड़ों गांवों से हजारों जनता के प्रतिरोध करने, 50 से ज्यादा गांवों में जमीन जब्त करने, खासकर जुलाई 2010 में सोनामुखी के महिलाओं पर अत्याचारों के खिलाफ झाड़ग्राम में बड़े पैमाने पर हुए प्रदर्शनों, बड़े पैमाने पर जनता द्वारा चलाया गया विकास कार्यक्रमों में महिलाएं अगली पंक्ति में रही हैं। इसी वजह से हर्मद वाहिनी गुण्डों और संयुक्त बलों के हमलों में दसियों की संख्या में महिलाएं अत्याचार का शिकार हुईं और कइयों को मार दिया गया। अर्चना सिंह, उसकी बेटी, सावित्री सोरेन, आशुमति मुर्मू, चुड़ामनी, पार्वती राणा, फतगूल मारण्डी, खुकू महतो, फुलमनी मैती, सरस्वती दोलुई, आरती मंडल, गीताली अड़क जैसे कई महिलाओं को इन हमलों में अपनी जान गंवानी पड़ी।

पुलिस के पाशविक हमलों के खिलाफ जन आन्दोलन के रूप में शुरू होकर शसस्त्र जन विद्रोह के रूप में तब्दील होना, सरकार विरोधी संघर्ष के रूप शुरू होकर राजनीतिक सत्ता छीनने और जनसत्ता निर्माण की ओर लालगढ़ आन्दोलन के विकास में महिलाओं की सक्रिय भूमिका उल्लेखनीय है।

नारायणपटना आन्दोलन में महिलाओं के प्रतिवाद-प्रतिरोध

नारायणपटना आन्दोलन ऐसा आन्दोलन है कि जमीन की समस्या को सत्ता की समस्या से जुड़ा हुआ है कहकर उसे और एक बार एजेण्डा में लाया। इस आन्दोलन के तहत हुए शराब विरोधी संघर्ष और जमीन के लिए संघर्ष में महिलाओं की भूमिका प्रेरणादायक है। इस आन्दोलन में गठित जन मिलिशिया संगठन 'घेनुवा वाहिनी' में भी महिलाओं ने सक्रिय रूप से काम की है। हर कार्यक्रम में उन्होंने भाग लेकर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ी है। महिलाओं की भागीदारी के बिना कोई भी आन्दोलन, प्रर्दशन, प्रतिवाद-प्रतिरोध, सभा या बैठकें नहीं होती। कुछ कार्यक्रम ऐसे भी हैं जिसमें महिलाएं अगली पंक्ति में रहती हैं और कुछ कार्यक्रमों को खुद महिलाएं ही संचालित करती है।

दुश्मन के ऑपरेशन ग्रीन हण्ट की वजह से पुलिस और शांतिसेना आदि बलों के हमले गांवों पर हर दिन होने की स्थिति में उसे प्रतिरोध करने के लिए महिलाएं परम्परागत हथियारों से लैस होकर, मिर्चा पाउडर हमेशा साथ में तैयार रखती हैं। 'हम पहली पंक्ति में रहेंगे, आप हमारे पीछे रहिए' कहकर पुरुषों को उन्होंने पीछे भेजकर पुलिस के के खिलाफ प्रतिरोध आन्दोलनों का नेतृत्व कर रही हैं और कुछ घटनाएं ऐसी भी हैं जिसमें पुलिस के साथ लड़ाई में उन्हें घायल किया और मार भगाया।

उदाहरण के लिए, बोरिगि पंचायत के लेल्लिपाया गांव पर जून 2009 को 50 की संख्या में पुलिस हमला कर पुरुषों को पकड़कर ले जाने का प्रयास किया। इस दौरान तुरंत सभी महिलाएं एकजुट होकर एक पुलिस जवान को पकड़ कर पिट दी। इससे डरकर पुलिस हवाई फायरिंग करते हुए उस पुलिस को लेकर भाग गई। और एक बार इस गांव पर जब हमला किया तब नजदीक के मंजरिगुड़ा गांव की महिलाओं से मिलकर प्रतिरोध किया गया और पुलिस वालों को मार भगाया गया।

बंदुगांव ब्लॉक के कौरुबड़ी पंचायत जंगिडि वलसा गांव पर 3 अगस्त, 2009 को 35 की संख्या में आंध्र प्रदेश के ग्रेहाउण्ड्स पुलिस द्वारा हमला किया गया। उस समय गांव में सिर्फ महिला लोग ही थे। वे सभी एकजुट होकर पुलिस को घेरकर लड़ते हुए, काम में लगे हुए पुरुषों को और नजदीकी गांव के लोगों को खबर भेज दी गयी। कुछ ही देर में चारों तरफ से महिला और पुरुष परम्परागत हथियारों से लैस होकर पुलिस को घेरा और उनसे हथियार, सेल फोन और पिट्ठू को छीन लिया। 'आंध्रा पुलिस क्यों ओड़िशा में घुस रही है'- ऐसा सवाल करते हुए उन्हें रस्सी से बांध दिया गया। बीडीओ और थानेदार आकर 'फिर ऐसी गलती नहीं करेंगे' का प्रतिज्ञा-पत्र लिखने के बाद ही जनता द्वारा पुलिस को छोड़ा गया।

अक्टूबर 2009 को पुलिस द्वारा चासी मुलिया संघ के नेतृत्वकारी कामरेडों नाचिका लिंगा, सिंगन्ना और रामपाड़ा को अराजक और लूटेरे के रूप में चिन्हित कर उनकी तस्वीरों के पोस्टर गांव-गांव में लगाया गया। इसके विरोध में सिर्फ महिला लोग ही दो हजार की संख्या में इकट्ठा होकर नारायणपटना थाना पहुंची और थाना की दीवार में लगाये गये पोस्टरों को फाड़ दी। डर के मारे पुलिस द्वारा थाना में ताला लगाने और लाठी चार्ज करने के बावजूद महिलाएं पीछे नहीं हटी। गेट को ऊपर से लांघ कर थाना के अंदर घुसकर थानेदार के समक्ष प्रतिवाद जतायी।

संघर्ष में सक्रिय भूमिका निभाने वाली महिलाओं पर दमन को तेज किया गया। पुलिस हमलों में कई महिलाएं पुलिस और शांति कमेटी के गुण्डों द्वारा अत्याचार और बेरहमी से यातनाएं और अमानवीय अपमानित किये जाने का सामना कर रही हैं। महिला संगठन के नेत्रियों और सदस्यों एवं साधारण महिलाओं की भी पुलिस अवैध रूप से गिरफ्तार कर जेलों में ठूंस रहे हैं। कई महिलाएं ऐसे भी हैं जिनका नाम 'अधिकाधिक वांक्षित' सूची में रखा गया है। इसलिए ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के खिलाफ लड़ना महिलाओं का एक मुख्य कार्यभार हो गया है। अप्रैल 2010 को नारायणपटना में किए गए प्रदर्शन में 10 हजार महिलाएं शामिल हुईं। इस दौरान उन्होंने राजनीतिक बन्दियों की रिहाई और पुलिस कैंपों को हटाने की मांग रखी।

पुलिस और जमींदार जितने भी रुकावट पैदा करने और धान कटाई के लिए आने पर फायरिंग करने की धमकी देने के बावजूद, संघर्ष से हासिल की गई अपनी जमीन में धान कटाई के लिए महिलाएं कमर कस ली है। फायरिंग करने और खून बहाने के बावजूद उस जमीन में हम जान देंगे लेकिन जमीन नहीं छोड़ेंगे- ऐसी शपथ ली है। इस तरह उन्होंने वर्तमान इतिहास में नया साहसिक अध्याय को जोड़ रही हैं।

इस तरह झारखण्ड में कई जगहों पर, डीके में रावघाट, बोधघाट और सुर्जागढ़, ओड़िशा के नियमगिरी, पोसको, मालि-देवमालि और गंधमर्दन, आंध्र प्रदेश के सोमपेट, काकरापल्ली और पोलवरम आदि विस्थापन विरोधी जन आन्दोलनों में और तेलंगाना राज्य के लिए चलाया गया व्यापक आन्दोलन में महिलाएं सक्रिय रूप से भाग लेकर शोषक वर्गों की लूटेरी नीतियों के खिलाफ संघर्ष की हैं।

सैनिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

आज पीएलजीए के तीन बलों- प्रधान, द्वितीय और बुनियादी बलों में शामिल होकर महिलाएं बड़ी संख्या में सक्रिय रूप से जनयुद्ध में भाग ले रही हैं। पीएलजीए के बुनियादी बल और नागरिक सेना के तौर पर रहे जन मिलिशिया के आत्मरक्षा दल/विभिन्न किस्म के जन मिलिशिया दल, प्लाटून और कंपनियों में बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हैं। उदाहरण के लिए, जन मिलिशिया प्लाटून में कुल 27 सदस्यों में 10-13 की संख्या में महिलाओं का हिस्सा है। जन मिलिशिया सदस्य, कमांडर और मिलिशिया कमांडर-इन-चीफ के रूप में, लोकल गुरिल्ला दस्ते, लोकल आर्गनाइजेशन दस्ते, कंबैट प्लाटूनों, कंपनी और बटालियन, सप्लाई दस्ते और प्लाटूनों में सदस्य, सेक्शन डिप्यूटी कमांडर, कमांडर, प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्य, प्लाटून डिप्यूटी, प्लाटून कमांडर के रूप में और कुछ कामरेड और उच्च स्तर में विकसित होकर काम कर रही हैं। इसके साथ हथियार तैयारी-रिपेरिंग इकाइयों में मेकानिक के रूप में, पार्टी नेतृत्वकारी कामरेडों के सुरक्षा गार्ड के रूप में, मिलिटरी इंस्ट्रक्टर, डॉक्टर और टेलर के रूप में, इस तरह कई विभागों में अपनी जिम्मेदारी निभा रही हैं।

पीएलजीए के सात सदस्यों के दस्ते या सेक्शन में तीन-चार महिलाएं होती हैं। महिलाएं नाम के वास्ते पीएलजीए में नहीं हैं। पीएलजीए द्वारा चलाए जाने वाले एम्बुश और रेड जैसे लगभग सभी तरह की युद्ध कार्रवाइयों में वे हिस्सा ले रही हैं। एस्साल्ट टीमों में हिस्सा लेते हुए दुश्मन के साथ लड़ रही हैं। फौजी क्षेत्र में और जिम्मेदारी लेकर आगे बढ़ने का प्रयास कर रही हैं। दुश्मन के साथ युद्ध लड़ते हुए जनयुद्ध को उच्च स्तर में विकसित करने में मुख्य भूमिका निभा रही हैं। अंतिम सांस तक लड़ने की दृढ़संकल्प और आत्मबलिदान की चेतना प्रदर्शित कर रही हैं। कुछ एम्बुशों में कमांडर के रूप में मुख्य भूमिका निभाकर अपनी क्षमता प्रदर्शित कर रही हैं। पिछले 11 सालों में हुए सभी प्रमुख युद्ध कार्रवाइयों में महिलाओं की भूमिका रही है। महिलाओं की भागीदारी के बिना युद्ध कार्रवाइयां बहुत कम हैं।

जन मिलिशिया में महिलाओं की भूमिका

सामंतवाद विरोधी, साम्राज्यवाद विरोधी, सरकार विरोधी आन्दोलनों में, बहुराष्ट्रीय कंपनियों, सेज, खदान, पोलवरम जैसे भारी डैम परियोजनाओं आदि से विस्थापित होने वाली जनता के संघर्षों में, राज्यहिंसा के खिलाफ संघर्षों में जन प्रतिवाद-प्रतिरोध को प्रत्यक्ष रूप से जन मिलिशिया ही नेतृत्व प्रदान कर रहा है। नंदिग्राम, कलिंगनगर, लालगढ़, नारायणपटना, नियमगिरि, विशाखा बॉक्साइट खनन विरोधी आन्दोलनों में जनता पारम्परागत हथियारों से लैस होकर जुझारू संघर्ष की है। कई संघर्ष अभी भी जारी है। इस जन प्रतिरोध आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका प्रमुख है।

सलवा जुडूम और सेन्द्रा जैसे प्रतिक्रांतिकारी अभियानों के खिलाफ

सलवा जुडूम और सेन्द्रा जैसे प्रतिक्रांतिकारी अभियानों को, एसपीओ, कोया कमांडो, टीपीसी, जेपीसी, सशस्त्र पीपुल्स मोर्चा, हर्मद वाहिनी, नासुस, ग्राम रक्षा कमेटी और शांति कमेटी, शांति सेना, शांति सभा आदि प्रतिक्रांतिकारी संगठनों को और 2009 के मध्य से जारी ऑपरेशन ग्रीन हण्ट का मुकाबला करने के लिए जन मिलिशिया के हाथ में 'बूबीट्रैप या प्रेजर बम', 'पारम्परिक ट्रैप' (एक तरह के गढ्ढे जिसमें बांस, लौहे के कील या तीरों को गाड़ दिया जाता है और ऊपर से सभी नामोनिशान मिटाते हुए कैमोफ्लेज किया जाता है) धारधार हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। गांवों में दुश्मन घुसने की दिशा में इस तरह के गढ्ढे खोदे जाते हैं। रात में गुप्त रूप से गांवों पर हमला करने के लिए आने वाले पुलिस बल इस ट्रैपों में गिरकर, उसमें लगाये गये बांस या लौहे के कीलों एवं तीरों से गम्भीर रूप से घायल होने की कई घटनाएं देखी जा सकती हैं। इसके कारण बेरोकटोक गांवों पर हमला करने के लिए आने वाले पुलिस बलों के सामने कई सीमितताएं पैदा हुई हैं। हजारों की संख्या में परम्परागत ट्रैपों को खोदने में महिला मिलिशिया की भूमिका प्रमुख है।

इस तरह महिलाओं की बेझिझक भागीदारी जन प्रतिरोध कार्रवाइयों में ही नहीं, बल्कि युद्ध कार्रवाइयों में भी अपनी जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाने के लिए प्रयास कर रही हैं। भाड़े के पुलिस बलों से गांवों को, जनता को, संपत्ति को बचाने में आरपीसी के नेतृत्व में जन रक्षा कमेटियों द्वारा की जाने वाली सुरक्षा कार्रवाइयों में जन मिलिशिया बल की भूमिका प्रमुख है। इसके तहत संतरी करने, जब पुलिस बल हमले करने के लिए घुसता है, तब घात लगाकर तीर-धनुष और भरमार (भराठी) के साथ किए जाने वाले हमलों में मिलिशिया महिलाएं साहसिक ढंग से शामिल होती हैं। गांवों और जान-माल को बचाने के लिए जच्चे-बच्चों के साथ महिलाएं प्रसव के 8 दिन में ही जच्चे बच्चे को पीठ में बांध कर संतरी करने की मिसालें, महीने पूरे होने वाले गर्भवती महिलाएं, अपंग महिलाएं भी संतरी करने की मिसालें हैं।

वैसे ही गांवों में जमीन जोतने, बीज बोने, फसल काटने, सामूहिक काम में भाग लेने आदि उत्पादन कामों में, गरीब किसानों को मदद देने में मिलिशिया महिलाओं की भूमिका प्रशंसनीय है। भाड़े के पुलिस बल और सलवा जुडूम जैसे गुण्डा वाहिनी द्वारा गांवों पर हमले कर जला दिए गए घरों को फिर से निर्माण करने, उस परिवारों को राहत देकर उनका

विश्वास बढ़ाने में महिलाएं धीरज से प्रयास कर रही हैं। इससे कोई भी समझ सकते हैं कि क्रांतिकारी आन्दोलन के इलाकों में जनता खासकर महिलाओं की जिन्दगी एक युद्ध में तब्दील हो गयी है।

फर्जी मुठभेड़, गिरफ्तार, नरसंहार, पुलिसी हत्यांकांड-अत्याचारों के विरोध में बंद बुलाये जाने के मामले में जन मिलिशिया सैकड़ों की संख्या में गोलबंद होकर, हजारों जनता को एकत्र कर सरकार और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्गों की सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। इस तरह की घटनाओं में महिलाएं बड़ी संख्या में न केवल शामिल हो रही हैं, बल्कि कुछ कार्रवाइयों को महिला मिलिशिया कमांडर नेतृत्व भी प्रदान कर रही हैं।

ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के तहत केन्द्र-राज्य सरकारों द्वारा चलाये जाने वाले झूठे सुधार कार्यक्रमों के खिलाफ आंध्र-ओड़िशा सीमांत इलाके में कई गांवों की जनता खासकर महिलाएं आन्दोलन चलायीं। सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत बांटे गए साड़ी, कम्बल, रसोई डेगची, साईकिल, खेल सामग्री आदि को ले जाकर वापस फेंक दी।

वर्ष 2006 में डीके में बैलाडिला पहाड़ों में स्थित एनएमडीसी खदानों में विस्फोटक गोदामों पर पीएलजी द्वारा हमला किया गया। इसमें लगभग 20 टन विस्फोटक पदार्थ को जब्त किया गया। इसे ढोने के लिए 900 संख्या में जन मिलिशिया बल पीएलजीए को मदद किया। इन मिलिशियाओं में 40 प्रतिशत महिलाएं भाग लेकर अपना जिम्मा निभाई। यह हमला मिलिशिया महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाया। 2009 में पूर्वी बस्तर में इसी तरह विस्फोटक पदार्थ जब्त करने की योजना में 5-6 सौ मिलिशियाओं में 30 प्रतिशत महिलाएं भाग ली। 13 मई, 2013 में 'ऑपरेशन अमोनिया' में जब्त किए गए 17 टन अमोनियम नाइट्रेट को ढोने में शामिल मिलिशियाओं में 30 प्रतिशत महिलाएं शामिल थीं।

जन मिलिशिया बल पार्टटाइम काम करने के बावजूद जब युद्ध कार्रवाइयों में भाग लेते हैं तब उनके खाने-पीने की व्यवस्था करना मुश्किल होता है। कभी-कभी खाना नहीं मिलता है। सिर्फ माड़ भात खाकर अपनी सुरक्षा जिम्मेदारी निभाते हैं। कभी वह भी नहीं मिलने पर संतरी के दौरान चक्कर आने से कुछ महिला कामरेड गिर पड़ी हैं। सामूहिक कृषि क्षेत्रों में फसल उगाने, वनोपजों को इकट्ठे कर बेचने और सामूहिक रूप से मजदूरी करने आदि के जरिए इस समस्या को हल कर रहे हैं। पीएलजीए के प्रधान और द्वितीय बलों द्वारा संचालित युद्ध कार्रवाइयों में मदद देते हुए उसमें शामिल भी हो रही हैं।

पुलिस के हमलों में कई मिलिशिया महिला कमांडर और सदस्य दुश्मन के साथ घमासान लड़ाई लड़ते हुए अपने प्राणों को न्योछावर किया है। डीके के पश्चिम बस्तर में मिलिशिया प्लाटून कमांडर कामरेड पोट्टामी आयती (अवनार), मिलिशियाा सदस्य दक्षिण बस्तर में कामरेड मिड़ियम आयते, पूर्वी बस्तर में कामरेड दसरी सलामी, राने गावडे, फूलो वड्डे, रामोली वड्डे, माड़ में संतोषी आदि कामरेड पुलिस की गोलियों का सामना करते हुए शहीद हो गए।

पीएलजीए के प्रधान और द्वितीय बलों में महिलाओं की साहसिकता

इस 11 साल में डौला रेड, जहानाबाद रेड, गिरिडीह रेड, मधुबन रेड, पदेड़ा एम्बुश, एनएमडीसी रेड, मुरकीनार रेड, झाराघाटी एम्बुश, रानीबोदली रेड, कुदरू एम्बुश, उरपलमेट्टा एम्बुश, ताड़मेटला-1 एम्बुश, तोमगुड़ा एम्बुश, भट्ठीगुड़ा एम्बुश, तड़केल एम्बुश, कई सलवा जुडूम शिविरों पर किए गए रेड, खास महल रेड, भीमबांध एम्बुश, भटगांव रेड, किरिबुरू एम्बुश, मोदुगपाल-1 एम्बुश, गम्पकोण्डा एम्बुश, बलिमेला एम्बुश, तेल्लराई एम्बुश, मोदुगपाल-2 एम्बुश, बण्डा-1, 2 एम्बुश, दामनजोड़ी रेड, मरकानार एम्बुश, मिनपा एम्बुश, मदनवेड़ा एम्बुश, लाहेरी एम्बुश, टव्वेटोला एम्बुश, मांधगिरी एम्बुश, पालचेलमा एम्बुश, कोंगेरा एम्बुश, लखीसराय-कजरा एम्बुश, सारंडा काउण्टर एम्बुश, तिमपुरम एम्बुश, खोबरामेंडा एम्बुश, नारगेण्ड़ा एम्बुश, झाराघाटी फ्रंटन एटैक, गट्टम नाइट एम्बुश, भेज्जी एम्बुश फ्रंटल एटैक, सुलंगी एम्बुश, किरंदूल नाइट एम्बुश-1, 2, मेटलाचेरुवु एम्बुश, गोरगोण्डा एम्बुश, इरुपगुट्टा एम्बुश, गिरिडीह में कैदी वाहन पर एम्बुश, जन्नुगुड़ा एम्बुश, बदरपंगा एम्बुश, सत्तीघाट नाइट एम्बुश, मिनपा में सीआरपीएफ कैंप के खिलाफ प्रतिरोध, जीरमघाटी एम्बुश, बड़े झलिया मौकापरस्त रेड, नूकनपल्ली एम्बुश, पाकुड़ एम्बुश, राल्लगढ्ढा एम्बुश, पीरटांड़ एम्बुश, सांगड़ी एम्बुश, टाहकावाड़ा एम्बुश, चिंतागुफा एम्बुश, फरसागांव एम्बुश, मुरमुरी एम्बुश, कसलपारा एम्बुश-1, 2, पिड़मेल एम्बुश, बचेली एम्बुश, जामबाई घाट एम्बुश जैसे भीषण संघर्षों में महिलाएं साहसिक ढंग से अपनी भूमिका निभायी।

3 सितम्बर, 2005 को सीआरपीएफ जवानों को ले जाने वाली माईनप्रुफ गाड़ी को बहुत ही साहसिक ढंग से विस्फोट कर 24 पुलिस का सफाया किए गए पदेड़ा एम्बुश (डीके) का नेतृत्व एक महिला कमांडर ने करके महिलाओं की क्षमता को दर्शाया।

भारत के शासक वर्गों को आश्चर्यचकित करने वाले 'ऑपरेशन रोप वे'- नयागढ़ रेड (15 अगस्त, 2008) में महीनों भर पैदल चलने, अपरिचित जनता और भाषा एवं इलाके में सैकड़ों कि.मी. दूर कूच करते हुए, कई मुश्किलों एवं रुकावटों को पुरुष कामरेडों के साथ पार करते हुए दसियों की संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। हमले में अपनी जिम्मेदारी- एस्साल्ट में हिस्सा लेने, हथियार जब्त करने के साथ-साथ कम्युनिकेशन, रेक्की, घायल साथी को ढोकर ले

जाने और इलाज करवाने आदि जिम्मेवारी को वीरतापूर्वक निभायी। हमले के लिए तैयारी के दौरान ही आंध्र प्रदेश के ग्रेहाउण्ड्स बल गुड़ारी गांव के पास पीएलजीए बलों का घेराव करके हमला किया। इसमें प्लाटून-6 के प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्या (पीपीसीएम) कामरेड कमला (मंगलो) दुश्मन के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए। नयागढ़ हमले में सैकड़ों आधुनिक हथियार और हजारों कारतूस जब्त कर रिट्रीट करते समय अगले दिन गोसामा संघर्ष हुआ। वीर लाल छापामार योद्धाओं के प्रतिरोध में एसओजी के सहायक कमांडेंट के साथ तीन एसओजी कमांडो मारे गए और दुश्मन के साथ भीषण लड़ाई लड़ते हुए प्लाटून-6 के और एक पीपीसी सदस्या कामरेड रामबत्ति व रीजनल कंपनी-1 सदस्य कामरेड इकबाल शहीद हो गए।

मरकानार एम्बुश 1 फरवरी, 2009 को महिला कामरेड दिल दहलाने वाले की तरह और प्रेरणादायक विन्यास करते हुए आदर्श नमूना पेश किया। एके से लैस एक पुलिस जवान अपनी जान बचाने के लिए जब भाग रहा था, तब 12 बोर गन से लैस एक महिला गुरिल्ला उसे पीछा करते हुए गोली मार दी और उसके पास से एके-47 हथियार को जब्त की। एक पुलिस जवान मामूली रूप से घायल होकर एसएलआर से जब फायर कर रहा था, तब और एक महिला कामरेड दौड़कर गयी और उसे पैर से लात मारकर उससे एसएलआर को छीन ली। इससे यह और एक बार साबित हुआ कि मानव की उच्च चेतना ही हार-जीत में निर्णायक है।

ऐतिहासिक मुकराम-ताड़मेटला एम्बुश (6 अप्रैल 2010) में बड़ी संख्या में दुश्मन के बलों को सफाया करने में महिला कामरेड भी अपनी भूमिका निभायी। इस हमले में हथियार जब्ती के क्रम में दुश्मन के एक ग्रेनेड विस्फोट होकर सेक्शन कमांडर कामरेड रुकमती शहीद हो गए।

22 सितम्बर, 2010 को दक्षिण बस्तर में पीएलजीए के द्वितीय और बुनियादी बल मिलकर कार्यान्वित किया गया एम्बुश में दो पुलिस मारे गए। इस एम्बुश का नेतृत्व भी एक महिला कामरेड द्वारा किया गया था।

दुश्मन पर साहसिक ढंग से कूद पड़ने के क्रम में कई महिला कामरेड अपनी जान की कुरबानी की। डौला रेड (डीके) में कामरेड करुणा (सेक्शन कमांडर), सोमारी (सदस्या), गंगालूर सलवा जुडूम शिविर पर रेड (डीके) में कामरेड एंकी (सेक्शन डिप्यूटी), झुमरा पहाड़ रेड (झारखण्ड) में कामरेड अंजु (पीपीसीएम), नयागढ़ (ओड़िशा) ऑपरेशन में कामरेड कमला (पीपीसीएम), कामरेड रामबत्ति (पीपीसीएम), तड़केल एम्बुश में कामरेड शांति (सदस्या), एमवी-79 हमले (एओबी) में कामरेड रत्ना (सदस्या), कंचाल काउण्टर एम्बुश (कोवर्ट ऑपरेशन-डीके) में पीएलजीए सदस्या कामरेड मड़कम बुद्रि, रव्वा सन्नी, पूनेम जोगी, मड़कम बाई, वेको विमला, गुनुकुराल्ला एम्बुश (एओबी) में कामरेड सुजाता (प्लाटून कमांडर), मोदुगपाल (डीके) में कामरेड रीना (सदस्या), डाईगुड़ा (एओबी) एम्बुश में कामरेड मंगली (पीपीसीएम), मुकराम-ताड़मेटला एम्बुश (डीके) में कामरेड रुकमती (सेक्शन कमांडर), खोबरामेंडा एम्बुश (गोंदिया) में कामरेड मंजु (सदस्या), चेरुवूरु काउण्टर एम्बुश (एओबी) में एरिया कमेटी सदस्या कामरेड लता, ज्योति, शांति, भेज्जी एम्बुश (डीके) में कामरेड मंगली (पीपीसीएम) जैसे कई वीर वनिताएं अपनी जान को परवाह न कर साहसिक ढंग से लड़ते हुए जनयुद्ध के इतिहास में एक नया अध्याय को लिख रही हैं।

इसके साथ-साथ पुलिस और अर्द्धसैनिक बल और पीएलजीए के बीच हुई मुठभेड़ में दसियों संख्या में महिला कामरेड शहीद हो गए। इसमें अगस्त 2011 में डीके गढ़चिरोली जिले में माकड़चुव्वा गांव के पास सैकड़ों कोबरा, सी-60 कमांडो बल और उसके घेरा में अकेली फंसी चातगांव के एरिया जनताना सरकार की अध्यक्षा कामरेड रणिता के बीच लगभग 6-7 घंटों तक हुए भीषण संघर्ष उल्लेखनीय है। इस संघर्ष में कामरेड रणिता ने अंतिम सांस तक वीरतापूर्वक लड़ते हुए तीन कोबरा कमांडो को मारा और 4 को घायल किया। (माकड़चुव्वा मुठभेड़ के ब्योरा के लिए पृष्ठ-70 में देखें)। इस तरह जनयुद्ध के विकास में महिला कामरेडो द्वारा पेश किए गए आर्दश पीएलजीए के लिए सदा प्रेरणादायक होगा।

महिला कामरेडो के विकास के लिए विशेष ध्यान

पार्टी और पीएलजीए में महिलाओं के विकास के लिए पार्टी कमेटियों द्वारा एक हद तक ध्यान दिया गया है। महिलाओं को सक्षम संगठनकर्ता के रूप में विकसित करने के लिए ध्यान दिया जा रहा है। पर्याप्त योग्यता रखने वालों को एरिया कमेटियों में, उसके बाद जोनल/डिविजन/जिला कमेटियों में पदोन्नति दी जा रही है। वर्तमान में कई एसी, जेडसी/डीवीसी/डीसी में महिलाओं की संख्या उल्लेखनीय है। महिलाओं को साहसिक गुरिल्ला योद्धा और कमांडर के रूप में विकसित करने के लिए विशेष महिला मिलिटरी कैंप का संचालन किया जा रहा है। इसके साथ-साथ पुरुषों के साथ भी मिलिटरी कैंपों में महिलाएं शामिल हो रही हैं। जैसे पहले ही बताया गया है कि महिलाएं कई युद्ध कार्रवाइयों में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेकर अनुभव हासिल करते हुए अपनी मिलिटरी क्षमता बढ़ा रही हैं। धीरे-धीरे विभिन्न स्तर के मिलिटरी कमानों में सदस्य के रूप में, विभिन्न मामले में गठित यूनिफाइड कमानों में सदस्य के रूप में, कमांड इंचार्ज, कमांडर इन चीफ, राजनीतिक कमिसार के रूप में प्रगति हासिल कर रही हैं।

शोषणमूलक वर्ग समाज के पितृसत्तात्मक सोच का प्रभाव क्रांतिकारियों पर भी काफी है। पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी जन संगठनों में महिला कामरेडों की पहलकदमी, साहसिकता और विकास के सामने में वह एक रुकावट के रूप में रही है। महिला सवाल पर हमारी पार्टी कतारों में, पीएलजीए के बलों में, जन संगठनों और जनता में सर्वहारा वर्ग दृष्टिकोण को बढ़ाने के लिए 'महिला सवाल पर हमारा दृष्टिकोण' के नाम से पॉलिसी दस्तावेज हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा बनायी गयी है। इस पर विभिन्न संदर्भों व विभिन्न समय में विभिन्न स्तर की पार्टी कमेटियों और कमानों द्वारा महिला और पुरुष कामरेडों को लेकर क्लास और वर्कशॉप संचालित कर उनकी समझ बढ़ायी जा रही है। समयबद्ध तरीके से होने वाली पार्टी कमेटियों की बैठकों में संदर्भ के मुताबिक एजेण्डा में शामिल कर पितृसत्तात्मक रूझानों के खिलाफ 2009-2010 में चलाया गया शुद्धिकरण अभियान में पार्टी कतारों द्वारा पितृसत्ता के खिलाफ भी संघर्ष किया गया। पार्टी में इस तरह के अभियान इससे पहले भी चलाया गया। इस अभियान को जनता तक ले जाकर उन्हें भी शिक्षा दी जाती है। पितृसत्तात्मक सोच के खिलाफ संघर्ष महिला कामरेडों में आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद किया है। युद्ध कार्रवाइयों में भी यह बदलाव उजागर हो रहा है।

पहले ही उल्लेख किया गया है कि मजदूर-किसान आदि उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के साथ ही महिला की मुक्ति जुड़ी हुई है। नव जनवादी क्रांति के क्रम में, उसके बाद पूरे समाज समाजवादी परिवर्तन के दौर से गुजरने के क्रम में, अंत में साम्यवाद में ही महिला व पुरुषों के बीच सही समानता सम्भव होगी। इसलिए, महिला और पुरुष के बीच की समस्या को मित्रतापूर्ण सवाल के रूप में लेते हुए जनवादी तरीके से निपटने का प्रयास करना होगा। महिला और पुरुषों के बीच की एकता को और बढ़ाते हुए नव जनवादी क्रांति, बाद में समाजवाद-साम्यवाद की जीत के लिए दृढ़संकल्प के साथ संघर्ष को जारी रखना होगा।

★

(पृष्ठ-93 के शेष भाग...)

के आन्दोलन, उस्मानिया वि.वि. के छात्रों पर पुलिस द्वारा अमानवीय लाठी चार्ज से पूरा तेलंगाना में आग लग गयी। आन्दोलन राज्यभर में विस्तार होकर जन आन्दोलन के रूप में तब्दील हो गया। चलो! विधान सभा, मिलियन मार्च, सागरहारम, क्विट तेलंगाना सहित कई जुझारू प्रदर्शनों में हमारी पार्टी सक्रिय रूप से भाग ली। लोकसभा में विधेयक (बिल) पास करने की राजनीतिक मांग का समर्थन की। पूरी जनता की हड़ताल ('सकला जनुला सम्मे') में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए उसे सामान्य आन्दोलन के रूप में संचालन करने का आह्वान की।

इस आन्दोलन में तेलंगाना जनता एकजुट होकर संघर्ष में भाग ली, उसके साथ तेलंगाना राज्य की मांग पर आंध्र और रायलसीमा की जनता और जनवादियों का समर्थन भी हासिल कर पायी। आंध्र और रायलसीमा से मिला इस समर्थन से वहां के बुर्जुआ राजनेता अलग-थलग पड़ गए और तेलंगाना की जनता को आन्दोलन के लिए नैतिक बल मिला। इस तरह तीनों इलाके के जनता के बीच एकजुटता बढ़ती गयी और बुर्जुआ पार्टियां और राजनेता जनता से अलग-थलग होते गए। लेकिन बुर्जुआ और सामंती राजनेता उन इलाकों में अभी जनता और छात्रों को उकसाने के लिए तीव्र कोशिश कर रहा है। तीनों इलाकों के जनता के बीच बिरादराना संबंध को बढ़ाने के लिए प्रयास करते हुए बुर्जुआ और सामंती राजनेताओं को अलग-थलग करते हुए उनकी साजिशों को परास्त करना होगा।

जनता की आकांक्षाओं के तहत तेलंगाना राज्य का गठन होने के बावजूद, इस राज्य में भी सत्ता मजदूर-किसान जनता के हाथों में नहीं, बल्कि दलाल नौकरशाह पूंजीपति और बड़े सामंती वर्गों की पार्टियां टीआरएस, कांग्रेस, टीडीपी और भाजपा जैसी पार्टियों के हाथों में ही होगी। तेलंगाना गठन से भेदभाव मिटना, पानी और नौकरी जैसी मांगों से संबंधित कुछ फायदा जरूर मिलेगा। लेकिन जनता की मौलिक समस्याओं का हल नहीं होगा। जनता को सही सत्ता प्राप्त होने पर ही इन समस्याओं का समाधान होगा। इसके लिए कृषि क्रांति पर आधारित नव जनवादी क्रांति को सफल करना ही एक मात्र रास्ता है। अगले चरण में तेलंगाना जनता इसके लिए जरूर शपथ लेगी।

देशभर में खासकर हमारे क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़े विभिन्न राज्यों में बड़े पैमाने पर चलाये गये इन सभी आन्दोलनों द्वारा भारत के शासक वर्गों और उनके साम्राज्यवादी मालिकों का वर्ग चरित्र और उनकी जनविरोधी नीतियों का भारतीय जनता के सामने पर्दाफास किया गया है। जनवादी, क्रांतिकारी और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों पर उनके द्वारा समय-समय पर चलाए गए प्रतिक्रांतिकारी दमन-ऑपरेशनों को हराने में, खासकर 2009 के बीच से शुरू हुए 'जनता पर युद्ध' ऑपरेशन ग्रीन हण्ट से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। इन्हें और उन्नत स्तर में कई गुना तेजी के साथ संचालन करने की जरूरत है। इन्हें जनयुद्ध के साथ प्रभावशाली ढंग से जोड़ते हुए भारत की अर्द्ध-औपनिवेशिक, अर्द्ध-सामंती व्यवस्था को उखाड़ फेंक कर राजसत्ता पर कब्जा जमाने के लक्ष्य से सर्वहारा वर्ग की पार्टी के नेतृत्व में मजदूर-किसान, मध्यम वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्गों के संयुक्त मोर्चा को मजबूत करते हुए नव जनवादी क्रांति को सफलता की ओर आगे बढ़ानी होगी।

★

(पृष्ठ-126 के शेष भाग...)

माओवादी दमन सेना, गण प्रतिरोध कमेटी; ओड़िशा के नारायणपटना में शांति कमेटी जैसे प्रतिक्रांतिकारी खुफिया संगठन और गिरोहों का गठन किया गया।

ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के पहले चरण में दुश्मन बड़े पैमाने पर कोबरा बलों को तैनात कर डीके में सिंगारम, पालाचेलमा, गट्टापाड़, एंडापाड़, सातनार, चिनारी, वेच्चापाल, गच्चमपल्ली, गुमपाड़, रंगाइगुड़ा, ओंगनार, बीजे में ताड़को, लादी, बढ़निया, फुलवरिया-कोड़ासी, गोबरदाहा जैसी घटनाओं में टीपीसी द्वारा हत्याकाण्ड, डुमरिया और रामजोल जैसी घटनाओं में पीएलएफआई द्वारा हत्याकाण्ड, एसपीएम द्वारा हत्याकाण्ड, खगड़िया-मुंगेर सीमा पर गंगा नदी किनारे जहर देकर प्रतिक्रियावादियों द्वारा 10 साथी का हत्याकाण्ड, पश्चिम बंग के लालगढ़ इलाके में खास जंगल, चिकुरडंगा, बोयरा, छोड़बनी, बंदरबनी, दुली (रंजा), मेटाला, बारीकूल, एओबी में गुंजीवाड़ा, नारायणपटना, ओड़िशा में पड़कीपाल जैसी घटनाओं में दसियों संख्या में क्रांतिकारियों और जनता को कत्लेआम कर आतंक मचाया गया। लालगढ़, नारायणपटना के जन आन्दोलनों को कुचलने के लिए योजना बनायी गयी। गिरफ्तारियां, यातनाएं, महिला पर अत्याचार, जनता के घर-संपत्ति को जलाना और ध्वस्त करना बड़े पैमाने पर अंजाम दिया गया। हमारे पीएलजीए कैंपों पर हमले किए गए।

लेकिन पहले चरण में देशभर में हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए, क्रांतिकारी जनसंगठनों, जनता, जनवाद प्रेमियों ने एकजुटता दिखाते हुए छापामार जोनों और शहरी इलाकों में दुश्मन से लोहा लिया। अंतरराष्ट्रीय तौर पर ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हुए। जन प्रतिवाद-प्रतिरोध के सामने झुकते हुए केन्द्र सरकार द्वारा केन्द्रीय स्तर पर वार्ता करने का प्रस्ताव सामने लाकर एक नाटक किया गया। इस धोखेबाजी वाला प्रस्ताव का असली चेहरा फर्जी मुठभेड़ में हमारी पार्टी के पीबीएम कामरेड आजाद की हत्या और अन्य नेतृत्वकारियों की गिरफ्तारी द्वारा पर्दाफास हो गया। इस चरण में हमारी पार्टी को भी काफी नुकसान होने के बावजूद, पीएलजीए द्वारा किए गए हमलों में एक के बाद एक दुश्मन पर चोट पहुंचाया गया। हमारे आन्दोलन के इलाकों में उनके द्वारा चलाया गया फ्लश ऑउट ऑपरेशनों में कुछ जगहों से हमें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया गया। ठीक उसी दौरान पीएलजीए द्वारा की गई कुछ बड़ी कार्रवाइयां कार्यान्वित कर दुश्मन को गम्भीर नुकसान पहुंचाया गया। पश्चिम बंग में फरवरी 2010 में सिल्दा इएफआर कैंप के ऊपर हमला कर 24 जवानों का सफाया किया गया। डीके में अप्रैल 2010 में घात लगाकर किए गए मुकराम-ताड़मेटला योजनाबद्ध एम्बुश में सीआरपीएफ के एक कंपनी को सफाया किया गया। बीजे में जून 2010 में ममाइल (पश्चिम सिंहभूम) के पास हमारे गुरिल्ला कैंप पर 7 हजार संख्या में दुश्मन के बल द्वारा घेर कर हमला किया गया। इसमें 30 घंटों तक पीएलजीए ने लगातार लड़ाई लड़ते हुए 5 पुलिस को मारकर और 9 को घायल कर दुश्मन की घेराबंदी को तोड़ दिया। 2010 सितम्बर में सारंडा इलाके में हमारे बलों पर दुश्मन 10 हजार संख्या में बलों के साथ बड़े पैमाने पर किया गया घेराबंदी ऑपरेशन के खिलाफ पीएलजीए के बल केन्द्रीय कमांड के नेतृत्व में प्रतिरोध किया। 72 घंटों तक लड़ाई लड़ते हुए विभिन्न घटनाओं में 5 पुलिस को मारकर और 12 को घायल कर दुश्मन के ऑपरेशन को विफल किया। इन कार्रवाइयों के साथ ऑपरेशन ग्रीन हण्ट का पहला चरण समाप्त हो गया।

मुकराम, ममाइल, सारंडा के कार्रवाइयों द्वारा दुश्मन के बलों का मनोबल तात्कालिक तौर पर गिरा। तब इस चर्चा में तेजी आयी कि माओवादी आन्दोलन को अर्द्धसैनिक बल सफाया नहीं कर सकता, इसलिए तुरंत सेना और वायुसेना को तैनात करने की जरूरत है। ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के दूसरे चरण के लिए तैयारियों के तहत अपने बलों के मनोबल को फिर से बढ़ाने के लिए दुश्मन द्वारा कई उपाय किए गए। भारतीय सेना के केन्द्रीय कमान के नेतृत्व में मई 2010 में ही रायपुर में सबएरिया कमान मुख्यालय (हेडक्वार्टर्स) को स्थापित किया गया। जून में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी द्वारा न सिर्फ छत्तीसगढ़ में सेना की तैनाती के तैयारियों का अनुमोदन किया बल्कि शोषक-शासक वर्गों द्वारा लाल गलियारा के रूप में प्रचारित नक्सल प्रभावित इलाकों में 60 हजार सेना और वायुसेना को भी तैनात करने, इसके साथ-साथ सेना के काउण्टर इंसर्जेन्सी विभाग के रूप में रहा राष्ट्रीय रायफल्स के आठ बटालियनों को छत्तीसगढ़ में तैनात करने की योजना भारतीय सेना द्वारा रची गयी थी।

दूसरी तरफ जून 2010 में ही नक्सल प्रभावित चार राज्यों में यूनिफाइड कमानों का गठन करने, इसके सलाहकार के रूप में अवकाश-प्राप्त मेजर जनरलों को नियुक्त करने, इसके जरिए सी4 में बेहतरी लाने का निर्णय लिया गया था। कारपेट सुरक्षा को मजबूत करते हुए 400 किलेबंदी थानों और कैंपों का युद्ध स्तर पर निर्माण करना शुरू किया गया। क्रांतिकारी आन्दोलन का सफाया करने के लिए अर्द्धसैनिक बलों में 75 हजार जवानों को भर्ती कर, 34 नया इंडियन रिजर्व बटालियन का गठन करने, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश में 16 हजार एसपीओ को नियुक्त करने का निर्णय लिया गया। परिणामस्वरूप एक-एक कैंप/थाना में बलों की संख्या एक बटालियन स्तर तक (400-500)

पहुंच जाएगी। सीआरपीएफ और बीएसएफ में खुफिया विभाग को मजबूत किया गया। पहले चरण में हमारे आंदोलन के इलाकों में तैनात केंद्रीय अर्द्धसैनिक बल और राज्यों के विशेष बलों द्वारा अलग-अलग ही ऑपरेशन चलाया जाता था। इसके कारण काउण्टर इनसर्जेन्सी में प्रधान भूमिका निभाने वाले केन्द्रीय बलों द्वारा जहां ऑपरेशन चलाया जाता था, वहां की ठोस परिस्थिति के बारे में कोई ऐसा समाचार और दिशा-निर्देशन उनके पास नहीं होते थे। इससे पार पाने के लिए केन्द्रीय और राज्य बलों के बीच समन्वय बढ़ाने के प्रयास में केन्द्रीय गृह मंत्रालय के दिशा-निर्देशन में एकीकृत कमानों (यूनिफाइड कमान) का गठन किया गया। हर ऑपरेशन में केन्द्रीय बल को स्थानीय बलों द्वारा मदद देने का एसओपी (standard operating procedure) नियम बनाया गया। अन्य एसपीए नियमों को और बंदोबस्त कर उसे जरूर लागू करने का सख्त आदेश जारी किया गया। विभिन्न बलों के बीच समन्वय, सहयोग, खुफिया सहयोग बढ़ाने, ऑपरेशनों को संयुक्त रूप से चलाने, हर दो अर्द्धसैनिक जवानों के साथ एक स्थानीय जवान रहने का निर्णय लिया गया है। वैसा ही और प्रतिक्रांतिकारी खुफिया गिरोह, बल, संगठन और अभियानों को संगठित करते हुए उसे केन्द्रीय और राज्य बलों से समन्वित किया गया।

दूसरी तरफ झूठे सुधार कार्यक्रमों को आन्दोलन के इलाकों में और तेज किया गया। आइएपी (IAP) योजना को पहले लागू होने वाले 34 जिलों से 82 जिलों तक विस्तार किया गया है। नए आत्मसमर्पण नीतियों और नेतृत्वकारियों पर बड़े पैमाने पर बढ़ाकर इनाम घोषित किया गया। युद्ध स्तर पर सड़क, कम्युनिकेशन तंत्र (सेलफोन टावर) को बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर योजनाएं बनाई गईं। मुखबिर-कोवर्ट तंत्र को बढ़ा दिया गया। काउण्टर इनसर्जेन्सी प्रशिक्षण स्कूलों की संख्या बढ़ा दी गयी। इसमें केन्द्रीय और राज्य स्थानीय पुलिस बलों को एवं प्रतिक्रांतिकारी गुटों का कई प्रशिक्षण कैंप लगाते हुए, बलों का मनोबल बढ़ाने लायक इनाम और कई अन्य सुविधाएं बढ़ाई गई हैं। इस तरह बड़े पैमाने पर नई रणनीति-कार्यनीतियों और तैयारियों के साथ ऑपरेशन ग्रीन हण्ट का दूसरा चरण शुरू किया गया।

ऑपरेशन ग्रीन हण्ट का दूसरा चरण 2011 से 2014 मई तक चलाया गया। जहां हमारा क्रांतिकारी आन्दोलन जारी है पहले कुछ राज्यों में केन्द्रीय गृह मंत्रालय के नेतृत्व में गठित एकीकृत कमानों का निर्माण कर सभी राज्यों में विस्तार किया गया है। इन कमानों के नेतृत्व में केन्द्र-राज्य बलों द्वारा पहले के मुकाबले बेहतर ढंग से समन्वयपूर्वक ऑपरेशन चलाए गए। डीके, बीजे इलाकों में सेना और वायुसेना की तैनाती के लिए तैयारियां तेज हो गयी। हेलीपैड और रनवे का निर्माण बड़े पैमाने पर चलाया गया है। ग्राउण्ड बलों को मदद पहुंचाना, हवाई हमले करने के लिए छत्तीसगढ़, विदर्भ, आंध्र प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, ओड़िशा में हवाई अड्डा (एयर बेस) के निर्माण में तेजी लायी गयी है। दुश्मन द्वारा चलाए जा रहे चौतरफा हमले के खिलाफ, खासकर भारतीय सेना की तैनाती का प्रस्ताव के खिलाफ देशभर में जनवादी और मानवाधिकार संगठन, पर्यावरणविदों द्वारा बड़े पैमाने पर अपना विरोध दर्ज किया गया। एक तरफ जनवादी आन्दोलन के दबाव से और आंध्र प्रदेश के अनुभवों को ध्यान में रखकर यानि सेना के सिवाय 'ग्रेहाउण्ड्स' की तरह कमांडो बलों के साथ नक्सल समस्या से निपट सकते हैं- ऐसी समझदारी के साथ अस्थाई तौर पर दुश्मन द्वारा ही सेना तैनाती की योजना पर रोक लगा दी गयी। इसके बावजूद आदिवासी इलाकों में भूमि हस्तांतरण पर पाबंदी लगाने वाले कानून, पेसा कानून, ग्राम सभा के हाथों ही सारी सत्ता के कानून आदि सभी को उल्लंघन करते हुए सदियों से आदिवासी जनता के आवास क्षेत्रों से उन्हें उजाड़ कर, उनकी आदिम संस्कृति को और अतिप्रचीन मानव समुदाय को मिटाते हुए डीके के माड़ पहाड़ों में 750 वर्ग कि.मी. जमीन को भारतीय सेना के प्रशिक्षण के लिए आवंटित कर वहां स्थायी तौर पर सेना को तैनात करने की योजना को दुश्मन द्वारा लागू किया गया है।

ठीक उसी समय हमारी पार्टी में मौजूद कई कमी-कमजोरियों की वजह से, एकताबद्ध पार्टी गठन से लेकर दुश्मन द्वारा हमारी पार्टी और क्रांतिकारी आन्दोलन पर चलाए गए हमले एवं उसमें हमें पहुंचाए गए नुकसान की वजह से आन्दोलन का जन आधार कमजोर हो गया। हमारी कमजोरियों का इस्तेमाल करते हुए दुश्मन अपने हमले और तेज कर दिया। दुश्मन के कॉम्बिंग ऑपरेशन, सफाया ऑपरेशन, फ्लश आउट ऑपरेशन तेज हो गया। ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत ही झारखण्ड के सारंडा इलाके में ऑपरेशन एनाकोंडा-1, 2, लातेहार जिले में ऑपरेशन आक्टोपस, बोकारो जिले के झुमरा की ऊंची घाटी में ऑपरेशन थंडर, पलामू और गढ़वा जिलों में ऑपरेशन मरंगदेव, जमुई और बांका जिलों में ऑपरेशन सर्वनाश, दण्डकारण्य (छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र) में लगातार चलाए गए ऑपरेशन हॉका, विजय जैसे कई ऑपरेशन, वैसा ही बिहार, एओबी (आंध्र प्रदेश, ओड़िशा सीमा), ओड़िशा, ओड़िशा-छत्तीसगढ़ सीमा, पश्चिम बंग, तेलंगाना, कर्नाटक-तमिलनाडु-केरलम सीमा में लगे पश्चिम घाटियों के ट्राई जंक्शन इलाके में चलाए गए कई ऑपरेशनों में हमारे अंदरूनी इलाकों में घुसकर हमें नुकसान पहुंचाया गया। गिरफ्तारियां, यातनाएं, महिला पर अत्याचार, जनता के घर-संपत्ति को जलाना और ध्वस्त करना बड़े पैमान पर अंजाम दिया गया। क्रांतिकारियों के घरों की कुर्की-जब्ती करने जैसे औपनिवेशिक काल की करतूतों को फिर से अपनाना शुरू हो गया। क्रांतिकारियों और जनता को जेलों में ठूंस दिया गया है। डीके में सवरगांव, गोरम, मोरपल्ली, ताड़मेट्ला, तिम्मपुर, सार्केनगुड़ा, एड्समेट्टा, झारखण्ड में पेटी टोली,

अमवाटीकर, जमगई, परसा चुंआ, बलुआ बाजार, लकड़मंदा, पश्चिम बंग में पटमदा, नेताई, बुढ़ीशोल, एओबी में नुवागुड़ा, शिलाकोटा, ओड़िशा में काशीपुर, जाजपुर जैसे काण्डों में क्रांतिकारियों और जनता को कत्लेआम किया गया। कई हमलों में प्रतिक्रांतिकारी खुफिया गिरोह अपने ढंग से और पुलिस के बलों के साथ मिलकर संयुक्त रूप से भाग लेते हुए हमें और जनता को नुकसान पहुंचाया। सभी क्रांतिकारी आन्दोलन के इलाकों में इस तरह के गुट या गिरोह दसियों की संख्या में काम कर रहे हैं, सिर्फ इआरबी के इलाके में ही इस तरह के 17 गिरोह को दुश्मन अपना काउण्टर गुरिल्ला ऑपरेशनों में इस्तेमाल कर रहा है।

ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के दूसरे चरण के तहत इन हमलों की वजह से भी हमें कुछ जगहों से पीछे हटना पड़ा। झारखण्ड के सारंडा इलाके में ऑपरेशन एनाकोंडा के बाद दुश्मन द्वारा 'सारंडा एक्शन प्लान' के नाम पर एक झूठी विकास-योजना को सामने लाया गया, उसे बढ़ा-चढ़ाकर प्रचार करते हुए, उस इलाके से माओवादियों को पूरी तरह मार भगाने का दुष्प्रचार लगातार चलाया गया है। इसे एक बड़े नमूने के रूप में दिखाते हुए इस तरह के एक्शन प्लानों को ही सभी क्रांतिकारी इलाकों में लागू करते हुए जनता को गुमराह करने के लिए मनोवैज्ञानिक युद्ध को तेज किया गया है।

दुश्मन द्वारा देशभर में राज्यों की सीमाओं पर एक ही समय में केन्द्रीय और एक-एक सीमा में लगे हुए राज्यों के हजारों बल को तैनात कर भारी एरिया डोमिनेशन ऑपरेशन चलाया गया है। दिसम्बर 2013 के अंतिम सप्ताह में देशभर में क्रांतिकारी आन्दोलन से प्रभावित राज्यों में एक ही समय में चलाया गया एक भारी ऑपरेशन इसका ही एक नमूना है। इस तरह के हमलों में बटालियन और ब्रिगेड स्तर का बल शामिल हो रहा है। इन ऑपरेशनों का लक्ष्य है- क्रांतिकारी आन्दोलन के रणनीतिक इलाकों पर चोट पहुंचा कर, उसे टुकड़ों में बांट कर, उसके बीच समन्वय को तोड़ना, गुरिल्ला युद्ध चलाने में पीएलजीए बलों के सामने कई रुकावटों और प्रतिकूलताओं को पैदा करना, पीएलजीए की लड़ाकू क्षमता को कमजोर कर उसे परास्त करना। इस समय दुश्मन द्वारा सूचना आधारित हमलों के जरिए हमें और नुकसान पहुंचा गया है।

एकीकृत कार्य योजना (आईएपी) के लिए आवंटित राशि को बढ़ाकर और तीन साल बढ़ाने की घोषणा 2013 में हुई है। रोजगार सुरक्षा योजना के नाम पर और एक योजना को लायी गयी है। 'रोशनी' के नाम पर युवाओं को नौकरी देने की योजना को दो जिलों (सुकमा-छत्तीसगढ़, पश्चिम सिहंभूम-झारखण्ड) से 24 जिलों तक विस्तार किया गया। छात्र और युवाओं को आन्दोलन से अलग करने के लिए विभिन्न योजनाएं लाई गई हैं। झूठा आत्मसमर्पण की नीति को और बेहतर करते हुए पार्टी के कमजोर व्यक्तियों को सरेंडर करवाने के काम को तेज करते हुए तथा इसके साथ-साथ सैकड़ों ग्रामीणों और जन मिलिशिया को पकड़कर झूठा सरेंडर दिखाते हुए बड़े पैमाने पर मनोवैज्ञानिक युद्ध चलाया गया।

हमेशा ऐसा दुष्प्रचार किया जा रहा है, एक तरफ कहा जा रहा है समाजवाद-साम्यवाद का अंत हो गया, वह जीत नहीं सकेगा, दूसरी तरफ पांच या दस सालों में क्रांतिकारी आन्दोलन को पूरी तरह सफाया करेंगे, आप (क्रांतिकारी शिविर) किसी तरह भी जीत नहीं पाएंगे, इसलिए आन्दोलन को छोड़कर पुलिस में भर्ती हो जाएं, मुखबिर बन जाएं। ऐसा गोबेल्स (एक झूठी बात को बार-बार कहकर उसी को सही साबित करने का प्रयास) प्रचार करते हुए कि पार्टी में अंदरूनी झगड़ा और खींचतान है, पार्टी और पीएलजीए में आदिवासी-गैरआदिवासी विभाजन लाने के लिए आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओड़िशा में तेलुगु-कोया-ओड़िया; बिहार, झारखण्ड में यादव-गंझू विभाजन लाने के लिए सव्यसाची पंडा जैसे विघटनकारियों को प्रोत्साहित करते हुए आन्दोलन को निरस्त्र करने के लिए कोशिश कर रहा है। इससे हमारे कतारों पर कुछ नकारात्मक असर दिखाई दिया है।

हमारे कमजोरियों के बारे में, उससे पार पाने के लिए 2011 के अंत से ही प्रयास हमारी तरफ से हो रहा था, लेकिन 2013 में सीसी की चौथी बैठक में हमारा आन्दोलन एक कठिन दौर से गुजर रहा है कहते हुए, उससे पार पाने की कार्यनीतियां बनाई गयी।

2011 के मुकाबले 2012 और 2013 में पीएलजीए के प्रतिरोध में कुछ प्रगति दिखाई दी, लेकिन यह नाकाफी थी। इसीलिए हमारे अंदरूनी इलाकों में दुश्मन घुस आने में बढ़ोत्तरी हुई। हेलिकाप्टरों और ड्रोनों के इस्तेमाल में वृद्धि हुई। दुश्मन की आक्रामकता बढ़ती गयी। वह अपने बलों के नुकसान को टालने के लिए हेलिकॉप्टरों के साथ हमले करना शुरू किया। दुश्मन के बल ही प्रत्यक्ष रूप से झूठा सिविक एक्शन प्रोग्रामों को लेकर जनता के साथ अपने संबंध को बेहतर करने के लिए एड़ी-चोटी एक करने का प्रयास किया जा रहा है। 2014 में पीएलजीए के प्रतिरोध में और कुछ प्रगति होने के बावजूद कुल मिलकार देखें तो, उतना उल्लेखनीय वृद्धि नहीं दिखाई दी। इसके कारण दुश्मन की

आक्रामकता जारी है। इसके बावजूद साढ़े तीन साल चले ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के इस दूसरे चरण के पूरे काल में देशभर में विभिन्न गुरिल्ला जोनों में लगातार हुई पीएलजीए की छापामार कार्रवाइयों के कारण दुश्मन द्वारा अधिकाधिक बलों को हमारे इलाकों में तैनात करने की स्थिति में, वह अपने बलों को व्यापक इलाकों में विकेन्द्रीकरण करने की स्थिति में, हमारे महत्वपूर्ण इलाकों में मनमानी ढंग से बलों को तैनात नहीं कर पाने की स्थिति में उसे धकेल दिया गया। परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण इलाकों में एक हद तक दुश्मन के हमले को रोकने में हम सफल हो पाए।

ऑपरेशन ग्रीन हंट का तीसरा चरण 2014 जून से शुरू हुआ। मई 2014 के लोकसभा चुनाव में देश में हिंदू फासीवादी ताकतें सत्ता में काबिज होने की वजह से हमारे क्रांतिकारी आन्दोलन पर दुश्मन की आक्रामकता को और बल मिला। पिछले कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए-1, 2 सरकारों की तरह मोदी नेतृत्वाधीन एनडीए सरकार भी ऐसी सोच रही है कि 'जनता' हमें अधिकार दे दी कि वह जो भी चाहें कर सकती है। क्रांतिकारी प्रभाव वाले राज्यों में सत्ता में काबिज सरकार जो भी हो, केन्द्र और राज्य सरकार संयुक्त रूप से ऐसी योजनाएं बनाएं ताकि देश में हमारे पार्टी और क्रांतिकारी आन्दोलन एक वैकल्पिक शक्ति के तौर पर विकसित न हो सके और उसका सफाया हो जाए। वे आक्रामक तौर पर साम्राज्यवादियों द्वारा प्रायोजित सुधारों को देश में लागू कर रहे हैं। इसके तहत हमारे आन्दोलन के इलाकों में केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल और राज्यों में रिजर्व बटालियनों की संख्या को और बढ़ा दिया। उन इलाकों से स्थानीय आदिवासी युवाओं को विशेष पुलिस, अर्द्धसैनिक बलों में और भारतीय सेना में भर्ती करने पर वे ध्यान दे रहे हैं। पहले ही तैनात 106 बटालियन अर्द्धसैनिक बलों (इसमें नौ कोबरा बटालियन) के साथ अभी और 37 इंडियन/स्पेशल इंडियन रिजर्व बटालियनों को तैनात किया है और नौ शीघ्र ही तैनात किया जाएगा। झारखण्ड में रिक्त पदों पर 20 हजार पुलिस की भर्ती कर रहे हैं और पूर्व माओवादियों को पुलिस बलों में भर्ती कर रहे हैं। झारखण्ड व छत्तीसगढ़ में 35-35 की संख्या में दो महिला कमांडो बैच को सीआरपीएफ द्वारा तैनात किया गया है। झारखण्ड में आदिवासी पहाड़िया बटालियन गठन किया जा रहा है। बिहार सरकार एक हजार आदिवासी महिलाओं को भर्ती कर आन्दोलन के इलाकों में तैनात करने का निर्णय ली है। कारपेट सुरक्षा को और मजबूत कर रहे हैं। किलेबंदी थाने और कैंपों की संख्या बढ़ा रहे हैं। देशभर में हमारे आन्दोलन के इलाकों में 400 थानों और कैंपों को किलेबंदी करते हुए एक-एक थाना/कैंप पर दो करोड़ रुपए खर्च कर रहे हैं। ट्राई-जंक्शन जो नया युद्ध क्षेत्र के रूप (केरलम) में 16 थानों को किलेबंदी कर रहे हैं। पहली बार बैटल फील्ड अस्पताल बस्तर इलाके के सुकमा जिला के चिंतलनार में स्थापित किया गया है और पुलिस बलों को फील्ड ट्रेनिंग दिया जा रहा है।

आन्दोलन के इलाकों में घुसकर करोड़ों रुपए खर्च करते हुए खुफिया तंत्र-मुखबिरी तंत्र को मजबूत व विस्तार कर रहे हैं। आन्दोलन के अंदरूनी इलाकों में घुसकर बड़े पैमाने पर एरिया डोमिनेशन और लांग रेंज पेट्रोलिंग चलाना, सूचना के आधार पर विभिन्न लक्ष्यों पर हमला करना, अंतरजिला व अंतरराज्यीय संयुक्त अभियान, विभिन्न पुलिस व अर्द्धसैनिक, कमांडो, एसपीओ, गुप्त हत्यारे गुटों के संयुक्त ऑपरेशन आम बात हो गई है। हमारे छापामार आधार क्षेत्रों पर हमलों में तेजी आयी है। जमीनी बलों को ऊपर से हेलीकॉप्टरों के द्वारा सभी तरह की मदद देते हुए भीषण दमन चला रहे हैं। गांवों पर रात के समय में हमले करने के लिए सैनिक हेलिकाप्टरों का रिहर्सल्स चला रहे हैं। इसमें नेतृत्व को निशाना बनाना बढ़ गया है। हेलिकाप्टरों का इस्तेमाल बढ़ने के साथ-साथ ड्रोन हमले करने के लिए भी योजनाएं बनाए जाने का स्पष्ट संकेत मिल रहा है। संदिग्ध मोबाइल फोनों को नियमित रूप से स्कैन कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ में नक्सली सूचना इकट्ठा करने के नेटवर्क को मजबूत करने के लिए पुलिस नक्सल-विरोधी विभाग, इनफोटेक व बायोटेक प्रमोशन सोसाइटी (Chips) मिलकर एक विशेष एंड्रायड मोबाइल ऐप को रिलीज किया है। नेतृत्व को धक्का पहुंचाकर आन्दोलन का सफाया करने की एलआईसी रणनीति को अमल करना लगातार जारी है। इसलिए संघर्ष के इलाकों में और बाहर भी गिरफ्तारियां, झूठी मुठभेड़, पुलिस और हमारे पीएलजीए बलों के बीच आमने-सामने मुठभेड़ें भी बढ़ रही हैं।

दुश्मन की आत्मसमर्पण नीति में और कुछ बदलाव लाकर हमारी पार्टी के कमजोर व्यक्तियों को सरेंडर करवाना, साथ-ही झूठे सरेंडरों में और वृद्धि लाये हैं। ''जितने सरेंडर दिखाते हैं उतना पैसे' को लेकर आन्दोलन से कोई भी संपर्क न रखने वालों, संघर्ष क्षेत्रों की जनता को भी धमकाकर, पैसे-नौकरी का झांसा देकर सैकड़ों की संख्या में सरेंडर को दिखाने वाला एक भारी 'सरेंडर के बदले नौकरी' (surrender for job) घोटाला जैसे इंडिया टुडे पत्रिका के जरिये हाल ही झारखण्ड में उजागर हुआ है, वैसा ही डीके, ओड़िशा, एओबी आदि सभी संघर्षरत इलाकों में इसी तरह के सरेंडर जारी है। इन झूठे सरेंडरों की संख्या कई गुणा अधिक है। इसे दिखाकर दुश्मन क्रांतिकारी जनता और जन हितैषियों का मनोबल तोड़ने का प्रयास कर रहा है।

पुलिस सुधार कार्यक्रमों को और बढ़ा दिया गया है। हम जिन इलाकों से हटने को मजबूर हो गए, वहां एक-एक

इलाके को दुश्मन अपने कब्जे में लेकर होल्ड और बिल्ड (hold and build) ऑपरेशन चला रहा है। वहां कमजोर हुआ और ध्वस्त किए गए सरकारी तंत्र को पुनरनिर्माण कर फिर क्रांतिकारी आन्दोलन मजबूत न हो- इसे ध्यान में रखकर प्रतिक्रांतिकारी राजनीतिक, सैनिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचों और तंत्र को स्थायी तौर पर बना रहा है। प्राकृतिक स्रोतों की लूट के लिए सड़क, कम्युनिकेशन, बिजली, पानी की व्यवस्थाएं कर रहा है। पुलिस कैंप के रूप में काम आने वाला स्कूल, सामुदायिक भवन, आंगनबाड़ी व स्वास्थ्य केन्द्रों का निर्माण पर ध्यान दे रहा है। जनता में दरार पैदा करने के षड्यंत्र के साथ रोजगार के नाम पर युवाओं को दो करोड़ रुपये वाले ठेके, स्थानीय जनता को ही रोड ठेके देने की नीति को अपनाया है। युवाओं को विभिन्न कौशलों में प्रशिक्षण व नौकरी देने के नाम पर इकट्ठा करते हुए उनसे खुफिया जाल को बढ़ा रहा है। केरलम सरकार ऐसी और एक नई योजना ली है कि भूख की वजह से ही क्रांतिकारी चिंतन विस्तार हो रहा है, इसलिए संघर्ष वाले क्षेत्रों में प्रति दिन प्रत्येक व्यक्ति को 100 रुपये का भोजन सामग्री बांटना है।

दुश्मन झारखण्ड में 'सारंडा एक्शन प्लान' की सफलता पर चिल्लाते हुए इसी तर्ज पर देशभर में हमारे आन्दोलन के इलाकों में उसे विस्तार करने के लक्ष्य से झारखण्ड में लातेहार (सरयू), पलामू, पोड़ाहाट, पारसनाथ आदि दस जिलों के क्षेत्रों में, ओड़िशा में सोनाबेड़ा, छत्तीसगढ़ में सुकमा, बीजापुर, दंतेवाड़ा, महाराष्ट्र में गढ़चिरोली जैसे जिलों में इस तरह के एक्शन प्लानों को लेकर अमल कर रहा है। लेकिन सच्चाई में 'सारंडा एक्शन प्लान' से जनता को मिला फायदा नगण्य है- हाल ही में इस पर आक्रोशित एक सीआरपीएफ अधिकारी की रिपोर्ट को देखने से भी इन एक्शन प्लानों का 'असली लक्ष्य क्या है' पता चलेगा। झारखण्ड में समाज व जनता के प्रति बहुराष्ट्रीय-कार्पोरेट संस्थाओं व कंपनियों की 'जिम्मेवारी' (कार्पोरेट सोशल रेस्पान्सिबिलिटी) का निर्वाह करवाते हुए उससे होने वाले शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ जनता के आक्रोश पर पानी छिड़कने की कोशिश दुश्मन कर रहा है। माओवादी विरोधी ऑपरेशनों के जरिये अपनी पकड़ में आने वाले इलाकों में पर्यटन क्षेत्र को प्रोत्साहन दे रहा है। उदाहरण के लिए झारखण्ड में सारंडा को पर्यटन क्षेत्र में तब्दील कर वहां नीच-मूल्यों से भरी साम्राज्यवादी जहरीली संस्कृति को आयात कर रहा है। इसके पीछे उसका लक्ष्य जनता को नैतिक रूप से पतन कर उन्हें हमेशा के लिए क्रांति से अलग करने के सिवाय और कुछ नहीं है।

दुश्मन ऑपरेशन ग्रीन हण्ट को समूचे देश में विस्तार करते हुए, देश में जनता के विरोध, असहमति, जन प्रतिरोध को जैसे भी हो, उसे कुचलने के लक्ष्य से, 'जनवादी आवाज के लिए जगह' ही नहीं रहने की तरह ऐसा प्रचार व प्रसार कर रहा है कि हमारी पार्टी के नेतृत्व में संचालित पीएलजीए बलों से ज्यादा खुले संगठन, 'माओवादियों को मदद देने वाले' बुद्धिजीवियों, जनवादियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं से खतरा है। ग्रामीण व शहरी आंदोलनों के बीच के संबंध को तोड़कर पूरी तौर पर क्रांतिकारी आन्दोलन को कमजोर करने के लिए माओवादी शहरी नेटवर्क के नाम पर कई लोगों पर 'माओवादी' के नाम पर 'यूएपीए' कानून के तहत आतंकी व राजद्रोह जैसे आरोप लगाकर जेलों में ठूंस रहा है। बस्तर में आदिवासियों के जीवन का अध्ययन करने आयी दिल्ली के माओवादी बुद्धिजीवी, आरडीएफ सचिव प्रोफेसर सांइबाबा को अमानवीय ढंग से गिरफ्तार कर जेल में बंदी बनाना, लेखिका अरुंधती राय पर विभिन्न काले कानूनों के तहत मामले थोपना, पीएचडी छात्रा वाणी ग्जा ग्जा को वहां के एसपीओ द्वारा उसे आतंकित करना; ओड़िशा के मलकानगिरि जिले में डाक्युमेंटरी फिल्म निर्माता व मानवाधिकार कार्यकर्ता देबा राजन को उस जिले से भगाना आदि इसका ही एक हिस्सा है।

क्रांतिकारी आन्दोलन को सैद्धांतिक व राजनीतिक तौर पर धक्का पहुंचाने के लिए दुश्मन लगातार मनोवैज्ञानिक युद्ध चला रहा है। हाल ही में 'नक्सल रहित राज्य' के बारे में मीडिया में बहुत चिल्लाते हुए प्रचार-प्रसार तेज किया है। माओवादी कभी जीत नहीं सकते; उन्हें सही नेतृत्व है ही नहीं; बिहार व झारखण्ड में नक्सलवाद अंतिम सांस ले रहा है, झारखण्ड को छ: महीनों में नक्सल रहित राज्य बनाएंगे, कुछ ही देर में छत्तीसगढ़ के बस्तर इलाके को नक्सल रहित क्षेत्र के रूप में तब्दील करेंगे- वह इस तरह अक्खड़पन चाल चल रहा है। कार्पोरेट कंपनियों को भरोसा देकर उससे एमओयू करने के लिए ही वह इस तरह की घोषणाएं कर रहा है। माओवादी नेतृत्व महिला कार्यकर्ता पर अत्याचार कर रहा है, जबरदस्ती बच्चों को हथियार पकड़ने के लिए मजबूर करना, गांवों में माओवादी स्कूलों में उन्हें माओ का पाठ पढ़ाना, हथियार चलाने का प्रशिक्षण देकर उन्हें हिंसा के मार्ग में मोड़कर अंधकार में धकेल रहा है- इस तरह प्रचार करते हुए आन्दोलन के प्रति जनता का विश्वास पर धक्का पहुंचाने की कोशिश कर रहा है। इसके लिए सरकार के प्रचार-प्रसार साधन व कार्पोरेट मीडिया का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल कर रहा है।

विशेषकर यहां इस पहलू को जिक्र करना जरूरी है कि पुलिस-अर्द्धसैनिक बलों द्वारा चलाए जा रहे काउण्टर-इंसर्जेन्सी ऑपरेशनों का दिशा-निर्देशन दस सालों से भारतीय सेनापतियों द्वारा किया जा रहा है। काउण्टर-टेररिज्म जंगल वारफेयर के स्कूलों की संख्या बढ़ाते हुए, उसमें हजारों पुलिस-अर्द्धसैनिक बलों का विशेष प्रशिक्षण चला रहे

हैं। अमेरिकी दूतावास के अधिकारी कई बार आन्दोलन के इलाकों और जंगल वारफेयर स्कूलों का दौरा करना एवं केन्द्र व राज्य सरकारों के साथ सलाह-मंथन करना आदि बेशक साबित करता है कि क्रांतिकारी आन्दोलन के खिलाफ ये चौतरफा हमले अमेरिका साम्राज्यवादियों के मार्गदर्शन में ही चलाए जा रहे हैं।

ऐसी स्थिति में हमारा कर्तव्य क्या बनता है? दुश्मन द्वारा लगातार बड़े पैमाने पर जारी चौतरफा हमले को देखकर डर के मारे भगोड़ावाद का शिकार होंगे? या दुश्मन के हर कार्यनीति को परास्त करने के लिए मुहतोड़ जवाबी कार्यनीति को लेकर जीत हासिल करने पर हमारा ध्यान केन्द्रित करेंगे? भगोड़ावाद आत्महत्या के समान है और एक तरह से उत्पीड़ित जनता के हितों के प्रति गद्दारी करना है। इसलिए, अमर शहीदों के दर्शाये हुए रास्ते पर दृढ़ संकल्प और आत्मबलिदान की चेतना के साथ आखिरी बूंद तक लड़ने की सोच को हमारी पार्टी, पीएलजीए, आरपीसीयों, क्रांतिकारी जन संगठनों और जनता में जागृत करना है। पहले दुश्मन द्वारा जारी चौतरफा हमले को, उसकी एलआईसी रणनीति को उन्हें और गहराई से समझना होगा। दुश्मन के हमले की तीव्रता, क्रूरता और पाशविकता को ध्यान में रखकर, दुश्मन के हमले में सभी तरह के नुकसानों और तकलीफों से सम्भल कर खड़े होने लायक, उपलब्ध स्रोतों के साथ साहसिक लड़ाई लड़ते हुए, दुश्मन के हमले को परास्त करने लायक हमारे क्रांतिकारी शिविर को एक दीर्घकालीन युद्ध के लिए तैयार होना होगा।

किस तरह दुश्मन अपने चौतरफा हमले की कार्यनीतियों में बदलाव ला रहा है या नए-नए कार्यनीतियों और पद्धतियों को अपना रहा है, ठीक उसी तरह हमें भी बदलती दुश्मन की कार्यनीतियों या सामने आने वाली नयी परिस्थितियों को गम्भीरता से अध्ययन कर, उसे विफल करने के लिए अभी हमारे द्वारा हासिल की गई सफलता और अनुभवों के आधार पर, नुकसानों से सबक लेकर, अपने-अपने राज्यों और इलाकों की विशेष परिस्थितियों के अनुसार हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए कमिशन और कमानों द्वारा चौतरफा जवाबी कार्यनीतियों को तय करने, विशेषकर, दुश्मन के प्रतिक्रांतिकारी कार्यनीतियों को क्रांतिकारी कार्यनीतियों द्वारा परास्त करने पर ध्यान केन्द्रित कर कोशिश करनी होगी। पीएलजीए कमिशन और कमानों एवं पीएलजीए बलों की क्षमता को बढ़ानी होगी।

दुश्मन के इस चौतरफा हमले का पर्दाफाश करते हुए हमें लगातार ऐसे क्रांतिकारी प्रचार-प्रसार युद्ध को सृजनात्मक ढंग से चलाना होगा कि वह देश के मजदूर-किसान आदि उत्पीड़ित जनता, आदिवासी, दलित, धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ है। दुश्मन के हमले के खिलाफ क्रांतिकारी, जनवादी, प्रगतिशील और आदिवासियों के विकास चाहने वाले व्यक्तियों, संगठनों और पार्टियों के साथ विभिन्न रूपों में संयुक्त मोर्चा का गठन करना होगा।

खासकर, जन मिलिशिया पर ध्यान केन्द्रित कर, विभिन्न स्तरों में मिलिशिया दलों को प्रशिक्षित करते हुए उच्च स्तर मे विकसित करते हुए हथियारबंद करना चाहिए। क्रांतिकारी जनता को राजनीतिक तौर पर अधिकाधिक जनयुद्ध के लिए तैयार करना और संगठित करना चाहिए। जनता के रोजमर्रे की समस्याओं पर, फौरी और मौलिक समस्याओं पर सामंतवाद-विरोधी और साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों में व्यापक तौर पर गोलबंद करना होगा। उन लोगों में उत्पीड़ित वर्ग चेतना के साथ दुश्मन के प्रति वर्ग घृणा और आक्रोश को बढ़ाना चाहिए।

केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा लागू करने वाले सभी सुधार कार्यक्रम सिर्फ दुश्मन के कुटिलपूर्ण एलआईसी रणनीति का एक हिस्सा है। इसके जरिए जनता में एक तबके को अपराधग्रस्त कर रहे हैं। उन्हें प्रतिक्रांतिकारी के रूप में तैयार करने के लिए पैसे के प्रति लालच को बढ़ा रहे हैं। वे चाहते हैं कि बे रोक-टोक जनता को लूटने की आजादी, जनता पर अत्याचार करने की आजादी और विलासमय जीवन। इसके लिए वे विकृत जनविरोधी संस्कृति को फैला रहे हैं। कई सालों से जारी और प्रकुपित इस दलाल तबके की गतिविधियों द्वारा हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी जनयुद्ध पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इससे जनयुद्ध में जनता द्वारा हासिल सफलताओं को कम करते हुए विफलताओं को बढ़ा रहा है। इसलिए दुश्मन की एलआईसी साजिशों का मुकाबला करने के लिए, जनता में वर्ग चेतना बढ़ाने के लिए हमें पूरी ताकत के साथ दिन-रात मेहनत करनी चाहिए। जनता को तैयार करते हुए सूझबूझ-समझ के साथ पर्याप्त जवाबी कार्यनीतियों को समयानुरूप तय करते हुए, जनता के सक्रिय गतिविधियों के जरिए इन प्रतिक्रांतिकारी हत्यारे गिरोहों को पूरी तरह नेस्तानाबूद करने पर हमें ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

उपरोक्त झूठा सुधार कार्यक्रमों के खिलाफ जनता को जागृत करना है, उनकी चेतना के अनुसार विभिन्न तरह का आन्दोलन चलाना है। जहां क्रांतिकारी आन्दोलन मजबूत है और जनता जागृत है एवं जनयुद्ध के तहत दुश्मन की राजसत्ता को उखाड़ दिया गया है, वहां इस झूठे सुधारों को पूरी तरह विरोध करते हुए वैकल्पिक जनसत्ता का विकास करते हुए, क्रांतिकारी नव जनवादी अर्थव्यवस्था को विकसित करना चाहिए।

पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जन कमेटियों, क्रांतिकारी जन संगठनों और जनता के साथ एकताबद्ध होकर जनता पर

पूरा विश्वास रखकर, उनपर आधारित होकर जनयुद्ध चलाने में निपुणता हासिल करनी होगी। गुरिल्ला युद्ध के उसूलों व नियमों को अवश्य-ही पालन करना होगा। गुरिल्ला युद्ध के कार्यनीतियों को सृजनात्मक रूप से जोड़ना होगा। बलिदान के लिए पीछे नहीं हट कर, साहसिक ढंग से आगे बढ़ना होगा। परिस्थिति के अनुसार हमारे बलों का केन्द्रीकरण-विकेन्द्रीकरण करते हुए हमारे युद्ध के लक्ष्यों को हासिल करना चाहिए। निराशा-हताशा, हार की मानसिकता को किसी भी हालत में नहीं आने देना चाहिए। आत्मगत बलों का, खासकर, नेतृत्व का नुकसान से बचते हुए दुश्मन के बलों को सफाया कर हथियार जब्त करने के लिए पूरी ताकत को केन्द्रित करना चाहिए। जन आधार को संगठित करने, कार्यनीतिक जवाबी हमलों को तेज करने, सशस्त्र कृषि क्रांति को आगे बढ़ाने, जनता के जीवन स्तर को बढ़ाने के लिए, पीएलजीए (जनसेना) के लिए उत्पादन बढ़ाने, क्रांतिकारी आन्दोलन और गुरिल्ला युद्ध को नए इलाकों में विस्तार करने के द्वारा ही जनयुद्ध को और एक कदम आगे बढ़ाया जा सकता है।

दमन करने या ऑपरेशन ग्रीन हण्ट द्वारा कभी भी जनता की मौलिक समस्याओं का हल नहीं हो सकता, इसके विपरीत प्रतिवाद-प्रतिरोध पनपेगा ही और जनता को एकताबद्ध कर देगा। ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के तहत आज जारी तीव्र दमन से कई गुना अधिक वियतनाम में अमेरिकी साम्राज्यवादियों द्वारा लागू किया गया था। इसके बावजूद छोटा-सा देश वियतनाम और उस देश की जनता कामरेड माओ द्वारा शिक्षित दीर्घकालीन लोकयुद्ध के राह पर दुश्मन के सभी तरह की कार्यनीतियों को मुहतोड़ जवाब देते हुए जनयुद्ध को जीत की ओर आगे बढ़ाया था। वहां की कम्युनिस्ट पार्टी और जनसेना जनता पर पूरा विश्वास रखकर और उनपर आधारित होकर ही जीत के मुकाम तक पहुंच पाए थे।

लम्बा सफर घोड़े के पिण्डली की शक्ति का तीक्ष्ण परीक्षा करता है। दीर्घकालीन लोकयुद्ध कम्युनिस्ट पार्टी और उसके मातहत वाले जनसेना के दृढ़ संकल्प का तीक्ष्ण परीक्षा करता है। वह एक युद्ध में जीत सकता है या हार भी सकता है। युद्ध में जीत-हार अत्यंत सहज है। हमेशा जीतने की चाहत का मतलब ही है सिर्फ द्वंद्वात्मकता को सही तरीके से समझना। जीत के साथ हार भी हो सकता है, इसके लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। एक युद्ध में आत्मसमर्पण के सिवाय अंत तक लड़कर हार जाना ठीक है। हार से हम जरूर सबक लेंगे। व्यवहार में उस सबक को जोड़ते हुए जनयुद्ध को और एक कदम आगे ले जा सकते हैं। कामरेड माओ द्वारा दी गयी शिक्षा जीत-हार, हार-जीत, अंत में जीत की राह से गुजरते हुए जनयुद्ध आगे बढ़ेगा।

हम सब जानते हैं कि दीर्घकालीन जनयुद्ध में सशस्त्र संघर्ष प्रधान रूप है और जनसेना प्रधान सांगठिनक रूप है। इन्हें विभिन्न इलाकों के विशेष परिस्थितियों के मुताबिक विकसित करने के लिए सर्वहारा नेतृत्व में मजदूर-किसान, निम्न पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्गों को एकताबद्ध करना होगा। जनयुद्ध और जनसेना के साथ अन्य सभी संघर्ष और सांगठनिक रूपों को समन्वय करते हुए लड़ना होगा। कृषि क्रांति को धुरी मान कर नव जनवादी क्रांति और सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध को विकसित करना होगा। लहरों की तरह आगे बढ़ने वाले जनयुद्ध में लाखों-करोड़ों जन समुदायों को एकताबद्ध करते हुए भारत की अर्द्धऔपनिवेशिक और अर्द्धसामंती व्यवस्था को जमीन में गाड़कर उक्त चार वर्गों की नव जनवादी सरकार स्थापित करनी होगी। ऐसे सभी तरह के संशोधनवादी, प्रतिक्रांतिकारी सिद्धांतों, जो कि भारत देश में अपनी शैली में पूंजीवाद का विकास हुआ है, आज की परिस्थितियों में दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन लागू नहीं होगी, माओवादी मृत (या निर्जीव) सिद्धांत को नहीं छोड़ रहा है, बल्कि पकड़कर रखा है, के खिलाफ लड़ते हुए अभी तक हासिल कई अनुभवों से संपन्न हुई भारत की जनयुद्ध की लाइन को और विकसित करना होगा। इस लक्ष्य से ऑपरेशन ग्रीन हण्ट को पूरी तरह परास्त करने के लिए हमें सभी शक्तियों को एकत्र करना होगा। इसके लिए रुकावट बने हर एक पहलू से पार पाने के लिए दृढ़ संकल्प और आत्मबलिदान की चेतना से प्रयास करना होगा।

समापन

भारत के शोषक-शासक वर्ग साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग और बड़ा जमींदार वर्गों के हितों को पूरा करने के लिए क्रांतिकारी आन्दोलन पर और जनता पर एक ऐसी मौलिक नीति के तहत दमन, घेरा डालो-विनाश करो अभियान, सफेद आतंक फैलाने व लागू करने में लगा हुआ है कि वह किसी मामूली दमनकारी रूपों तक सीमित नहीं है। सैद्धांतिक और राजनीतिक तौर पर हमला करना उसका अत्यंत मुख्य रूप है। वे जानते हैं कि सैद्धांतिक और मनोवैज्ञानिक युद्ध के साथ समन्वय के बिना लागू किया जाने वाला दमन, घेरा डालो-विनाश करो अभियान और श्वेत आतंक द्वारा अपेक्षित परिणाम हासिल नहीं किया जा सकता।

साम्राज्यवादियों और उसके दलाल भारत के शासक वर्गों द्वारा क्रांतिकारियों और जनता का दमन करने और उनमें आतंक मचाने के लिए जो भी पद्धति अमल करते हो, सैद्धांतिक तौर पर जो भी दबाव लाते हो- इसके पीछे एक मात्र लक्ष्य है : उनकी सत्ता को बचाना, उनके प्रभुत्व के खिलाफ जनता के आंदोलन को कुचलना और जन आन्दोलनों

को समाप्त करना और उनकी अर्द्धऔपनिवेशिक और अर्द्धसामंती व्यवस्था के प्रति जनता की सहमति हासिल करना या आत्मसमर्पण करवाना। लूटेरे वार्गों की एलआईसी नीति का सारांश सिर्फ यही है। इसके तहत वे कई तरह की नीतियां लागू करते हैं। लेकिन वे अपनी नीतियों को प्रभावशाली ढंग से लागू कर पाते हैं या नहीं; उससे कुछ परिणाम निकाल पाते हैं या नहीं – इसके सिवाय, हम स्पष्ट रूप से यह कह सकते हैं कि उनके द्वारा लागू ये नीतियां निर्णायक नहीं होंगी। इसके विपरीति, जिन लोगों (क्रांतिकारियों और जनता) को सफाया करने की उनकी मंशा है केवल उनकी सैद्धांतिक और राजनीतिक शक्ति और उनकी मजबूत नीतियां ही निर्णायक होगी। उनकी व्यावहारिक शैली और दृष्टिकोण द्वारा यह स्पष्ट रूप से उजागर होता है। इसलिए दुश्मन की नीतियां नहीं, बल्कि क्रांतिकारियों की नीतियां ही निर्णयात्मक है।

असल में वर्ग दुश्मन उतना शक्तिशाली नहीं है। क्योंकि यह वर्ग युद्ध है, हां! यह एक वर्ग युद्ध है। शोषकों और उत्पीड़ितों; लूटेरों और आम जनता; धनी और गरीब; भरेपेटों और भूखेपेटों; साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्गों और मजदूर-किसान आदि उत्पीड़ित जनता के बीच का युद्ध है। यह न्याय और अन्याय के बीच का युद्ध है। व्यक्तिगत संपत्ति, शोषण और समाज वर्गों के रूप में विभाजन होने की वजह से यह युद्ध शुरू हुआ है। व्यक्तिगत संपत्ति, शोषण और वर्गों का अंत से ही यह युद्ध समाप्त होगा। वर्गों की इच्छा या अनिच्छा से इसका कोई लेना-देना नहीं है। वर्गयुद्ध एक भौतिक वास्तविकता है। वर्ग इस युद्ध को रोक नहीं सकता। जिनलोग इस वास्तविकता को समझते हैं वे लोग ही युद्धों को समाप्त करने वाला वर्गरहित कम्युनिस्ट समाज की स्थापना के लिए कमर कसकर, उसके अनुरूप अपने सिद्धांत और राजनीति और व्यवहार को ढाल सकते हैं। वर्ग जागरूकता और वर्ग चेतना का यही मतलब है। शोषक-शासक वर्ग और उसके सशस्त्र बलों द्वारा प्रत्येक चरण में ऐसा हूंकार करता रहेगा कि ''पहाड़ों और जंगलों को सफाया करेंगे, नक्सल रहित राज्य और माओवादी कभी जीत नहीं सकते''। लेकिन, उसमें वे कभी जीत हासिल नहीं कर सकते। इसके विपरीति, जंगलों व पहाड़ों और मैदानों व शहरों में लड़ने वाले उत्पीड़ित जनता के निर्णयात्मकता, उद्देश्य और आकांक्षाओं पर निर्भर होगी जीत या हार। मा-ले-मा बताता है कि यह क्रांति का युग है। शासक वर्ग भी ''21वीं शताब्दी को बगावतों की शताब्दी'' कहकर क्रांतिकारी आंदोलनों को कुचलने के लिए पहलकदमी अपने हाथ में रखते हुए कार्रवाइयां चलाने की कोशिश कर रहा है। क्योंकि जनता को वह सिर्फ भूख, गरीबी और अन्याय इतना ही दिया है। उनकी शोषणमूलक अर्थव्यवस्था ही इसका मूल कारण है। इसके खिलाफ जनता अवश्य ही बगावत का बिगुल बजाती है- इस चीज को शासक वर्ग अच्छी तरह जानता है। वर्तमान आधुनिक समाज में उनकी ''जनवादी'' सरकारें सिर्फ जनता को गुमराह करने के बजाय उसकी एक भी मौलिक समस्या को हल नहीं कर सकता। उसका लक्ष्य है वर्तमान शोषणमूलक व्यवस्था को बचाना, उत्पीड़ित जनता का आक्रोश और उनकी क्रांतिकारी हिंसा को कुचलना। इसके लिए हमारे माओवादी जन शक्तियों की कमजोरियों का वह हमेशा अध्ययन करते हुए उसके आधार पर उसे धक्का देकर क्रांति को चोट पहुंचाना चाहता है। शासक वर्ग अपनी कमजोरियां भी अच्छी तरह जनता है। उससे पार पाने के लिए वह कोशिश करता है लेकिन उसमें कभी सफल नहीं होगा। उनकी शोषणमूलक नीतियां ही इसका कारण है। हमें हमारे बारे में, हमारी कमजोरियों के बारे में, किसके खिलाफ हम लड़ रहे हैं अच्छी तरह जानते हैं। हमारी कमजोरियों को हम जरूर सुधार सकते हैं। इसीलिए हम कहते हैं कि वह कभी हमें और व्यापक जनता को हरा नहीं सकता, मुक्ति के लिए जारी जनयुद्ध को मिटा नहीं सकता और हम जरूर जीत हासिल करेंगे। भारत में साम्राज्यवादियों, उनके पिट्ठू बड़े सामंती जमींदार और दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों ने अपने शोषण, उत्पीड़न और दमन को जारी रखने के लिए मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग आदि उत्पीड़ित जनता पर सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में उनके द्वारा चलाया जाने वाला चौतरफा युद्ध का मुकाबला करने की शक्ति सिर्फ जनयुद्ध में ही मौजूद है। चाहे, वर्ग दुश्मन जितने भी भीषण युद्ध क्यों न थोपे, उनका खात्मा करने तक, जब तक उत्पीड़ित जनता को मुक्ति हासिल नहीं होगी तब तक जनयुद्ध जारी रहेगा।

लेनिन का उल्लेख करते हुए माओ ने ''लड़ने के लिए साहस करो! जीतने के लिए साहस करो!'' कहते हुए उन्होंने इस तरह विवरण दिया कि सिर्फ ''लड़ने के लिए साहस करना'' ही काफी नहीं है, ''जीतने के लिए साहस करना'' भी जरूरी है। ''जीत'' हासिल करना है तो हमारे अंदर एक तरह की निर्णयात्मकता और धीरता अवश्य होना चाहिए। इसके लिए एक विशेष इच्छा शक्ति की जरूरत है। क्रांति को जीत के मुकाम तक पहुंचाने तक, इसमें अंजान चीजों और चुनौतियों सहित आगे आने वाले सभी आकांक्षाओं को पूरा करने तक, इस शोषणमूलक व्यवस्था की राख से नव जनवादी व्यवस्था और उसके बाद समाजवादी-साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना तक आगे बढ़ना होगा। निर्णयात्मकता और धीरता- ये दोनों ऐसे रहना चाहिए कि क्रांति को सफल बनाने के सारे रास्ते को देख पाने में, न केवल करोड़ों जनता की जिन्दगियों को बल्कि आज भूमणडल पर अमूल्य मानव जीवन के अस्तित्व को ही नष्ट करने वाली साम्राज्यवादी व्यवस्था को और भारत जैसे पिछड़े देशों के अर्द्ध-औपनिवेशिक और अर्द्ध-सामंती व्यवस्था को उखाड़ कर पूरी तरह मिटाने में काबिल हो। ★

जनता पर युद्ध 'ऑपरेशन ग्रीन हण्ट' को पूरी तरह परास्त करो!

तत्कालीन यूपीए-1 की सरकार के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने घोषणा की थी कि भारत में भाकपा (माओवादी) देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा है। तबसे लेकर हमारी पार्टी और क्रांतिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए आन्दोलन के इलाकों में केन्द्र और राज्य सरकार दोनों मिलकर कई बार दमन ऑपरेशनों और प्रतिक्रांतिकारी अभियानों का संचालन किए। 21 सितम्बर, 2004 को हमारी एकताबद्ध पार्टी भाकपा (माओवादी) के गठन होने के साथ-साथ एकताबद्ध पीएलजीए और एकताबद्ध व क्रांतिकारी जन संगठनों का गठन होकर जन आधार मजबूत होने के कारण दुश्मन द्वारा चलाये गये इन सभी ऑपरेशनों को एक के बाद एक हमारी पार्टी परास्त करती आयी है।

इसी क्रम में डीके और बीजे को आधार इलाके के रूप में विकसित करने की दिशा में अगला कदम के रूप में छापामार आधार क्षेत्र के अस्तित्व में आने और जनयुद्ध में उत्पीड़ित जनता की सक्रिय भागीदारी को बढ़ाते हुए तथा सफलता हासिल करते हुए जनयुद्ध को विस्तारित करने की वजह से भारत के शोषक-शासक वर्गों को तीव्र परेशानी महसूस होने लगा। इन छापामार आधार क्षेत्रों ने न केवल पीएलजीए के लिए पृष्ठभाग के रूप में काम किया, बल्कि वहां की नई राजनीतिक सत्ता की इकाइयों को राजनीतिक तौर पर बुर्जुआ संसदीय व्यवस्था के विपरीत एक वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में और विश्व बैंक/साम्राज्यवाद निर्देशित आर्थिक विकास के विपरीत स्वतंत्र और स्वावलम्बी अर्थ-व्यवस्था के रूप में देश की जनता के सामने एक नमूने के तौर पर पेश आयी। यह साम्राज्यवादियों और देशी-विदेशी कॉरपोरेट-बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ किए गए सैकड़ों एमओयू को रोकने की वजह से पश्चिम बंगाल से झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओड़िशा, आंध्र प्रदेश तक फैला हुआ क्षेत्र में लाखों-करोड़ों रुपए की पूंजी से लगाए जाने वाली कई कंपनियों का निर्माण कार्य भी रूका हुआ है। ठीक इसी इलाके में ही जनयुद्ध केन्द्रित है। दूसरी तरफ दुनिया के पैमाने पर साम्राज्यवाद आर्थिक संकट में फंसे रहने के कारण उस संकट से बाहर आने के लिए पिछड़े देशों को और लूटने का मार्ग सुगम बनाने में हमारे देश में हमारी पार्टी एक रुकावट के रूप में सामने आयी है जिसे साम्राज्यवादियों और उनके दलाल शासक वर्ग सहन नहीं कर पा रहे हैं।

इसलिए भारत के लूटेरे वर्ग हमारी पार्टी और क्रांतिकारी आन्दोलन को उन्मूलन करने के लिए, साम्राज्यवादियों, टाटा, बिड़ला, मित्तल, एस्सार, रिलायन्स, जिन्दल, वेदान्ता, पोस्को आदि कॉरपोरेट-बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लूट-खसोट के रास्ता को सुगम बनाने के लिए अमेरिकी साम्राज्यवादियों के दिशा-निर्देशन में अमेरिकी खुफिया संगठन एफबीआई के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप में एलआईसी की रणनीति और कार्यनीतियों को और निर्दिष्ट एवं व्यापक रूप में जोड़ते हुए चौतरफा प्रतिक्रांतिकारी युद्ध- जनता पर युद्ध- ऑपरेशन ग्रीन हण्ट को यूपीए-2 सरकार के सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम गुट द्वारा योजना बनायी गयी थी। इसे केन्द्र व क्रांतिकारी आन्दोलन से प्रभावित राज्यों की सरकारों ने मिलकर अमल में लाया। इसके तहत हमारी पार्टी पर प्रतिबंध को जारी रखते हुए पार्टी को आतंकवादी संगठन के रूप में घोषित किया गया। बड़े पैमाने पर ऐसा दुष्प्रचार किया गया कि जब तक माओवादी आन्दोलन रहेगा तब तक 'विकास नहीं होगा'। इस प्रतिक्रांतिकारी चौतरफा युद्ध को हमारे जन आधार, फारमेशन स्तर एवं शक्ति जिन इलाकों में कम है वहां से शुरू किया गया है। क्लियर, होल्ड, बिल्ड और डेवलप (clear, hold, build and develop) के चरणों से गुजरते हुए इन ऑपरेशनों को चलाने के लिए योजनाएं बनायी गयी हैं। इसके लिए सीआरपीएफ बलों में एक विशेष कमांडो बल- कोबरा (CoBRA- कम्बैट बटालियन फोर रेजल्यूट एक्शन), विभिन्न राज्यों में एसआईबी, विशेष कमांडो बल (ग्रेहाउण्ड्स), एसटीएफ, ब्लैक पांथर्स, एसओजी, एसएपी, डीवीएफ, जागुआर बलों को संगठित किया गया। कारपेट सुरक्षा को मजबूत किया गया, सैकड़ों किलेबंदी थाने और कैंप का निर्माण करने की योजना बनायी गयी। सड़क और सेलफोन टावर का निर्माण बड़े पैमाने पर किया गया। मुखबिर-कोवर्ट तंत्र को मजबूत किया गया। गुरिल्ला को गुरिल्ला के रूप में मुकाबला करने के नारे को लेकर एक तरफ काउण्टर गुरिल्ला ऑपरेशनों को तेज करते हुए दूसरी तरफ नक्सल प्रभावित इलाकों के विकास के नाम पर एकीकृत कार्य योजना (Integrated Action Plan-IAP) के नाम से 34 जिलों में 13,742 करोड़ रुपए से सड़क, स्कूल, अस्पताल का निर्माण, विद्युतीकरण का काम आदि चलाया गया। प्रतिक्रांतिकारी गुटों को एक-एक राज्य में एक-एक नाम से संगठित कर काउण्टर गुरिल्ला ऑपरेशनों में इस्तेमाल बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, डीके में प्रतिक्रांतिकारी अभियान सलवा जुडूम को परास्त करने के बाद उससे बनाये गये कई एसपीओ को संगठित कर कोया कमांडो बल का गठन किया गया है। बीजे में सेन्द्रा समिति को परास्त करने के बाद ग्रामीण एकता मंच का गठन, अलावे टीपीसी, जेपीसी, जेजेएमपी, पहाड़ी चीता, पहले जेएलटी अभी पीएलएफआई, एसपीएम, ग्राम रक्षा दल, शांति सेना; झारखण्ड और पश्चिम बंग के सीमावर्ती क्षेत्रों में नागरिक सुरक्षा समिति (नासुस), दलमा आंचलिक सुरक्षा समिति, सीपीएम की समाजिक फासीवादी हर्मद वाहिनी, अभी टीएमसी का भैरव वाहिनी,

(शेष भाग पृष्ठ-118 सें...)